प्रेमपत्र जिल्द दोयम जोकि सन् १८९४ ई० १ मई से सन् १८९५ ई० ३० अप्रैल तक ख़तम हुआ उसके

बचनों का सूचीपत्र ।

नम्बर बचन	सुर्ख़ी यानी खुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
१	राधास्वामी मत वालो का वर्ताव अपने मन और इन्द्रियों के साथ	१
२	राधास्वामी मत वालों का वर्ताव साथ अपने कुटम्ब परिवार और बिरादरी के	८
३	राधास्वामी मत में जो हुक्म दिये हैं उनके मानने के वास्ते जुगत भी बताई है और मतों में यह बात बहुत कम पाई जाती है	१४
४	होशियार करना राधास्वामी मत के अभ्यासियों को, वास्ते सम्हाल अपने मन और इन्द्रियों के और दुरुस्ती से करने अभ्यास के अपने अंतर में	२६
५	राधास्वामी मत में जो गुरु भक्ती जारी है, उस पर तान मारने वालों का जवाब और बर्णन इस बात का कि सच्चे परमार्थ और सच्चे उद्धार की प्राप्ती के लिये, अपने समय के भेदी और अभ्यासी मनुष्य स्वरूप गुरु से मिलना और उनके साथ दीनता और भाव और प्यार करना बहुत ज़रूर है	४६
	अर्थ शब्द नम्बर २३ सफ़ा ८६४ पोथी सार बचन ...	६२
६	राधास्वामी मत करनी का है सिर्फ़ बिद्या और बुद्धी की समझ और बिचार का नहीं है	६६

नम्बर बचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
७	सतसंग का बयान	७९
	सार बचन नज़्म सफ़ा ८८३ शब्द नम्बर १३का अर्थ ...	८५
८	सब जीवों को जो कुल मालिक राधास्वामी दयाल के बाल बच्चे हैं, अपने निज घर और सच्चे माता पिता की सुध लेकर चलने, और उनके चरनो में पहुंचने का जतन करना चाहिये	८८
९	परमार्थी को सतसंग में और सतगुरु के सन्मुख मुवाफ़िक़ परमार्थ की रीत और क़ायदों के वर्ताव करना चाहिये	९०
१०	संतों के बचन हरचन्द अधिकारी प्रति हैं पर कुल जीवों को अपनी २ ताक़त के मुवाफ़िक़ उनका मान्ना, और उसके मुवाफ़िक़ अपनी रहनी और बर्तावा दुरुस्त करना ज़रूर चाहिये	१०४
११	राधास्वामी मत केवल दया का मत है और इस मत में जीव का उद्धार सहज होता है	१११
१२	चेतकर सतसंग और अभ्यास करके परमार्थी चिंता और खटक हिरदे में पैदा करना कि जिससे पूरा काम बन जावे	१२४
१३	मज़बूत करना प्रतीत और प्रीत का राधास्वामी दयाल के चरन कँवल में	१३०
१४	बर्णन प्रीत और प्रतीत का गुरु चरनन में	१५१
१५	राधास्वामी मत संदेश	१७२
१६	राधास्वामी दयाल के चरनो में जैसी तैसी प्रीत करना चाहिये, तब सहज २ सच्चा उद्धार होता जावेगा, और एक दिन काम पूरा बन जावेगा	

नम्बर बचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
१७	हर शख़्स को अपने जीव चेतन्य के भण्डार का खोज और पता लगाकर, वहां पहुंचने का जतन करना चाहिये, कि जिससे परम आनन्द को प्राप्त होवे, और जनम मरन और देह के दुख सुख से बचाव हो जावे	२७४
	अर्थ शब्द नम्बर २ सफ़ा ८६८ पोथी सार बचन ...	२८४
१८	मालिक का संसार में नर रूप धर कर औतार लेना जीवों के सच्चे उद्धार और कल्यान के वास्ते निहायत दर्जे की दया और मेहर का निशान है	२८८
१९	इतसे मोड़ और उतको जोड़, यानी संसार और माया के पदार्थों से चित्त को हटाकर, राधास्वामी दयाल के चरनों में यानी स्वरूप और शब्द की धार में जोड़ना चाहिये	३०२
२०	मन और सुरत का मुख अन्तर में ऊपर की तरफ़ मोड़ने और आहिस्ता २ चढ़ाने में, हमेशा सुख और आनन्द ज़्यादा से ज़्यादा मिलेगा, और दुख और तकलीफ़ और चिन्ता दूर और कम होते जावेंगे, इस वास्ते यह अभ्यास कुल जीवों को चाहे औरत होवे या मर्द वास्ते अपने असली फ़ायदा के करना लाज़िम और मुनासिब है...	३१२
२१	बर्णन रोशन और अँधेरी किरनियों का, जोकि पिण्ड और ब्रह्माण्ड की रचना में चेतन्य और जड़ की प्रघट अंस हैं और उपदेश वास्ते पहुंचने निरमल चेतन्य यानी हमेशा नूरानी देश में जहां अंधेरा यानि काल और माया बिल्कुल नहीं है	३२६
	शब्द नम्बर १२ सफ़ा ८८२ सार बचन नज़म ...	३३०
२२	चेतन्य को विशेष चेतन्य और महा चेतन्य से मेल करना चाहिये, न कि समान चेतन्य और जड़ से ...	३३२

नम्बर बचन	फ़ुरसी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
२३	ध्यान में आसानी अभ्यास की और भजन में किसी क़दर कठिनता का बर्णन	३४४
२४	बर्णन निरमल और कपट या लपेट की भक्ती का ...	३५८
२५	सच्चे परमार्थ की कमाई के वास्ते सच्ची और निर्मल चाह और प्यार और ख़ौफ़ ज़रूर है, और जो यह बातें न होंगी तो जो कुछ कारंवाई परमार्थ की की जावेगी, वह करम में दाख़िल होगी प्रेम और भक्ती की तरक्क़ी नहीं होगी	३६५
२६	सतसंग अंतर और बाहर सम्हाल कर करना चाहिये, तब फल और फ़ायदा उसका प्रघट होगा ...	३७१
२७	जीवों के वास्ते बचाव तकलीफ़ और दुखों से और प्राप्ती सच्चे और अमर सुख और आनंद के अपने घट में संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ स्वरूप का ध्यान और शब्द के सुन्ने का थोड़ा बहुत अभ्यास ज़रूर करना चाहिये...	३८८
२८	साध के संग की महिमा और उसका फ़ायदा, जो सच्ची दीनता और प्रेम के साथ संग किया जावे ...	३६५
२६	बर्णन महिमा सुरतशब्द मारग और संत सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की मेहर और दया का, कि जिस से सहज में जीवों का सच्चा उद्धार होता है	४०८
३०	क़ुदरती सबूत इस बात का कि सिर्फ़ राधास्वामी मत में असल भेद सच्चे मालिक और उसकी क़ुदरत का, और सच्चा और पूरा तरीक़ा जीव यानी सुरत के सच्चे और पूरे उद्धार का बर्णन किया है—और जिसके समझने और	

नम्बर वचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून वचन	नम्बर सफ़ा
	अभ्यास करने के वास्ते कुछ ख़ास ज़रूरत विद्या के पढ़ने की नहीं है—यानी राधास्वामी मत के भेद और जुगत को मर्द और औरत पढ़े लिखे और अनपढ़ सब आसानी से समझ सक्ते हैं और उसका अभ्यास मेहर और दया से बेख़तरे और निरविघ्न कर सक्ते हैं ...	४२२
३१	बर्णन इस बात का कि संत मत के मुवाफ़िक़ राधास्वामी पद कुल्ल का आख़ीर और सिद्धान्त है, और यही अपार और अनन्त है इसके परे और कोई पद नहीं है और न हो सक्ता है	४३८
३२	शब्द द्वारे सुरत अपने निज घर में (जोकि राधास्वामी धाम है) पहुंच सक्ती है—और द्वारों से धुर मंज़िल तक नहीं पहुंचेगी, कहीं न कहीं रास्ता में अटक रहेगी और कारज पूरा नहीं बनेगा	४४४
३३	मन और सुरत नौ द्वारों से झांक कर इस लोक के भोगों में फंस गये हैं, सो दसवें द्वार की तरफ़ झांकने और चलने से उन बंधनों से छूटकारा होगा और संत सगुतरु की दया से एक दिन निज घर में पहुंच कर परम आनन्द को प्राप्त होंगे	४६९
	अर्थ शब्द नम्बर ५ वचन नम्बर ३५ भाग ३ सफ़ा नम्बर ७०८ पोथी सारबचन छंद बंद	४८३
	अर्थ शब्द नम्बर १६ वचन ४१ सफ़ा ८८६ पोथी सार वचन छंद बंद	४८७
३४	कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की महिमा और भेद सुन कर (हर एक जीव को जो जीव उनके बाल बच्चे हैं)	

नम्बर बचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
	शौक़ मिलने का बिछुड़े हुये बालक के मुवाफ़िक़ पैदा करके और सतगुरु से चलने की जुगत दरियाफ़्त करके दिन दिन बिरह और प्रेम अङ्ग के साथ रास्ता तै करना चाहिये	४९३
६५	बचन मुतफ़र्रिक़ पिछले महातमाओं के	५००

इति ।

राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय॥

प्रेमपत्र राधास्वामी

जिल्द दूसरी

बचन १

राधास्वामी मत वालों का बरताव अपने मन और इन्द्रियों के साथ

१—जो कोई सच्चा होकर परमार्थ में लगे, और राधास्वामी मत में शामिल होकर उसके मुवाफ़िक़ अभ्यास शुरू करे, तो उसको चाहिये कि अपने मन और इन्द्रियों की चौकीदारी करने की आदत डाले, यानी इनकी चाल ढाल की निरख परख करता रहे, कि फ़ज़ूल कामों और फ़ज़ूल ख्यालों और फ़ज़ूल चीज़ों में किस क़दर मन और इन्द्रियां बहती रहती हैं, और उन कामों और ख्यालों और चीज़ों से इनको जब २ उस तरफ़ को जावें रोकता रहे॥

२—यह काम एक दिन या जल्दी का नहीं है—जन्मान जन्म और जुगान जुग और सालहा साल

से यह मन इन्द्रियों के वसीले से मुनासिब और नामुनासिब और ज़रूरी और फ़ज़ूल ख्यालों और कामों और पदार्थों में भटकता रहता है, और कहीं भी इसको पूरी शान्ती या ठहराउ आनंद कि जिसके पीछे फिर त्रिश्ना या इच्छा उससे बढ़ कर दूसरे भोग की पैदा न होवे नहीं मिलता है–इस सबब से यह मन हमेशा दुखी और भोगों की चाह की चिंता में सदा मलीन और उदास रहता है, और जब देखो किसी न किसी मतलब के वास्ते जतन यानी मिहनत और मशक़्क़त करता रहता है ॥

३–असल बात यह है कि असली अस्थान सुरत यानी रूह का राधास्वामी के चरनों से लगा कर सत्तलोक तक है, और असली अस्थान मन का त्रिकुटी में है, और जो कि वहां का थोड़ा बहुत सुख और आनन्द यह मन भोगे हुए है, और उसी अस्थान के मसाले का इसका ख़मीर है, इस सबब से यह मन जब तक कि उलट कर त्रिकुटी में न जावेगा, तब तक नीचे के अस्थानों में भूल और भरम करके हर एक काम और ख्याल और पदार्थ में उस असली अस्थान के आनंद को ढूंढ़ता है, और जैसे २ अपने २ संगियों से जिस २ बात या पदार्थ की महिमा और

उसकी प्राप्ती में आनंद और मान बड़ाई वग़ैरह का हाल सुनता है, उसी मुवाफ़िक़ उस पदार्थ के हासिल करने के लिये मिहनत और जतन करता है, और जब वह पूरा आनंद नहीं मिलता, तब उसी पदार्थ और उसी काम से चित्त इसका किसी क़दर हट जाता है, यानी फिर उसकी तरफ़ इसकी वैसी तवज्जह नहीं रहती है, और दूसरे पदार्थों या कामों या ख़्यालों की तरफ़ जिनकी ज़्यादा तारीफ़ सुनी है लग जाता है, और ऐसे ही कभी किसी और कभी किसी चीज़ में इसका शौक़ लगता रहता है, और कभी ख़ाली नहीं रहता है, यानी अपनी चंचलता नहीं छोड़ता है ॥

४—सच्चे परमार्थी को मुनासिब है, कि अपने मन और इन्द्रियों की चाल की जांच करता रहे, और जब वह ना मुनासिब और ग़ैरज़रूरी और फ़ज़ूल ख़्यालों या कामों में तवज्जह करें, उसी वक़्त या जिस क़दर जल्दी होश और समझ आवे उनको रोक कर या तो चरनों की तरफ़ अपने अंतर में लगावे, या सुमिरन और ध्यान करे, या पोथी का पाठ करे, और नहीं तो जो ज़रूरी और मुनासिब कार या ख़्याल दुनियवी होवे उसमें लगावे—खुलासा यह कि मन और

इन्द्रियों को बाहर की तरफ़ या अपने अंतर में नीचे की तरफ़ बे फ़ायदा बहने से जहाँ तक मुमकिन होवे रोकता रहे, और जब कभी इसका बल पेश न जावे तब चरनों में प्रार्थना करे, और अपनी नालायक़ी पर अफ़सोस करके आइंदा को हिम्मत बाँधे, कि फिर ख़्याल या तरंग के उठते ही रोक लगाऊँगा, और जब ऐसा मौक़ा होवे, उस वक़्त फ़ौरन नाम के सुमिरन या स्वरूप के ध्यान या शब्द के श्रवण में लग जावे, तो वह तरंग जो बहुत ज़बर न होगी हट जावेगी, और जो पूरी पूरी न हटा सके, तो भी इस खैंचा तानी में उसका ज़ोर बहुत कम हो जावेगा, यानी वह उसको ऊपर की तरफ़ खींचेगा, और वह तरंग नीचे या बाहर की तरफ़—जो इसकी ताक़त ज़बर होगी तो वह तरंग दूर हो जावेगी और मन अंतर में चरनों में लग जावेगा, और जो तरंग ज़बर हुई, तो भी उसका ज़ोर बहुत घट जावेगा, और धार उसकी बाहर या नीचे की तरफ़ बहुत कमज़ोर हो कर जारी होगी। इसी तौर से लड़ाई करते २ अभ्यासी की ताक़त बढ़ती जावेगी, और फिर वह हर क़िस्म की तरंग को उसके उठते ही राधास्वामी दयाल की दया से जीत सकेगा ॥

५–मालूम होवे कि मन और उसकी तरंग का ऐसा हाल है, कि जब ख़्याल करके अंतर में पहिले हिलोर होकर कोई तरंग काम क्रोध लोभ मोह या अहंकार या दस इन्द्री के भोग की प्रघट हुई, और इस शख़्स ने उसको मदद देकर बढ़ाना शुरू किया, और उसकी धार बढ़ कर उस इन्द्री के द्वारे तक आगई, कि जिस इन्द्री के विषय का भोग लेना मंजूर है, तो इस वक़्त जो कोई अभ्यासी उस तरंग की धार को रोकना या उलटाना चाहे, तो उसका उलटाना बहुत मुश्किल मालूम होवेगा। जो किसी तरह से उस वक़्त वह भोग नहीं भोगा जा सकता है, तो यह तरंग की धार दूसरा रूप धरके बाहर निकलेगी, यानी अक्सर तो वह क्रोध रूप धर कर प्रघट होवेगी और अभ्यासी इसके रोकने में अपने आप को बे इख़्तियार और बे ताक़त देखेगा–एक तरकीब से अलबत्ता यह तरंग की धार उलट सकती है, और वह सच्चा ख़ौफ़ और सच्चा रंज और सच्ची शरम और हया है, यानी जब तेज़ ख़ौफ़ ग़ालिब होवे, या अपनी बे इज़्ज़ती का ख़्याल दिल में पैदा हो जावे, या कोई सख़्त मुसीबत या रंज का खटका मन में आजावे, तो उस वक़्त कैसी ही ज़बर तरंग किसी

क़िस्म की क्यों न होवे, फ़ौरन इन्द्री द्वार से लौट कर मन की मन में समा जावेगी ॥

६–इसी वास्ते सच्चे परमार्थियों ने ख़ौफ़ और रंज और फ़िकर के वास्ते इलाज अपने मन की बीमारी के मुक़द्दम रक्खा है–बल्कि बाज़ों ने अपने मालिक से आप यह बात मांगी है, कि किसी क़िस्म की बीमारी यानी रोग और किसी क़िस्म की चिंता उनको ज़रूर बख़्शिश होवे, कि उसके सबब से उनका मन किसी क़दर दुबला और कमज़ोर रहा आवे, और भोगों में बहुत चंचलता न करे। संतों ने डर की महिमा इस तौर पर करी है:–

दोहा

डर करनी डर परम गुरु, डर पारस डर सार।
डरत रहै सो ऊबरे, ग़ाफ़िल खाई मार॥

और रोग और सोग और चिन्ता की निस्बत ऐसा कहा है॥

रोगी सद जीवत रहै, बिन रोग हि मर मर जाय।
सोगी नित हर्षत रहै, बिन सोग चौरासी जाय।
चिन्ता में जो नित रहै, सो मिले अचिन्ते आय।

ख़ुलासा यह है कि जो अपने मन को चिंता में परमार्थ के रक्खेगा, और सच्चे मालिक और सतगुरु

की अप्रसन्नता का ख़ौफ़ दिलाता रहेगा, और अपने प्रीतम के बिछुड़ने यानी जुदाई का सोग और रंज उसके मन में जब तब पैदा होता रहेगा, और दुनिया और अपने मन की बीमारी का हाल देखकर सुस्त और उदास होता रहेगा, वही शख़्स जल्दी मन और इन्द्रियों को क़ाबू में लावेगा और परमार्थ का असली फ़ायदा उठावेगा ॥

और चंचल मन हमेशा धक्के खाता रहेगा, क्योंकि उसको दरबार में दख़ल नहीं मिल सकता, और रास्ते ही में से काल और माया उसकी चाह के मुवाफ़िक़ अनेक तरह की तरंगें उठवा कर गिरा देंगे, यानी नीचे की तरफ़ को वापस कर देंगे, और उसकी चढ़ाई नहीं होने देवेंगे ॥

७—अब विचारना चाहिये कि सच्चे परमार्थी को किस क़दर ज़रूरत अपने मन और इन्द्रियों के सम्हाल की है, इसी का नाम निरख और परख है--निरख से यह मतलब है कि अपने मन और इंद्रियों की चाल पर नज़र रक्खे, और परख यह कि जब वे ग़ैरवाजिब या ना मुनासिब या ग़ैरज़रूरी और फ़जूल कामों या ख़्यालों या चीज़ों या बातों में लगें, तो उसी वक़्त उनको उस तरफ़ से हटा कर मुनासिब और फ़ायदेमंद

काम और ख़्याल में लगावें। बहुत से इल्मवाले लोग भीं अपना बरताव और ब्योहार बहुत सम्हाल के साथ रखते हैं, और अपना वक़्त फ़ज़ूल कामों या बातों में ख़र्च नहीं करते, फिर परमार्थी पर तो उनसे भी ज़्यादा फ़र्ज़ है, कि अपने वक़्त की सम्हाल रक्खें कि बेफ़ायदा ख़र्च न होवे, और अपने मन और इंद्रियों को भी रोक रक्खें, कि नामुनासिब और फ़ज़ूल कामों और बातों की तरंगें न उठावें, तब कोई दिन के इस क़िस्म के अभ्यास से, वह अपने मन और इन्द्रियों की सच्ची और पूरी चौकीदारी और सम्हाल कर सकेगा, और फिर परमार्थ का ही गहरा फ़ायदा हासिल करता जावेगा ॥

बचन २

राधास्वामी मत वालों का बरताव साथ अपने कुटुम्ब परिवार और बिरादरी के

१—राधास्वामी मत के अभ्यासियों को हुक्म है कि अपने घर में रह कर और पेशा या रोज़गार बदस्तूर जारी रख कर, जो जुगत कि उनको बताई जावे, उसका अभ्यास दो बार तीन बार या चार बार हर रोज़ एक २ घंटे या कुछ कम करते रहें, और दुनिया की फ़ज़ूल और बेफ़ायदा चाहें उठानी मौक़ूफ़ करें,

और जिस वक़्त अभ्यास करें, उस वक़्त तो ज़रूर इस क़दर होशियारी रक्खें, कि दुनिया के ख़्याल उनके मन में जहाँ तक मुमकिन होवे न आवें, और जो बग़ैर इरादा के ऐसे ख़्याल उठें, तो उनको जिस क़दर जल्दी मुमकिन होवे हटा देवें ॥

२—सतसंगी को चाहिये कि अपने कुटुम्ब परिवार के संग प्रीति भाव के साथ बरताव करे, और जिसका जो हक़्क़ होवे, जहां तक मुमकिन होवे उसको अदा करे। जो कुटुम्बी इसके साथ सच्चे परमार्थ में शामिल हो जावें तो बहुत अच्छा, नहीं तो एक दो या तीन मरतबा इसको चाहिये कि उनको राधास्वामी मत की बड़ाई और उसके अभ्यास का फ़ायदा खोलकर समझावे--जो यह बात उनकी समझ में आजावे और वे अपनी राज़ी से जिस क़दर शामिल होवें उनको अपने साथ परमार्थ में लगा लेवे, और जो वे टेकी या करमी और भरमी होवें और संतों के बचन को न मानें और भेष और पण्डितों की चाल के मुवाफ़िक़ अपना बरताव ज़ारी रक्खें, तो राधास्वामी मत के अभ्यासी को चाहिये कि उनके साथ ज़िद्द और अदावत न करे, उनको उनके हाल पर छोड़ देवे और दुनिया का व्योहार उनके साथ बदस्तूर बर्तता रहे ॥

३-जो इसके कुटुम्बी बेफ़ायदा झगड़ा और लड़ाई उसके साथ इस निमित्त करें कि यह राधास्वामी मत को छोड़ कर उन्हीं का संग देता रहे, तो (जो इसकी समझ में राधास्वामी मत की बड़ाई अच्छी तरह आगई है) उनसे साफ़ कह देवे कि वह उनका संग नहीं दे सकता है, चाहे वे उससे प्रीत भाव और दुनिया के ब्योहार का बरतावा रक्खें या नहीं, लेकिन उनके दीन और दुनिया के मुआमिला में किसी तरह से दख़ल न देवे, जिस तरह का परमार्थ और ब्योहार उनको भावे वे बदस्तूर करते रहें, धन की मदद जिस क़दर हो सके उनकी करता रहे, और एहतियात रक्खे कि इसकी बे परवाही के सबब से उनको किसी तरह की तकलीफ़ न होवे ॥

४-जो इसकी स्त्री और पुत्र परमार्थ में इसके संगी हो जावें और माता पिता और भ्राता और बहन भी संग देवें, तो इन सब की ज्यादा ख़ातिर-दारी और प्यार भाव करे, क्योंकि यह सब धुरमंज़िल तक का संग देकर आख़िर को सब मिल के एकही अस्थान यानी सत्तलोक और राधास्वामी धाम में बासा पावेंगे, और जब तक दुनिया में उनका संग है तब तक एक दूसरे को दोनों काम में यानी स्वार्थ

और परमार्थ में मदद देवेगा। धन्य भाग है ऐसे सत-संगी के कि जिसका कुल्ल घर परमार्थ में उसके शामिल है, और जो सब शामिल न होवें और थोड़े से ही जैसे स्त्री और पुत्र शामिल होवें तो भी भागवान है, कि उसको घर में भी मदद मिल सकती है और सतसंग में भी मदद तैयार है॥

५-अपनी बिरादरी से भी राधास्वामी मत के सतसंगी को जहां तक मुमकिन होवे ऐसी होशियारी और सम्हाल के साथ बरताव करना चाहिये कि जिस में कोई झगड़ा और बखेड़ा पैदा न होवे, और न किसी से दुश्मनी या अदावत क़ायम होवे। हर जगह और हर हालत में दीनता यानी नियाज़मंदी बड़ा भारी असर वाला औज़ार काम देने के वास्ते सत-संगी के पास मौजूद रहता है। जहां जैसा मौक़ा और मुनासिब देखे वहां उसी मुवाफ़िक़ काररवाई करे, और बेपरवाही और धमकी और सख़्ती के बचन किसी से या किसी की निस्बत ज़बान से निकालना मुनासिब नहीं, इसमें नाहक़ तकरार और फ़साद खड़ा होता है, और सतसंगी को फ़साद और झगड़े को हमेशा जहां तक मुमकिन होवे बचाना चाहिये, ताकि उसके परमार्थ में ख़लल और नुक़सान न आवे॥

६—अपने दोस्तों से भी राधास्वामी मत के सतसंगी को प्यार भाव के साथ बरताव रखना चाहिये, पर जो वे और रिश्तेदार और बिरादरी के लोग जब २ मिलें इसके परमार्थ की हंसी या खिल्ली उड़ावें और तान और तंज़ के बचन कहते रहें, तो एक दो या तीन बार उनको सहूलियत के साथ जवाब साफ़ देकर उनकी ग़लती पर उनको ख़बरदार कर देवे, और राधास्वामी मत की महिमा और बड़ाई उनके रूबरू बयान कर देवे, और जो फिर भी वे अपनी आदत हंसी और खिल्ली की न छोड़ें और जब २ मिलें तब २ उस सतसंगी के साथ छेड़छाड़ करते रहें, तो मुनासिब है कि उनसे कम मिले और अपने वक्त फ़ुरसत को सुमिरन ध्यान या भजन या पाठ में लगाना शुरू कर देवे। राधास्वामी दयाल की मेहर से वे सब आहिस्ता २ आपही उस सतसंगी की तरफ़ से हट कर अलहिदा सुहबत इख़्तियार कर लेंगे, और इससे आइन्दा को बहुत सरोकार न रक्खेंगे। जब ऐसी सूरतें होती जावें तो जानो कि राधास्वामी दयाल की दया है, कि वे आप अपने अभ्यासी सतसंगी का पीछा हर एक से छुड़ाते जाते हैं, और एक दिन इसी तरह सब रिश्ते और डोरियों को बिल्कुल

ढीला करके सुरत को सहज में अपने निज घर में पहुंचा देवेंगे ॥

७—सतसंगी को चाहिये कि जो उसके घराने में पुरानी रस्में जारी हैं और उसके कुटुम्बी उनको बिरादरी के ख़ातिर बदस्तूर रखना चाहें तो उनको उन रस्मों में बर्तने देवे, और जो वे परमार्थ में इसका संग दे रहे हैं तो इसको भी मुनासिब है कि ज़ाहिरी तौर पर उन रस्मों में अपने कुटुम्बियों का संग देवे, और अंतर में यह भी और कुटुम्बी भी राधास्वामी का ध्यान करें, इसमें किसी तरह का परमार्थी हर्ज नहीं होगा। जब तक सतसंगी ग्रहस्त में बैठा है तब तक उसको अपनी बिरादरी से थोड़ा बहुत व्योहार रखना ज़रूर और मुनासिब है, और इस वास्ते उनकी ख़ातिर कोई २ पुरानी रस्म और चाल भी जारी रखना मुनासिब है, और जिस में बिरादरी के शरीक होने या दख़ल देने की ख़ास ज़रूरत नहीं है उस रस्म में कमी बेशी करने का इख़्तियार है, और जिस रस्म के सबब से कोई ख़ास तकलीफ़ या नुक़सान या मुशकिल उठानी पड़े, और ऐसी रस्म को बदलना मुनासिब मालूम होवे और बिरादरी का उसमें ख़ास दख़ल नहीं है, तो इख़्तियार है कि उस

रस्म को जिस तौर से मुनासिब होवे बदल देवे, पर इस क़दर एहतियात रक्खे कि कोई काम अहंकार और ज़बरदस्ती (और लोगों के दिल दुखाने को) दिखावे के साथ न करे कि जिसमें नाहक़ तकलीफ़ और नुक़सान उठाना पड़ेगा ॥

बचन ३

राधास्वामी मत में जो हुक्म दिये हैं उनके मानने के वास्ते जुगत भी बताई है, और मतों में यह बात बहुत कम पाई जाती है ॥

१—मालूम होवे कि हर एक मत में हुक्म दिये गये हैं—कोई मानने के वास्ते और कोई छोड़ने के वास्ते। इन हुक्मों का पढ़ लेना और ज़बान से कह देना और सुना देना बहुत आसान है, पर उनके मुवाफ़िक़ बरताव करना इस तौर पर कि जो बात करना चाहिये उसको थोड़ा बहुत ज़रूर करना और जो बात मना है उसको जहां तक मुमकिन होवे न करना यह काम बहुत मुशकिल है, क्योंकि इस बरताव में मन और इन्द्रियों पर चोट पड़ती है, और उस चोट की बरदाश्त हर किसी को नहीं हो सकती है ॥

२–यही सबब है कि कुल्ल मतों में (१) बहुत से लोग तो अपने मत से बिल्कुल नावाक़िफ़ यानी मूरख हैं, और जो (२) थोड़ी बहुत समझ बूझ रखते हैं वह बाचक हैं, यानी ज़बानी अपने मत के हुक्म और क़ायदे सब सुना सकते हैं, पर उनके मुवाफ़िक़ बरताव बिल्कुल नहीं है, और (३) कोई बिरले यानी बहुत कम ऐसे लोग होंगे जो थोड़ी बहुत कोशिश हुक्म और क़ायदों के मुवाफ़िक़ अपना बरताव दुरुस्त करने को कर रहे हैं, और जांच कर देखते हैं कि उन की मिहनत और कोशिश बहुत कम फ़ायदा देती है, यानी मन और इंद्रियां और उनकी तरंगें बहुत ज़बर हैं, और उनकी रोक और अटक बहुत मुशकिल बल्कि नामुमकिन मालूम होती है ॥

३–इससे ज़ाहिर है कि जितने हुक्म हर एक मत के आचार्य ने दिये हैं, वह सब बेकार और बेफ़ायदा हो गये, क्योंकि आम तौर पर उनके मुवाफ़िक़ काररवाई कहीं नज़र नहीं आती है, बल्कि बहुत से मुआमिलों में साफ़ उन हुक्मों के बरख़िलाफ़ यानी उलटा बरताव होता है, और फिर वे लोग अपनी उलटी काररवाई देख कर न शरमाते हैं न पछताते हैं और न ख़ौफ़ मालिक या अपने आचार्य का दिल

में लाते हैं। अब किस तरह यक़ीन किया जावे कि इस क़िस्म के लोग अपने आचार्य का हुक्म मानते हैं, या उनसे उम्मेद अपने उद्धार की रखते हैं। ऐसे लोगों की काररवाई पर पूरा २ भरोसा और एतबार न दुनिया के मुआमिलों में हो सकता है न दीन के मुआमिले में, क्योंकि जब उनका कोई ख़ास मतलब या नफ़े का मुआमिला होगा, उसमें फ़ौरन अपनी बुद्धी और चतुराई के साथ सत्य और असत्य और हक़्क़ और नाहक़ और दूसरे का नुक़सान और हक़्क़-तल्फ़ी का ख्याल छोड़ कर जो कुछ कारवाई होगी उसको फ़ौरन अपने दुनिया के मतलब के पूरा करने के वास्ते उलट पलट कर देंगे॥

४-कोई २ मत में ऐसा लिखा है कि जो कोई हुक्मों को न मानेगा, वह जहन्नुम यानी नरकों में सज़ा पावेगा, और उद्धार उसका नहीं होगा—पर यह डर बहुत कम असर लोगों के दिल पर पैदा करता है, क्योंकि प्रत्यक्ष यानी मौजूदा हाकिम का ख़ौफ़ सज़ा वग़ैरह का यह मन बहुत कम मानता है, और अनेक तरह की तदबीर और जुगती निकाल कर क़ानून के पंजे से अपनी निकासी ढूंढ लेता है, फिर ग़ायब हाकिम यानी मालिक का डर क़ौन माने।

सिवाय इसके विद्या और बुद्धिवान लोगों ने बहुत सी किताबें हर एक मत में ऐसी बनाई हैं, कि जिससे लोगों के दिल से इस बात का यक़ीन भी जाता रहा, कि आया नर्क चौरासी और जहन्नुम वग़ैरह मौजूद हैं—बल्कि ऐसी समझौती उनको दी गई है, कि यह मुक़ामात और सज़ायें वास्ते डराने और धमकाने नादान ज़ीवों के उस्ताद लोगों ने अपनी मान बड़ाई और धन पैदा करने के मतलब से तजवीज़ की हैं, और असल में उनका कहीं वजूद नहीं है॥

५—इस तौर पर आम लोग हर एक मत में थोड़े या बहुत निडर होकर बर्तते हैं, और वहां के हुक्मों के मानने या न मानने की कुछ परवाह नहीं करते, और जो लोग कि अफ़सर और आम लोगों के अगुवा और समझाने बुझाने वाले हैं, वे आपही उन हुक्मों पर जैसा कि चाहिये नहीं चलते, फिर औरों की सम्हाल उनसे क्या हो सकती है॥

६—यहां तक हाल और मतों का बयान किया गया, अब राधास्वामी मत का हाल लिखा जाता है, कि इस मत में जितने हुक्म हैं वह बतौर नसीहत नामा के लिखे गये हैं, और यह उपदेश है कि उन

का मानना वास्ते अपने फ़ायदे और भले के जीवों को मुनासिब और ज़रूर है ॥

७-और उन हुक्मों के साथ ही उपदेश वास्ते कमाने सुरत शब्द योग के लिखा गया है, कि जब तक कोई अभ्यास करके अपने मन और सुरत को इन्द्री घाट से हटा कर, ऊंचे की तरफ़ अपने घट में नहीं चढ़ावेगा, तब तक उसका उद्धार नहीं हो सकता है ॥

८-और यह भी संग २ उपदेश है, कि कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की जो घट २ में मौजूद हैं, सच्चे मन से सरन लेकर जो कोई अभ्यास में लगेगा उसी को मेहर और दया प्राप्त होगी, और वही मेहर और दया आहिस्ता २ एक दिन उसके जीव का सच्चा उद्धार कर देगी, यानी उसकी सुरत को सत्तलोक और राधास्वामी के चरनों में पहुंचा देगी, कि जहां पहुंच कर वह अमर और अजर आनंद पाकर हमेशा को मगन और सुखी हो जावेगी, और जनम मरन और दुख सुख के झगड़ों से हमेशा को उसका बचाव हो जावेगा ॥

९-और राधास्वामी मत में यह भी पहिले ही समझाया जाता है, कि जो कुछ रचना बाहर ब्रह्माण्ड वग़ैरह में मौजूद है, वह सब छोटे नमूने के तौर

पर हर एक आदमी के पिंड में मौजूद हैं, और जो कि कुल्ल मालिक सब जगह मौजूद कहा जाता है, तो हर एक जीव के संग उसके पिंड में भी मौजूद है, इस वास्ते सच्चे मालिक से मिलने का रास्ता राधास्वामी मत में हर एक जीव के घट में बताया जाता है ॥

१०—अब मालूम करो कि करम तीन क़िस्म के हैं, एक संचित करम जो कि आइन्दा जनमों में भोगे जायंगे, दूसरा प्रारब्ध करम जो कि इसी जनम यानी देह में भोगने पड़ेंगे, तीसरे क्रियमान वह करम हैं, जो इस जनम में बनते हैं, और जिनका फल कुछ इसी जनम में और कुछ आगे के जन्मों में भोगना पड़ेगा, और जब तक कि यह तीनों क़िस्म के करम काटे नहीं जावेंगे, तब तक सच्चा और पूरा उद्धार होना मुमकिन नहीं है ॥

११—अब समझना चाहिये कि राधास्वामी मत की खूबी और बड़ाई इस बात में है, कि राधास्वामी दयाल और संतों ने ऐसी जुगत दया करके बताई है, कि उसके कमाने से दिन २ जीव का घाट यानी अस्थान बदलता जावेगा, और इसी कमाई के साथ उसके करम सहज में कटते जावेंगे, और इसी जन्म

में वह संतों की दया से निःकर्म होता जावेगा। फिर जो हुक्म कि नसीहत के तौर पर लिखे हैं, संतों का जीव उनकी मेहर और दया से आप ही अपने मन और इन्द्रियों पर ज़ोर देकर मानता जावेगा, और रफ़्ता २ एक दिन ऐसे मुक़ाम पर पहुंच जावेगा, कि जहां पर करम और भरम और काल और माया का असर इस पर हरगिज़ नहीं पहुंच सकेगा, और इस तौर पर एक दिन अपना पूरा उद्धार जीते जी आप देख लेगा॥

१२–अब वह तरकीब कि जिससे सुरत मन और इन्द्री और पिंड और ब्रह्माण्ड से न्यारी होकर अपने निज घर में पहुंचे, और तीनों क़िस्म के करम यहां के यहां ही कट जावें, तफ़सील के साथ आगे बयान की जाती है, कि जिससे संतों की दया का हाल अच्छी तरह समझ में आवेगा और तब राधा-स्वामी मत की बड़ाई का थोड़ा बहुत यक़ीन मन में आवेगा॥

१३–जिस वक़्त कि जीव राधास्वामी मत में शामिल हूआ, उसी वक़्त से उसको दो क़िस्म का अभ्यास समझाया जाता है–एक वास्ते समेटने मन और सुरत वग़ैरह में मौजूद [illegible]ली बैठक की जगह पिंड में, और

दूसरा वास्ते उनकी चढ़ाने के आकाश में और फिर उसके और पिंड के परे ब्रह्मांड में और फिर उसके भी परे संत अथवा दयाल देश में जहां सच्चा और पूरा और अमर आनंद प्राप्त हो सकता है—और मालूम होवे कि इससे नीचे के देश में ऐसा पूरा और अमर आनंद बसबब मिलौनी माया के हासिल नहीं हो सकता है ॥

१४—पहिले अभ्यास का यह फ़ायदा है कि मन और सुरत जो जगह २ पिंड में और बाहर अनेक पदार्थों और जीवों में बंधे और बिखरे हुए हैं, सिमट कर मध्य में आंखों के परे जमा होवें—वही असली बैठक का अस्थान है ॥

इतने ही अभ्यास में जो दुरुस्ती से बन आवे इस क़दर रस और आनंद मिलेगा और कैफ़ियत नज़र आवेगी, कि इस जीव के दिल में सच्चा शौक़ और प्यार अपने सच्चे और कुल्ल मालिक के चरनों में पैदा हो जावेगा, और अपने घट में सब सामान के भंडार होने का यक़ीन दिल में आवेगा ॥

१५—दूसरे अभ्यास का यह फ़ायदा है कि मन और सुरत धुन की डोरी पकड़ के ऊपर को चढ़ेंगे, और अपने सच्चे और प्यारे मालिक की दया और मेहर

के परचे अंतर में सिवाय मामूली रस और आनंद और कैफ़ियत वग़ैरह के देखने लगेंगे—तब सच्चा प्रेम जागना शुरू होगा, और सच्चा यक़ीन मालिक के हाज़िर और नाज़िर और हर वक़्त अंग संग मौजूद होने का दिल में आता जावेगा—और जिस क़दर यह हालत पैदा होती और आइन्दा बढ़ती जावेगी, उसी क़दर इस जीव के मन में सच्चा ख़ौफ़ अपने सच्चे मालिक की अप्रसन्नता यानी नाराज़गी का पैदा होता जावेगा, और उसी क़दर यह जीव नापसंद और बुरे कामों से आप बचता जावेगा, और जिन कामों के वास्ते हुक्म है और मालिक की प्रसन्नता उसमें हासिल होने की उम्मेद है, उसमें यह जीव आप बर्तने लगेगा ॥

१६—खुलासा यह कि जब कोई काम इस जीव से नाक़िस या नापसंद बनेगा, फ़ौरन उसको मालिक की अप्रसन्नता का हाल अपने अंतर में वक़्त अंतर अभ्यास के मालूम हो जावेगा, यानी उस रोज़ मामूली रस और आनंद भजन का नहीं मिलेगा, और न कुछ ख़ास मेहर और दया मालूम पड़ेगी। इस भारी नुक़सान के ख़ौफ़ से यह जीव आप कोशिश करेगा कि जिस में इस पर दया और मेहर दिन २

ज़्यादा होती रहे, और भजन का रस और आनंद मिलता रहे। इस तरकीब के साथ जीव सच्चे तौर पर आसानी के साथ तामील सच्चे हुक्मों की कर सकता है, और नहीं तो चाहे जिस क़दर पढ़ो और समझो और चाहे जिस क़दर बातें बनाओ, यह मन और इंद्रियां हरगिज़ किसी के क़ाबू में नहीं आवेंगे। कहीं २ अगर किसी ख़ास ख़ौफ़ या दुनियवी नुक़सान के ख़्याल से जो कोई बच रहा या उसने दुरुस्ती से बरताव किया, यह आम जीवों के वास्ते काफ़ी नमूना नहीं हो सकता है। आम तौर पर जो कोई बचेगा वह राधास्वामी दयाल कुल्ल मालिक की दया और संत सतगुरु अपने वक़्त के की मदद से—और उस दया और मदद हासिल करने को राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करना ज़रूर दरकार है, और उसके उसूल और क़ायदों के मुवाफ़िक़ समझ और बूझ सम्हालना चाहिये॥

१७—अब राधास्वामी मत के अभ्यासी के करमों के कटने का हाल सुनो, कि जिस क़दर यह जीव अभ्यास करके ऊपर को चढ़ता जाता है उसी क़दर उसके करमों का दफ़्तर साफ़ होता जाता है, यानी अंदर में जो चेतन्य आकाश है, उस में सब (१)

संचित कर्मों के नकूश मौजूद हैं-जैसे सुरत और मन उस आकाश मंडल से गुज़र करते हैं, वे करम ज़िंदा होकर घड़ियों और पलों में अपना भोग दे देते हैं, और करमों का मैदान इस तरह साफ़ होता चला जाता है। (२) दूसरे प्रारब्ध करमों का असर बसबब निच्त अभ्यास चढ़ाई मन और सुरत के बहुत कम ब्यापता है-यानी जब सुरत आंख के मुक़ाम पर जैसे जाग्रित अवस्था में बैठती है, उस वक़्त संसार और देह के दुख दर्द और चिंता और फ़िकर सब ब्यापते हैं, और जिस क़दर कि सुरत की धार अपने अंतर में मुतवज्जह होवे यानी खिंच जावे, जैसे सोने के वक़्त या गहरे नशे या ग़श की हालत में, या जब कि डाक्टर लोग शीशी सुंघा कर फोड़ा चीरते हैं या बदन काटते हैं, उस वक़्त देह और संसार का दुख और सुख बहुत कम बल्कि बिल्कुल नहीं ब्यापता है, इसी तरह जिस क़दर अभ्यास करके सुरत का अंतर में खिंचाव और चढ़ाव हुआ है, उसी क़दर प्रारब्ध करमों का बेग यानी असर उस अभ्यासी को कम मालूम होवेगा-(३) तीसरे क्रियमान करमों का फल इस तौर पर दूर हो जावेगा कि राधा-स्वामी मत का अभ्यासी जिसने सच्ची सरन राधा-

स्वामी दयाल की ली है, जो कुछ काम ज़रूरी करेगा वह उनकी मेहर और दया और मौज के आसरे करेगा, और फल की इच्छा उनकी मौज और दया के आसरे रक्खेगा--जो मौज मुवाफ़िक़ हुई तो बहुत अच्छा, और जो नामुवाफ़िक़ हुई तो भी बहुत अच्छा, हर हाल में अपने प्यारे मालिक की मौज और मरज़ी के मुवाफ़िक़ अपने मन को चलाना और उसी में राज़ी रहना ॥

जब इस तौर पर अभ्यासी ने करम किये तो उसका बंधन उन करमों और उनके फल में मुतलक़ नहीं हुआ--इस तरह रफ़्ता २ सब करम कटते जावेंगे, और जब अभ्यासी मेहर और दया से त्रिकुटी के मुक़ाम तक पहुंचेगा, तब सब झगड़े और बखेड़े काल और करम और माया और भरम वग़ैरह के नीचे रह जावेंगे, और अभ्यासी की सुरत इन सब से न्यारी होकर अपने निज घर में यानी सत्तलोक और राधास्वामी धाम पर पहुंच कर परम और अमर आनंद को प्राप्त होवेगी ॥

बचन ४

होशियार करना राधास्वामी मत के अभ्यासियों का वास्ते सम्हाल अपने मन और इन्द्रियों के और दुरुस्ती से करने अभ्यास के अपने अंतर में

१—जो लोग कि राधास्वामी मत में शामिल हुए हैं, उनको चाहिये कि जिस क़दर बन सके मन के बिकारों में न बरतें, और अपना भजन और ध्यान होशियारी के साथ करें, कि जिस में मन दुनिया के ख्यालों में बहता न फिरे, और थोड़ी देर को ज़रूर एकाग्र होकर शब्द या स्वरूप में लग जावे, और थोड़ा बहुत रस और आनंद अंतर में पावे ॥

२—जो इस क़दर होशियारी नहीं की जावेगी कि बहुत मन एकाग्र होकर अभ्यास में लगे, तो में कुछ भी रस नहीं आवेगा, और न कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया का परचा अन्तर में मिलेगा, क्योंकि राधास्वामी दयाल का बचन है कि जो कोई मन के बिकारों में बर्तेगा, वे उसका संग स्वामी मत का अगर कुछ मदद नहीं कर सकते ॥

३—मन के बिकारों से मतलब यह है कि पांचों दूत—अहंकार, काम, क्रोध, लोभ, मोह के साथ और दसों इंद्रियों की तरंगों में निडर और निलज्य होकर और ज़रूरी और फ़ज़ूल चाहों का फ़र्क़ न करके बेतकल्लुफ़ बरताव करना। अब इन बिकारों का थोड़ा सा हाल लिखा जाता है॥

१—अहंकार का बर्णन

१—इस अंग की जड़ वहीं समझनी चाहिये जहां से कि अहंग शब्द का ज़हूर हुआ। यह अंग सब से ज़बर है, और सब से पीछे इसका पूरा २ अभाव होगा॥

मान और बड़ाई की चाह हर एक के दिल में इसी अंग के सबब से पैदा होती है॥

२—संतों ने कहा है कि अनेक तरह के मान मन में हर एक आदमी के घसे रहते हैं—जैसे (१) ज़ात पांत का अहंकार, (२) ख़ानदान याने घराने का अहंकार, (३) धन और हकूमत का अहंकार, (४) बिद्या और हुनर का अहंकार, (५) रूप ज़ेवर और पोशाक और सवारी वग़ैरह का अहंकार, (६) देह बल और कुटुम्ब और बिरादरी का अहंकार, (७) क़ौम की बड़ाई का अहंकार, (८) बुद्धी, चतुराई और गुन का

अहंकार, (९) औलाद और नौकर चाकरों का अहंकार, (१०) मकान और जायदाद का अहंकार, (११) इज्ज़त और हुरमत का अहंकार, (१२) बुज़ुर्गों की अमीरी और बड़ाई का अहंकार, (१३) राजों और अमीरों और साहूकारों और बड़े आदमियों से दोस्ती और जान पहिचान होने का अहंकार, (१४) बैराग और त्याग का अहंकार, (१५) और अभ्यास का अहंकार वग़ैरह २ ॥

३—जब तक यह मान मन से दूर न होंगे या किसी क़दर ढीले नहीं पड़ेंगे, तब तक सच्चे मालिक और सतगुरु के चरनों में सच्ची दीनता और सच्चा प्रेम मन में नहीं आवेगा। इस वास्ते हर एक आदमी को चाहिये कि जहां तक बन सके सतगुरु और उनके सतसंग से निष्कपट होकर दीनता के साथ बरताव करे तो कुछ फ़ायदा परमार्थी प्राप्त होगा, और इसी तरह अभ्यास के समय अंतर में भी दीनता के साथ भजन और ध्यान में लगे तब अन्तर में रस आवेगा ॥

शब्द प्रेम बहार

मान मद त्याग करो गुरु संग ॥ टेक ॥

जब लग सजनी मान न छोड़ो।

तब लग रहो तुम तंग ॥ १ ॥

करम भरम जब लग नहिं छूटे ।
नहिं धारो गुरु रंग ॥ २ ॥
वैर ईर्षा नित्त सतावे ।
करत रहो तुम सब से जंग ॥ ३ ॥
याते कहना मान पियारी ।
सीखो भक्ती ढंग ॥ ४ ॥
दीन होय गुरु सरनी आओ ।
चित से चेत करो सतसंग ॥ ५ ॥
गुरु भक्ती की रीत सम्हालो ।
धुन में सुरत लगाओ उमंग ॥ ६ ॥
नित अभ्यास करो अस कोइ दिन ।
प्रेम बसे तुम्हरे अंग अंग ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें ।
होयं करम सब भंग ॥ ८ ॥

२—दूसरा काम का बर्णन

१—यह अंग भी बहुत ज़बर है और जड़ इसकी दसवें द्वार में है, और रचना की तरक्क़ी का सबब यही अंग है ॥

और सब तरह की कामना यानी चाहें इसी अंग के सबब से मन में जीवों के पैदा होती हैं ॥

ब्रह्माण्ड में इस अंग की धार बहुत सूक्ष्म है,

लेकिन पिंड में जिस क़दर कि उतार नीचे को होता गया उसका ज़ोर बहुत बढ़ता गया है ॥

२-परमार्थी अभ्यासियों को लाज़िम है कि इस अंग से बचते रहें, और जो गृहस्ती हैं वह एहतियात के साथ अपना बर्ताव करें, यानी ज़्यादती न होने पावे, नहीं तो अभ्यास के फ़ायदा में कसर पड़ेगी, क्योंकि काम अंग के साथ चेतन्य की धार नीचे को उतरती है ॥

३-काम अंग का असर मन पर बहुत जल्द होता है-इस क़िस्म के बचन सुन कर या पढ़कर या उनका ख़्याल करके या कोई ख़ूबसूरत स्त्री को देख कर या उसका ज़िकर सुन कर या उसकी तसबीर देख कर या औरतों के पास बैठने उठने से या उनके लिबास और पोशाक वग़ैरः के देखने से कामी पुर्षों के मन में फ़ौरन काम अंग जागता है, और चाहे उनको उसका भोग प्राप्त न होवे, लेकिन इसके ख़्याल करने ही में बहुत सा हर्ज और नुक़सान परमार्थी अभ्यासी का हो जाता है, यानी उसके मन की हालत किसी क़दर बदल जाती है, यानी इस क़दर चेतन्य धार का उतार या बहाव हो जाता है, कि कुछ देर तक उसका मन अभ्यास के क़ाबिल नहीं रहता है।

इस वास्ते राधास्वामी मत के अभ्यासी को मुनासिब और लाज़िम है, कि ऐसी हालतों में अपना बचाव रक्खे, यानी ऐसे ख्यालों और ज़िकरों में और ऐसे तमाशा वग़ैरः में शामिल न होवे, और पहिले ही दम अपने मन को उस तरफ़ से हटा लेवे, नहीं तो थोड़ा बहुत शामिल हो जाने पर मन का हटाना बहुत मुश्किल मालूम पड़ेगा बल्कि नामुमकिन होगा ॥

४-मालूम होवे कि यह मन आपही चोर है यानी रस का रसिया है, इस सबब से काम की तरंग और ख्याल और ज़िकर और तमाशे वग़ैरह में यह आपही दौड़ कर जाता है, और उन बातों में रस और मज़ा लेता है ॥

चाहे उस वक़्त परमार्थी बुद्धि याद भी दिलावे, और इसको होशियार भी करावे, पर यह मन रस में आशक्त होकर तवज्जह नहीं करता है, और उन ख्यालों से नहीं हटता जब तक कि पूरा रस अपने ख्याल में नहीं ले लेता है-इस वास्ते परमार्थी को चाहिये कि जिस क़दर होशियारी और एहतियात बने शुरू में ऐसे ख्याल या बातों के करे, और जब उसमें लिपट गया तब जल्दी से नहीं हटता है ॥

५-जो काम की निस्बत ऊपर बयान किया

गया यही हाल कुल्ल कामनाओं का समझना चाहिये, यानी जो कामना जिसके दिल में ज़बर है, वह उस कामना के ख़्याल या बात चीत और बिस्तार वग़ैरः और पूरे करने में ऐसा ही आधीन और आशक्त और बेहोश है, जैसे कामी कामिन के साथ होता है-इस वास्ते परमार्थी अभ्यासी को कोई कामना संसार की बहुत ज़बर नहीं उठाना चाहिये, और न काम अंग में नामुनासिब और नाजायज़ और बेमौक़े बर्ताव करना चाहिये। सब चाहें अपनी राधास्वामी दयाल के चरनों में अर्पण करके, जो कुछ जिस २ मुआमला में मौज से होता जावे, उसको राधास्वामी दयाल की मौज समझ कर उसी पर राज़ी होवे और शुकर करे, और जो किसी मुआमला में ज़रूरत ज़ियादा होवे, तो राधास्वामी दयाल के चरनों में वक़्त भजन के प्रार्थना करे, वे अपनी मेहर और दया से कोई न कोई तरह से इसका काम बनावेंगे, या वह ज़रूरत दूर कर देंगे ॥

३-तीसरा क्रोध का अंग

१-यह अंग भी बहुत ज़बर है, और जड़ इसकी त्रिकुटी में है। जब २ कामना मन के मुवाफ़िक़ पूरी नहीं होती है, तबही क्रोध अंग जागता है, कभी अपने

ऊपर जो कसर अपनी नज़र आती है, और कभी दूसरे पर जो उसकी तरफ़ भरम कसर डालने का इसके मन में पैदा होता है ॥

२–इस अंग के साथ चेतन्य की धार शरीर में या बाहर फैल कर किसी क़दर भस्म हो जाती है, और इस वास्ते अभ्यासी को चाहिये कि इस अंग से बहुत डरता रहे, और जहां तक हो सके इसमें जान कर या भूल कर कभी बर्ताव न करे, सिर्फ़ मसलहत के मुवाफ़िक़ बर्ताव चाहिये, कि जिस में बंदोबस्त अंतर या बाहर दुरुस्ती के साथ जारी रहे, और हर एक अंग या शख़्स अपनी २ कारखाई मुनासिब करता रहे ॥

३–जो कोई मामूल से ज़्यादा ज़ोर सुरत के चढ़ाने के लिये भजन या ध्यान में देते हैं, उनको अकसर यह दोनों अंग यानी काम और क्रोध अंतर में ज़्यादा सताते हैं, बल्कि क्रोध अंग ज़्यादा ज़बर होकर ज़रा २ सी बात में बाहर प्रगट हो जाता है ॥

सबब इसका यह है कि जब सुरत ऊपर को किसी क़दर चढ़ेगी, तो जो वह निर्मल और साफ़ है तो ऊपर ठहर सकेगी, नहीं तो जिस अंग की मलीनता उसमें विशेष करके है, वही अंग प्रगट होकर सुरत

को नीचे उतार लावेगा। जैसे काम की धार अंतर में तरंग उठा कर सुरत को नीचे को गिरा देवे या क्रोध की धार उठ कर सुरत को फैला देवे, इस वास्ते अभ्यासी को अपनी सफ़ाई का ज्यादा ख्याल रखना चाहिये, इस तौर पर कि जाग्रित और स्वपन की हालत में उसके होश दुरुस्त रहें, यानी मन और इन्द्रियां उसकी काम और क्रोध की तरंग के साथ न बहें, तो भजन और ध्यान के समय और उसके पीछे भी थोड़ा बहुत यक़ीन पड़ेगा, कि यह तरंगें उसकी सुरत को नहीं उतारेंगी, और जो जाग्रित के समय मन चलायमान हो जाता है और होश नहीं लाता है, तो अभ्यास के समय या उसके पीछे भी इसकी होशियारी काम नहीं देगी ॥

४—चौथा लोभ का अंग

१—यह अंग बहुत ओछा और नाक़िस है, और शुरूआत इसकी सहसदलकंवल और उसके नीचे से समझना चाहिये—जिस किसी में यह अंग ज़बर है वह परमार्थ से ख़ाली रहेगा, क्योंकि उसकी वृत्ती का ज़बर झुकाव बाहर की तरफ़ पदार्थों में होगा, और ऐसी हालत वाले से अभ्यास सुरत और मन को समेटने और चढ़ाने का नहीं बन सकता ॥

२–सिवाय इसके लोभी पुर्ष कभी संतों के बचन के मुवाफ़िक़ काररवाई नहीं कर सकेगा, क्योंकि वह अपने लोभ की तरंग को पूरा करने के वास्ते जीवों को दुख पहुंचाने और उनका हक़्क़ मेटने में ज़रा ख़ौफ़ नहीं करेगा, और इस सबब से उसको परमार्थ की लाभ नहीं मिल सकेगी ॥

यहां लोभ से मतलब यह है, कि अपने वाजिबी हक़ से ज़्यादा हासिल करने की चाह उठा कर, जिस तरह वह चाह पूरी होवे उसके निमित्त जतन करे, चाहे उसमें जीवों को दुख और नुक़सान पहुंचे ॥

३–लोभी पुर्ष सच्चे परमार्थ और सच्चे प्रेमियों की हमेशा निंद्या करेगा, और आप अपने जीव के सच्चे कल्यान के निमित्त कुछ ख़र्च नहीं कर सकेगा, बल्कि सच्चे प्रेमियों को ख़र्च करते हुए देख कर, बहुत अपने मन में जलेगा और कुढ़ेगा और उनको नादान और मूरख कहेगा, जिसके सबब से अपने सिर पर निंद्या का भार और पाप चढ़ावेगा ॥

४–राधास्वामी मत के अभ्यासियों को लोभ अंग से ज़रूर बचते रहना चाहिये, बल्कि अपने हक़ और वाजिबी आमदनी से मालिक के प्रसन्न करने और जीवों के उपकार के निमित्त कुछ ख़र्च करना चाहिये,

तब कुछ परमार्थ मिलेगा यानी मालिक के चरनों का प्रेम हिरदे में पैदा होगा ॥

५—पांचवां मोह का अंग

१—यह अंग भी लोभ अंग के मुवाफ़िक़ बहुत ओछा और परमार्थ के वास्ते नाक़िस है, और शुरू-आत इसकी सहसदलकंवल और उसके नीचे से है—वाजिबी और मुनासिब तौर का मोह इस क़दर दुख-दाई नहीं है, पर ज़्यादती इसकी बहुत नुक़सान और तकलीफ़ पैदा करती है, और ऐसा आदमी परमार्थ में बहुत कम लग सकता है—क्योंकि वह हमेशा उन लोगों का जिनमें उसको मुहब्बत और मोह विशेष है आधीन रहेगा, और जैसे वह उसको चलावेंगे वैसी चाल चलेगा, फिर उससे सतगुरु और मालिक का बचन जो कि उसके मोहब्बतवालों के मन के ख़िलाफ़ होगा नहीं माना जावेगा, और न मालिक के चरनों में उससे गहिरी प्रीत करी जावेगी ॥

२—मोही आदमी दुनियादारों और कुटुम्बी और बिरादरी के डर और लज्जा से सतसंग भी नहीं कर सकेगा, और इस सबब से उसकी आंख भी नहीं खुलेगी, और बुद्धी भी मलीन यानी संसारी रही आवेगी, और परमार्थ की बड़ाई और ज़रूरत उसके

मन में नहीं समावेगी, बल्कि सच्चे परमार्थ और परमार्थियों की निंद्या करने को तैयार होगा, और जो भक्ती के अंगों में सच्चे परमार्थी और प्रेमी जन बरतेंगे, उनको देख २ करके वह अपने मन में जलता और कुढ़ता रहेगा-इस सबब से सच्चा परमार्थ इस को कभी हासिल न होगा ॥

ईर्षा और विरोध का अंग

४-सिवाय ऊपर के लिखे हुए अंगों के दो अंग और भी हैं, कि वह अहंकार और क्रोध से क़रीब २ मिले हुए हैं-यानी जिसके मन में अहंकार ज्यादा है, उसको दूसरे की मान और बड़ाई देख कर ज़रूर ईर्षा आवेगी, और जो कोई विशेष अहंकारी और क्रोधी है, वह दूसरे से जो वक्त क्रोध या मान बड़ाई के मुआमला में थोड़ा बहुत उसका मुक़ाबला करेगा, विरोध यानी दुश्मनी करने लगेगा-इस तरह यह दोनों अंग ईर्षा और विरोध के उन पांचों अंगों से थोड़े बहुत मिले हुए हैं, अब इनका थोड़ा सा हाल जुदा २ लिखा जाता है, ताकि अभ्यासी जीव इन अंगों से डरते रहें, और जहां तक बने इनके चक्कर में न आवें ॥

ईर्षा का बर्णन

१-अभ्यासी के वास्ते यह अंग बहुत नुक़सान देने

वाला है, क्योंकि जब ईर्षा किसी की तरफ़ से उसकी बुराई देख कर या भरम के सबब से मन में बस जाती है, तब हमेशा उसको देख कर या उसका ज़िकर सुन कर एक क़िस्म की जलन पैदा होती है, कि वह बिरह और प्रेम अंग को थोड़ा बहुत सुखा देती है, और भजन और ध्यान का रस नहीं आने देती है—और जो २ तरंगें कि ईर्षा के सबब से उस शख़्स की तरफ़ उठती हैं, वे भी बिरोध की बढ़ाने वाली और भजन के रस और आनंद से दूर डालने वाली होती हैं—यानी ऐसे ही ख़्याल उठा करते हैं, कि किस तरह उस आदमी को नुक़सान या दुख पहुंचे, और उसकी निंद्या सुनने में चित्त मगन होता है, और आप भी अनेक तरह से उसकी बुराई और निंद्या करता है, यानी अपने ऊपर पाप पर पाप बढ़ाता है—और जो दूसरी तरफ़ से भी बराबर मुक़ाबला होता जावे, तो यह ईर्षा का अंग बिरोध की सूरत पैदा करता है, यानी पूरी दुश्मनी आपस में हो जाती है, और फिर उसके बढ़ाव में और जारी रहने में दोनों का परमार्थी नुक़सान होता है। इस वास्ते अभ्यासी परमार्थी को ईर्षा के अंग में बर्ताव करने से बहुत परहेज़ करना चाहिये, बल्कि जो किसी वक़्त अपना थोड़ा बहुत नुक़सान या हर्ज भी

हो जावे तो कुछ ख़्याल न करे, और जहां तक बने ईर्षा को चित्त में न धसने देवे ॥

२–जो किसी अपने बराबर की बड़ाई या मान प्रतिष्ठा होवे तो उसको देख कर अंतर में जलन न लावे, और यह समझे कि बिना मौज मालिक के कोई बड़ा या छोटा नहीं हो सकता–फिर जो कोई उसके साथ ईर्षा करेगा वह मालिक के हुक्म के साथ बरख़िलाफ़ी करेगा, और हुक्म अदूली के पाप का भागी होगा–इस वास्ते परमार्थी को मुनासिब है, कि अपने काम का फ़िकर करे और दूसरों के काम के झमेले में न पड़े, और अपने चित्त में सदा दीनता रक्खे, और जिसको मालिक बड़ाई देवे, उसके सामने जो अपना काम पड़े ज़रूर दस्तूर के मुवाफ़िक़ दीन होवे और वहां अहंकार न करे, नहीं तो अपना नुक़सान करेगा ॥

बिरोध का बर्णन

१–यह अंग अकसर क्रोध या ईर्षा के पीछे पैदा होता है, और कभी भरम करके भी मन में धस जाता है और फिर बढ़ता चला जाता है–यह अंग भी दूसरे की तरफ़ से अंतर में जलन और ग़ुस्सा पैदा करने वाला है, और जब और जिस घट में यह अंग प्रगट

होगा, भक्ती और दीनता और बिरह और प्रेम को सुखा देगा ॥

२—यह संसारी जीवों का हाल है कि जिस किसी से किसी बात पर नाराज़ हो जावें तो उसके विरोधी हो जावें, पर सच्चे परमार्थी जीवों को हुक्म है कि जहां तक मुनासिब होवे, औरों के क़सूरों को मुआफ़ करें, और उनकी बुराई और ऐब को याद न लावें यानी अपने मन में धसने न देवें, क्योंकि इस में उनके परमार्थ का नुक़सान है ॥

३—सच्चे मालिक को यह अंग जैसे ईर्षा और विरोध और क्रोध वग़ैरः निहायत नापसंद हैं, और जिस घट में इनका थाना है, वहां उसका नूर प्रगट नहीं हो सकता। सच्चा मालिक दीनता और प्रेम को पसंद करता है, सो सच्चे परमार्थी को चाहिये कि अंतर में अपने इन्हीं अंगों का जहां तक बने बर्ताव रक्खे, और ईर्षा और विरोध और क्रोध को न आने देवे, लेकिन बाहर बंदोबस्त के वास्ते और ख़ास कर संसारी लोगों से ब्योहार और बर्ताव के वास्ते, जैसा जहां मुनासिब होवे ज़ाहिरी तौर पर बर्ताव करे, पर अपने मन में किसी से असली बिरोध या ईर्षा को ठहरने न देवे, और जिस क़दर जल्दी हो सके इन ख्यालों

को हटा कर सफ़ाई कर लेवे, ताकि अभ्यास और सतसंग में बहुत विघन न डालने पावें ॥

मन और इन्द्रियों का बर्णन

५—यह मन ज़ाहिरा इन्द्रियों का आधीन मालूम होता है, यानी जिस तरफ़ इन्द्रियां जाती हैं, मन भी उसी तरफ़ जाता है, पर असल में इन्द्रियों की चाल मन के हाल पर मौकूफ़ है, यानी जो मन भोगी और बिलासी है, वह हमेशा इंद्रियों के संग चंचल रहेगा और उसकी इन्द्रियां भी भोगों में भरमती रहेंगी, पर जो मन परमार्थी है वह आप भी किसी क़दर निश्चल रहता है और उसकी इन्द्रियां भी मुनासिब तौर पर और मुनासिब तरफ़ जाती हैं, अंधाधुंध चाल उनकी नहीं होती है ॥

६—इस मन की अजीब बनावट है कि अपनी मानन यानी समझ के मुवाफ़िक़ जल्द दुखी और सुखी हो जाता है, और असली दुख सुख का ख़्याल बहुत कम करता है, इस वास्ते इस बात की बड़ी ज़रूरत है कि परमार्थी जीव पहिले कोई दिन सतगुरु या साधगुरू या सच्चे अभ्यासी सतसंगी का सत संग करे, और बचन चित्त देकर होशियारी के साथ सुने, और उनका मनन भी करे और जो अपने

फ़ायदे की बातें होवें उनको फ़ौरन ग्रहण करता जावे, और जो नुक़सान की बातें होवें उनको छोड़ता जावे, तो कुछ अरसे में ऐसे परमार्थी की समझ और विचार बदल जावेगा, यानी उसकी समझ और हालत परमार्थी होती जावेगी, और संसारी अंग और ख़वास जो कि थोड़े बहुत पशुओं के मुवाफ़िक़ होते हैं दूर होते जावेंगे, और तब इस मन की मानन और समझ बदलेगी यानी दुनियादारों के मुवाफ़िक़ इस का व्योहार और बर्ताव नहीं रहेगा, बल्कि सच्चे भक्त और प्रेमी जनों की समझ और चाल इसमें आती जावेगी ॥

७--मालूम होवे कि परमार्थियों की चाल दुनियादारों की चाल के बरख़िलाफ़ यानी उलटी होती है। दुनियादार धन स्त्री पुत्र और नामवरी के वास्ते जान देने को तैयार होते हैं, और परमार्थी अपने सच्चे मालिक के चरनों पर इन सब को बल्कि अपने तन मन और जान को वारने को तैयार रहता है ॥

उसकी नज़र में मालिक की प्रसन्नता और उसके नूर के दर्शन के बराबर कोई चीज़ रचना भर में नहीं ठहरती है, और दुनियादार धन और नामवरी की सब में ज़्यादा क़दर करते हैं, और मालिक की

तरफ़ से बेख़बर रहते हैं ॥

परमार्थी हर एक के साथ दीनता और प्यार के साथ वर्तना चाहता है पर दुनियादार अहंकार और मान और बेपरवाही की नज़र से हर एक को देखता है ॥

परमार्थी को दुनिया के सामान सब नाशमान और नाचीज़ और दुखदाई नज़र आते हैं, और संसारी इन चीज़ों की बड़ी क़दर करता है, और उन को बड़ी न्यामत और अपने वास्ते निहायत सुखदाई देखता है, इस सबब से परमार्थी और संसारी जीवों का आपस में मेल नहीं हो सकता, क्योंकि उनके मन और समझ की हालत जुदी २ है ॥

८--दुनियादारों की मानन और समझ ग़लत है, और यह ग़लती उनको अख़ीर वक्त पर या निहायत सख़्त तकलीफ़ के वक़्त पर नज़र आती है, कि उस वक्त कोई शख़्स या सामान जिसका उन्होंने बड़ा भरोसा बांधा था उनकी मदद नहीं कर सकता, बल्कि उनको छोड़ कर सब जुदा हो जाते हैं, और परमार्थी ने जो समझ धारन की है, उसका फ़ायदा उसको हर वक्त और तकलीफ़ या अख़ीर के वक्त बहुत ज़्यादा मालूम होता है, यानी जिस

सच्चे मालिक को उसने अपना सच्चा माता और पिता मान कर पकड़ा है और उसकी याद अंतर में बढ़ाई है, वह मालिक दयाल हर वक्त उसकी खबरगीरी करता है, और तकलीफ़ के वक्त ज़रूर मौजूद होकर और अपने दर्शन देकर और कुल्ल तकलीफ़ को फ़ौरन दूर करके महासुख और आनन्द अपने बच्चे को देता है ॥

९--अब समझना चाहिये कि हर एक परमार्थी जीव को परमार्थियों की चाल और समझ धारन करके और चेत कर सतसंग और अभ्यास करके अपने मन और इन्द्रियों की हालत जिस क़दर जल्दी हो सके बदलना चाहिये, कि जिस से हमेशा आनन्द ही आनन्द प्राप्त होता रहे, क्योंकि जब तक यह संसारी या मिलौनी के अंग में थोड़ा बहुत बर्ताव रक्खेगा तब तक सतसंग में भी कभी सुखी और कभी दुखी होता रहेगा, और जब संसारी ख़्वास और चालें मन से निकल जावेंगी तब दुख भी इसके पास नहीं आवेगा, और जो आवेगा तो यह उसको जल्द अपनी समझ बिचार की मदद से दूर कर देगा ॥

खुलासा यह है कि जिस मन में दुनिया और ठहरता है, या के पदार्थों का भाव ज़बर है, सब में ज्यादा

और दुनियादारों के स्वभाव और चाल के मुवाफ़िक़ उसका वर्ताव और ब्योहार है, वही मन संसारी है, और जिस मन में सच्चे मालिक और सतगुरु और सतसंग और सच्चे मालिक के नाम यानी शब्द और प्रेम का भाव ज़बर है, और भक्तों और प्रेमियों की चाल के मुवाफ़िक़ उसका ब्योहार और वर्ताव जारी है, वही परमार्थी मन है ॥

११–ऐसे परमार्थी मन की चाल संसारी मन की चाल से जुदी होगी, और इस वास्ते उसकी इन्द्रियों की चाल और रीत भी संसारी जीवों की इन्द्रियों से जुदी होंगी, यानी परमार्थी की इन्द्रियां चंचल नहीं होवेंगी; और संसारी जीव और माया के पदार्थ और संसारी बातों में उनकी तवज्जह बे ज़रूरत और बग़ैर किसी ख़ास काम के नहीं जावेगी ॥

१२–जो परमार्थी अभ्यासी इस तरह की सम्हाल अपने मन और इन्द्रियों की रक्खेगा, उसको बहुत कम माया और भरम और काल और करम का झटका लगेगा, और अपने अंतर में थोड़ा बहुत रस और आनंद अभ्यास का लेता रहेगा, और सतगुरु राधास्वामी दयाल की दया और मेहर के भी परचे उसको अंतर और बाहर बराबर मिलते जावेंगे, और उसके

सुरत और मन को परमार्थ में पुष्ट और मज़बूत करते जावेंगे ॥

बचन ५

राधास्वामी मत में जो गुरुभक्ती जारी है, उस पर तान मारने वालों का जवाब, और बर्णन इस बात का कि सच्चे परमार्थ और सच्चे उद्धार की प्राप्ती के लिये अपने समय के भेदी और अभ्यासी मनुष्य स्वरूप गुरु से मिलना और उनके साथ दीनता और भाव और प्यार करना बहुत ज़रूर है ॥

१—राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ सुरत यानी रूह कुल्ल मालिक सतपुर्ष राधास्वामी की अंस है, और उन्हीं के चरनों से निकस कर और नीचे उतर कर पिंड में नेत्रों के मुक़ाम पर बैठ कर अपनी देह और दुनिया की काररवाई करती है, और रास्ते में जितने मुक़ाम हैं, उन हर एक मुक़ाम पर ठहरती हुई उतरी है, इसी तौर पर जब संत सतगुरु की दया से उलटने की जुगती का भेद लेकर उसका अभ्यास करेगी

तब हर एक मुक़ाम पर चढ़ती हुई, और वहां कुछ दिन ठहर कर सैर करती हुई, कुछ अरसे में अपने निज अस्थान पर जा पहुंचेगी ॥

२–हर एक अस्थान का जो रूप है, वह आदि में सुरत ने ही वक़्त उतार के धारन किया, और इसी तरह लौटते वक़्त वही रूप उसका हर एक अस्थान पर होता जावेगा ॥

३–उतार के वक़्त जो रूप कि सुरत ने जिस मुक़ाम पर कि धारण किया, वह रूप नीचे की रचना का करता और मालिक है ॥

४–उलटते वक़्त जब तक कि सुरत अपने से ऊपर के अस्थान के रूप में प्यार और भाव लाकर, और उससे मिलने की चाह ज़बर उठा कर, जो जुगत कि संतों ने दया करके बताई है, उसका अभ्यास रोज़-मर्रा शौक़ के साथ न करेगी, तब तक उस अस्थान और स्वरूप की प्राप्ती न होगी, यानी वह मुक़ाम फ़तह न होगा ॥

५–इसी तरह हर एक अस्थान की भावना करके रास्ता चलेगा, और धुर मुक़ाम यानी राधास्वामी के चरनों में पहुंचने का इरादा पक्का और सच्चा करके हर एक रास्ते की मंज़िल को तै करती हुई सुरत

चलेगी, और हर अस्थान पर अपना असली रूप धारन करती हुई जावेगी ॥

६—जो कि हर एक अस्थान का धनी यानी मालिक नीचे की रचना का करता और मालिक है, इस वास्ते इसी क़िस्म का भाव अपने से ऊपर के अस्थान के स्वरूप में धारन करके सुरत को चलना पड़ेगा ॥

७—लेकिन जो कि धार आदि में राधास्वामी दयाल के चरनों से जारी होकर, हर एक अस्थान पर ठहरती हुई, और रूप धर कर रचना करती हुई चली आई है, और जो कि अभ्यासी सुरत को धुर मुक़ाम पर पहुंच कर अपने सच्चे माता पिता और कुल्ल मालिक का दर्शन करना मंजूर है, इस वास्ते उसको मुनासिब और लाज़िम है, कि बजाय इसके कि हर एक मुक़ाम के धनी को मालिक समझ कर उसमें प्यार और भाव लाकर चले, सिर्फ़ कुल्ल मालिक राधास्वामी का ध्यान और उन्हीं के चरनों में प्यार और भाव धर कर रास्ता ते करे, इसमें उसको पूरी मदद और दया हर जगह मिलती जावेगी, और हर मुक़ाम पर इष्ट के बदलने की ज़रूरत न होगी, क्योंकि एक से ज्यादा स्वरूप में सच्चा और पूरा भाव और प्यार नहीं आ सकता है, और जब कि वे सब स्वरूप

रास्ते के सिर्फ़ अपनी २ हद्द में काररवाई कर सकते हैं, और अपने से ऊपर के अस्थान में उनका कुछ दख़ल नहीं पहुंच सकता है, तो वह पूरे और सच्चे करता और मालिक नहीं हो सकते। यह सब कारपरदाज़ यानी कारिन्दे हैं, और राधास्वामी दयाल कुल्ल मालिक और उनका हुक्म सब जगह जारी है, इस वास्ते उन्हीं का इष्ट मज़बूत बांधकर और उन्हीं के चरनों में पूरा प्यार और भाव लाकर चलना चाहिये, तो रास्ता सुखाला और आसानी से तै होगा, और किसी क़िस्म का ख़तरा और बिघन रास्ते में वाक़ा न होगा॥

८—यहां पर इस बात का जताना बहुत ज़रूर है कि जो लोग सत्तपुर्ष राधास्वामी से बे ख़बर रहे, और जिनको सतगुरु भेदी धुर धाम के नहीं मिले, उन्होंने रास्ते में धोखा खाया, यानी जिस मुक़ाम तक जिसकी रसाई हुई, वह उसी मुक़ाम के धनी को मालिक और करता समझ कर वहीं ठहर गये, और आगे चलने का रास्ता उनका बंद हो गया, और इसी सबब से अनेक मत दुनिया में जारी हो गये, पर जिन को कि संत सतगुरु भाग से मिले उनको धुर मुक़ाम यानी राधास्वामी पद का भेद मिला, और वही रास्ते के सब मुक़ामों को तै करते हुए, सच्चे मालिक

के चरनों में पहुँचे और जिस ख़तरे में कि और लोग जिनको धुर मुक़ाम का भेद नहीं मिला पड़कर धोखा खा गये, वे उस ख़तरे से बच गये ॥

९–मालिक के चरनों में प्यार और भाव भी कई तरह पर करते हैं–बाज़ों ने (१) पुत्र भाव यानी मालिक को बाल स्वरूप मान कर प्रीत करी, (२) और किसी २ ने सखाभाव यानी मित्र भाव माना, (३) और कोई स्वामी और सेवक यानी दास भाव क़ायम करते हैं, (४) और बहुत से पति और स्त्री भाव मानते हैं, (५) और बिरले पिता पुत्र भाव मान कर प्रीत करते हैं–हरचंद कि सब का मतलब मालिक के चरनों में प्रीत पैदा करने और बढ़ाने का है, पर इन सब में पति और स्त्री और पिता पुत्र भाव बहुत उम्दा है, बल्कि पिता पुत्र भाव सब में बिहतर और सुखाला और निर्मल और निरबिघन है, और ख़ास कर इस ज़माने में कि जीव निहायत निबल और कमज़ोर हो गया है, और काल के झकोले और माया का लुभाव अनेक रीत से ज़बर हो रहा है, पिता पुत्र भाव में सहज जीव का गुज़ारा यानी उद्धार मुमकिन है, इस वास्ते मुनासिब मालूम होता है कि हर एक सच्चा परमार्थी अभ्यासी राधास्वामी दयाल

के चरनों में माता और पिता भाव धारण करके, तब अपनी प्रीत और प्रतीत बढ़ावे, और संतों से जुक्ती लेकर निच्त उसका अभ्यास बिरह और प्रेम अंग के साथ करे, तो आहिस्ता २ एक दिन उसका कारज बन जावेगा और सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल की दया और मेहर और रक्षा के परचे जीते जी अंतर और बाहर देख कर दिन २ उसकी प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी, और अपने सच्चे और पूरे उद्धार की निस्बत कोई शक उसके दिल में बाक़ी न रहेगा ॥

१०–ऊपर के लिखे हुए हाल से मालूम होगा कि राधास्वामी मत में जो अभ्यास मन और सुरत के समेटने और चढ़ाने का मुक़र्रर है; उसमें इंष्ट और ध्यान सिर्फ़ एक सच्चे और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का धारन किया जाता है, और उन्हीं के चरनों में प्रीत और प्रतीत दिन २ बढ़ाई जाती है, और जो कि हर एक अस्थान पर उनके चरन मौजूद हैं, सो उन्हीं का ध्यान करता हुआ और शब्द की धुन सुनता हुआ अभ्यासी रास्ता तै करता है ॥

११–अब ख्याल करो कि अभ्यासी या उलटने वाली सुरत हर एक अस्थान पर अपने ही स्वरूप को

सम्हालती हुई, यानी धारन करती हुई चली जाती है, और राधास्वामी दयाल के चरनों की धार अथवा धुन की डोरी पकड़ कर, रास्ता सुखाला तै करती है, और किसी ग़ैर की पूजा और ध्यान का सिवाय कुल्ल मालिक के इस मत के अभ्यास में दख़ल नहीं है। जब कुल अस्थान तै हो गये, तब सुरत अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल के सनमुख पहुंच कर दर्शन का आनन्द और बिलास करती है, और उस को ताक़त हासिल हो जाती है, कि जब चाहे जब चरनों में मिल जावे और जब चाहे जब अलहिदा हो कर, सनमुख दर्शन का रस लेवे॥

१२—चरन से मतलब यह है, कि सुरत यानी चेतन्य की धार, जो ऊंचे देश से उतर कर आई है, और उसी ही धार का सिलसिला धुरपद से लगा हुआ है, वही उस कुल्ल मालिक का चरन है, यानी उसकी धार दूर से दूर तक फैली और पसरी हुई है, और चेतन्य शक्ती उसी के वसीले से हर जगह पहुंचती है, और दया और मेहर की धार भी उसी धार के साथ रवां होती है॥

१३—अब ख्याल करो कि जो संत सतगुरु की रसाई यानी पहुंच ऊंचेसे ऊंचे अस्थान तक शब्द की धार

के साथ है, उन में और उस धार में और फिर उस धार के भंडार में किसी तरह का फ़र्क़ और भेद नहीं रहा--हर एक अस्थान का स्वरूप उनका स्वरूप हुआ, और वही स्वरूप असल में सब सुरतों के स्वरूप हैं। जो वक़्त उतार के राधास्वामी दयाल के चरनों से हर एक सुरत धारन करती हुई चली आई है। फिर ऐसे संत सतगुरु की पूजा और उनके चरनों में भाव और प्यार करना ऐसे है जैसे अपने स्वरूपों में प्यार और भाव और कुल्ल मालिक की पूजा और उसके चरनों में प्यार और भाव करना॥

१४–जिनकी दृष्टी अस्थूल और मोटी है, और अंतर भेद की उनको ख़बर नहीं है। वे ऐसा ख्याल करेंगे कि ऐसे संत सतगुरु की पूजा आदमी की पूजा है, और ऐसा कहेंगे कि यह पूजा और प्यार और भाव मालिक की पूजा और प्यार और भाव के मुक़ाबिले में किसी तरह दुरुस्त और सही नहीं हो सकती, पर इस बात के कहने से उन लोगों की निहायत दरजे की बेख़बरी और बिना सोच और बिचार के ओछी समझ ज़ाहिर होती है, जैसा कि नीचे के लिखे हुए बयान से मालूम होगा॥

१५–इस लोक की रचना में सब में उत्तम और श्रेष्ठ मनुष्य शरीर है, यानी वह कुल्ल जानदारों का हाकिम और अफ़सर है, और सब चीज़ पर थोड़ा या बहुत उसका हुक्म जारी है, और सब जानदारों और चीज़ों से वह जैसा २ मुनासिब समझता है काम लेता है, और कुल्ल इल्म और अक्ल और हुनर और फ़न और कारीगरी और चालाकी और बंदोबस्त की तजवीज़ें उसी मनुष्य स्वरूप से ज़ाहिर हुए॥

१६–जो ईश्वर और परमेश्वर या मालिक या कोई उसकी अंस या कला इस लोक में वास्ते सिखाने या जारी करने नई और फ़ायदेमन्द चाल या इल्म या अक्ल के प्रघट हुए, उसने भी वही उत्तम और श्रेष्ठ मनुष्य स्वरूप धारन करके काररवाई करी। इसी तरह जो कोई भारी विद्यावान या नीत के बनाने और चलाने वाले या हकीम या वैद्य या डाक्तर या और कोई हुनर और कारीगरी वाले ज़ाहिर हुए, वह भी मनुष्य स्वरूप में प्रघट हुए, और उसी स्वरूप से सब चालें चलाईं, और लोगों को विद्या और बुद्धी और हुनर और कारीगरी की बातें सिखलाईं॥

१७–इसी तरह संत सतगुरु ने अपने साथ और मालिक के चरनों में प्यार और भाव करने की विधी समझाई, और मालिक का पता और भेद भी उन्होंने

यानी संत सतगुरु ने मनुष्य स्वरूप धर कर प्रघट किया, और यह संत सतगुरु सुतः संत थे, यानी आप ही आप उस ऊंचे अस्थान से आये और बिना किसी से सीखे हुए या सुने हुए असली भेद सच्चे मालिक का उन्होंने प्रघट किया, इसी तरह सुतः जोगेश्वरों ने ब्रह्म पारब्रह्म पद का भेद और जुगत उसके प्राप्ती की प्रघट करी, और उनके बचन और बानी को सब कोई बड़ा और ईश्वर का हुक्म मानते हैं॥

१८–बल्कि इसी तरह नई २ बात बिद्या और बुद्धी की भी आदि में और वक्त़ २ पर किसी न किसी मनुष्य ने बिना किसी से सीखे हुए ज़ाहिर करी, और सब लोग इस बात के क़ायल हैं कि वे मनुष्य उन नई बातों और चालों के पैदा करनेवाले हुए और उनको आज तक सब कोई बड़ा मान कर उनकी ताज़ीम और अदब करते हैं, और उनकी बानी और बचन को सनद मानते हैं, और उसके मुवाफ़िक़ औरों के बचन और बानी की तौल और जांच करते हैं॥

१९–जिस क़दर कि आसमानी किताबें हैं, जैसे कि चारों वेद और सरावगियों का आदि पुरान और मुसलमानों का कुरान और ईसाइयों की अंजील, सब मनुष्य स्वरूप ऋषीश्वर या मुनीश्वर या आचार्य

या पैग़म्बरों से प्रघट हुए हैं, और जो कि वह परमेश्वर के कलाम यानी वाक्य माने जाते हैं, तो ज़ाहिर है कि परमेश्वर ने अपने बचन मनुष्य द्वारे कहे और प्रघट किये, और उन ऋषीश्वरों और पैग़म्बरों को जो कि मनुष्य स्वरूप थे परमेश्वर के ख़ास मेली या मुसाहब या उसके भेद की ख़बर देने वाले मानते हैं, और उनकी बानी और बचन को ख़ास मालिक का कलाम समझते हैं, और उन्हीं के वसीले से अपना उद्धार और मालिक के दरबार में पहुंचने का यक़ीन करते हैं, और उनका दरजा मालिक के दरजे से दूसरा मान कर उनकी ताज़ीम और अदब और उनके चरनों में भाव और प्यार थोड़ा बहुत मालिक ही के मुवाफ़िक़ करते हैं ॥

२०–यह दस्तूर जो ऊपर लिखा गया कुल्ल मज़हबों में जारी है, यानी जो लोग कि मालिक का औतार स्वरूप मानते हैं या उसके भेद का हासिल होना ऋषीश्वर या आचार्य या पैग़म्बरों की मार्फ़त मानते हैं। यह दोनों फ़िरके मनुष्य स्वरूप की पूजा या उसी स्वरूप में भाव और प्यार कर रहे हैं--इन दोनों गिरोह से ख़ारिज कोई नहीं है–सब लोग चाहे किसी मत में होवें इन्हीं दोनों फ़िरक़ों में से हैं–सिवाय

नास्तिकों के कि वे मालिक के क़ायल नहीं हैं, पर वे भी किसी न किसी मनुष्य स्वरूप आचार्य के जिसने उनकी किताबें बनाईं और नास्तिक मत जारी किया क़ायल हैं, और उसको अपने से बड़ा और अपना पेशवा मान कर उसके बचन के मुवाफ़िक़ काररवाई करते हैं ॥

२१–जो लोग कि औतार स्वरूप या देवताओं की मूरतें या तसवीरें बना कर पूजते हैं या उनकी ताज़ीम करते हैं; वह सब सूरतें मनुष्य स्वरूप की हैं ॥

२२–इसी तरह से जो कोई किसी महात्मा या बुज़ुर्ग के निशान या उनकी कोई बरती हुई चीज़ या उनके कलाम और बचन या उनकी समाध या तुरबत या मज़ार की पूजा भेंट या ताज़ीम करते हैं; या उनकी कोई चीज़ वास्ते अपनी रक्षा के इस्तेमाल में लाते हैं, वह भी किसी मनुष्य स्वरूप की परशादी या निशान या बचन है--जैसे गुरू और महात्माओं की खड़ाम या जूता या पलंग या कोई कपड़ा या बर्तन या त्रिशूल या सूली का निशान या छोटी तसवीर या मुसल्मानों में कलमा या कोई आयत कुरान की और हिन्दुओं में कोई मंत्र या जंत्र सोने चांदी या तांबे या भोजपत्र या काग़ज़ वग़ैरह पर

लिख कर गले में डालते हैं, या बाजुओं पर बांधते हैं, या अंगूठी में रखते हैं ॥

२३–ऊपर के लिखे हुए हाल से साफ़ ज़ाहिर है कि क्या परमार्थ क्या स्वार्थ में, जितनी बातें या चीजें हैं, सब मनुष्य स्वरूप से प्रघट हुईं, और सब जगह मनुष्य स्वरूप का ही भाव और प्यार और पूजा और अदब और ताज़ीम जारी है, और मनुष्य स्वरूप ही के बानी और बचन और क़ायदे बांधे हुए पर अमल दरामद और काररवाई हर मुआमले में हो रही है ॥

२४--और जिस वक़्त में कि वे महात्मा और बुज़ुर्ग जिनकी ऐसी महिमा है मौजूद होंगे, उस वक़्त में उनके संगी और मानने वाले उनके साथ ऐसा ही बल्कि इस से ज़्यादा बरताव करते रहे होंगे, जैसा कि अब उनकी नक़ल (यानी मूरत) और निशानों से कर रहे हैं ॥

२५--फिर जो राधास्वामी मत में परम पुर्ष पूरन धनी राधास्वामी दयाल की (जो संत रूप धर कर प्रघट हुए और जिन्हों ने दया करके निज भेद सच्चे मालिक यानी अपने निज रूप का और सहज जुगत उसकी प्राप्ती की समझाई) जिस क़दर भक्ती और

भाव और प्यार और अदब और ताज़ीम की गई या की जाती है या करी जावे, वह उनके दरजे और दया के मुक़ाबिला में थोड़ी से थोड़ी और कम से कम है ॥

२६--जो लोग कि ऐसी भक्ती और भाव और प्यार को देख कर ख्याल करते हैं या तान मारते हैं कि इस मत में मनुष्य गुरू की पूजा है, वे किस क़दर ग़लती और ग़फ़लत और नादानी के घेर में पड़े हुए हैं, और कैसे बे सोचे और बे समझे और बे विचारे बातें बना कर हंसी उड़ाते हैं ॥

२७--इस समय में कितनी ही संगत और सभायें इस क़िस्म की जारी हैं जो गुरु स्वरूप और मालिक के मनुष्य स्वरूप को अपनी ओछी बुद्धि और समझ के मुवाफ़िक़ नहीं मानते हैं, और न उससे मदद लेने की कुछ ज़रूरत समझते हैं, फिर ऐसे लोगों को सच्चा परमार्थ जिसकी प्राप्ती निज घट के मानसी और रूहानी अभ्यास के पूरे होने पर मुनहसर है कैसे हासिल हो सकता है। विद्या पढ़ कर बुद्धी की मदद से पोथियों का पाठ कर लें और अस्तुत और भजन वग़ैरः गा लेवें, मगर भेद के ग्रन्थों से भेद और जुगती का दरियाफ़्त करना और उसके मुवाफ़िक़ अपने अंतर

में अभ्यास और काररवाई करके रस और आनन्द लेना बग़ैर मदद भेदी और अभ्यासी गुरू के हरगिज़ २ मुमकिन नहीं है। यही सबब है कि विद्यावान और अनपढ़ और करमी जीवों की हालत कभी नहीं बदलती, चाहे वे सालहासाल और जुगान जुग पोथी पढ़ने और पढ़ाने और भजन और अस्तुत गाने और सुनने और मूरत पूजा और तीरथ बर्त का अभ्यास करते रहें, क्योंकि उनकी सुरत यानी जीवआत्मा का घाट उन कामों से नहीं बदलता है, बल्कि दिन २ संसार में लिपट कर धन और मान और बड़ाई की आसा और तृश्ना बढ़ती जाती है, और सच्चे मालिक के चरनों का प्रेम या उसके मिलने की चाह एक ज़र्रा भी उनके मन में पैदा नहीं होती॥

२८--विद्या पढ़ कर जो कोई चाहे कि इल्म हिसाब और नजूम यानी ज्योतिष और इल्म कीमिया और इल्म पैमाइश और बहुत से इल्मों की किताबें पढ़ कर सीख लेवे, तो बग़ैर मदद उस्ताद के वह किताबें हरगिज़ समझ में नहीं आवेंगी--इसी तरह कोई विद्यावान परमार्थी भेद और अभ्यास की किताबें पढ़ कर जो समझना चाहे और उनके मुवाफ़िक़ घट में अभ्यास करने का इरादा करे, वह बग़ैर भेदी और अभ्यासी गुरू के हरगिज़ २ नहीं कर सकता है॥

२९–इससे साफ़ ज़ाहिर है कि जो लोग भेदी और अभ्यासी गुरू का खोज नहीं करते और जो वे मिलें तो अपनी विद्या और बुद्धी के अहंकार में उन से कुछ मदद लेना या दरियाफ़्त करना नहीं चाहते, और न उनको अपने से बड़ा मान कर उनके सामने दीन अधीन होना चाहते हैं, और जिनका परमार्थ सिर्फ़ इखलाक़ी और मालिक की सिफ़त यानी करम और धरम और अस्तुत की पोथियों के पढ़ने और पढ़ाने पर मुनहसर है, या बाहरमुखी करम के शास्त्र या किताबें पढ़ कर उनके मुवाफ़िक़ काररवाई करते या कराते हैं, और जो पिछली टेक में बंधे हुए हैं, यानी पुराने गुज़रे हुए महात्माओं को या औतारों या बुज़ुर्गों या देवताओं को मानते हैं, और अपने वक़्त के भेदी और अभ्यासी गुरू और महात्मा का खोज नहीं करते, और न उन से किसी क़िस्म की मदद लेने की ज़रूरत समझते हैं, इस क़िस्म के सब जीव करमी और शरई हैं, और सच्चे परमार्थ से जिससे जीव का सच्चा उद्धार और सच्ची मुक्ती हासिल होना मुमकिन है, बिलकुल ख़ाली हैं, और जब तक ऐसी हालत उन की रहेगी यानी अपने वक़्त के भेदी और अभ्यासी गुरू से मिल कर और जुगत दरियाफ़्त करके अभ्यास

नहीं करेंगे, तब तक वे सच्चे परमार्थ से ख़ाली रहेंगे, और उनका जनम मरन और देह सम्बन्धी दुख सुख भोगने का चक्कर कभी नहीं छूटेगा, यानी अपने शुभ अशुभ करमों के अनुसार ऊंच नीच देश और जोन में दुख सुख भोगते रहेंगे ॥

अर्थ शब्द नम्बर २३ सफ़ा ८८४
पोथी सार बचन नज़म

कड़ी

१–गूंगे ने गुड़ खाइया। वह कैसे कहै बनाय ॥

अर्थ

ज़िसने कि अपने घट में शब्द का गहिरा रस पाया, वह उसको क्योंकर बयान कर सकता है। उसका हाल वही होगा जैसे कि गूंगे का जो गुड़ खाकर उसके स्वाद के बयान करने से लाचार है–और यह कि ज़िस किसी को गहिरा रस अंतर में आया वही उसके प्रघट करने में आम लोगों के सामने गूंगा हो गया ॥

कड़ी

२–बहरे ने धुन पाइया। वह क्योंकर कहै सुनाय ॥

अर्थ

ज़िसने कि दुनिया की तरफ़ से अपने कान बन्द

किये उसी को अंतर में शब्द खुला फिर वह उस शब्द और आनन्द के भेद को आम लोगों को कैसे जतावे या सुनावे ॥

कड़ी

३—अंधे मोती पोलिया । वह किसे दिखावन जाय ॥

अर्थ

जिसनें कि अपनी नज़र दुनिया की तरफ़ से खींच ली यानी आंखें बन्द कर लीं उसी ने अपनी सुरत की धार को दसवें द्वार में पहुंचाया यानी मोती पोलिया फिर वह इस कैफ़ियत को अवाम को कैसे दिखा सकता है ॥

कड़ी

४—लूले ने नभ थामिया । यह अचरज कहा न जाय ॥

अर्थ

जो मन कि दुनिया में दौड़ने से रह गया यानी जिसने चंचलता छोड़ दी उसी ने चढ़ कर नभ यानी आकाश को थाम लिया और यही अचरज की बात है ॥

कड़ी

५—पिंगला परबत चढ़ गया । कोइ साधू जाने ताहि ॥

अर्थ

जो मन कि निश्चल हो गया वही पिंगला है और

वही सतगुरु की दया से सुमेर पर्बत यानी त्रिकुटी पर चढ़ गया--इस हाल को कोई अभ्यासी यानी साधू समझता है ॥

कड़ी

६--रोगी सद जीवत रहे। बिन रोगहि मर मर जाय ॥

अर्थ

जो कोई मालिक के चरनों के इश्क़ यानी प्रेम का बीमार हुआ और जिस किसी ने अपने मन को बीमार जान कर सतगुरु से उसका इलाज कराना शुरू किया वही एक दिन अमर पद में पहुंच कर अमर हो जावेगा और जिस किसी को प्रेम की बीमारी नहीं लगी या जिसने अपने मन की बीमारी की ख़बर न ली यानी अपने को निर्मल और चंगा समझा वह बारम्बार जनमेगा और मरेगा ॥

कड़ी

७--सोगी नित हरषत रहे। बिन सोग चौरासी जाय ॥

अर्थ

जो अपने प्रीतम सच्चे मालिक के वियोग की बिरह में उदास और ग़मगीन रहता है, वह दिन २ अंतर में चरन रस पाकर मगन होता जावेगा, और जिस किसी के हिरदे में मालिक के चरनों का बिरह और

प्रेम नहीं है, वही मनुष्य चौरासी जोन में भरमता रहेगा ॥

कड़ी

८--चिंता में जो नित रहे। सो मिले अचिंते आय ॥

अर्थ

जो कोई अपने मालिक के मिलने और अपने जीव का सच्चा उद्धार और कल्यान करने की चिंता में रहता है वही एक दिन अचिंत पुर्ष यानी सच्चे मालिक से मिल कर निचिंत हो जावेगा ॥

कड़ी

९--वैरागी भरमत फिरै। रागी मुक्ति समाय ॥

अर्थ

जिस किसी ने संसार से वैराग किया यानी घर बार छोड़ कर भेष ले लिया, और मालिक के चरनों का प्रेम और प्यार उसके मन में नहीं आया, तो वह हमेशा चारों खानों में भरमता रहेगा, और जिस किसी के मन में मालिक के चरनों का राग और प्रेम समाया वही एक दिन मुक्ति पद में पहुंच जावेगा ॥

कड़ी

१०--सतगुरु यह परचा दिया। कोई बिरले खोज कराय ॥

अर्थ

सतगुरु ने इस तरह से सच्चे प्रेमियों को उनके घट में परचे दिये सो इस बात को सुन कर कोई विरले जीव उसके खोज और तलाश में लगेंगे ॥

कड़ी

११–अंतरमुख जो शब्द में। लेंगे बूझ बुझाय ॥

अर्थ

और जो अपने अंतर में शब्द का अभ्यास करेंगे, वही इस कैफ़ियत को समझेंगे, और अपने घट में निरख और परख कर बूझेंगे ॥

कड़ी

१२--राधास्वामी कह दिया। तुम लेना शब्द कमाय ॥

अर्थ

इस वास्ते सतगुरु राधास्वामी दयाल सब जीवों को पुकार कर कहते हैं, कि हे भाइयो शब्द की कमाई करो, और अपने घट में रस और आनन्द लो और दया और मेहर के परचे देखो ॥

बचन ६

राधास्वामी मत करनी का है, सिर्फ़ बिद्या और बुद्धि के समझ और बिचार का नहीं है।

१–राधास्वामी मत करनी का है, निरी समझ बूझ

और बातों का मत नहीं है। जिस किसी को कि सच्चा फ़िकर अपने जीव के कल्यान का है, और जनम मरन का दुख और देह धर कर जो दुख सुख सहना पड़ता है उसका ख़ौफ़ दिल में आया है, और अपने सच्चे मालिक माता पिता की महिमा को सुन कर दर्शनों का सच्चा दर्द मन में पैदा हुआ है, उसी से थोड़ा बहुत अभ्यास उस जुक्ती यानी सुरत शब्द मारग का जो वास्ते प्राप्ती सच्चे उद्धार के राधास्वामी दयाल ने उपदेश की है बन पड़ेगा, और उसका फ़ायदा अंतर में थोड़ा बहुत मालूम होता जावेगा, जिससे शौक़ कमाई करने का और प्रीत और प्रतीत राधास्वामी दयाल के चरनों में बढ़ती जावेगी॥

२--जो ऐसे जीव राधास्वामी मत में शामिल होवें उनको पहिले इन पांच बातों का दुरुस्ती से समझ कर यक़ीन करना चाहिये॥

३--पहिली यह बात कि राधास्वामी दयाल कुल्ल मालिक और सर्ब समरत्थ और ऐन आनंद और प्रेम स्वरूप हैं, और उनका धाम ऊंचे से ऊंचा है जहां से कि उनकी अंस यानी धार अथवा किरनियों के वसीले से काररवाई कुल्ल रचना की हो रही है॥

इसका सरासरी या ज़ाहिरा सबूत यह है कि इस

देश की कुल्ल रचना और उसका पालन और ज़िन्दगी यानी ठहराव सूरज की रोशनी और गरमी के आसरे है, जो कि बनिस्बत इस लोक के चेतन्य के विशेष चेतन्य है, इसी तरह यह सूरज और उसकी रचना और उसका ठहराव दूसरे सूरज के आसरे है जो इससे निहायत बड़ा और बिशेष चेतन्य है, और जिसके गिर्द यह सूरज मय सब अपने तारों यानी कुटुम्ब और परिवार के घूम रहा है ॥

इस सूरज का नाम परमात्मा है--ऐसे ही परमात्मा रूपी सूरज मय अपने सूरजों के (जो उस का कुटुम्ब और परिवार है) ब्रह्म रूपी सूरज के गिर्द जो त्रिलोकी नाथ है घूम रहा है, और यह ब्रह्म रूपी सूरज सत्तपुर्ष स्वरूप निज सूरज की अंस है, और उसी के आसरे उसकी काररवाई जारी है, और सत्तपुर्ष कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के जो सब के निज भंडार और सोत पोत हैं आधीन है ॥

यह हमारा सूरज और उसकी काररवाई इस आंख से नज़र आती है, और परमात्मा रूपी सूरज की मौजूदगी आकाशी रचना के इल्मवालों के बचन से जिन्हों ने बड़ी से बड़ी और उम्दा दूरबीन

लगा कर जांच करी है साबित है--वह सूरज उन को दूरबीन से भी दिखलाई नहीं दिया, पर इस सूरज का उसकी तरफ़ चलना यानी उसके गिर्द घूमना अच्छी तरह से मालूम हुआ, और उस के ऊपर ब्रह्म रूपी सूरज का इशारा जोगीश्वरों ने किया है, और उसके परे के दो अस्थान यानी सत्त-पुर्ष और राधास्वामी का भेद संत और परम संतों ने खोल कर अपनी बानी और बचन में लिखा है, और वह दोनों धाम निर्मल चेतन्य देश की हद्द में हैं, और ब्रह्म रूपी सूरज ब्रह्माण्ड में है जहां शुद्ध माया है, और आत्मा रूपी सूरज जो हमारा सूरज है और यह हमारा लोक मलीन माया के देश में है, जब कि तीन सूरज यानी आत्मा और परमात्मा और ब्रह्म स्वरूप का मौजूद होना किसी क़दर इस आंख से दीखता है, और कुछ नजूमियों और जोगीश्वरों के बचन से मालूम हुआ, तो बाक़ी दो अस्थानों का भेद और उनका मौजूद होना संतों के बचन के मुवाफ़िक़ मानना चाहिये–खुलासा यह कि यह रचना बराबर एक से एक बड़े की ताक़त और सम्हाल से हो रही है और ठहरी हुई है, तो जो इन सब में ऊंचे से ऊंचा और सब का अख़ीर है, वही

सब का निज भंडार और कुल्ल मालिक और सर्ब समरत्थ है, और उसी का नाम राधास्वामी दयाल है ॥

४—इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो राधास्वामी मत में वास्ते अपने जीव के उद्धार के शामिल होवें, इस धुर पद राधास्वामी दयाल का निश्चय करके और उसी धाम में पहुंचने का इरादा सच्चा और मज़बूत करके, जो जुगत सुरत शब्द मारग की बताई जाती है, उसका अभ्यास प्रेम और अनुराग के साथ शुरू करना चाहिये, और जोकि और मत वाले इस धुर धाम तक नहीं पहुंचे और उन में से कोई परमात्मा और कोई ब्रह्म तक पहुंच कर रास्ते में ठहर गये, इस वास्ते राधास्वामी मत के अभ्यासियों को, इन मतवालों की बातें सुनकर भूलना और भरमना या अपने अभ्यास में ढीले और सुस्त हो जाना, नहीं चाहिये ॥

५—जो कि सर्ब ज्ञान और समझ बूझ और सब तरह का रस और आनंद और सरूर सुरत की धार के आसरे है, जो इन्द्रियों के वसीले से कुल्ल कारवाई पिण्ड में और उसके बाहर करती है, इस वास्ते जो सुरत का निज भण्डार है, वह कुल्ल ज्ञान और आनन्द और प्रेम का भण्डार है । और मालूम होवे

कि कुल्ल रचना प्रेम के आसरे ठहरी हुई है, और प्रेम के ही वसीले से काररवाई कुल्ल रचना में हो रही है, यानी जहां और जिस काम में जिसकी थोड़ी बहुत मोहब्बत है, वह उसी जगह और उसी काम में तवज्जह और कोशिश करता है, और प्रेम से मतलब खैंच और मिलाव शक्ती से है, जिसको फ़ारसी में कूवत जाज़बा कहते हैं ॥

६–दूसरी यह बात कि सुरत या रूह या जीव आत्मा राधास्वामी दयाल की अंस यानी धार है, और उसका निज घर उनके चरनों में है ॥

७–इस बात का सबूत ज़ाहिर है कि इस लोक में बल्कि कुल्ल रचना में दो वस्तु यानी चेतन्य और जड़ मौजूद हैं, और चेतन्य ही की मदद से रचना होती है, और उसी के संग उसका ठहराव है, और जब वह किसी पिण्ड को छोड़ देता है तब उस पिण्ड के नाम और रूप का अभाव हो जाता है, तो कुल्ल रचना में सत्त और समरत्थ वही चेतन्य यानी सुरत की धार है–जिस जगह यानी जिस पिण्ड में कि यह दाख़िल होती है या धार रूप होकर बीज से प्रघट होती है, वहीं काररवाई देह के बनाव और बढ़ाव और सम्हाल की जारी हो जाती है, और

पांचों तत्त्व और तीनों गुन जो कि कुल्ल रचना के मसाले के असली जुज़ यानी बड़े पदार्थ हैं, वहां हाज़िर और मौजूद हो कर और आपस में रल मिल कर सुरत की धार की ताबेदारी में दुरुस्ती से उस काररवाई में मदद देते हैं, और जब सुरत की धार पिण्ड से खिंच कर अलहिदा हो जाती है, तब छिन पल में देह की सूरत बदलती जाती है, और थोड़े अरसे में उसका अभाव हो जाता है ॥

८--इससे साफ़ ज़ाहिर है कि यह सब रचना सुरत की धार के आसरे ठहरी हुई है, और इसी की शक्ती से प्रघट हुई, और इसके बियोग से उसका अभाव हो जाता है, तो इस अंस की ताक़त थोड़ी बहुत वैसी ही हुई जैसी कि कुल्ल मालिक की ताक़त है--यानी जो चेतन्य कि इस लोक में और तमाम रचना में मौजूद है, और सुरत यानी धार रूप होकर जुदा २ पिंड की सम्हाल कर रहा है, और जिस के सबब से यहां और सब जगह रचना सत्त मालूम होती है, वह उस महा चेतन्य कुल्ल मालिक की अंस है, और जो जड़ पदार्थ नज़र आता है वह माया की अंस है ॥

९-तीसरी बात यह कि इस सुरत यानी जीव को

अपने सच्चे माता पिता और कुल्ल मालिक राधा-स्वामी दयाल की सच्ची सरन लेकर कुल्ल काररवाई करना चाहिये, क्योंकि कुल्ल जीव यानी सुरतें राधा-स्वामी दयाल की अंस हैं, और अब उन्हीं के चरनों की धार से ताक़त लेकर हर एक पिंड में काररवाई कर रहीं हैं, फिर सब तरह से वह राधास्वामी दयाल की दया यानी चरनों की धार के आधीन हैं। इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है, कि परमार्थी जीव अपना अहंकार करनी का छोड़कर, उनकी मौज और दया के आसरे काम करें तो उसमें उनकी दया की भी परख आवेगी, और इसका बंधन उन कामों में नहीं होगा या बहुत कम होगा, और परमार्थी कार-रवाई में बहुत मदद मिलेगी और तरक्क़ी भी जल्द होगी ॥

१०—इसका सबूत भी थोड़ा बहुत इस बयान से ज़ाहिर होगा, कि हर एक आदमी की देह और इंद्रियों और मन की काररवाई सुरत की धार के ऊपर मुन-हसर यानी उसके आधीन है, यानी जब तक कि धार पिंड में न आवेगी, और अंग २ में न फैलेगी, तब तक पूरी २ काररवाई देह की जारी न होगी, और यह धार ऊपर की धार से जो दसवें द्वार से

आती है मदद लेती है, और दसवें द्वार को दयाल देश से मदद मिलती है, इस तरह पर कुल्ल रचना सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की दया के आसरे ठहरी हुई है, और काररवाई कर रही है, फिर उनके चरनों की सरन लेना कोई नई बात नहीं है, क्योंकि असल में कुल्ल रचना उनकी सरन में है ॥

११-और मालूम होवे कि काररवाई से यहां मतलब रचना की सम्हाल से है, और बाक़ी जीवों की कार-रवाई अपने २ अगले पिछले और हाल के करम और बासना के अनुसार होती है, और जैसा २ उसका फल है वह भोगते हैं, पर जो जीव कि सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की सरन में आये और मौज और दया के आसरे और भरोसे अभ्यास करने लगे, उनके पिछले कर्म आहिस्ता २ कटते जावेंगे, और प्रारब्ध करम का भोग दया से बहुत हलका हो जावेगा, और आइंदा को जो करम ज़रूरी और वाजिबी राधास्वामी दयाल की मौज के आसरे करेंगे उस में उनका बंधन नहीं होगा, इसी तरह से वे दिन २ निहकर्म होकर एक दिन धुरपद में पहुंच जावेंगे, और उनका पूरा २ उद्धार हो जावेगा ॥

१२--चौथी बात यह कि राधास्वामी मत में जो

अभ्यास धुनआत्मक नाम के सुमिरन और स्वरूप के ध्यान और शब्द के श्रवन का जारी है, उस से बिहतर और सहज और धुरपद में पहुंचानेवाली जुगत और कोई क़ितई नहीं है। जो कोई अपना सच्चा उद्धार चाहे, तो इसी अभ्यास को बिरह और प्रेम अंग लेकर शुरू करे तो एक दिन उसका काम बन जावेगा ॥

१३--मालूम होवे कि जो सुरत यानी रूह और जान की धार है वही शब्द और नाम की धार है। जो कोई शब्द या नाम की धुन को सुनता हुआ चलेगा, वही सुरत या शब्द की धार को पकड़ के ऊपर चढ़ सकता है, और जो कि आदि में कुल्ल मालिक के चरनों से शब्द की धार प्रघट हुई, इस वास्ते जो कोई शब्द की डोरी पकड़ कर चलेगा वही कुल्ल रचना के पार होकर निज धाम में प्राप्त होगा, और कुल्ल मालिक का दर्शन पावेगा। सिवाय शब्द की धार के और कोई रास्ता या जुगत या कोई धार ऐसी नहीं है जिसको पकड़ कर जीव धुरपद में पहुंच सके, क्योंकि और जो रास्ते और धारें हैं, वह माया के मंडल से निकसी हैं, और उसी में लै हो जाती हैं ॥

१४--इस वास्ते हर एक सच्चे परमार्थी को चाहिये

कि भेद शब्द का और हाल अस्थानों का जो कि दरमियान धुर पद और जीव की बैठक के मुक़ाम के मुक़र्रर हुए हैं, दरियाफ़्त करके एक अस्थान से दूसरे अस्थान पर स्वरूप का ध्यान करता हुआ और शब्द सुनता हुआ चले, और इसी तरह सब मंज़िलें तै करता हुआ कुल्ल मालिक राधास्वामी के चरनों में प्राप्त होवे। इस रीति से सच्चा उद्धार हासिल हो सकता है और जितनी जुगतियां या तरीके और रास्ते हैं वे सब माया की हद्द में ख़तम हो जाते हैं, इस वास्ते उनकी कमाई से पूरा उद्धार यानी सच्चा छुटकारा जनम मरन से नहीं हो सकता है ॥

१५--पांचवीं बात यह कि यह लोक और संसार हमारी सुरत का देश नहीं है, बल्कि मन और माया का देश है, इस सबब से सुरत यहां पर कई खोल या देहियों में बैठ कर काररवाई करती है, और कुछ अर्सह मुअइयना से जिसको उमर कहते हैं ज्यादा नहीं ठहर सकती, और इसका पिंड में आना और उसको छोड़कर चले जाना साफ़ नज़र आता है ॥

१६--निज देश सुरत का वही अस्थान है जो कुल्ल मालिक का धाम है, इस वास्ते सच्चे परमार्थियों को मुनासिब है, कि इस देश और इस देह में मुवाफ़िक़

परदेशियों के बर्ताव रक्खें—यानी जैसे कि कोई आदमी परदेश में रह कर वहीं के लोगों से मोहब्बत और ब्योहार पैदा करता है, और अपने आराम के लिये सब तरह का सामान भी जमा करता है, पर अपने वतन की याद और सुध नहीं भूलता है, और जो असल पदार्थ हैं उनको अपने देश में भेजता रहता है, और जब मौक़ा देश में जाने का मिलता है तब बहुत ख़ुशी के साथ अपने वतन के जाने को तैयार होता है, और उन परदेशियों की मोहब्बत और वहां के सामान के छोड़ने का ज़रा भी दुख या अफ़सोस मन में नहीं लाता है ॥

१७—इसी तरह से प्रेमी और भक्त जन इस दुनिया के मोह और सामान में नहीं अटकते, और ज़रूरत मात्र मोहब्बत और ब्योहार दुनियादारों के संग में रखते हैं, और मुख्य प्रीत अपनी अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल के चरनों में, और जिस क़दर बन सके कमाई वहां जल्द पहुंचने के लिये करते रहते हैं, और अख़ीर वक़्त पर राधास्वामी दयाल की दया से सुखाले अपने घर को रवाना होते हैं ॥

१८—अब जानना चाहिये कि सच्ची सरन राधा-

स्वामी दयाल के चरनों की किसी को बग़ैर प्राप्ती प्रीत और प्रतीत के हासिल नहीं हो सकती, और यह प्रीत और प्रतीत कोई दिन के अभ्यास से हासिल होगी, यानी जब कि परमार्थी जीव अभ्यास करके अपने घट में संत सतगुरु के बचन की निरख और परख कर लेगा तब उसको सच्चा विश्वास और यक़ीन राधास्वामी दयाल के घट २ में मौजूद होने और उनकी सरन में आये हुए जीवों पर मेहर और रक्षा करने का आवेगा, और तबही से काररवाई उद्धार की प्रघट जारी होना समझना चाहिये ॥

१९--कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी बड़े दयाल हैं। जो जीव कि सच्चे मन से सरन में आया, उसकी सम्हाल हर तरह से अपनी मेहर से आप फ़रमाते हैं, और जब तक कि उसको दयाल देश में नहीं पहुंचावेंगे, तब तक उसको नहीं छोड़ेंगे, इस वास्ते जो उन की चरन सरन और सतसंग में आये हैं उनको अपने मन में यक़ीन रखना चाहिये कि राधास्वामी दयाल उनके जीव का कारज एक दिन ज़रूर बनावेंगे, और जब तक वह निज देश में न पहुंचें, तब तक उन के अंग संग रह कर, उनकी हर तरह से सम्हाल और रक्षा और परमार्थ की तरक्की फ़रमाते रहेंगे ॥

बचन ७

संग का बयान

१—आदमी के मन की चाल ढाल स्वभाव समझ और ख्याल की गढ़त और बनाव संग के ऊपर मुनहसर है—यानी जिसको जैसा संग शुरू में ज़बर मिला, उसी मुवाफ़िक़ उसकी रहनी और समझ स्वभाव और ख्याल और खान पान और पहरने और ओढ़ने की आदत और उदारता और नम्रता या सूमता और अहंकारी अंग होगा ॥

२—कुल्ल जीवों के मन और इंद्रियों का मुख और इनका झुकाव संसार के पदार्थ और भोग और मान बड़ाई की तरफ़ हो रहा है, और उन्हीं में वे रस पाते हैं, और उन्हीं की प्राप्ती के निमित्त उमर भर जतन और मिहनत करते हैं, और जब किसी की ऐसी ख्वाहिश या जतन और तदबीर के पूरे होने में या पदार्थों के भोगने में कोई खलल डाले तो आपस में फ़ौरन बिगड़ जाते हैं और इस क़दर अदावत पैदा हो जाती है, कि फिर उसका दूर होना या मन से भूलना बग़ैर किसी न किसी क़िस्म के एवज़ या बदला लेने के मुश्किल बल्कि ना मुमकिन हो जाता है॥

३-जो कि सुरत यानी रूह का अस्थान इस देह में मन और इंद्रियों के परे है, और जिस क़दर उस की ताक़त है वह मन और इंद्रियों के वसीले से यहां ज़ाहिर होती है, इस वास्ते उसका भी झुकाव यानी मुख उलटा हो गया है, यानी मन और इन्द्रियों के संग बाहर के भोग और पदार्थों में उसकी आसा और मनसा लगी रहती है, और हमेशा बाहरमुख करनी में मशग़ूल रहती है ॥

४-सुरत की धार का मस्तक में ऊंचे देश से पिंड में उतरना, और अंग २ में ब वसीले रगों के फैलना, और अख़ीर वक़्त पर उसी तरफ़ यानी मस्तक में ऊंचे देश को खिंच कर उलटना, हर एक को अपनी आंख से नज़र आता है। तो जिस क़दर जिस सुरत का झुकाव नीचे की तरफ़ पिंड में और बाहरमुख ज़बर है, या जिस क़दर उसके मन का बंधन अनेक पदार्थों और जीवों में हो गया है, उसी क़दर उसको अख़ीर वक़्त पर ऊपर की तरफ़ खिंचने और उलटने में दिक़्क़त और तकलीफ़ और मुश्किल होगी, और इसी का नाम कष्ट और कलेश है जो अक्सर जीव मौत के वक़्त सहते हैं ॥

५-विशेष करके सुरत का बंधन अपने तन में और

फिर मन के संग और फिर इंद्रियों के वसीले से पदार्थों में हो गया है, और पदार्थ के कहने में कुल्ल सामान खाने पीने पहिरने ओढ़ने रहने और सहने और वर्तने का आ गया, और जो कि जुगान जुग से यह सुरत मन और तन का संग करके भोगों में वर्तती चली आई है, इस सबब से तन मन और पदार्थों में ऐसी रच पच गई है कि सिवाय इनके दूसरा ख्याल नहीं उठता, और इनका संग छोड़ने में निहायत डरती है और बड़ी भारी तकलीफ़ मानती है ॥

६--अब जब तक कि सुरत को संत सतगुरु या साधगुरू का संग (जो कि उस निज घर से जहां से कि सब सुरतें आई हैं वाक़िफ़ हैं) न मिलेगा, और वह इसको अच्छी तरह से इसके निज घर का भेद और रास्ता और चलने की जुगत न समझावेंगे, और अपनी दया से इसके हिरदे में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में सच्ची प्रीत और प्रतीत और दर्शनों की चाह पैदा करके चलने का अभ्यास न करावेंगे, तब तक इसकी हालत और समझ बूझ और ख्याल और रहनी नहीं बदलेगी ॥

७--सिवाय संत सतगुरु या साधगुरू के प्रेमी और

भक्त जन का संग (जिनको सतसंगी और अभ्यासी भी कहते हैं) बहुत ज़रूर है, कि उनके संग में बैठ कर जीव को हाल हर एक की प्रीत और शौक़ घर के चलने के अभ्यास का मालूम होगा, और यह कैफ़ि-यत देख कर और संत सतगुरु या साध गुरू के बचन बानी सुन कर, इसके दिल में उनकी मेहर और दया से आपही आप शौक़ करने कमाई का और सहज में फिरने मन का संसार और उसके पदार्थों की तरफ़ से, और जोड़ने मन और सुरत का शब्द और स्वरूप में ऊंचे की तरफ़ अपने निज घट में पैदा होकर दिन २ (जिस क़दर अंतर में रस और आनन्द मिलता जावेगा) बढ़ता जावेगा, और बाहरमुख कामों में दिन २ तवज्जह हलकी और कम होती जावेगी ॥

८—यह तदबीर संग के बदलने की है, और जो कोई सच्चा होकर संतों के संग में लगेगा उसकी हालत ज़रूर आहिस्ता २ बदलती जावेगी, यानी उसके मन और इन्द्रियों का रुख़ इधर यानी संसार की तरफ़ से हट कर घट में चरनों की तरफ़ फिरता जावेगा, और जिस क़दर मिहनत और तवज्जह के साथ यह काम किया जावेगा, उसी क़दर उसका फ़ायदा दिन २ अंतर में मालूम होता जावेगा ॥

९–यही सबब है कि संतों और महात्माओं ने जीवों को समझाया है कि पहिले तन मन और धन मालिक के चरनों में भेट करो। हरचन्द कि यह तीनों चीज़ें दात और बख़्शिश उसी कुल्ल मालिक की हैं, पर जीवों ने उनमें ऐसा अपन पौ यानी अपना क़ब्ज़ा और दख़ल पैदा किया है कि उनके छोड़ने में निहायत ही तकलीफ़ और दुख मानते हैं, पर परमार्थी जीव को सतसंग करके, इस क़दर विचार करना ज़रूर और मुनासिब है, कि ज़ब तक उसकी प्रीत और लाग तन मन और धन में ज़बर रही आवेगी, तब तक मालिक के चरनों की प्रीत का घट में प्रघट होना मुश्किल है, इस वास्ते जिस क़दर परमार्थी की लाग इन तीनों में से उनको नाशमान और दुखदाई समझ कर आहिस्ता २ कम होती जावेगी, उसी क़दर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत जागती जावेगी, और उसी मुवाफ़िक़ अंतर में सहारा यानी रस और आनंद भी मिलता जावेगा॥

१०–जब कि सुरत का भंडार यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का देश अंतर में है, और उसका रास्ता भी नेत्रों के अस्थान से अंतर में चलता है, तो फिर जिस क़दर बाहरमुख करतूत है वह सिवाय

ज़रूरी और वाजिबी के जीव को भटकाने और भर-माने वाली है। अलबत्ता संत और साध का संग या उनकी बानी और बचन और अभ्यासी प्रेमी और भक्तों का संग जिसका ताल्लुक़ अंतर के भेद और रास्ते की चाल से लगा हुआ है, अंतर की कमाई और करनी का मददगार है। हरचन्द यह बाहरमुख काम है, पर अंतर की काररवाई से बिलकुल मिला हुआ और उसका बढ़ाने वाला है, इस वास्ते यह संग जब कभी भाग से मिल जावे, तो उसको निहायत ग़नीमत समझना चाहिये, और जब २ मौक़ा मिले उसमें शौक़ के साथ चल कर शामिल होना चाहिये ॥

११–सच्चे परमार्थियों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने मन और सुरत को परमार्थी काम में अपने घट में लगाने के वास्ते जहां तक मुमकिन होवे संसारी और बाहरमुख जीवों का संग कम करें, और बाहरमुख करतूत जो फ़ज़ूल और नावाजिब है कम करते जावें और चित से भी ऐसे ख्यालों को हटाते जावें तो उनका रास्ता परमार्थ की कमाई का अपने अंतर में सुखाला और निरबिघ्न चलेगा ॥

१२–सिवाय संतों और उनकी बानी और बचन

के संग के और जिस क़दर करतूत परमार्थी शकल में लोग बाहरमुख करते हैं उसमें जीव के उद्धार का कुछ फ़ायदा नहीं है ॥

अलबत्ता शुभ करम का फ़ायदा यानी थोड़े दिनों का सुख इस लोक में या मरने के बाद किसी ऊंचे लोक में मिल जावेगा, और जिस किसी ने प्रेम पूर्वक और सच्चे मन से मालिक के प्रसन्न करने के निमित्त कोई काम किया होगा तो उसको उसके एवज़ में संत सतगुरु का दर्शन मिलेगा, और उनसे सच्चे मालिक से मिलने की अंतरमुख अभ्यास की जुगत मिलेगी, और रफ़्ता २ एक दिन उसका काम बन जावेगा ॥

सारबचन नज़म सफ़ा ८८३ शब्द नम्बर १३ के अर्थ लिखे जाते हैं ॥

कड़ी

१—सोधत सुरत शब्द धुन अंतर, घटत तिमर नभ बासी ॥

अर्थ

अभ्यासी सुरत शब्द धुन छांट कर पकड़ती हुई नभ में पहुंची और नीचे के अंधकार से न्यारी हो गई ॥

कड़ी

२ चमकत चाप धनुष गत न्यारी, कंज जोत छिटकत उजियासी

अर्थ

इस तौर से तीर की भाल के मुवाफ़िक़ चमकती हुई तीसरे तिल से जोकि धनुष स्थान है पार होकर जोत का प्रकाश देखने लगी। (धनुष अस्थान इस सबब से कहा कि दोनों आंखों से धारें कमान के मुवाफ़िक़ मिलती हैं) ॥

कड़ी

३—गगन गंग धारा उठ धावत, होत जहां निरमल गत स्वांसी

अर्थ

अब वहां से (अर्थात सहसदलकंवल से) सुरत की धार जोकि गंगा की धार है गगन की तरफ़ को दौड़ी जहां पहुंच कर प्राण निर्मल होते हैं॥

कड़ी

४—जमुना तीर श्याम खुल खेलत, गोप गूजरी करत बिलासी

अर्थ

और रास्ते में यमुना के किनारे (अर्थात बाईं तरफ़) मन खुल कर सैर करता जाता है और सुरत भी उसके बिलास को देखती जाती है (गोपी रूप गूजरी अर्थात सुरत जो इन्द्रियों से न्यारी हो गई है) ॥

कड़ी

५—जसुधानंद (पुत्र) कंसरिपु (मारने वाला) सुन्दर, धमक सुनत तज आसी ॥

अर्थ

और वही मन जो कि कृष्ण है ऊपर की आवाज़ सुन कर जगत की आस छोड़ कर ॥

कड़ी

६—घूमक अधिक धधक धुन धावत, पावत काल तरासी

अर्थ

निहायत घूम धाम के साथ धुन की धधकार पकड़ कर ऊपर को दौड़ता है और काल मुरझाता जाता है ॥

कड़ी

७-विमलनगरजहांघोरअखाड़ा, खोजत रही नामगति पासी

अर्थ

चढ़ते २ सुरत विमल नगर (अर्थात सुन्न) में जहां हंसों के अखाड़े जमा हैं पहुंची और नाम की गति वहां खोज कर अच्छी तरह से पहिचानी ॥

कड़ी

८-मीन मानसर भंवर कंज पर, भृङ्गी होत समझ गुण तासी

अर्थ

फिर सुरत मछली की तरह मान सरोवर में और भंवर की तरह गुफ़ा में सैर करती हुई सत्तलोक में पहुंच कर भृङ्गी अर्थात सतगुरु स्वरूप की गति को प्राप्त हुई ॥

कड़ी

९–राधास्वामी उठत धाम धुन, बैठ मगन अविनासी ।

अर्थ

और वहां से राधास्वामी धाम में राधास्वामी धुन सुनती हुई पहुंच कर मगन हो गई और अविनाशी रूप होकर वहां विश्राम किया ॥

बचन ८

सब जीवों को जो कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के बाल बच्चे हैं अपने निज घर और सच्चे माता पिता की सुध लेकर चलने और उनके चरनों में पहुंचने का जतन करना चाहिये ॥

१–इस दुनिया में हर एक शख्स के मन में अपने घराने और बाप दादे की बड़ाई का बड़ा ख्याल और मान रहता है, फिर जब कि यह बात मालूम हुई (कि हम सब पुर्ष और स्त्री) कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के बाल बच्चे यानी पुत्र और पुत्री हैं, तब किस क़दर ख़ुशी और शान्ती हमारे मन में अपने ऊंचे कुल और सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल की बड़ाई की पैदा होनी चाहिये, कि जिसके

सामने और खुशी और मान सब ओछे नज़र आवेंगे ॥

२–जब इस बात का कि हम सब कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के बाल बच्चे हैं थोड़ा बहुत यक़ीन दिल में आवेगा, तब ज़रूर हमारे मन में कुल्ल जीवों की तरफ़ थोड़ा बहुत प्यार बहिन भाई के मुवाफ़िक़ पैदा होगा, और चाहे ज़ाहिर में उसका बर्ताव हर एक से हर वक़्त और हर जगह इस समझ के मुवाफ़िक़ न हो सके, पर मन में ख़्याल इसी क़िस्म के प्यार का थोड़ा बहुत ज़रूर रहेगा, और दिल से वह शख़्स हर एक का हितकारी बना रहेगा, और अपने मतलब के वास्ते या बग़ैर ज़रूरत ख़ास के (जिस में बहुत से जीवों का आराम और फ़ायदा नज़र आवे) किसी को मन और बचन और कर्म करके नुक़सान या तकलीफ़ पहुंचाने का इरादा न करेगा ॥

३–सिवाय इसके जब ऐसा शख़्स (कि जिसने अपने तईं और सब को राधास्वामी दयाल का बाल बच्चा समझा है) संत और महात्माओं की बानी और बचन पढ़ेगा या सुनेगा, या संत सतगुरु या साध गुरू, के सनमुख पहुंच कर उनके दर्शन करेगा, तो ज़रूर उसके दिल में यह इरादा पैदा होगा कि

जहां तक बने और जिस तरह हो सके, अपनी चाल ढाल और रहनी और समझ बूझ ऐसी दुरुस्त करे, कि जिस में सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु प्रसन्न होकर इस पर दया करें, और अपने चरनों में लगावें, और इसको ऐसी ताक़त बख़्शें कि दिन २ इसके संसारी अंग और हालत बदल कर परमार्थी रंग गहरा और पक्का चढ़ता जावे ॥

४—ऐसे शख़्स पर कुल्ल मालिक और संत सतगुरु ज़रूर दया फ़रमावेंगे, यानी उसके मन में परमार्थ और उसकी कमाई करने का शौक़ पैदा करके उसका मेल सतसंग से लगा देंगे, जहां कि वह सच्चे परमार्थ यानी प्रेमा भक्ती की रीत और बर्तावा समझ कर और सच्चे और कुल्ल मालिक की महिमा और भेद सुन कर, सुरत शब्द मारग की कमाई में (जो कि संतों की निज जुगत वास्ते पहुंचाने जीवों के निज घर में है) लग जावेगा, और दिन २ विकारी अंग और स्वभावों को छोड़ता हुआ निर्मल होकर एक दिन अपने सच्चे माता पिता के चरनों में पहुंच जावेगा ॥

५—जैसे यह शख़्स संत सतगुरु की दया लेकर अभ्यास करता जावेगा, उसी क़दर उसको अंतर में

मेहर और दया के परचे मिलते जावेंगे, जिससे इसके मन में यक़ीन कुल्ल मालिक की बड़ाई और समरत्थता और उसके घट में और हर एक जगह मौजूद होने का बढ़ता जावेगा, और उसके साथ प्रीत भी चरनों में दिन २ बढ़ती जावेगी, और नित्त नई उमंग और प्रेम घट में जागता जावेगा, कि जिसके सबब से कुल्ल मालिक और संत सतगुरु के चरनों में प्यार और भाव और कुल्ल जीवों की तरफ़ दया भाव बढ़ता जावेगा, और शुभ अंग और स्वभाव आप ही आप उसके मन में पैदा होते जावेंगे, और प्रेमी और भक्त जन और साध जन महा प्यारे लगेंगे, और उनकी और सतगुरु की सेवा और ख़िदमत करने को मन में नई नई उमंग पैदा होगी ॥

६–मालूम होवे कि दुनिया में भी जब किसी की शादी होती है, तब पुर्ष और स्त्री को आपस में किस क़दर प्यार और अपनी सुसरालवालों में कैसी मोहब्बत, और उनको राज़ी रखने की किस क़दर चाह मन में फ़ौरन पैदा हो जाती है। फिर जो परमार्थ में किसी को इस बात का यक़ीन हुआ कि राधास्वामी दयाल कुल्ल मालिक और सर्ब समरत्थ और सब जीवों के सच्चे माता पिता हैं और सब जीव उनके निज

बच्चे हैं, तो जो उसके मन में राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में (जो उनके निज भेदी और उनसे मिलाने वाले हैं) प्रीत और भाव जागा, और कुल्ल जीवों की तरफ़ दया भाव पैदा हुआ, तो यह कुछ अचरज की बात नहीं है, बल्कि ऐसी हालत का पैदा होना फ़ौरन वक़्त आने यक़ीन के ज़रूर चाहिये, क्योंकि यह निशान और सबूत यक़ीन का है, और जो ऐसी हालत न होवे तो जानना चाहिये कि उसके यक़ीन में किसी क़दर कसर है ॥

७-जब कोई लड़का वर्ष दो वर्ष का है, और उस वक़्त उसका बाप वास्ते नौकरी या सौदागरी के बिदेश में चला गया, और बहुत अर्से तक घर पर न आया, तो जब वह लड़का होशियार हुआ और अपनी मा से हाल अपने बाप का सुना तो उसी वक़्त उसको मोहब्बत बाप की तरफ़ पैदा हुई, और उससे मिलने का शौक़ उसके दिल में जागा, इसी तरह जो जीव कि काल और माया के पैदा किये हुए पदार्थों में इस दुनिया में लिपट रहे हैं, और अपने निज माता पिता और निज घर से बिलकुल बेख़बर हैं, फिर जब संत सतगुरु (कि जो भेदी उस घर के हैं और सच्चे माता पिता के मुवाफ़िक़ जीवों का हित

दिल में रख कर उनके उद्धार के निमित्त इस दुनिया में आते हैं) भाग से मिले, और उन्हों ने भेद और महिमा कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की सुनाई, उसी वक़्त उन जीवों के मन में प्यार और भाव और शौक़ दर्शन राधास्वामी दयाल का जाग उठता है, और उसी दिन से वह उस जतन में लग जाते हैं, कि जिसकी कमाई करके एक दिन अपने निज घर यानी राधास्वामी धाम में पहुंच जावें ॥

ऐसी प्रीत और प्रतीत का जागना कोई अचरज की बात नहीं है, पर संत सतगुरु के बचन में प्रतीत होनी चाहिये, और नहीं तो हालत मन की फ़ौरन नहीं बदलेगी, अलबत्ता कोई दिन सतसंग करके और बचन बारम्बार सुन कर और अभ्यास करके और कुछ परचे अंतर में पाकर प्रेम जागता जावेगा, और आहिस्ता २ एक दिन काम पूरा बन जावेगा ॥

८—अब समझना चाहिये कि जिन जीवों के मन में इस दुनिया का हाल देख कर ऐसा ख्याल पैदा हुआ, कि यह देश ठहराऊ और हमारा नहीं है, और यहां के सुख तुच्छ और नाशमान हैं, और जो कोई कुल्ल रचना का करता है वह कहां है, और कैसे मिल सकता है, और कोई देश ऐसा भी ज़रूर होना चाहिये

कि जो अमर हो, और जहां का सुख और आनंद भी सब सुखों का भंडार और अमर हो, और इन सब बातों के दरियाफ़्त का शौक़ और खोज हर वक़्त दिल में लगा रहता है, सो जब इन जीवों को दर्शन संत सतगुरु या साध गुरू का मिलेगा, और वे भेद कुल्ल मालिक और निज घर का और जुगत चलने की समझावेंगे, तब वे फ़ौरन प्रतीत उनके बचन की करके अभ्यास में लग जावेंगे, और उनके मन में प्रीत सच्चे मालिक और निज धाम की जाग उठेगी, और वे संत सतगुरु (जो कि भेद देनेवाले और पहुंचानेवाले उस घर के हैं) और प्रेमी जन के साथ निहायत दीनता और मोहब्बत करेंगे, और इस दुनिया से किसी क़दर बरदाश्तह ख़ातिर यानी उदास होकर, अपने निज घर की तरफ़ चलने की जिस क़दर बन सकेगा कोशिश करेंगे। ऐसे ही जीवों का नाम सच्चा परमार्थी है, और उन पर दिन २ कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया बढ़ती जावेगी॥

९—इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो फ़िकर और बिचार और ग़ौर के साथ काम करते हैं, और आंख खोल कर दुनिया के कारोबार की जांच करते हैं, मुनासिब

है कि इसी मुवाफ़िक़ काररवाई करें, यानी संत सत-
गुरु या साध गुरू का खोज करके उनसे सब भेद
दरियाफ़्त करें, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल
की प्रीत और प्रतीत हिरदे में बसा कर, घर चलने
का जतन और अभ्यास शुरू करें, तो एक दिन राधा-
स्वामी दयाल की दया से निज घर में पहुंच कर
अमर और पूरन आनंद को प्राप्त होंगे ॥

१०—बड़े अफ़सोस की बात होगी जो कोई संत
सतगुरु के बचन की प्रतीत न लाकर, संसार में ही
माया के पदार्थों में लिपट कर भरमता रहेगा, और
अपने सब से बड़े घराने और सच्चे माता पिता
कुल्ल मालिक का ख्याल न करके, मन और इंद्रियों
के हुक्म में वर्त कर, जनम मरन और देहियों के
दुख सुख भोगता रहेगा। सिर्फ़ नर देही में जतन
घर की तरफ़ चलने का बन सकता है, और इस वास्ते
ऐसे मौक़े को मुफ़्त खोदेना और अपने जीव के
कल्यान के निमित्त कोई जतन न करना, निशान
अभागता का है, क्योंकि समझने और निर्नय करने
वाली बुद्धी और अभ्यास करने की ताक़त पाकर जिस
किसी ने कि उससे फ़ायदा न उठाया, तो वह आतम-
घाती हुआ—यानी उसने अपने जीव का आप ही
नुक़सान किया ॥

११–बचन नम्बर ७ में थोड़ा बहुत सबूत इन पांच बातों का दिया गया है, कि (१) राधास्वामी दयाल सर्ब समरत्थ और कुल्ल मालिक हैं (२) और सुरत या जीव उनकी अंस यानी बालक हैं (३) और सिवाय सुरत शब्द मारग के और कोई रास्ता सहज और धुर पहुंचाने वाला नहीं है (४) और जो जीव उनकी सरन लेकर अभ्यास में लगेंगे, वही आहिस्ता २ एक दिन उनके चरनों में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होंगे (५) और यह दुनिया बेगाना यानी माया का देश है और जो जीव यहां रहेंगे वह जनम मरन और देही के दुक्खों से बच नहीं सकते। अब जीवों को चाहिये कि इस बचन की थोड़ी बहुत प्रतीत करके अभ्यास में लगें, तो वे एक दिन निज घर में पहुंच कर हमेशा को सुखी हो जावेंगे, नहीं तो वे माया के देश में अपने करमों के मुवाफ़िक़ नीच ऊंच जोन और अस्थानों में भरमते रहेंगे ॥

हर एक को अपने असली नफ़े और नुक़सान का बिचार करके इस ज़िंदगी में काम करना चाहिये, नहीं तो बहुत पछताना और अफ़सोस करना पड़ेगा, और जब वक़्त हाथ से जाता रहा फिर वह पछताना फ़ायदेमंद न होगा ॥

बचन ९

परमार्थी को सतसंग में और सतगुरु के सनमुख मुवाफ़िक़ परमार्थ की रीत और क़ायदों के बर्ताव करना चाहिये ॥

१–हर एक आदमी जब जो काम करता है या जैसी सोहबत में जाता है, तो उसी काम और सोहबत का रूप धारन करके, जो क़ायदे उस काम या सोहबत के मुक़र्रर हैं, उन्हीं के मुवाफ़िक़ बर्ताव करता है–जैसे विद्यार्थी जब स्कूल या पाठशाला में जाता है, तब वहां लिखने पढ़ने ही का काम करता है, और दूसरा काम वहां पर नहीं करता, और इसी तरह से कचहरीवाले जब कचहरी में जाते हैं, तब वहां की पोशाक पहन कर जो काररवाई कचहरी की है, सिर्फ़ वही काम करते हैं ॥

२–इसी तरह पर जो कोई परमार्थ का चाहने वाला है उसको मुनासिब है कि जब गुरू या साध के सनमुख या उनके सतसंग में जावे, तो बाद बिवाद छोड़ कर चित्त से होशियारी के साथ बचन सुने, और उनका मनन करे, और भाव के साथ दर्शन करे, और अंतर और बाहर परमार्थ के क़ायदे यानी भक्ती की रीत

के मुवाफ़िक़ बर्ताव करे, यानी बाहर से इन्द्रियों को किसी क़दर रोके, और एहतियात रक्खे कि अंतर में सिवाय परमार्थी ख्यालों के संसारी तरंगें न उठावे, और गुरू और साध का थोड़ा बहुत उसी क़दर भय और भाव करे जैसे कि अपने बाप दादे और बुज़ुर्गों का या जैसे अपने हाकिम का, क्योंकि वे परमार्थ के सच्चे बुज़ुर्ग और सच्चे हाकिम हैं ॥

३–जो जीव इस क़ायदे के साथ सच्चे गुरू के सन्मुख जावेगा, वह ज़रूर थोड़ी बहुत परमार्थ का लाभ यानी फ़ायदा लेकर उठेगा, और जो इसी तौर पर सतसंग में उसकी हाज़िरी कुछ अर्से तक बराबर जारी रही, तो उसके मन की हालत ज़रूर थोड़ी बहुत बदलेगी, और सच्चे मालिक के चरनों का प्रेम उसके हिरदे में पैदा होकर दिन २ बढ़ता जावेगा ॥

४–सच्चे परमार्थी को कभी अगली पिछली टेक और अटक में भरमना नहीं चाहिये, और सतगुरु के सन्मुख अपनी समझ बूझ या अपने ख्याल परमार्थ की निस्बत ज़ोर देकर पेश करने नहीं चाहिये, बल्कि अपने तईं अनजान समझ कर जो बचन कि सतगुरु निर्नय करके समझावें, उनको हित चित्त से धारन करना चाहिये ॥

५—जो कोई हाकिम वक़्त या डाक्टर या हकीम के पास जाता है, तो वह अपनी नौकरी या मुक़द्दमा की बाबत या अपनी बीमारी का हाल कहता है, और जो हुक्म कि हाकिम देवे और जो दवा और परहेज़ कि डाक्टर तजवीज़ करे, उसके मुवाफ़िक़ काररवाई करता है, वहां हाकिम या डाक्टर की ज़ात पांत या उनकी बाहर या अंतर की रहनी पर नज़र नहीं करता, इसी तरह जो कोई सच्चा परमार्थी है, उसको लाज़िम है कि साधगुरू के बचन और उनके अभ्यास की परख करे, और ज़ात पांत और लक्षण वग़ैरह के ख़्याल में न पड़े, क्योंकि इसकी क्या ताक़त है, कि यह जो आप माया में ग़ोते खा रहा है, ऐसे लोगों की जो कि मन और माया से किसी क़दर या बिलकुल न्यारे हैं परख या जाँच कर सके, पर जो कोई दिन उनका संग करेगा तो अलबत्ता थोड़ी बहुत निरख और परख आवेगी, यानी उनकी पहिचान इस बात की थोड़ी कर सकेगा, कि वे किस क़दर संसार से जुदे हैं ॥

६—सच्चे परमार्थी को लाज़िम है कि सतसंग में जाकर अपना काम करे और उसी का फ़िकर रक्खे, और दूसरे परमार्थियों की तरफ़ न देखे, और न उन के मुआमले में दख़ल देवे, लेकिन जो अपने से भक्ती

में विशेष यानी परमार्थ की काररवाई में बेहतर नज़र आवे, तो उसकी चाल आप भी इख़्तियार करे, और जो मौक़ा होवे और बन सके तो उससे मदद लेवे ॥

७–और यह भी मुनासिब है कि जिस क़दर अपना शौक़ और उमंग होवे, उसको कम करके दिखलावे, और ज़्यादा दिखावा उसका न करे, और अपनी ताक़त से ज़्यादा काम बग़ैर अच्छी तरह सोचे और समझे हुए न करे, नहीं तो थोड़ा बहुत रास्ते में झटका लगेगा। उसको चाहिये कि जो काम करे समझ और सोच कर धीरज के साथ करे और जितनी अपनी ताक़त होवे, उससे कुछ कम काम में लावे, और घबराहट के साथ जल्दी न करे, तो उसका रास्ता सुखाला चलेगा। खुलासा यह है कि हिरसा हिरसी और देखा देखी भारी काम परमार्थ के एकाएक न कर उठावे लेकिन आहिस्ता २ चाल चलने से उन्हीं कामों को यह दुरुस्ती के साथ कर सकेगा। अपनी भक्ती और प्रेम को नित्त बढ़ाता जावे, उसके साथ इसकी ताक़त भी बढ़ती जावेगी ॥

८–सच्चे परमार्थी को यह भी मुनासिब है, कि किसी दूसरे सतसंगी से, जो सतसंग में शामिल होवे

किसी बात पर तकरार और हुज्जत या लड़ाई या झगड़ा या बैर और विरोध और ईर्षा न करे, नहीं तो उसके प्रेम और भक्ती में मुफ़ ख़लल पड़ेगा, और तरक्क़ी में हर्ज होगा। जो किसी की चाल चलन इसको पसंद न होवे, या उसकी रहनी में नुक़्स और कसर नज़र आवे, तो मुनासिब है कि उसको प्रीत भाव के साथ एकान्त में समझौती देवे, और जो वह न माने, तो सतगुरु या साध से, जो सतसंग के अधिष्ठान हैं, इत्तला कर देवे। उनको इख़्तियार है, चाहे जैसे उस शख़्स के साथ बर्ताव करें। इस शख़्स को चाहिये कि फिर उस सतसंगी के मुआमले में दख़ल न देवे, और जो इसका मन उससे मिलने और बात करने को न चाहे, तो उससे मिलना और बोलना छोड़ देवे, फिर विरोध न करे और न इस बात की हठ करे कि वह सतसंग से ख़ारिज कर दिया जावे, क्योंकि जो वह सतसंग में पड़ा रहा, तो शायद आहिस्ता २ गढ़ जावेगा, और विकारी अंग उसके साफ़ हो जावेंगे, और जो सतसंग से ख़ारिज हुआ तो और कहीं उसकी गढ़त होनी मुमकिन नहीं है॥

९—सच्चे परमार्थी को लाज़िम है, कि जो कोई चाल सतगुरु या सतसंग की उसकी समझ में न आवे, और ज़ाहिरा उसको नापसंद या नामुनासिब

मालूम होवे, तो उसकी निंद्या यानी बुराई किसी सतसंगी या संसारी जीवों के सामने न करे, और न अपने मन में उसको बुरा समझे, और ऐसा यक़ीन करे कि उस कारस्वाई में ज़रूर कुछ न कुछ मसलहत होगी, कि जिससे फ़ायदा ख़ास या आम या दोनों ख़ास और आम परमार्थी लोगों का मंजूर है ॥

जो उसका मन इस बात को न माने और भरम उठावे, तो बेहतर होगा कि किसी गहरे प्रेमी सतसंगी से उसका हाल एकान्त में दरियाफ़्त करे, या जो मौक़ा मिले तो ख़ुद सतगुरु से बिन्ती करके पूछ लेवे, तब उसका संदेह रफ़ा हो जावेगा ॥

१०–मालूम होवे कि जहां कहीं संतों का सतसंग जारी होता है, वहां सच्चे परमार्थ का निर्नय करके उसके प्राप्ती की जुगत समझाई जाती है, और वह जुगत ठीक २ उन्हीं लोगों से कमाई जावेगी, कि जिनके हिरदे में अपने जीव के सच्चे उद्धार और सच्चे मालिक के दर्शनों की ज़बर चाह है, और जिन के मन में संसार की चाहें ज़बर हैं और परमार्थ का ख़्याल थोड़ा है, उनसे वह जुगती शुरू में दुरुस्ती के साथ नहीं कमाई जावेगी, लेकिन जो सतसंग और अभ्यास बराबर करते रहेंगे, तो कोई दिन में

संसार की चाहें हलकी हो कर, परमार्थ की चाह उनके मन में भी ज़बर हो जावेगी, और फिर अभ्यास में उनको भी रस और आनंद मिलना शुरू हो जावेगा॥

लेकिन निपट संसारी जीवों से संतों के सतसंग में ठहरा नहीं जावेगा, और न वहां के बचनों के सुनने और समझने की ताक़त और बरदाश्त होगी। इस वास्ते कोई २ चालें सतसंग में ऐसी जारी की जाती हैं, कि जिनको देख कर और सुन कर संसारी जीव सतसंग में आकर खलल न डालें, और सच्चे परमार्थियों पर अपने संग और संसारी बातों की छाया डाल कर, उनके अभ्यास में विघ्न-कारक न होवें॥

ऐसी चाल के जारी होने में परमार्थियों के प्रेम की तरक्क़ी होती है, और निपट संसारी लोग नज़दीक नहीं आ सकते–दूर ही दूर से अपनी अनसमझता से निंदा करते हैं, और झूठों को सतसंग से हटाते हैं॥

११–सच्चे सतसंगियों में आपस में प्यार और मोहब्बत ज़रूर होवेगी, क्योंकि जब उन सब का एक ही मतलब और माशूक़ है, और सिर्फ़ उसके मिलने की चाह हर एक के मन में ज़बर है, और हर एक अपने २ मुवाफ़िक़ उस एक ही काम के पूरा करने

के लिये जिस क़दर बन सके मिहनत और कोशिश कर रहा है, तो इन सब का आपस में मेल और इत्तफ़ाक़ ज़रूर होगा, और एक दूसरे को मदद देने के वास्ते हमेशा तैयार रहेगा, और जिस २ में ऐसा मेल नहीं है, तो समझना चाहिये कि उन लोगों की काररवाई और मतलब में कुछ न कुछ कसर है, पर जो वह सतसंग में पड़े रहेंगे, और थोड़ा बहुत अभ्यास करे जावेंगे, तो आहिस्ता २ एक दिन उनकी भी सफ़ाई हो जावेगी ॥

बचन १०

संतों के बचन हरचंद अधिकारी प्रति हैं पर कुल्ल जीवों को अपनी २ ताक़त के मुवाफ़िक़ उनका मानना और उसके मुवाफ़िक़ अपनी रहनी और बरतावा दुरुस्त करना ज़रूर चाहिये ॥

१-संतों ने जिस क़दर बानी और बचन कहे हैं, वह सब उत्तम अधिकारी यानी लायक़ परमार्थी जीवों के वास्ते कहे हैं, और उन्हीं की समझ में वे ज्यों के त्यों आवेंगे, और उन्हीं जीवों से उनकी काररवाई यानी अभ्यास दुरुस्ती के साथ बन पड़ेगा ॥

और जो जीव कि मध्यम दरजे के अधिकारी हैं, वह भी उन बचनों को समझेंगे और मानेंगे, पर उन से काररवाई आहिस्ता २ बनती जावेगी, और सतसंग और अभ्यास करते २ कोई दिन में वे भी उत्तम अधिकारी हो जावेंगे ॥

और निकृष्ट अधिकारी यानी जो तीसरे दरजे के जीव हैं, वे कोई दिन सतसंग करके बचन के समझने के लायक़ होवेंगे, और फिर आहिस्ता २ अभ्यास शुरू करेंगे, पर कुछ अर्सा चाहिये कि उनसे अभ्यास दुरुस्ती से बन पड़े ॥

और जो चौथे दरजे के जीव हैं जिनको पामर और नीच कहते हैं, वे निपट संसारी और करमी और अहंकारी हैं, वे संतों के सतसंग में नहीं आवेंगे, और जो किसी सबब से आ गये तो ठहर नहीं सकेंगे और न अभ्यास में शरीक होंगे ॥

२—संतों की दया और समरत्थता भारी और अपार है, वे जिस क़िस्म के जीवों को चाहें चरनों में लगा कर, अपनी प्रीत की बख़्शिश कर सकते हैं, पर आम दस्तूर और क़ायदा यही है जैसा कि ऊपर लिखा गया ॥

कोई जीव चाहे उत्तम अधिकारी होवे चाहे मध्यम

या निकृष्ट, बिना दया संतों के कुछ काररवाई परमार्थ की दुरुस्ती के साथ नहीं कर सकते। इस वास्ते सब जीवों को चाहिये, कि जैसे बने तैसे संत सतगुरु के सन्मुख आवें, और जैसी तैसी सरन उनके चरनों की लेवें, तो अलबत्ता उनका परमार्थ का भाग जागना शुरू हो जावेगा, और रफ़्ता २ संत सतगुरु की दया के बल से कमाई करके, एक दिन पूरा काम बन जावेगा। हर तरह से महिमा संत सतगुरु की है, और बिना उनकी दया के किसी जीव का सच्चा उद्धार नहीं हो सकता है॥

३–बचन नम्बर ८ और ९ की क़दर और समझ प्रेमी जीव जानेंगे, और वेही उन बचनों के मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत काररवाई करके, अपने घट में रस और आनन्द पावेंगे, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की महिमा और उनके चरन कंवल की प्रीत और प्रतीत उन जीवों के हिरदे में दिन २ बढ़ती जावेगी, और बाक़ी जीव उन बचनों को पढ़कर थोड़ी बहुत समझ बूझ हासिल करेंगे, पर उनके मुवाफ़िक़ काररवाई उनसे पूरी तौर पर बिल्फ़ेल नहीं बन सकेगी। कुल्ल जीवों का बर्ताव एक क़िस्म का नहीं हो सकता, हर एक क़िस्म के जीवों की समझ बूझ और करनी

में फ़र्क़ रहता है, और उसी मुवाफ़िक़ उनके दरजे जुदे २ समझे जाते हैं--जैसे उत्तम मध्यम और निकृष्ट और नीच वग़ैरह ॥

४-सब जगह इसी तौर पर जीवों की कार‌रवाई में दरजे हैं, और थोड़ा बहुत फ़र्क़ रहता है, चाहे परमार्थ का काम होवे या दुनिया का ॥

पर जो सब जीवों का, जो एक संगत या फ़िरक़े या गिरोह में शामिल हैं, मतलब और चाह एकही है, तो सब के सब रल मिल कर उस काम को करेंगे, और उस कार‌रवाई में एक दूसरे का मददगार रहेगा, और आपस में उनकी इस सबब से प्रीत और प्रतीत भी मज़बूत और क़ायम होवेगी, क्योंकि सब का मतलूब यानी प्रियः पदार्थ एक ही है ॥

५-जब कि परमार्थ में और ख़ास कर संतों के सतसंग में सब सतसंगियों का इष्ट एक ही है-यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल को सब मानते हैं, और उन्हीं के धाम में पहुंचने का सबका इरादा है, और इसी मतलब से सब कोई सतसंग और अभ्यास करते हैं, तो आपस में इन सब जीवों की उसी तरह पर और उसी दरजे की प्रीत होनी चाहिये, जैसे कि दुनिया में बहिन भाई और ख़ास बिरादरी में होती

है, और एक को दूसरे की हर हाल और हर वक़्त में जिस क़दर बन सके मदद और पक्ष करना चाहिये॥

६—जो २ सच्चे परमार्थी हैं, वे तो आपस में ज़रूर उसी मुवाफ़िक़ बर्तेंगे जैसा कि ऊपर लिखा गया है ॥

पर जो संसारी हैं, और किसी सबब करके परमार्थ में शामिल हो गये हैं, या जो कि अहंकारी और अपस्वार्थी हैं, और जिनके परमार्थ की चाह बहुत थोड़ी है, उनसे इस क़ायदे के मुवाफ़िक़ नहीं बर्ता जावेगा--यानी उनके मन में पूरा २ प्यार और भाव कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में नहीं आवेगा, और न सतसंगी भाइयों में जैसे चाहिये प्रीत करेंगे--उनका बर्तावा सर्ब अंग में बहुत करके ऊपरी होगा, किसी की भी प्रीत उनके अंतर में जैसी चाहिये नहीं धसेगी ॥

७—अब आम तौर पर यह बचन समझौती का कहा जाता है, कि हर एक स्त्री और पुर्ष को जो राधास्वामी मत में शामिल हैं, और आइन्दा होवें, मुनासिब और लाज़िम है कि परम पुर्ष राधास्वामी दयाल के चरनों में सच्ची और गहरी प्रीत और प्रतीत करें, और सतसंग और अभ्यास करके उसको दिन २ बढ़ाते रहें, और सतसंगी भाइयों और सत

सतसंगिनों में बहिन भाई की सी प्रीत करें, और कुल्ल संगत को अपनी ख़ास और निज बिरादरी समझें, और प्यार भाव के साथ उनके साथ बर्तावा रक्खें, क्योंकि इनका संग बराबर दयाल देश तक रहेगा, और संसारी भाई और बिरादरी का संग सिर्फ़ इसी ज़िन्दगी यानी जनम तक का है ॥

८–सतसंगियों को चाहिये कि आपस में एक दूसरे की कसरों पर नज़र न करें, और जो किसी में कोई कुचाल मालूम पड़े तो उसको प्यार के साथ एकान्त में समझा देवें। सतसंगियों या संसारियों में उसकी कसर या ऐब को प्रघट करके उसकी ग़ीबत में ज़ाहिर न करें, क्योंकि इसी का नाम निंद्या है, और सतसंगी को इस ऐब से बचना चाहिये ॥

९–जो किसी सतसंगी या सतसंगिन की भक्ती और प्रेम और अभ्यास की तारीफ़ सुने, तो उसकी ईर्षा करके मन में कुढ़ना या जलना नहीं चाहिये, और उसका मन में नुक़सान या बुराई चेतना या ख्याल करना नहीं बल्कि इस बात की चौंप अपने मन में लावे कि जैसी भक्ती और प्रीत उस सतसंगी या सतसंगिन की है, वैसी ही आप भी पैदा करे, ताकि इसकी भी तारीफ़ होवे ॥

१०—सतसंगी और सतसंगिन को जहां तक बन सके, किसी में औगुन दृष्टी लाना नहीं चाहिये, क्योंकि उस शख़्स में चाहे वह औगुन होवे या नहीं, पर औगुन देखने वाले के मन में वह औगुन सही पैदा हो जावेगा, और उसको अभ्यास के समय गुनावन उठा कर सतावेगा, और जो ज़्यादा ख़्याल उसका जम गया, तो जगह २ उससे निंद्या करावेगा। इस में प्रघट नुक़सान औगुन देखनेवाले का होवेगा। इस वास्ते यह आदत जिस क़दर जल्दी बने छोड़ना चाहिये, और जो कोई ऐसा औगुन किसी में मालूम पड़े, कि जिसके सबब से कुल्ल संगत की बदनामी होती होवे, तो उसको एकान्त में गुरू या साध या सतसंगी से, जो संगत का अफ़सर होवे कह देना मुनासिब है, ताकि वह मुनासिब तौर पर बंदोबस्त उसका करदे, या इतनी एहतियात रखनी चाहिये कि किसी का कोई ऐब जहां तक मुमकिन और मुनासिब होवे आम में प्रघट न किया जावे॥

११—ख़ुलासा यह है कि हर एक सतसंगी और सतसंगिन राधास्वामी मत को लाज़िम और मुनासिब है, कि अपनी ताक़त के बमूजिब जो २ बचन कि उनके फ़ायदे के वास्ते कहे गये हैं, उनके

दिल और जान के साथ मानने और बर्तने में कोशिश करें, और जिस क़दर कि उनसे न माना जावे उसी क़दर अपने में कसर समझें, और उसी कसर के दूर करने के वास्ते जतन और प्रार्थना करते रहें, और अपने अन्तर में शरमाते और पछताते रहें, तो आहिस्ता २ एक दिन उनकी कसर दूर हो जावेगी, और मेहर से उनकी रहनी और बर्तावा बचनों के मुवाफ़िक़ दुरुस्त हो जावेगा ॥

बचन ११

राधास्वामी मत केवल दया का मत है और इस मत में जीव का उद्धार सहज होता है

१--मालूम होवे कि जो राधास्वामी दयाल ने सुरत शब्द मारग का उपदेश फ़रमाया है, और उसके अभ्यास को ऐसा सहज कर दिया है, कि औरत और मर्द लड़का जवान और बूढ़ा आसानी से कर सकता है, पर इस काम में हमेशा दया की ज़रूरत है, क्योंकि जीव निहायत निबल और अजान और भूलनहार है। इस वास्ते जो अभ्यास और भक्ती के काम कि इससे बनवाने मंजूर हैं, वह सब कुल्ल मालिक राधा-

स्वामी दयाल की दया से बनेंगे। बग़ैर दया के जीव की ताक़त नहीं है; कि यह अभ्यास निर्विघन और बराबर कर सके, लेकिन जीव को चाहिये कि उनकी दया के भरोसे अपना इरादा मज़बूत करके या हिम्मत बांध कर कोशिश करे जावे॥

२-इसी तरह जो जीवों को समझाया जाता है, कि मन और इन्द्रियों को अपने बस में लाओ, और संसार और भोगों की तरफ़ से हटा कर अन्तर में शब्द और स्वरूप के आसरे लगाओ, और आहिस्ता आहिस्ता ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ाओ, पर जो कि जीव जन्मान जन्म और जुगान जुग और अनेक बर्षों से माया के घेर में पड़ा हुआ है, और संसारियों के संग और भोगों के रसों में फंसा हुआ है, और अपने निज घर यानी सत्तपुर्ष राधास्वामी देश की याद बिल्कुल भूल गया है, और उसके मन और इन्द्रियों का झुकाव बाहर की तरफ़ कुटुम्ब परिवार और माया के पदार्थों में हो रहा है; और हर वक्त उन पदार्थों की प्राप्ती के लिये जतन करता है, या उसी के ख्याल में लिपटा रहता है, इस सबब से जो कभी सच्चे परमार्थ के बचन सुनता है वह भूल जाता है और जो जुगत कि मन और इन्द्रियों

है वह बसबब दुनिया के ख़्यालों के भरे होने के इसके मन में कम ठहरती है, और दुरुस्ती से नहीं बन पड़ती। इस वास्ते इस काम को भी थोड़ी बहुत दुरुस्ती से करने के लिये दया दरकार है, और वह दया कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल जब २ और जैसा २ मुनासिब समझते हैं करते रहते हैं, लेकिन जीव को चाहिये, कि दुनिया और उसके भोगों से किसी क़दर बैराग रक्खें और फ़ज़ूल ख़्वाहिशें न उठावें॥

३—संतों ने कहा है कि जब तक जीव की भूल और भरम किसी क़दर दूर न होवे, तब तक मुनासिब है कि सतसंग हर रोज़ एक बार या दो बार करता रहे, जो भाग से संत सतगुरु या साध का सतसंग मिल जावे तो बड़ी बात है, नहीं तो उनकी बानी और बचन का थोड़ा पाठ हर रोज़ एक या दो बार होशियारी के साथ समझ कर करना चाहिये, उससे भी बहुत फ़ायदा होगा, और भूल और भरम आहिस्ता २ कम होते जावेंगे, और जब २ मौक़ा मिले तो साल भर में एक या दो बार या दो या तीन वर्ष में एक बार वास्ते कम से कम एक या दो हफ़्ता या ज़्यादा के ज़रूर सतसंग में शामिल होवे, और उस वक़्त जो कुछ कि अपने मन में संदेह और भरम

होवें उनको साफ़ करावे, और जो कोई और बिघन अभ्यास में हर्ज करते होवें उनको भी दूर करावे ॥

यह सतसंग भी बिना दया के नहीं मिल सकता है, और राधास्वामी दयाल सच्चे परमार्थियों पर आप दया करके जब २ मुनासिब होता है उनकी चाह पूरी करते हैं, यानी जब तब मौज से ऐसा ब्यौंत बनाते हैं कि जिसमें वे सतसंग में शामिल होकर उस से फ़ायदा उठावें, और जो ऐसा ब्यौंत न बने तो सच्चे सतसंगी से उनका मेल कराकर परमार्थ के गहरे और रसीले बचन उनको सुनवाते हैं कि जिस में उनके कारज का बनाव जारी हो जावे, लेकिन जीव को चाहिये कि सतसंग में शामिल होने के लिये सच्चे मन से चाह उठाता रहे, और जो बंदोबस्त इसके इख़्तियार में होवे करता रहे ॥

४--सब जीव जैसा कि चाहिये अभ्यास या करनी नहीं कर सकते। इस वास्ते राधास्वामी दयाल ने ऐसी मौज फ़रमाई है कि जो जीव सच्चे होकर उन के चरनों की सरन लेवेंगे, और अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ शौक़ के साथ करनी भी करे जावेंगे, याने अपने कुल्ल काम परमार्थी और स्वार्थी उनकी मौज के आसरे करेंगे, तो वे उनकी हर तरह से सम्हाल

और रक्षा फ़रमा कर जिस क़दर अभ्यास और करनी वास्ते उनके उद्धार के ज़रूर होगी उनसे आप करा लेंगे, और अख़ीर वक़्त पर उनको आप अपने चरनों की अमृत धार में लपेट कर जिस अस्थान पर कि मुनासिब समझेंगे ऊंचे और सुखाले देश में बासा देवेंगे; और जो कुछ करनी वास्ते पहुंचने धुर अस्थान के बाक़ी होगी उसको जीव को दुबारा जनम देकर और फिर सतसंग में शामिल करके पूरी करावेंगे, और इस तरह उसका कारज पूरा करेंगे ॥

५--खुलासा यह कि हर तरह कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल जीवों पर अपनी दया फ़रमा कर हर हालत में उनका गुज़ारा करते हैं; और परमार्थ में ख़ास कर जो कोई उनकी सरन दृढ़ करके सच्चे मन से लेवेगा उसके जीव का काम बनावेंगे यानी उस का पूरा उद्धार करेंगे ॥

६--सच्ची सरन के धारन करने के वास्ते ज़रूर है कि गहरी प्रीत और प्रतीत राधास्वामी दयाल के चरनों में होवे, और जब सतसंग करके मन में विश्वास आया, और थोड़ा बहुत प्रेम जागा, फिर जिस क़दर कि अभ्यास इस जीव से आसानी के साथ बन पड़े, वही उसके उद्धार के वास्ते काफ़ी होगा, यानी राधा-

स्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से जिस क़दर करनी ज़रूरी और मुनासिब है आप करा लेवेंगे और जीव को दयाल देश में बासा देवेंगे ॥

७--राधास्वामी दयाल का हुक्म है कि जो कोई अपनी करनी पूरे तौर पर करके निज देश में पहुंचाने चाहे उसको चाहिये कि गहरा अभ्यास करे, और मन और इंद्रियों को रोक कर क़ाबू में लावे, और सुरत को चढ़ा कर मुक़ाम २ पर पहुंचावे, तब एक दिन धुरधाम में पहुंचेगा और ऐसी करनी वाले के संग दया बराबर रहेगी; और वे दयाल अपना ख़ास सहारा देकर कारज बनावेंगे ॥

८--और जिन जीवों से कि इस क़दर मिहनत अभ्यास की और काररवाई मन और इन्द्रियों को रोकने और क़ाबू में लाने की नहीं बन पड़ती है, पर सरन सच्चे मन से राधास्वामी दयाल के चरनों की धारन कर रहे हैं, उनको चाहिये कि प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ाते रहें, और जिस क़दर और जैसा बने अभ्यास भी करे जावें, तब राधास्वामी दयाल अपनी मेहर से उनके जीव का कारज आप बना-वेंगे जैसा कि इन कड़ियों में दया से आप फ़रमाया है ॥

धीरज धरो करो सतसंगत, मेहर दया से लेउं सुधार

वह तो रूप दिखा कर छोड़ू, तुम जल्दी क्यों करो पुकारा
तुम्हरी चिंता में मन धारी, तुम अचिंत रह धरो पियारा
संसय छोड़ करो दृढ़ प्रीती, और परतीत संवारा
यह करनी मैं आप कराऊं, और पहुंचाऊं धुरदरबारा

और कबीर साहिब ने भी अपनी बानी में ऐसी ही कहा है ॥

दोहा

मत तू हंसा डिगमिगे, गहो मेरी परतीत ।
काल मार मर्दन करूं, ले चलूं भौजल जीत ॥

९--इस वास्ते जो जीव कि राधास्वामी दयाल की सरन में आये हैं, उनको चाहिये कि उनकी दया की प्रतीत और भरोसा दृढ़ करके जिस क़दर कि उनसे बने करनी करे जावें, बाक़ी काम जो कुछ होगा राधास्वामी दयाल आप संवारेंगे ॥

१०--और मालूम होवे कि सरन लेने से यह मतलब नहीं है, कि कुछ भी करनी न करें यानी न सतसंग और अभ्यास करें और न प्रीत और प्रतीत की तरक्क़ी में कोशिश करें ॥

जो जीव ऐसी समझ धारन करेंगे उनको समझना चाहिये कि वे आलसी और बे परवाह हैं, और दया के लेने की क़ाबिलियत नहीं रखते, और इस

वास्ते जब तक वे हिम्मत बांध कर अपनी कोशिश न करेंगे, तब तक उनके कारज का बनना भी शुरू नहीं होगा ॥

११-जो कोई दरियाफ़ करे कि बिना कराने पूरी करनी और काटने करमों के राधास्वामी दयाल दया और मेहर से कैसे जीव का उद्धार करते हैं, तो जवाब उसका यह है ॥

(१) कि वे अपनी दया से संचित और प्रारब्ध करमों को उनका भोग जल्द २ कराके और फल उनका मन भर की जगह सेर भर में भुगता कर बहुत से इसी जनम में कटवा देते हैं, और उन करमों का असर मन का सेर भर और सूली का कांटा इस तौर पर हो जाता है कि जीवों को उनके नाम के आधार और चरन सरन के भरोसे से तकलीफ़ बहुत कम ब्यापती है-यानी ऐसी हालत में मन और सुरत उनके मौज से इस क़दर अंतर में खिंचे और तने रहते हैं कि दुख सुख का असर उन पर बनिस्बत संसारी जीवों के कम ब्यापता है ॥

(२) और क्रिय मान करम का बंधन सरन वाले जीवों को बहुत कम या बिलकुल नहीं होता है, कि जो काम कोई आसा धरके वे करते हैं उसमें मौज

को निहारते रहते हैं, और चाहे उनका मन मौज के साथ मुवाफ़िक़त करे या न करे, वे अपनी मेहर से उन करमों के नतीजे यानी मतलब को इस तौर पर मोड़ देंगे कि जिस में जीवों का परमार्थी फ़ायदा निकले, और दुनिया का भी काम जिस क़दर ज़रूरी और मुनासिब है औसत दरजे पर बनता चला जावे, और उनके मन का बंधन उसमें ज़्यादा न होने पावे, और सतसंग कराके जीवों के मन में से दुनिया की फ़ज़ूल चाहें और आसा और मंसा घटाते चले जाते हैं ॥

इस रीत से क्रियमान करम उनको बांध नहीं सकते ॥

(३) और जो मेहर से उन जीवों से भक्ती और प्रेम की करतूत जैसे सतसंग और सुमिरन और ध्यान और भजन और बानी का पाठ और संत और साध और प्रेमी जन की तन मन धन से सेवा कराते जाते हैं, इससे उनके मन और सुरत दिन २ माया और उसके पदार्थों से उपराम होते जाते हैं—यानी इंद्रियों के घाट से हट कर दिन २ ऊंचे की तरफ़ चढ़ते हैं, और अंतर और बाहर दया और मेहर के परचे पाकर प्रीत और प्रतीत बढ़ती जाती है, और राधास्वामी

दयाल के दर्शन और उनके धाम में पहुंचने की उमंग जागती जाती है ॥

इस करनी के फल का कुछ हिसाब नहीं हो सकता यानी दिन २ उन जीवों का प्रेम बढ़ता जाता है, और काल और करम और माया के घेर से उबार होता जाता, है और संसारी चाह और करतूत दिन २ घटती जाती है; और उस के भोग और पदार्थों से चित्त हटता जाता है ॥

१२-इस तौर से जीव के सच्चे उद्धार और उबार में किसी तरह का शक और संदेह बाक़ी नहीं रहता, और जो जीव कि सच्चे परमार्थी हैं और राधास्वामी दयाल की सरन में आये हैं, वह ऊपर की लिखी हुई बातों की जांच कर सकते हैं, और अपनी हालत दिन २ बदलती हुई कुछ अरसे के अभ्यास के बाद देख कर और राधास्वामी दयाल की मेहर और दया की परख करके निश्चय इस बात का कर सकते हैं, कि ज़रूर सुरत शब्द मारग का जिस क़दर बन सके अभ्यास करके और राधास्वामी दयाल के चरनों की सरन दृढ़ करके उनके जीव का सच्चा कल्यान और उद्धार मुमकिन है ॥

१३-राधास्वामी मत में कोई काम जब्र और

क़ठिनता के साथ नहीं कराया जाता। जिस क़दर काररवाई कि जारी है सब सहज़ तौर पर कराई जाती है, किसी चीज़ का ज़बरदस्ती त्याग नहीं कराया जाता, और न किसी बात को ज़बरदस्ती मनवाया जाता है, और न कोई काम ताक़त से ज़्यादा कराया जाता है। जिस क़दर जिसकी उमंग है उसी क़दर वह काररवाई करता है ॥

खुलासा यह कि कुल्ल कारखाई परमार्थ की इस मत में जीवों की सरधा और उमंग और शौक़ और प्रेम पर मुनहसर है ॥

१४–सच्च तो यह है कि ऐसा ऊंचा और सच्चा और पूरा मत, और ऐसा गहरा और धुर पहुंचाने वाला अभ्यास, आज तक कहीं और किसी वक्त में ऐसी आसानी के साथ जैसी कि अब राधास्वामी दयाल ने करदी है, प्रघट नहीं हुआ। इस मत में कुल्ल जीव कुल्ल क़ौमों और मुल्कों के शामिल हो सक्ते हैं, और उसके अभ्यास की कमाई थोड़ी बहुत करके राधा-स्वामी दयाल की दया लेकर सहज में बग़ैर ज़्यादा मिहनत और तकलीफ़ के इसी जनम यानी ज़िन्दगी में अपनी मुक्ती और उद्धार का सबूत पाकर थोड़ी बहुत शान्ती और आनन्द और निचंताई हासिल कर सक्ते हैं ॥

१५-यह मत और यह अभ्यास कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने आप संत रूप धारन करके इस दुनिया में प्रघट किया, और जो कि वे कुल्ल रचना के सच्चे माता पिता हैं, और सब जीवों का हित उनको बराबर मंजूर है, इस वास्तें यही मत और यही अभ्यास कुल्ल जीवों के वास्ते जारी फ़रमाया, यानी कुल्ल मुल्कों के जीव इस में शामिल होकर सहज में इसकी काररवाई और कमाई करके अपना उद्धार करा सकते हैं ॥

१६-जो कोई सच्चे खोजी और दर्दी परमार्थ के हैं उनको यह बचन प्यारा लगेगा, और वे सतसंग अंतर और बाहर करके जो २ बातें कि ऊपर लिखी गई हैं उनकी जांच और राधास्वामी दयाल की मेहर और दया की परख करके मगन होवेंगे, और जिनके मन में खोज और दर्द नहीं है वे इस बचन की प्रतीत नहीं करेंगे, और वे न तो सतसंग में शामिल होकर और बचन सुन कर खुश होंगे, और न अंतर में अभ्यास कर सकेंगे। फिर उनको जांच और परख कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की मेहर और दया की कि जो वे जीवों पर कर रहे हैं कैसे हो सकती है, और फिर राधास्वामी मत और उसके अभ्यास की बड़ाई का यक़ीन कैसे हो सकता है ॥

१७–जिस किसी ने एक या दो या ज़्यादा बार सतसंग करके राधास्वामी मत को अच्छी तरह समझ लिया है, और संसय और भरम उसके दूर हो गये हैं, और निश्चय उसका और सरन राधास्वामी दयाल के चरनों में पक गई है, और भक्ती मारग याने परमार्थ के क़ायदे और रीत अच्छी तरह समझ लिये हैं, और उसके मुआफ़िक़ जिस क़दर बनता है बरताव भी करता है, और अपने मन और इन्द्रियों की चाल की निरख परख करके बचनों के मुआफ़िक़ उनकी सम्हाल और सफ़ाई में कोशिश करता रहता है, और अभ्यास जहां तक मुमकिन है राधास्वामी दयाल की दया लेकर दुरुस्ती से करता है, और जो बिघन उसमें ख़लल डालते हैं उनको परख कर उनके दूर करने का जतन जैसा कि मुनासिब है करता है, और अन्तर और बाहर थोड़ी बहुत मेहर और दया राधास्वामी दयाल की अपने ऊपर परखता है, उसको ज़्यादा ज़रूरत सतसंग में आने की नहीं है, क्योंकि उसको बानी और बचन के पाठ और अन्तर के अभ्यास और बचनों के मनन और बिचार से वह फ़ायदा हासिल हो सकता है, जो सतसंग में प्राप्त होगा, लेकिन जब उसका दिल चाहे और मौक़ा मिले तब

उसको इख़्तियार है कि सतसंग में शामिल होकर उसका आनन्द और बिलास हासिल करे ॥

१८—और जो लोग कि बहुत दूर देस में रहते हैं उनको चाहिये कि एक बार तो जब और जैसे मौक़ा मिले ज़रूर सतसंग में शामिल होवें, और जो यह मुमकिन न होवे तो उन सतसंगियों का जो एक या दो बार सतसंग में शामिल हो चुके हैं सतसंग करके अपने संसय और भरम दूर करावें, और प्रीत और प्रतीत चरनों में राधास्वामी दयाल के बढ़ावें, और पोथी सार बचन वग़ैरह को समझ २ कर अकसर पढ़ते रहें ॥

बचन १२

चेतकर सतसंग और अभ्यास करके परमार्थी चिन्ता और खटक हिरदे में पैदा करना कि जिससे पूरा काम बन जावे ॥

१—जो कि राधास्वामी मत कुल्ल मालिक से मिलने और उसके धाम में बासा पाने का मत है, इस वास्ते इसके रक्षक, और जो जीव कि सच्चे मन से इस में शामिल होवें उनके सम्हालने वाले, और धुरघर में पहुंचाने वाले, राधास्वामी दयाल आप हैं, बिना

उनकी मेहर के कोई जीव इस मत में सच्चा होकर नहीं लग सक्ता, और न दुरुस्ती से काररवाई उसके अभ्यास की जारी रह सकती है ॥

२—जो जीव कि सतसंग में आवें और बचन चित देकर बिना पक्षपात सुनें और अपनी विद्या बुद्धी और चतुराई को पेश न करें, तो थोड़े दिन के सतसंग करने में यह मत उनकी समझ में अच्छी तरह आ सकता है, और संदेह और भरम दूर हो सकते हैं, तब जो जीव कि सच्चे खोजी और दर्दी हैं और दुनिया का हाल देख कर उनके मन में किसी क़दर वैराग आया है, वे राधास्वामी दयाल की बानी और बचन सुन कर ज़रूर मगन होंगे, और अंतर में सतसंग का रस लेकर तृप्त होते जावेंगे ॥

ऐसे जीवों को राधास्वामी दयाल अपने सतसंग में लगावेंगे और रास्ते का भेद और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके वे जीव अभ्यास शुरू कर देंगे ॥

३—लेकिन जो जीव कि अधिकारी यानी सच्चे दर्दी नहीं हैं, वे जो इत्तफ़ाक़ से सतसंग में आ भी जावेंगे, तो पक्षपात अपने ख़ानदानी मत को नहीं छोड़ेंगे, और बचन उलटे सुलटे कह कर संतों के बानी और बचन को अच्छी तरह नहीं समझेंगे, और एक

दो या तीन बार सतसंग में आकर बैठ रहेंगे, और बाहर निकल कर अपनी ओछी बुद्धी और मत के मुवाफ़िक़ संतमत की निंद्या करेंगे, ऐसे जीव सतसंग में लगाने के लायक़ नहीं हैं, पर उनके मन में भी बीजा पड़ जावेगा, और किसी न किसी वक़्त जब उनके करमों का भार किसी क़दर हलका हो जावेगा, तब वह बीजा अंकुर पैदा करेगा, यानी वे जीव फिर सतसंग में आवेंगे, और होशियारी के साथ वचन सुन कर मानेंगे, और थोड़ा बहुत अभ्यास भी उनसे बन पड़ेगा ॥

४—सच्चे परमार्थी जीव जो सतसंग और अभ्यास में लगाये गये हैं, उनकी प्रीति और प्रतीत राधास्वामी दयाल के चरनों में और सुरत शब्द मारग की कमाई में दिन २ बढ़ती जावेगी, यहां तक कि मन और इन्द्रियों के भोग उनको कम प्यारे लगेंगे, और आलस और नींद और भूख आहिस्ता आहिस्ता कम होती जावेंगी, और गुरु दर्शन और सतसंग और प्रेमी जन में प्यार बढ़ता जावेगा, और राधास्वामी नाम और राधास्वामी दयाल के चरन उनके हिरदे में किसी क़दर बस जावेंगे। ऐसे जीवों को राधास्वामी

दयाल अपनाते हैं, यानी उनकी रक्षा और सम्हाल हर दम मंजूर है, और अंतर और बाहर उनको परचे मेहर और दया के मिलते जावेंगे ॥

५-फिर उन्हीं जीवों की सरन राधास्वामी दयाल के चरनों में दृढ़ और मज़बूत होती जावेगी, और वेही जीव अपने मन और इन्द्रियों के हाल और चाल की निरख और परख दुरुस्ती से कर सकेंगे, और नामुनासिब और ग़ैर वाजिब ख़्वाहिशें संसार की उनके मन में कम उठेंगी, और जब २ उठेंगी तो फ़ौरन उनको वे रोकेंगे और हटावेंगे, और जब कभी भूल चूक कर या पुरानी आदत और स्वभाव के मुवाफ़िक़ ऐसी चाहों में कभी २ वह जावेंगे, तो जल्द होशियार होकर अपनी हालत पर झुरेंगे पछतावेंगे और शरमावेंगे और प्रार्थना करेंगे, और उस दिन कुछ भजन और ध्यान ज्यादा करेंगे ताकि जो नुक़सान और हर्ज मन और इन्द्रियों की कुचाल से हुआ है उसकी सम्हाल हो जावे ॥

६-फिर आहिस्ता २ उन जीवों की ऐसी हालत होती जावेगी कि उनको झीना यानी बारीक ख्याल परमार्थ यानी राधास्वामी दयाल के चरन कंवल का थोड़ा बहुत हर वक्त़ रहेगा, और अपनी हालत की

परख और जांच हर रोज़ करते रहेंगे, और दिन २ बचनों के मुवाफ़िक़ अपने मन और इंद्रियों की दुरुस्ती और सफ़ाई और सम्हाल करते जावेंगे, और मन और सुरत को समेट कर ध्यान और भजन के वसीले से आहिस्ता २ निज घर की तरफ़ चढ़ाते जावेंगे ॥

७-अब समझना चाहिये कि जब तक कोई सतसंगी इस तौर पर कि जैसा ऊपर लिखा है चेत कर सतसंग करके अभ्यास में थोड़ी बहुत मिहनत दुरुस्ती के साथ नहीं करेगा, और सतसंग में अच्छी तरह निर्नय करके राधास्वामी दयाल के सर्व समरत्थ और कुल्ल मालिक होने का और यह कि सुरत शब्द मारग के सिवाय और कोई अभ्यास ऐसा आसान और धुर पहुंचाने वाला नहीं है पूरा निश्चय धारन नहीं करेगा, और अपने मन और इन्द्रियों की निरख परख यानी चौकीदारी होशियारी के साथ नहीं करेगा, तब तक उसकी तरक्क़ी परमार्थ की राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ जैसा चाहिये नहीं होवेगी, और न उन की दया और मेहर की परख और जांच आवेगी, कि जिससे उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत दिन २ बढ़ती जावे और सरन दृढ़ होती जावे ॥

८—ऐसी हालत जैसी कि दफ़ा ६ में लिखी है जिस किसी को दया से हासिल होती जावे, तो जानना चाहिये कि वही जीव मेहरी और बड़ भागी है, और वही एक दिन गुरुमुख बन जावेगा, क्योंकि सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल के चरन उसके हिरदे में बस गये; और वे दिन २ संशय और भरम और संसारी चाहों का कूड़ा करकट उसके हिरदे से निकाल कर एक दिन पूरी सफ़ाई कर देंगे, और राधास्वामी दयाल की प्रीत की खटक ऐसी उस के हिरदे में पैदा कर देंगे कि वह किसी वक्त और किसी काम में नहीं बिसरेगी। फिर ऐसे जीव अपने उद्धार की सूरत अपनी जिंदगी में आप देख कर मगन हो जावेंगे, और जब तक उन का देह और संसार में बासा है, तब तक होशियारी से काररवाई करते रहेंगे, कि जिस में माया और मन ताक़त पाकर किसी तरह से उनके काम में विघन न डालें॥

९—इस वास्ते सब सतसंगी और सतसंगिनों को मुनासिब है, कि जिस क़दर जिस्से बन सके राधास्वामी दयाल की दया का बल लेकर इसी तौर से जैसा कि ऊपर ज़िकर हुआ है होशियारी के साथ सतसंग और अभ्यास करें, और प्रीत और प्रतीत

राधास्वामी दयाल के चरनों में बढ़ाते और पकाते जावें, कि जिस में उनका काम जल्दी बन जावे, और किसी तरह का संसय और भरम मन में बाकी न रहै, और किसी क़दर सच्ची खटक उनके हिरदे में बस जावे, कि जिससे कुल काररवाई परमार्थ की दुरुस्ती से जारी रहे, और दिन २ तरक्की होती जावे, और संसारी स्वभाव और आदतें परमार्थी चाल के साथ बदलती जावें ॥

बचन १३

मज़बूत करना प्रतीत और प्रीत का राधास्वामी दयाल के चरन कंवल में

१—कुल कामों में चाहे परमार्थी होवें चाहे दुनिया के पहिले प्रतीत और यक़ीन दरकार है। जब तक कि जीव को पूरी प्रतीत और यक़ीन किसी अच्छे काम का नहीं होता, तब तक वह उस काम को प्रीत और दुरुस्ती से नहीं करता, और न नाक़िस काम के करने से ख़ौफ़ खाता है ॥

२—प्रतीत में बहुत दरजे हैं, लेकिन बिना गहरी और पूरी प्रतीत के (कि जो किसी वक़्त और किसी हालत में चाहे दुख होवे या सुख डिग न जावे और

एक रस क़ायम रहे) पूरा काम नहीं बन सकता–और वैसे तो जिस क़दर जिसको प्रतीत है उसी क़दर उसको फ़ायदा और फल उसका ज़रूर मिलेगा ॥

३–पूरी प्रतीत का दृष्टान्त यह है (१) कि जैसे किसी को कहा गया कि तेरे फलाने मकान में अंदर ज़मीन के इतनी गहराई पर ख़ज़ाना है–जो उसको इस बात की प्रतीत आ गई तो वह ज़रूर उसका खोदना शुरू करेगा, और जब तक कि ख़ज़ाना नहीं निकले, तब तक बराबर मिहनत के साथ खोदना जारी रक्खेगा (२) और जैसे किसी को कहा गया कि तेरे फ़लाने मकान में ज़हरीला सर्प है, तो वह जब तक कि उस सर्प को निकालने का बंदोबस्त न हो जावेगा, तब तक ख़ौफ़ के मारे उस मकान में नहीं जावेगा ॥

४–इसी तरह परमार्थ के मुआमिला में जब तक कि गहरा सतसंग करके यानी तवज्जह और दुरुस्ती के साथ बचन सुन कर और उनका मन में अच्छी तरह विचार करके पूरी प्रतीत राधास्वामी दयाल के चरनों में कि वे कुल मालिक और सर्व समरत्थ हैं न आवेगी, तब तक मन थोड़ा बहुत डामां डोल रहेगा यानी जब तब इधर उधर भरम उठाता रहेगा, और

जब तक ऐसी हालत रहेगी, तब तक जो अभ्यास कि संत सतगुरु ने बताया है दुरुस्ती से नहीं बनेगा, और उसका थोड़ा बहुत रस भी जैसा कि चाहिये नहीं आवेगा, और फिर राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रतीत भी नहीं बढ़ेगी ॥

५—ऐसी प्रतीत के आने में कितने ही बिघन अपना ज़ोर करते हैं, और वह आगे लिखे जाते हैं और उनके दूर करने का जतन भी लिखा जाता है ॥

यह बिघन या तो प्रतीत को डिगमिग कर देते हैं, या भुला देते हैं, या उस में संदेह पैदा कर देते हैं, कि यह बात सच्ची है या नहीं, और इस में वह फल जो कि संतों ने कहा है मिलेगा या नहीं, और यह बिघन यह हैं (१) पहिले बिशेष चाह मन और इंद्री के भोग बिलास की और लगे रहना उसी ख्याल और जतन में (२) दूसरे टेक और पकड़ अपने घराने के इष्ट और मत में (३) तीसरे पकड़ और अटकाव उन बातों में जो विद्यावान और चतुर लोगों ने मालिक और उसके मतों की निस्बत अपनी किताबों में लिखी हैं (४) चौथे पकड़ अपनी बुद्धि की समझौती में जो और मतों का हाल पढ़ कर और सुन कर और थोड़ी बहुत विद्या हासिल करके

पैदा की है (५) पांचवें बेख़ौफ़ी मौत और नरकों के दुक्खों से और बेपरवाही निसबत अपने जीव के कल्यान के (६) छठे अपनी अनजानता और ओछी समझ करके निंदकों के बचन सुन कर भरम जाना (७) सातवें पुराने इष्ट और पिछले महात्मां और औतार और देवताओं में जो कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के नीचे और उनके पैदा किये हुये हैं भाव का होना और मन में थोड़ा बहुत संसारी नफ़ा या नुक़सान का ख़ौफ़ करके उस भाव का क़ायम रहना (८) आठवें अभ्यास यानी भजन और ध्यान के वक़्त जैसा मन चाहता है रस के न मिलने से मन का रूखा और फीका या निरास हो जाना (९) नवें अपनी या अपने कुटुम्बियों की तकलीफ़ के वक़्त राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रार्थना करने से और उस तकलीफ़ के जल्द दूर न होने या घटने से चित का दुखी और किसी क़दर सुस्त और निरास हो जाना॥

६—पहिले बिघन की निस्बत इस क़दर बयान करना काफ़ी है, कि दुनिया के कारख़ाने को नज़र ग़ौर से देखना, और उसके भोग और पदार्थों को तुच्छ और नाशमान समझ कर और अपनी मौत की याद चित

में लाकर उनकी चाह और क़दर किसी क़दर मन से कम करना; और दुनियादारों के व्योहार और बर्ताव को जांच कर उसका पूरा भरोसा न करके चित से उनकी क़दर को घटाना। यह बात कोई दिन में चेत कर सतसंग करके हासिल होगी—वाजबी और ज़रूरी चाह और क़दर दुनिया के सामान की (जिस क़दर कि अपने औसत दरजे पर गुज़ारा के लायक़ दरकार होवे) करने में हर्ज नहीं है, लेकिन तृष्णा और फ़ज़ूली परमार्थ में बिघन कारक है ॥

७—दूसरा बिघन खूब समझ २ कर सतसंग करने और राधास्वामी मत के उसूल और क़ायदे अच्छी तरह से समझने से दूर हो सकता है ॥

खोजी और दर्दी जीवों को ऐसा ख्याल नहीं रखना चाहिये कि जो ऊंचे से ऊंचा और सच्चे मत का हाल सुने तो उसको अपने घराने के पुराने मत से मिला कर जैसे बने तैसे एकही और बराबर माने। क्योंकि दुनिया में हर एक चीज़ में दरजे हैं, और इसी तरह परमार्थ में भी बहुत दरजे हैं, और हर एक मत एक २ दरजे से ताल्लुक रखता है, फिर सब मत बराबर कैसे हो सकते हैं, इस वास्ते जो मत कि सब से ऊंचा और गहरा है, और उसके पेट में

सब दरजे आ गये हैं, तो वही मत सब से बड़ा है, और यह बात सिर्फ़ राधास्वामी मत में पाई जाती है, इस वास्ते अपने जीव के कल्यान के लिये उसको सब से बड़ा मानना ज़रूर है और अपने पुराने और ओछे मत की टेक को छोड़ना मुनासिब है ॥

८–तीसरे विघन की निस्बत इतना बयान करना काफ़ी होगा, कि जितने विद्यावान और चतुरे पुराने वक़्तों में हो गये, या ज़माने हाल में मौजूद हैं, वे सब नतीजे को देख कर उसके सबब को बुद्धी से दरियाफ़्त करके जहां तक कि उनकी नज़र और समझ की पहुंच हुई बयान करते हैं, और असल हाल और आदि सबब की उनको ख़बर नहीं है, क्योंकि वह उनकी बुद्धी और नज़र की हद्द से बहुत दूर है, और बग़ैर अपने अंतर में अभ्यास करने के और अपने मन और सुरत की चढ़ाई करने के मालूम नहीं हो सकता, और इन लोगों में अंतर का अभ्यासी और घट के भेद से ख़बरदार कोई नहीं हुआ और न है, और यह बात उनकी बानी और बचन से साफ़ ज़ाहिर है, यानी उस में घट के हाल और अभ्यास का कहीं भी ज़िकर नहीं आया है, फिर उनके बचनों को संतों के बचन के मुक़ाबले में, जिन्हों ने कि सब

हाल और भेद असली और आदि अस्थान और कुल्ल रचना को देख कर कहा है, कैसे सही और दुरुस्त मान सकते हैं, उनको न तो मालिक कुल्ल का दर्शन मिला, और न उसकी कुदरत की जो कि ऊंचे देशों की रचना में प्रघट है ख़बर पड़ी, फिर जो कोई उनके बचन को मानेगा वह सच्चे मालिक से बिमुख होकर हमेशा किसी न किसी क़िस्म की देही धारन करके दुख सुख भोगता रहेगा, और जनम मरन के चक्कर से कभी छुटकारा उसका नहीं होगा ॥

इस बात का सिर्फ़ इसी क़दर सबूत काफ़ी है, कि कुल्ल जीव क्या विद्यावान और क्या मूरख इस दुनियां में माया और उसके पदार्थ और माया धारियों के आशिक़ हो गये यानी उन्हीं में उनका भाव और प्यार और उन्हीं की चाह उनके दिल में रही, और सच्चे मालिक का भय और भाव उनके मन में नहीं आया, बल्कि उसकी मौजूदगी में भी शक और संदेह उनके मनों में रहा, और संत और साध जन उस सच्चे मालिक के निहायत दरजे के प्रेमी और आशिक हुये और अपनी बानी और बचन में उसी की महिमा और प्रीत का वर्णन किया। अब ख्याल करो कि जो विद्यावानों को उस सच्चे

मालिक की कुछ भी ख़बर पड़ी होती, या कुछ भी जलवह उसके अपार और अथाह नूर का नज़र आया होता, तो वह दलीलें और हुज्जतें विद्या और बुद्धी से बना कर जीवों को क्यों भरमाते, और उनके दिल में उस सच्चे मालिक का इश्क़ और प्रेम क्यों नहीं आया, और उसी को सब जीवों को क्यों नहीं ढूंढ़ाया, और उस मालिक की महिमा क्यों नहीं गाई। इसी से साफ़ ज़ाहिर है कि न तो उन्हों ने उस मालिक का दर्शन पाया, और न उसकी अथाह कुदरत की ख़बर पाई, और न पूरा यक़ीन उसकी मौजूगदी का उन के दिल में आया, फिर यह लोग सब के सब उस सच्चे मालिक से बिमुख रहे और इस वास्ते जो कोई उन की किताब और बचनों को पढ़ेगा या सुनेगा और मानेगा वह भी उनके मुवाफ़िक़ बिमुख रहेगा। और हाल यह है कि सच्चा कुल्ल मालिक ज़रूर मौजूद है—देखो यह लोक और कुल्ल उसकी रचना वास्ते अपनी पैदाइश और परवरिश के इस सूरज की जो विशेष चेतन्य है आधीन है, और यह सूरज मय अपने तारा मंडल के दूसरे सूरज का जो इसका भी विशेष चेतन्य है आधीन है। यहां तक तो इल्म नजूम और दूरबीन की मदद से मालूम हुआ है, और संत फ़रमाते हैं कि उस

सूरज के ऊपर तीन बड़े से बड़े सूरज मंडल और हैं, जो अखीर मंडल है वही अपार और अनंत है, और वही कुल्ल मालिक का धाम है। इस हिसाब से सच्चे और कुल्ल मालिक का मौजूद होना साबित हुआ, और जो कि कुल्ल रचना में कारीगरी और समरत्थता उसकी कुदरत की, और इरादा और मतलब हर एक चीज़ के पैदा करने का ज़ाहिर है, इस वास्ते वह कुल्ल मालिक कुल्ल इल्म और ज्ञान और सर्वसमरत्थता और समझ बूझ और ताक़त का भंडार है। अब ख्याल करो कि जो कोई उसकी मौजूदगी में शक लावे, या उसको अचेत और अज्ञानी और बे ताक़त और बे समझ ठहरावे तो किस क़दर वह भारी पापी और गुनहगार होगा, और उसकी दया और मेहर से किस क़दर दूर पड़ेगा, और अभागी रहेगा॥

९—चौथा बिघन मिस्ल बिघन नम्बर २ के चेत कर सतसंग करने, और संतों की बानी और बचनों को पक्षपात छोड़ कर, निर्मल बुद्धी से बिचारने से दूर होवेगा। संतों के सतसंग में हर एक बात का अच्छी तरह से निरनय होता है, और वे नहीं चाहते कि कोई शख्स उनके बचन को बे समझे हुए और बिना निरनय करने के अंधों और मूरखों की तरह

मान लेवे इस वास्ते खोजी और दरदी को मुनासिब है; कि जो बात कि उसे और मतों का हाल सुन कर या पढ़ कर या उनमें से किसी में शामिल होकर अपने निश्चय में क़ायम की है, उसका निरनय अच्छी तौर पर संतों के सतसंग में करावे, तब उसको ख़बर पड़ेगी कि आया उसकी समझ दुरुस्त है या नहीं; और जब ना दुरुस्त या ओछी मालूम पड़े, तब फ़ौरन उसको छोड़ देवे, और इस बात की पक्ष न करे कि अपनी समझी हुई बात को एकाएक क्यों और कैसे छोड़ देवे, बल्कि संतमत का उसके साथ कोशिश करके मिलान न करना चाहिये—यह निहायत नादानी की बात है और इस में बड़ा नुक़सान खोजी का होता है, क्योंकि जब संत देखेंगे कि यह शख़्स बेफ़ायदा हुज्जत करता है, और मतलब उसका अपनी समझ के क़ायम रखने का है, न कि सच्ची बात को तहक़ीक़ और दरियाफ़्त करके पकड़ने और ग्रहण करने का तब वे तवज्जह नहीं करेंगे, और यह शख़्स असल और सच्च बात के समझने और पकड़ने से महरूम रह जावेगा, और अपने जीव के कल्यान करने में आप अपनी ओछी समझ और उसकी पकड़ में मूर्खों की मुवाफ़िक़ हठ करने से बिघनकारक

होगा, क्योंकि जितने मत दुनिया में जारी हैं, वे सब संतमत के मुक़ाबलः में ओछे हैं, और विद्यावान और बुद्धिमानों के मत तो बिलकुल अक़ली हैं, और असल और सच्ची बात से बेख़बर। फिर जिस किसी मत की यह शख़्स पकड़ धारन करेगा, वह ज़रूर ओछा होवेगा, और उस पकड़ में हठ करने से इसके पूरे और सच्चे उद्धार में ख़लल आवेगा, यानी सच्चे मालिक के धाम में नहीं पहुंचेगा, रास्ते में कहीं न कहीं माया के घेर में ठहर जावेगा, और चाहे देर के साथ फिर पैदा होवे, पर जनम मरन और उसके साथ दुख सुख के भोग की उपाधी दूर नहीं होवेगी॥

१०–पांचवां बिघन बिषई यानी ऐयाश और संसारी लोगों के संग से पैदा होता है। वे लोग इंद्रियों के भोग नहीं छोड़ना चाहते, और इस सबब से कोई बात जो उनके इन्द्रियों के विषयों के रस लेने में ख़लल डाले उसको मानना नहीं चाहते, और अपनी काम क्रोध और लोभ मोह की सनी हुई बुद्धी से संतों और महात्माओं के बचनों को झूठ मूठ का ख़ौफ़ दिलाने वाले समझ कर उनका निरादर कर के यक़ीन नहीं लाते हैं, और कहते हैं कि आक़बत की ख़बर ख़ुदा जाने, अब तो आराम से गुज़रती है,

यानी आख़िरत के हाल को सिवाय मालिक के और कोई नहीं जानता, अब जो ऐश और आराम मिल रहा है इसको क्यों छोड़ें ॥

ऐसे जीव इसी जनम में दुख सुख के धक्के खाते हैं और रोग सोग भोगते हैं और फिर भी नहीं चेतते ॥

आख़िरत में उनको बहुत भारी तकलीफ़ और कष्ट भोगने पड़ेंगे, और तब अपनी ग़फ़लत और बेपरवाही पर हाथ मल कर अफ़सोस करेंगे लेकिन उनका उस वक्त़ का पछतावा कुछ फ़ायदा नहीं देगा ॥

११–ज़ाहिर है कि जितने दुनिया के भोग हैं, वे सब नाशमान हैं, और जो ज़ियादा उनका भोग किया जावे तो फ़ौरन दुख पैदा करते हैं, और जो मन में चाह उन्हीं की ज़बर रही और उन्हीं की प्राप्ती के लिये उमर भर जतन करते रहे, तो इसी ज़िन्दगी में जब बुढ़ापा आता है, वे लोग बसबब बे एतदाली के किसी न किसी रोग में मुब्तला होकर बहुत दुख भोगते हैं, और जब स्वभाव के मुवाफ़िक़ उन भोगों की चाह उठाते हैं तब या तो वे भोग निरधनता के सबब से मुयस्सर नहीं आते, या बीमारी के सबब से उनको भोग नहीं सकते, और तड़फ़ २ कर जान देते हैं, फिर थोड़े दिन के ऐश और आराम भोग

करके किस क़दर दुख और निरादर और मन और इन्द्रियों को ज़बरदस्ती रोकने की तकलीफ़ उठाते हैं। इस वास्ते अक़्लमन्द आदमी को पहिले ही से समझ कर और दुनिया का हाल और विपई लोगों की हालत देख कर नसीहत लेना और आप होशियारी से बर्तना चाहिये॥

१२–छठा विघन बहुत भारी नुक़सान करता है, यानी जीव निन्दकों के बचन सुन कर बे विचारे या तहक़ीक़ किये हुए या बग़ैर अपनी आंख से हाल और चाल देखने के सतसंग से हट जाते हैं, और अपने कच्चे शौक़ को दबा लेते हैं, इस वास्ते खोजी और दर्दी को मुनासिब है कि जो बात सुने उसको पहिले महात्माओं या परमार्थी लोगों के बचन और चाल से मिलावे, या जो उसको यह ताक़त नहीं है, तो आप सतसंग में जाकर वहां की चाल ढाल अपनी आंख से देखे, और जिस बात में शक होवे वे तकल्लुफ़ खोल कर बयान करके उसकी [illegible] को दरियाफ़्त करे, और जो चाल उसके ना होवे उसके जारी करने का सबब और उसका [illegible]निश्चय करके समझे, तब उसको ख़बर पड़ेगी ख़बर ख़ुदा जाने [illegible] नादान हैं, कभी आप जाकर

उन्हों ने कोई चाल नहीं देखी और न कोई बात सुनी; सिर्फ़ ग़रज़मंदों के कलाम को मूर्खों के तौर पर मान लिया और सतसंग को बुरा भला कहने लगे, और ग़रज़मंद वे लोग हैं कि जो संतमत यानी अंतर के अभ्यास के जारी होने में चाहे वह बेद शास्तर और पुरान और क़ुरान के मुवाफ़िक़ है अपना नुक़सान समझते हैं, क्योंकि वे परमार्थ के रास्ते से बिल्कुल बेख़बर हैं, सिर्फ़ रोज़गार के ख़ातिर दो चार क़िस्से कहानी की किताबें और इसी क़िस्म की बातें बाहरमुख पूजा और इष्ट की दुनियादारों के बहलाने और फुसलाने और अपना मतलब निकालने के लिये याद करते हैं, और घरों में जाकर औरतों को ख़ौफ़ दिलाते हैं कि जो तुम्हारे मर्द उस सतसंग में जावेंगे तो तुमको और दुनिया को छोड़ देंगे, और मर्दों को समझाते हैं कि जो औरतें सतसंग में जावेंगी तो ख़राब होवेंगी, और इसमें बड़ी बदनामी होवेगी, और जब किसी को सुनते हैं कि वह ख़िलाफ़ उनकी समझौती के सतसंग में जाने लगा तो वे उसके बिरादरी के लोगों से मिल कर उसकी हंसी उड़ाते हैं, और तान और ठठोली की बातें कह कर दस बीस आदमियों के जलसे में उसको शर्म दिलाते हैं, ताकि वह

ख़ौफ़ और शरम खाकर जल्द सतसंग में जाना छोड़ देवे। जो कोई ऐसे खुद मतलबी लोगों या मूरख संसारियों के बचन निंदा के सुन कर सतसंग में शामिल नहीं होवेगा, या थोड़े दिन शामिल होकर उनके डर से हट जावेगा, वह अपने जीव के सच्चे कल्यान में आप बिघनकारक और हारिज होवेगा॥

१३–सातवें बिघन का सबब यह है कि इस जीव के दिल में दुनिया और उसके सामान और संसारी लोगों का भाव और क़दर ज़ियादा है, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में अच्छी तरह सतसंग करके जैसा चाहिये वैसी प्रीत और प्रतीत नहीं आई, मूरख और खुद मतलबी लोगों के डराने से यह जीव जल्द अपने एतक़ाद से फिसल जाता है, और समझता है कि जो पुराने इष्टों को छोड़ दिया जावेगा तो वह कुछ न कुछ इसका संसारी नुक़सान कर देंगे, और ज़रा नहीं सोचता कि जो कुछ आराम या तकलीफ़ होती है वह अपने पिछले करमों का फल है, और जब कि कोई राधास्वामी दयाल की सरन में आया तो वह तकलीफ़ भी उनकी दया से बहुत कम हो जाती है॥

किसी देवता या औतार की ताक़त नहीं है कि बेवास्ता किसी जीव को तकलीफ़ दे सके। जो कुछ कि होता है वह जीव के पिछले करमों का भोग है, और वह करम राधास्वामी मत के अभ्यास करने से दिन २ हलके होते और घटते जाते हैं ॥

आदमी को चाहिये कि नज़र ग़ौर से देखे कि दुनिया में जीवों को कैसी २ सख़्त तकलीफ़ें हो रही हैं, और हर एक अपने ख़ानदानी मत और इष्ट को मान रहा है, फिर जो उन इष्टों में ताक़त तकलीफ़ देने की है तो तकलीफ़ दूर करने की भी होगी, फिर वे क्यों नहीं उन जीवों की सहायता करते ॥

इस वास्ते मूरखों और ग़रज़मंद लोगों के धमकाने से कि फ़लानी तकलीफ़ राधास्वामी मत में शामिल होने से हुई, कभी किसी को अपनी प्रतीत और प्रीत में डरकर ख़लल नहीं डालना चाहिये। यह कहन ऐसे लोगों की बिलकुल ग़लत और बनावट की है, और जो अबिचारी हैं और सतसंग चेत कर नहीं करते, वे ऐसी धमकियों में आकर सतसंग से हट जाते हैं, और अपना नुक़सान आप करते हैं, और अक़्लमंद और समझवार लोग जो सतसंग समझ २ कर करते हैं, वे सैंकड़ों नमूने इस दुनिया में दे सकते हैं, कि बग़ैर

छोड़ने अपने इष्ट और मत के बहुत से आदमी दुख भोगते हैं, बल्कि तान मारने वाले और धमकाने वाले आपही ऐसी तकलीफ़ों में मुब्तिला होते हैं, फिर जो सबब उनके दुक्खों और तकलीफ़ का है, वही उन जीवों की तकलीफ़ का जो राधास्वामी मत में शामिल हुए हैं समझ लेना चाहिये, बल्कि इन जीवों की किसी क़दर सहायता राधास्वामी दयाल अपनी दया से तकलीफ़ की हालत में भी फ़रमाते हैं, और वे जीव जो और मतों में हैं और ज़ाहिरा अपने इष्ट को मानते नज़राई देते हैं, और अंतर में पूरा यक़ीन नहीं रखते, उनकी सहायता कुछ भी नहीं होती, और अपने इष्ट को छोड़ कर इधर उधर सहायता के वास्ते भटकते हैं, और भरमते फिरते हैं ॥

१४-आठवां बिघन अक्सर उन लोगों को सताता है, कि जो अभ्यास में रस कम पाते हैं या अपने मन की चाह के मुवाफ़िक़ नहीं पाते हैं, या जिनको शब्द साफ़ नहीं मालूम हुआ है ॥

यह लोग जल्दी करते हैं, और यह नहीं ख्याल करते, कि हर एक जीव का अधिकार मुवाफ़िक़ उसके शौक़ और मन की निर्मलता और चित्त की निश्चलता के जुदा २ है, और जिस क़दर निर्मलता

और निश्चलता की कसर है, उसी क़दर रस के मिलने में भी देर है, सो इसका यही इलाज है कि नेम से अभ्यास करे जाय, और मन और इन्द्री और चित्त को अभ्यास के वक्त जिस क़दर मुमकिन होवे रोक कर स्वरूप या शब्द में लगावे, और जब तब प्रार्थना भी करता रहे तो आहिस्ता २ सफ़ाई होती जावेगी, और रस मिलता जावेगा ॥

बाज़े सतसंगी अपनी चाह के मुवाफ़िक़ कुछ कुदरत का खेल और तमाशा अंतर में देखना चाहते हैं, और जो वह नज़र न आवे तो ख्याल करते हैं कि हमको कुछ हासिल नहीं हुआ, और हाल यह है कि जो कुछ सैर नज़र आवेगी वह मायक होगी, और क़ायम नहीं रहेगी। सतसंगी को चाहिये कि अपनी तरक्क़ी के वास्ते अपने मन और सुरत को एकाग्र करके स्वरूप के या शब्द के आसरे पहिले या दूसरे अस्थान पर जमावे, वहां जिस क़दर ठहराव होगा उसी क़दर रस ज़रूर आवेगा इसी को अभ्यास का फल समझे और दिन २ इसी में तरक्क़ी करता जावे ॥

जो किसी पिछले या हाल के करमों के चक्कर से मन और सुरत एकाग्र और स्थिर न होवें तो घब-

रावे नहीं और निरास न होवे, और न यह समझे कि राधास्वामी दयाल उस पर दया नहीं करते हैं, बल्कि ऐसे वक्त में ज्यादातर कोशिश और होशियारी से अभ्यास करे, और जो भजन में मन न लगे तो ध्यान ही करे, और जो उस में भी मन न लगे तो धुन के साथ नाम का सुमिरन और पोथी का पाठ करे, आहिस्ता २ चक्कर बदलेगा और अभ्यास में बदस्तूर रस आने लगेगा, ऐसे वक्त में प्रीत और प्रतीत की बानी और बचन को पढ़ कर ज्यादा सम्हाल करे कि डिग मिग न होवे, नहीं तो धुन के साथ सुमिरन और पोथी का पाठ भी अच्छी तरह नहीं बन सकेगा ॥

और मालूम होवे कि पोथी का पाठ अर्थ समझ कर, और जो उस में अस्थानों का ज़िकर है उन पर मन और सुरत को फेर कर, यानी स्वरूप के आसरे जमा कर करे, तो वह भी थोड़ा बहुत भजन और ध्यान की बराबर रस दे सकता है, इस वास्ते मुनासिब है कि पहिले दो शब्द चितावनी के पढ़ कर फिर प्रेम और भेद के शब्दों का पाठ करे, तो मन उसके शौक़ सिमट कर लगेगा और तब रस भी निश्चलता के ज़

१५-नवें बिघन के दूर करने या उसके असर को कम करने का जतनः यह है, कि सतसंगी अपने मन में विचार करे कि जो तकलीफ़ उसको या उसके कुटुम्बियों को होती है, वह पिछले करमों का भोग है, और उस में भी किसी क़दर सहायता राधास्वामी दयाल की संग है, यह बात नहीं है कि वे उस तकलीफ़ को नहीं देखते हैं, और दया नहीं करते हैं। सतसंगी को चाहिये कि धीरज के साथ बरदाश्त करे, और जो बीमारी है तो दवा भी करे, और जो मन न माने तो चरनों में प्रार्थना करे, कि या तो थोड़ी बहुत ताक़त बरदाश्त की दी जावे, या वह तकलीफ़ कम या दूर कर दी जावे, पर ऐसी आस धर कर प्रार्थना न करे कि फ़ौरन उसका असर पैदा होवे। किसी क़दर मौज का भी आसरा रक्खे, और जिस मसलहत से कि तकलीफ़ भेजी गई है उसका भी विचार करे, और जो मसलहत समझ में न आवे तो बहुत घबराहट या निरास्ता मन में न लावे, आहिस्ता २ दया का ज़हूर होवेगा, और जैसी मौज होगी उसके मुवाफ़िक़ काररवाई होवेगी, यानी जो कभी मौज इसके मन की चाह के बरख़िलाफ़ है तो वैसा नतीजा ज़ाहिर होगा, और जो मुवाफ़िक़ है तो

जल्दी या आहिस्ता २ दुख दूर होता जावेगा। सतसंगी को दोनों सूरत में धीरज और बरदाश्त के साथ राधास्वामी दयाल की मौज के साथ मुवाफ़िक़त करनी चाहिये, और जहां तक मुमकिन होवे रूखा फीका होकर अपनी प्रीत और प्रतीत में ख़लल या कसर पैदा न होने देना चाहिये, नहीं तो दुख और तकलीफ़ दुचंद व्यापेगी, और जो धीरज के साथ वह सतसंगी अपने चित को ज़ब तब चरनों में जोड़ता रहेगा, तो किसी क़दर दया का असर यानी शांती अंतर में मालूम होगी, और तब उस तकलीफ़ या दुख का असर कम व्यापेगा ॥

१६—जो सतसंगी कि होशियारी के साथ सतसंग और अभ्यास करता है, और जिसने ऊपर के लिखे हुए बिघनों को अच्छी तरह निरनय करके समझ लिया है, और उनके दूर करने का जतन भी करता रहता है तो उसको वे बिघन कम सतावेंगे, और जो कभी पेश भी आवेंगे तो बहुत कम ठहरेंगे, और उसकी प्रीत और प्रतीत में बहुत कम ख़लल डालेंगे, और फिर वह सतसंगी आहिस्ता २ अपनी प्रतीत और प्रीत उसके शौक़रज़े पर पहुंचा कर राधास्वामी दयाल की निश्चलता के ज़[illegible]हेर पाकर गुरुमुखताई का दरजा

हासिल करेगा, यानी सब तरह इसी ज़िंदगी में अपना काम राधास्वामी दयाल की दया से पूरा बनवा लेगा॥

बचन १४

बर्नन प्रीत और प्रतीत का गुरु चरनन में

भाग पहिला

१—बचन नम्बर १३ में हाल प्रीत और प्रतीत का कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में लिखा गया है, और जो विघन कि मज़बूत करने प्रीत और प्रतीत में वहां हारिज होते हैं, वही थोड़े बहुत गुरु सतगुरु की प्रीत और प्रतीत मज़बूत करने में पेश आते हैं, इस वास्ते जो जतन कि उनके दूर करने या घटाने के लिये वहां बताये गये हैं वही थोड़े बहुत यहां भी काम देवेंगे॥

२—जैसे वहां अनेक मत और अनेक इष्ट यानी मालिक क़रार दिये गये हैं, ऐसे ही अनेक तरह के गुरू भी पैदा हुए हैं, यानी हर एक ने अपना इष्ट और अभ्यास जुदा २ मुक़र्रर किया, और जुदी जुदी शिक्षा जारी करी, और जो थोड़े से अपनी २ हद्द में सच्चे भी हुए उनकी नक़ल करने वाले झूठे गुरू बहुत से बन बैठे, और जीवों को तरह २ के धोखे देकर

उनसे सेवा कराने लगे, और उनका धन हरने लगे, और कहीं २ ज़बरदस्ती और ज़ोर के साथ अपनी पूजा कराने लगे ॥

३–इस सबब से बारम्बार और जगह २ धोखे खाकर जीवों के दिल में अनेक तरह के शक और संदेह पैदा हो गये, यहां तक कि चाहे कोई सच्चा होवे या झूठा और पूरा होवे या अधूरा, एकाएक उसकी प्रतीत कोई नहीं कर सकता, और दिल में ख़ौफ़ रहा आता है कि शायद पाखंडी और दग़ाबाज़ न होवे ॥

४–सिवाय इसके अनेक मत और इष्टों के जारी होने से जो कोई सच्चे मत और पूरे और सच्चे इष्ट का भेद बतावे उसकी लोग प्रतीत नहीं लाते, बल्कि शुरू में ऐसा ख़्याल करते हैं कि अपनी नई दुकान चलाने के वास्ते नई बातें अपने मन से पैदा करके जारी करना चाहते हैं, और ज़ाहिरी रसम और बर्ताव को देखकर और उसकी असलियत को ज्यों का त्यों न समझ कर निंद्या करने लगते हैं ॥

५–सबब इन बखेड़ों का जो कि सच्चे और पूरे गुरू की प्रतीत और प्रीत हिरदे में बसाने में पैदा हुए यह है कि लोग अपने ख़ानदानी मत से नावाक़िफ़ हैं, यानी बेद और शास्तर और क़ुरान

वग़ैरह के असली मतलब से बेख़बर हैं, और जो राह और रसम और क़ायदा और ब्योहार सच्चे परमार्थ का है उससे भी नावाक़िफ़ हैं। सिर्फ़ रसमी और बाहर-मुख परमार्थ निहायत नीचे दरजे का, जो कि हर एक मत में रोज़गारी या विद्यावान लोगों ने जारी किया है, उसीसे विधि मिलाया चाहते हैं, और अपनी अनजानता से शक और शुभा पैदा करके बेफ़ायदा निंद्या अस्तुत करने लगते हैं॥

६-सिवाय इसके संसारी लोगों को जब तक कि उन्हों ने कहीं संतसंग नहीं किया है, और न अपने मन और बुद्धी से परमार्थ की तरफ़ कुछ ख्याल और तवज्जह और बिचार किया है, पूरे और सच्चे गुरू की परख आनी बहुत मुशकिल है-वे दसरों की कहन यानी राय पर चलना चाहते हैं, और वे दूसरे भी थोड़े बहुत उसी क़िस्म के लोग हैं, चाहे वह परमार्थी लिबास पहिनते हैं या परमार्थी काम करते नज़र आते हैं, जैसे भेषधारी और पंडित और मौलवी वग़ैरह॥

यह लोग आप यातो संसारी हैं या संसारियों का संग देने वाले हैं इनको पूरे गुरू से आप भेंटा यानी मुलाक़ात नहीं हुई, और न उन से मिलकर कुछ भेद मालिक का सुना और समझा, फिर वे किसी को

क्या समझा सकते हैं, या पूरे गुरू के बचन सुन कर उनकी गत को क्या परख सकते हैं, और जो कि वे आप रसमी या बाहरमुख परमार्थ के काम कर रहे हैं, या बिद्या पढ़ कर बातें बनाते हैं, और असल हाल अंतरी से नावाक़िफ़ हैं, इस वास्ते उनकी समझ और कहन सच्चे मत और सच्चे गुरू की निस्बत ऐसी ही होगी, जैसा कि संसारियों और बिद्या और बुद्धिवानों की होती है, और जगत के जीव इन्हीं की समझ और कहन के मुवाफ़िक़ कारखाई करते हैं - यानी ऐसे लोगों की बातें सुन कर और सच्चे गुरू की परख और पहिचान न करके उनकी और उनके मत की निंद्या करने लगते हैं, और उसमें शामिल होने से डरते हैं॥

७-जो कोई सच्चा परमार्थी है, और उसके मन में दर्द और खोज सच्चे मालिक से मिलने और उसके रास्ते और भेद को जानने का है, वह जल्द सच्चे गुरू के सन्मुख आकर और बचन सुन कर थोड़ीसी पहिचान कर सकता है, पर शर्त यह है कि किसी दूसरे के मत की चाल ढाल में या अपनी बिद्या और बुद्धि की समझौती में अटक कर उसकी पक्ष धारन न करे, और निर्मल बुद्धी और समझ से सच्चे खोजियों के मुवाफ़िक़ बचन सुन कर अपने में आप

उनको परखता जावे, और कुल्ल रचना की हालत से जो कि इन आंखों से प्रघट दिखाई देती है, मिला कर उन बचनों की प्रतीत करे ॥

८—ग़ौर करने की बात है कि जो कोई दुनिया के हाल को कि नाशमान और सब पदार्थ उसके नाशमान और तुच्छ रस और सुख देने वाले हैं, और अपनी देह और इन्द्रियों को जड़ समझ कर इस तरफ़ से चित्त को हटा कर ख्याल करे, कि जैसे कुल्ल रचना में उत्तम से निकृष्ट तक बहुत से दरजे हैं, इसी तरह इस लोक और उसकी रचना से बढ़ कर भी ज़रूर और रचना ऊंचे दरजे में होना चाहिये, और जो कि इस रचना से बेहतर और बड़े दरजे की रचना होगी वह विशेष सुखदाई और ज्यादा देर तक ठहरने वाली भी ज़रूर होगी, इसी तरह ऊंचे से ऊंचे दरजे की रचना सब से बढ़ कर और हमेशा क़ायम रहने वाली और महासुख के देने वाली होगी, क्योंकि जिस क़दर सुख और आनन्द हैं वह सब रूह यानी सुरत की धार के वसीले से मिलते हैं, और इसी तरह जिस क़दर कि ज्ञान और इल्म और समझ बूझ और ताक़त और कूवतें हैं, वह भी सब सुरत की धार के सबब से ज़ाहिर होती हैं,

ओर देह का मसाला जो है वह जड़ है और सुरत की धार के सबब से चेतन्य नज़र आता है, और ऊंचे दरजों में यह मसाला निहायत लतीफ़ दर लतीफ़ होता गया है, और जिस क़दर लतीफ़ यानी सूक्ष्म मसाला है, उसी क़दर उससे जो रूप यानी सूरत या देह बनी हैं, वह भी लतीफ़ और ज्यादा देर ठहरने वाली हैं, फिर जिस दरजे में कि यह मसाला बहुत से बहुत सूक्ष्म और लतीफ़ है, या बिल्कुल मौजूद नहीं है, सिर्फ़ सुरत यानी चेतन्य ही का मंडल यानी भंडार वहां है, तो वह भंडार ज़रूर महा रस और महा आनन्द और महा ज्ञान का महा मंडल और ख़ज़ाना होगा, और वहां की रचना भी ज़रूर अविनाशी होगी, क्योंकि चेतन्य का नाश नहीं है, और मसाले का भी असल में नाश नहीं है, सिर्फ़ सूरत बदल जाती है, फिर वह मसाला अपनी हद्द में क़ायम रहेगा, और चेतन्य अपनी निर्मल हद्द में हमेशा क़ायम रहेगा, यानी जहां कि मसाला बिल्कुल नहीं है, सिर्फ़ चेतन्य ही चेतन्य है, और जहां कि मसाले की हद्द है वहां भी चेतन्य मौजूद रहेगा, मगर उसके साथ मिला हुआ, क्योंकि बिदून चेतन्य के किसी जगह रचना नहीं हो सकती,

और न ठहर सकती है, और चेतन्य से कोई जगह ख़ाली नहीं है। जब यह बात समझ में आ गई तो सिर्फ़ इस हाल का दरियाफ़्त करना भेदी गुरू से अब बाक़ी रह गया, कि किस तरह उस ऊंचे देश में अपनी सुरत पहुंच सकती है, यानी कौन तरकीब के साथ और किस रास्ते से गुज़र कर सकती है॥

९-अब समझना चाहिये कि राधास्वामी अथवा संतमत में सिर्फ़ यही हाल बयान किया है, यानी संतमत चेतन्य के निज भंडार का जो कि कुल्ल का मालिक है पता देता है, और उस रास्ते का कि जहां होकर सुरत (जो कि उस कुल्ल मालिक सूरज रूप की किरन है या सिंध रूप की बूंद है) नीचे की तरफ़ इस पिंड में उतरी है, और जिस तरकीब से कि यह अब फिर उसी रास्ते से उलट कर चढ़ जावे, भेद बताता है, और सच्चे खोजी और ग़ौर और बिचार करने वाले को यही बात दरियाफ़्त करनी बाक़ी रहती है-फिर जब ऐसा खोजी सच्चे गुरू के सन्मुख आकर यह हाल उनके मुख से सुनेगा तो फ़ौरन उसको इस क़दर समझ और पहिचान हो जावेगी, कि मेरा कारज इन्हीं के हाथ से बन सकता है॥

१०–अब फिर ग़ौर करना चाहिये कि जो कोई ऐसा खोजी है, वह अपने हाल को देख कर यह भी परख करेगा कि देह रूप मेरा नहीं है, क्योंकि जब नींद आजाती है, तब देह और दुनिया की ख़बर नहीं रहती, और मन और इन्द्रियां बाहरमुख कार-रवाई नहीं कर सकती हैं, और देह और दुनिया के दुख सुख की भी ख़बर नहीं पड़ती है, और न किसी में मन का बंधन उस वक़्त रहता है, तो इससे साफ़ ज़ाहिर हुआ कि असली मुक्ती (जो कि देह के बंधनों और दुख सुख और जनम मरन से छूटने का नाम है) इसी रास्ते यानी आंखों के अंदर होकर ऊंचे की तरफ़ चढ़ने और चलने से, यानी पुतली को उलटाने और अंतर में ऊपर की तरफ़ चलाने से, हासिल होगी । और साफ़ आंख से दिखलाई देता है कि जब आदमी को ग़श आता है, या किसी क़िस्म की बीमारी में बेहोशी होती है, या जब मौत का वक़्त क़रीब आता है, तो उस वक़्त आंख की पुतली का अंदर और ऊपर की तरफ़ किसी क़दर खिंचना शुरू होता है, तो मरने के वक़्त शरीर छोड़ कर जाने का रास्ता इसी तरफ़ से हुआ ॥

अब मालूम होवे कि राधास्वामी मत में यही

अभ्यास जारी है, कि आहिस्ता २ ध्यान और भजन यानी अंतर अभ्यास करके पुतली को उलटाना और घट में सुरत और दृष्ट को मुक़ाम वार चढ़ाना और सब अस्थानों को तै करके ऊंचे से ऊंचे और सब के अख़ीर के अस्थान में, जो कुल्ल मालिक का धाम और निर्मल चेतन्य का भंडार है, और जहां माया के मसाले का नाम और निशान भी नहीं है, पहुंचा कर बिसराम देना—वही अस्थान परम और अमर आनंद का है, और वहीं पहुंच कर सुरत पहुंचने वाली अमर और अजर हो जाती है, और परम सुख को प्राप्त होती है ॥

फिर ऐसे खोजी को जब यह बात मालूम हुई तब वह निहायत मगन होगा, कि जो बात उसने अपने ग़ौर और विचार और समझ से निकाली वही सच्ची और कुदरती बात साबित हुई, यानी संतों ने जो निज घर के भेदी हैं, वही रास्ता जो कुदरत ने वास्ते उतार और चढ़ाव सुरत के बनाया है तज-वीज़ किया, और उसका भेद तफ़सील के साथ बत-लाते हैं ॥

अब ऐसे खोजी को किसी की गवाही और तस-दीक़ की बिलकुल ज़रूरत नहीं रही, क्योंकि जो हाल

और कैफ़ियत है, वह उस पर रोज़मर्रह जाग्रित और नींद की हालत में गुज़र रही है, और इस वास्ते सिवाय इसके दूसरा रास्ता घर जाने का निश्चय करके नहीं हो सकता है ॥

अब जो तरकीब कि संतों ने घर की तरफ़ चलने की बताई है, वह यह है कि जिस धार पर कि सुरत उतरी है, उसी धार पर सवार होकर उलट जावे, और वही धार जान की धार और नूर की धार और शब्द की धार है, और शब्द की बराबर कोई रास्ता दिखाने वाला और जहां से कि आवाज़ आती है वहां पहुंचाने वाला नहीं है, इस वास्ते शब्द को पकड़ के घर की तरफ़ चलना चाहिये, और शब्द से मत-लब निरी आवाज़ से नहीं है, बल्कि चेतन्य की धार से है, और वही चेतन्य की आदि धार कुल्ल रचना की करता है, और इसी सबब से सब मतों में शब्द की महिमा और शब्द को करता कहा है, और यह बात सब मतों से मुताबिक़ भी हो गई, पर उस शब्द का भेद किसी मत में नहीं पाया जाता है, सो उसको तफ़सील के साथ संत बताते हैं, और राधास्वामी दयाल ने निहायत खोल कर उसका बयान किया है, और सहज तरकीब चलने की जारी फ़रमाई है

अब सच्चे खोजी को ऐसे गुरू पर जो यह सब भेद बतावें ज़रूर पूरा एतक़ाद इस क़दर आना चाहिये, कि इनकी मदद से, और जो जुक्ती कि वे बतावें उसके अभ्यास से, ज़रूर उसका काम पूरा बन जावेगा, यानी सच्चे मालिक के दरबार में पहुंच कर सच्ची मुक्ती प्राप्त होगी, और सच्चा और पूरा उद्धार उसका हो जावेगा, यानी परम आनंद को प्राप्त होगा ॥

११–और जो उस खोजी को ऐसा यक़ीन नहीं आया तो जानो कि वह दरदी खोजी नहीं है, सिर्फ़ वाचक खोजी है, कि बातें सुनने और समझने का शौक़ रखता है, पर मन और इन्द्रियों को रोक कर अभ्यास करने की ताक़त नहीं रखता। ऐसे खोजी को हिरसी कहते हैं, और हिरसी का उद्धार नहीं हो सकता, क्योंकि सच्चा मालिक सच्चे को पसंद करता है, हिरसी और कपटी को उसके दरबार में दख़ल नहीं मिल सकता है, सबब यह है कि हिरसी और कपटी का झुकाव हमेशा मन और इन्द्रियों और उनके भोगों की तरफ़ रहता है, और इस वास्ते उन के मन और सुरत की धार बाहरमुख जारी होकर बिखरी रहती है, और दुरुस्ती से अभ्यास करने के

वास्ते उस धार का रुख़ ऊपर की तरफ़ अंतर में फिरना चाहिये। यह दोनों बात आपस में उलटी यानी बरख़िलाफ़ हैं, इस वास्ते हिरसी कपटी जो बाहरमुख पदार्थों और भोगों में लिपट रहा है, अपने मन और सुरत को घट में अंतर और ऊपर की तरफ़ नहीं उलटा सकता है, और इस सबब से वह कभी सच्चा परमार्थी और अभ्यासी भी नहीं हो सकता है, और न मुक्ती और उद्धार के लायक़ समझा जा सकता है, और न उसको सच्चे गुरू की पहिचान आवेगी, और न उनके साथ वह प्रीत करेगा, बल्कि ऐसा ख़ौफ़ खाकर कि उनके संग से उसके दुनिया के मज़ों का भोग जाता न रहे, उनके सतसंग से हट जावेगा, और कोई न कोई टेक या अपनी ओछी बुद्धी की बात बनाकर संत मत के सत्त मत होने में शक पैदा करके संत सतगुरु की दया से महरूम और अभागी रह जावेगा॥

१२–अब मालूम होना चाहिये कि दुनिया में दुनियादार बहुत हैं और परमार्थ के खोजी बहुत कम, और जो खोजी भी हैं उन में दरदी प्रेमी बहुत कम से कम हैं, और संतमत के लायक़ सिर्फ़ वही जीव हैं जो सच्चे खोजी दरदी हैं, और बाक़ी जितने हैं

वे सब व्योहारी और संसारी हैं, और संसार के भोग और पदार्थों को छोड़ना नहीं चाहते, लेकिन इसका फल और नतीजा उनको सख़्त तकलीफ़ या मौत के वक़्त मालूम होवेगा, अभी तो ग़फ़लत और भूल में पड़े हुए सच्चे परमार्थ से वे परवाही करते हैं॥

१३–जो सच्चे खोजी दरदी हैं वे थोड़ी बहुत सच्चे गुरू की पहिचान करके जैसा कि ऊपर लिखा गया अभ्यास में लग जावेंगे, फिर जिस क़दर कि उनका अभ्यास घट में बढ़ता जावेगा, उसी क़दर उनको कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया और सतगुरु की गत की ख़बर पड़ती जावेगी, यानी उनके ऊंचे से ऊंचे दरजे का हाल मालूम होता जावेगा, तब उसी क़दर वह उनके चरनों में दीन और आधीन होता जावेगा, और उमंग कर तन मन और धन से सेवा करेगा, और प्रीति और प्रतीत राधास्वामी दयाल के चरनों में बढ़ती जावेगी, और उस के साथ अंतर अभ्यास में भी तरक़्क़ी होती जावेगी॥

१४–खुलासा यह है कि जब तक किसी के मन में सच्चा खोज और दर्द परमार्थ का नहीं होवेगा, और संसार से उसका हाल देख कर किसी क़दर वैराग चित्त में नहीं आवेगा, तब तक वह संत सत-

गुरु के सतसंग के लायक़ नहीं हो सकता, और न उस को सच्चे गुरू में भाव और प्यार आवेगा, और न राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत आवेगी, और न राधास्वामी मत की महिमा और बड़ाई उसकी समझ में आवेगी, और चाहे कोई दूसरे प्रेमी लोगों को देख कर सतसंग में शामिल भी हो जावे, पर उससे संगत में ठहरा नहीं जावेगा, यानी मत में शामिल नाम के वास्ते रहेगा, पर अभ्यास (चाहे उपदेश भी ले लेवे) उससे दुरुस्ती से नहीं बनेगा, और इस सबब से प्रतीत भी उसको नहीं आवेगी, और न सच्ची प्रीत उसके हिरदे में जागेगी॥

भाग दूसरा

१५–संतमत में सतगुरु उनको कहते हैं जो कि धुर अस्थान तक पहुंचे, और साधगुरू वह हैं जो पारब्रह्म पद तक पहुंचे, और इस वास्ते सतगुरु को सत्तपुर्ष समान, और साध गुरू को पारब्रह्म समान मानते हैं–पर इस तरह की समझ हर कोई धारन नहीं कर सकता है, जब तक कि वह कोई दिन सतसंग और अभ्यास सुरत शब्द मारग का न करे, और अपने अंतर में परचा न पावे॥

१६–इस वास्ते गुरू में जिस क़िसी की समझ में

संतमत अच्छी तरह से आ जावे, उसको इस क़दर समझ धारना, कि गुरू बड़े और बुज़ुर्ग और सब तरह से सच्चे परमार्थ की काररवाई में मदद देने वाले हैं, काफ़ी होगा, पर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रतीत और प्रीत अपनी समझ बूझ के लायक़ ज़रूर लाना चाहिये, कि जिससे अभ्यास और सतसंग सच्ची लगन के साथ बनते जावें ॥

१७-जब इस रीत से जो कोई सचौटी और शौक़ के साथ सतसंग और अभ्यास शुरू करेगा, तो उस को आहिस्ता २ ज़रूर अपने अंतर में अभ्यास का रस थोड़ा बहुत आता जावेगा, और गुरू का कोई दिन संग करके उनकी रहनी भी समझ में आवेगी, और उनके बचनों की भी परख और पहिचान होती जावेगी, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया के भी परचे अंतर में मिलते जावेंगे ॥

१८-इसी हालत के साथ ऐसे परमार्थी की प्रतीत और प्रीत चरनों में राधास्वामी दयाल और भी गुरू के दिन २ बढ़ती जावेगी, और गुप्त भेद संत मत और उसके अभ्यास का आहिस्ता २ खुलता जावेगा, और अंतर में आनंद और शान्ती आती जावेगी ॥

१९-संतमत में मुख्यता प्रेम की है, जो हिरदे में सच्चा प्रेम और शौक़ होगा तो परमार्थी काररवाई यानी अभ्यास और सतसंग आसानी से बनता जावेगा, और जिस क़दर राधास्वामी दयाल और गुरू के चरनों में प्यार आता जावेगा, उसी क़दर अभ्यास में तरक्क़ी होती जावेगी ॥

२०-जितने काम स्वार्थ या परमार्थ के हैं, वे सब बिना सच्ची चाह या शौक़ के नहीं बन सकते, और न बिना प्यार और प्रीत के कोई किसी से मिल सकता है-और न आपस में मोहब्बत के साथ संग कर सकता है-खुलासा यह कि प्रीत यानी कशिश यानी खिंचाव शक्ती कुल्ल रचना के कारस्वाई की जान है, बग़ैर प्रीत या कशिश परमानू की किसी चीज़ का रूप नहीं बन सकता, और न ठहर सकता है, और न किसी क़िस्म की कारस्वाई रचना की जारी हो सकती है, और न क़ायम रह सकती है ॥

२१-गहरी प्रीत राधास्वामी दयाल के चरनों में आना चाहिये, तब मेला होवे, लेकिन जो कि उन के स्वरूप का जैसा कुछ कि है दर्शन नहीं हुआ, इस सबब से गहरी प्रीत उनके चरनों में नहीं आसकती, पर गुरू के चरनों में किसी क़दर मोहब्बत पैदा हो

सकती है, यानी जिस क़दर कि अभ्यासी ने सतसंग और अभ्यास करके उनकी और उनके शब्द की महिमा समझी और अंतर में परखी है, उसी क़दर उसको उन में और राधास्वामी दयाल और उनके शब्द में प्रीत और प्रतीत पकती और बढ़ती जावेगी, और यही प्रीत अंतर अभ्यास में मदद देती जावेगी, और आहिस्ता २ एक दिन अभ्यासी का भाव और प्यार और विस्वास राधास्वामी दयाल और गुरु स्वरूप के चरनों में पूरा २ जैसा कि चाहिये आ-जावेगा, और तब काम भी पूरा हो जावेगा ॥

२२–गुरू में सत्तपुर्ष सम भाव लाने में बड़े बिघन मन में पैदा होते हैं–पहिले तो यह उनको मनुष्य स्वरूप देखता है–दूसरे उनकी देह हद्दार दिखलाई देती है, फिर सत्तपुर्ष समान उनको सर्वत्र और सर्वज्ञ कैसे माने–तीसरे जब चाहे और जिस तरह इसकी ख़्वाहिश होवे, उसके मुवाफ़िक़ कोई कारवाई कुद रती क़ायदे के मुवाफ़िक़ या बरख़िलाफ़ उन से नहीं करा सकता है–अपनी मौज और दया से वे चाहे जो कुछ करें, और चाहे जैसे परचे इसको अंतर और बाहर इसकी मांग और चाह से ज़्यादातर दिखलावें, पर जो परीक्षा के तौर पर कोई उनकी

गत और ताक़त को परखा चाहे, तो वे चाहे पूरे गुरू होवें, कभी अपने आप को ऐसे जीवों पर ज़ाहिर नहीं करते हैं, क्योंकि करामात दिखा कर जीवों को परमार्थ में लगाना मंजूर नहीं है, और न उसमें जीवों का फ़ायदा है, बल्कि करामात देखनेवालों की प्रीत और प्रतीत का बिल्कुल एतवार नहीं हो सकता है, और ऐसे लोग संसारी होते हैं, और अपनी संसार की टेक कभी नहीं छोड़ेंगे—चौथे जो कोई पूरे गुरू की परख और पहिचान उन लक्षनों के मुवाफ़िक़ करना चाहे, जो पुरानी किताबों में लिखे हैं, तो वह धोखा खावेगा क्योंकि उसकी क्या ताक़त कि अपनी काम क्रोध लोभ मोह और अहंकार की सनी हुई बुद्धि से उनकी रहनी की परख करे, सिवाय इसके वास्ते सम्हाल और गढ़त जीवों के वे जब २ मुनासिब समझते हैं, क्रोध और लोभ और अहंकार के स्वरूप में भी ज़रूरत के मुवाफ़िक़ बर्ताव करेंगे, लेकिन उनका ऐसा बर्ताव सब देखने मात्र होगा, अंतर में नहीं बिंधेगा, पर संसारी जीवों की क्या ताक़त है, कि वे ऊपरी और अंतरी बर्ताव में फ़र्क़ कर सकें, इस वास्ते ऐसे जीव हमेशा डिग मिग रहेंगे, और कभी उनकी प्रतीत गुरू चरनों में नहीं पकेगी

पांचवें ऐसे जीव गुरू के वचनों को अपनी विद्या और बुद्धी की समझ के साथ मिलावेंगे, या विद्यावानों के क़ौलों से उनकी जांच करेंगे, सो यह बात भी ना मुमकिन होगी, क्योंकि विद्या और बुद्धीवाले अटकल से बातें बनाते हैं, और इस लोक की ज़ाहिरी कुदरत की कारस्वाई के मुवाफ़िक़ आसमानी बातों की तौल और जांच करते हैं, गुप्त कुदरत और उसके भेद को न तो हिरदे की आंखों से देखा और न किसी ऐसे देखे हुए से सुना न समझा, फिर उनके बचनों से संतों के वचनों को मिलाना या मुक़ाबला करना किस क़दर नादानी और कमफ़हमी की बात है, और ऐसा मेल कभी नहीं होगा, और इस वास्ते इस क़िस्म के जीवों के मन में कभी पूरे गुरू की प्रतीत नहीं आवेगी, बल्कि अपनी विद्या और बुद्धी के अहंकार में ऐसा ख्याल करेंगे, कि इनका मत मूर्खों के वास्ते है, और जो विद्यावानों को उसमें शामिल होते देखेंगे तो उनको भी नादान समझेंगे, या यह कि उनकी अक़्ल में खलल आ गया है, या उन पर जादू और मंतर का असर पैदा किया गया है—छठे यह कि जिन जीवों के मन में मान और अहंकार भरा हुआ है, और सच्ची चाह परमार्थ की नहीं है, वह पूरे

गुरू की निस्बत इस क़िस्म के ख्याल करेंगे, कि अपनी मान और बड़ाई और पुजाने और आमदनी पैदा करने के लिये नया मत जारी किया है, और उनके गत की परख ज़रा नहीं आवेगी, इतना भी ग़ौर नहीं करेंगे कि जो उनके मान और बड़ाई की चाह होती, और अपने मत को कसरत से फैलाने का इरादा होता, तो वे कोई २ चाल इस क़िस्म की क्यों जारी करते, कि जिस से संसारी जीव उन के सतसंग से डर कर दूर भागें, और उनके नज़दीक और सन्मुख भी न आवें, जो ऐसी चाह होती तो वह पाषंडियों के मुवाफ़िक़ ऐसी चाल चलते कि दुनियादार खुश होकर उनके मत और पूजा में शामिल होते, पर वे सच्चे हैं और सच्चे मालिक के सच्चे मत का उपदेश करते हैं, चाहे दुनियादार राज़ी होवें या नाराज़, वे हमेशा सच्ची बात कहेंगे, और सच्चे मत की सच्ची चाल चलावेंगे, और वे जीवों से उनके हित और कल्यान के वास्ते प्रीत करने में अपना ज़ाती मतलब कोई नहीं रखते—सातवें संसारी जीव हमेशा अपनी ख़ातिरदारी और मान और आदर चाहते हैं, और अहंकार करके सतसंग और सेवा में वहां के क़ायदों के मुवाफ़िक़ शामिल होना नहीं चाहते,

और जो ऐसा करते हैं उन पर तान मारते हैं, और पूरे गुरू की निस्बत इल्ज़ाम लगाते हैं, कि वे अपने सेवकों को ऐसी काररवाई से क्यों नहीं रोकते, लेकिन वे किस तरह असल परमार्थ के क़ायदे और काररवाई को बदल सकते हैं, और सेवकों का अकाज किस तरह रवा रख सकते हैं, इस सबब से संसारी जीव जो सतसंग में शामिल भी हो गये हैं, अपने मन में पूरे गुरू और उनके प्रेमी सतसंगियों के निंदक बने रहते हैं, और संसारियों में जाकर तरह २ की निंद्या अपनी नादानी और अहंकारी अंग के मुवाफ़िक़ करते हैं। इन जीवों को भी प्रीत और प्रतीत गुरु चरन में नहीं आवेगी, और इस वास्ते राधास्वामी दयाल और उनके शब्द में भी इनका भाव और प्यार डामा डोल रहेगा॥

२३–जो कोई सच्चा खोजी और दरदी है वह कभी ऐसे ख्याल और बर्ताव जिनका ज़िकर ऊपर की दफ़ा में लिखा गया, निस्बत सतगुरु और उनके सतसंग के कभी नहीं करेगा, और अपना मतलब सच्चे परमार्थ के हासिल करने का पेश नज़र (सनमुख) रख कर, जो २ काररवाई कि संतों ने अंतरी और बाहरी, वास्ते गढ़त मन और इन्द्री और स्वभाव के जारी फर-

माई हैं, उनको बहुत ख़ुशी के साथ मानेगा, और उमंग के साथ उनके मुवाफ़िक़ काम करेगा, और संसारियों का, जो असली परमार्थ से बेख़बर हैं, भय और शरम अपने मन में नहीं लावेगा, और अपने मन और इन्द्रियों को थोड़ा बहुत ज़ोर देकर रोकेगा, और सच्चे तौर पर परमार्थ की काररवाई में लगावेगा, और फिर वही सतगुरु और राधास्वामी दयाल की दया का भागी होकर अपने अन्तर और बाहर उनकी मेहर और रक्षा के परचे हर रोज़ देख कर उनके चरनों में गहरी से गहरी प्रीत और प्रतीत करके अपना जनम सुफल करेगा, यानी जीते जी अपने उद्धार की कैफ़ियत देख कर शान्ती और आनन्द को प्राप्त होगा ॥

बचन १५

राधास्वामी सत संदेश

जो लोग कि सच्चे खोजी सत पद के हैं, और अपने जीव के पूरे और सच्चे उद्धार के वास्ते दर्द के साथ सच्ची ख़्वाहिश रखते हैं, यानी सच्चे परमार्थी हैं, और दुनिया की तरफ़ से उनके दिल में किसी क़दर उदासीनता है, उनके वास्ते सत मत का भेद इस बचन में कहा जाता है ॥

राधास्वामी मत क्या है

१-राधास्वामी मत को संतमत कहते हैं, और यही मत सत्तमत है, यानी सत्त पद को लखाता है, और उसका भेद समझाता है ॥

राधास्वामी नाम की सिफ़त

२-राधास्वामी नाम कुल्ल और सच्चे मालिक का नाम है, जो ईश्वर परमेश्वर और ब्रह्म पारब्रह्म और आत्मा परमात्मा और खुदा और निर्बान पद सब का निज करता है ॥

३-यह नाम किसी का धरा हुआ नहीं है, इसको कुल्ल मालिक ने मेहर और दया से आप प्रगट किया, यानी यह नाम ऊंचे देश में बग़ैर मदद ज़बान या बाजे के आप बोल रहा है ॥

और उस धुन को बड भागी अभ्यासी अपने घट में सुनते हैं ॥

४-जो कोई इस नाम को उसके नामी और धाम और वहां पहुंचने के रास्ते का भेद लेकर प्रेम के साथ गावेगा, या उसका सुमिरन या ध्यान करेगा, या चित्त लगा कर उसकी धुन को अंतर में सुनेगा, वही कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया और सतगुरु की कृपा से भवसागर के पार जावेगा, और परम आनंद

को प्राप्त होकर, काल के कलेश और जनम मरन के दुक्खों से बच जावेगा ॥

अर्थ राधास्वामी नाम के

५–राधा नाम आदि सुरत यानी आदि धुन का है, जो आदि शब्द से प्रघट हुई, और स्वामी नाम कुल्ल मालिक यानी आदि शब्द का है ॥

६–शब्द यानी आवाज़ प्रथम ज़हूर यानी प्रकाश कुल्ल का है, और यही सब रचना का करता है ॥

७–या इस तरह समझो कि राधा यानी धुन उस चेतन्य धार का नाम है, जो अनामी पुर्ष स्वामी से आदि में प्रघट हुई, और उसी को आदि सुरत कहते हैं, और स्वामी नाम उस पुर्ष यानी कुल्ल मालिक का है जो अकह और अपार और अनंत और अगाध और अनाम है, और जिसके चरनों से धारा यानी धुन आदि में प्रघट हुई ॥

८–आदि धारा यानी धुन अथवा आदि सुरत कुल्ल रचना की करता है, और इस वास्ते वही कुल्ल रचना की माता है, और स्वामी यानी आदि शब्द कुल्ल रचना का पिता है ॥

९–जब यह धुन या धारा उलट कर स्वामी या शब्द की मुतवज्जह होवे, तब इस धारा का

नाम राधा और आशिक़ यानी प्रेमी और भक्त है, और शब्द यानी स्वामी प्रीतम और माशूक़ है ॥

१०—जब तक कि यह धारा या धुन जारी है तब तक वह और शब्द दो समझे जाते हैं, और जब कि वह धारा उलट कर शब्द यानी स्वामी में समा जावे तब एक हो गये यानी दो का फ़र्क़ जाता रहा ॥

खुलासा हाल रचना का

११—जो धारा कि आदि में प्रघट हुई, वह उतर कर किसी क़दर फ़ासले पर ठहरी, और वहां उसने मंडल बांध कर रचना करी, इस अस्थान का नाम अगम लोक है, और जो धारा कि वहां आकर ठहरी उसका नाम अगम पुर्ष है, यानी राधास्वामी दयाल का तख़्त का अस्थान है ॥

१२—जब अगम लोक की रचना हो गई, तब वहां से भी धारा प्रघट होकर नीचे उतरी, और किसी क़दर फ़ासले पर ठहर कर और वहां मंडल बांध कर उसने रचना करी, इसका नाम अलख लोक है, और उस धारा का नाम अलख पुर्ष है ॥

१३—अलख पुर्ष से भी धारा प्रघट होकर और पहिले दस्तूर के मुवाफ़िक़ नीचे उतर कर जहां ठहरी

और उसने मंडल बांध कर रचना करी उसका नाम सत्तपुर्ष और सत्तलोक है ॥

१४—यहां तक निर्मल चेतन्य यानी रूहानी रचना हुई, और राधास्वामी दयाल आप इन अस्थानों में व्यापक और मौजूद हैं, यहां काल कलेश और दुक्ख और दर्द और जनम मरन नहीं है, यह सब अस्थान दयाल देश या संत देश या निर्मल चेतन्य का देश कहलाते हैं यहां का प्रकाश सेत रंग है ॥

१५—बहुत अरसे तक इसी क़दर रचना होकर रह गई और यहां की बासी सुरतें हंस कहलाती हैं, और अनंत दीप रूहानी इन लोकों के गिर्द में पैदा किये गये उन में हंस रहते हैं और अमी का अहार और पुर्ष के दर्शन का बिलास करते हैं ॥

१६—ऊपर जो धारा का ज़िकर लिखा गया है, वह धारा निहायत सूक्ष्म है कि किसी तरह नज़र नहीं आ सकती, और न कुछ उसका आकार मालूम हो सकता है, जैसे चुम्बक पत्थर को जब लोहे के छोटे २ टुकड़ों के सामने लाओ तो वह लोहे के टुकड़ों को अपनी धार के वसीले से खींचता है, पर वह धारा उससे निकलती हुई बिलकुल मालूम नहीं होती है—यह दृष्टान्त भी सर्व अंग करके दुरुस्त नहीं है,

लेकिन सिर्फ़ धारा की सूक्ष्मता समझाने के लिये दिया गया है॥

१७–सत्तलोक के मंडल के नीचे जो चेतन्य था वह श्याम रंग के गुबार से ढका हुआ था, और जिस क़दर कि सत्तलोक से दूरी होती गई वह गुबार भी बढ़ता गया, जैसे किसी चीज़ पर तह पै तह चढ़ी हुई होती है॥

१८–सत्तलोक के नीचे से श्याम धारा भूरे रंग की प्रघट हुई, और यह धारा भी चेतन्य थी जैसे कि ऊपर के लोकों की धारा चेतन्य है, इस धारा ने सत्तपुर्ष से बिन्ती करके आज्ञा मांगी कि सत्त-लोक के मुवाफ़िक़ रचना करे, तब उसको हुक्म हुआ कि नीचे के देश में जाकर रचना करे, इस धारा का नाम निरञ्जन यानी काल पुर्ष है, और नीचे उतर कर यानी ब्रह्मांड में, इसी का नाम पारब्रह्म और ब्रह्म हुआ॥

१९–यह श्याम धारा नीचे उतरी पर वह मंडल बांध कर जैसे ऊपर की धाराओं ने रचना करी, ऐसी रचना न कर सकी, तब उसने सत्तपुर्ष से फिर बिन्ती करके मदद मांगी, तब सत्तलोक से दूसरी धारा ज़र्द रंग प्रघट करके नीचे उतारी गई। यह धारा सुरतों का

भंडार लिये हुए आई, और फिर इसने और पहिली श्याम धारा ने मिल कर नीचे के देश में रचना करी। इस धारा का नाम जोत और आद्या है, और नीचे के देश यानी ब्रह्माण्ड में इसी का नाम माया हुआ॥

२०—पहिले इन दोनों धारों ने ब्रह्माण्ड की रचना करी यानी ब्रह्म सृष्टी करी, इस देश में गुबार किसी क़दर साफ़ और सूक्ष्म था, इस सबब से यहां की रचना भी सूक्ष्म हुई॥

२१—सत्तलोक के नीचे एक अस्थान यानी लोक रचा गया, कि जिसको दयाल देश का द्वारा समझना चाहिये, और उसके नीचे एक भारी मैदान है, जिस को महासुन्न कहते हैं, और वह दयाल देश और ब्रह्माण्ड यानी ब्रह्म और माया देश के बीच में हद्द के तौर पर है॥

२२—फिर इसके नीचे तीन अस्थान निरंजन और जोत ने रचे, जो ब्रह्माण्ड की हद्द में शामिल हैं, नीचे के अस्थान को सहसदलकंवल कहते हैं, और जहां निरंजन और जोत का स्वरूप प्रगट है, और यही अस्थान सब मतों का जो दुनिया में जारी हैं सिद्धान्त पद है, यानी इसके ऊपर का हाल किसी मत की किताबों में नहीं लिखा है, सिर्फ़ जोगीश्वर ज्ञानी

ब्रह्माण्ड की चोटी तक यानी सहसदलकंवल के ऊपर दो मुक़ाम तक गये, पर वहां का भेद उन्होंने गुप्त रक्खा, कहीं २ इशारा में वर्णन किया, लेकिन ब्रह्माण्ड के परे कोई नहीं गया, सिवाय संत सत-गुरु के जोकि सत्तलोक से आये, और कुल्ल रचना के भेद से आपही वाक़िफ़ थे ॥

२३–सहसदलकंवल से तीन धार सत, रज, तम, जिनको गुन और भी ब्रह्मा, विष्णु और महादेव कहते हैं पैदा हुईं, और इन धारों ने नीचे के देश की रचना करी, जिसको पिंड कहते हैं और जिसमें छः चक्र शामिल हैं ॥

२४–इस रचना में देवता और मनुष्य और पशू और बाक़ी कुल्ल रचना चारों खान की शामिल है, यहां गुबार भारी था यानी अस्थूल माया थी, इस सबब से यहां की रचना भी अस्थूल हुई ॥

२५–और चार खानों के नाम यह हैं (१) जेरज जो झिल्ली में लिपटे हुए पैदा होवें (२) अंडज जो अंडे से पैदा होवें (३) स्वेदज जो पानी और पसीने से पैदा होवें (४) उषमज जो ज़मीन से पैदा होवें जैसे दरख़्त बनास्पती वग़ैरह, और भी जो खान से पैदा होवें ॥

२६—इस दरजे में सूक्ष्म और अस्थूल शरीर के साथ पांच दूत (१) काम (२) क्रोध (३) लोभ (४) मोह और (५) अहंकार, और चार अंतःकर्ण (१) मन (२) चित (३) बुद्धि (४) अहंकार, और दस इंद्री यानी पांच ज्ञान इन्द्री (१) आंख (२) कान (३) नाक (४) ज़बान रस लेनेवाली और (५) तुचा यानी खाल, और पांच करम इन्द्री (१) हाथ (२) पांव (३) ज़बान बोलने वाली (४) पेशाब की और (५) पाख़ाने की इन्द्री बतौर औज़ारों के वास्ते काररवाई उन शरीरों के, सूक्ष्म और अस्थूल रचना के लोकों में शामिल हुए ॥

२७—और इन लोकों में यानी सूक्ष्म और अस्थूल लोक में माया ने अनेक तरह के भोग इन सब इन्द्रियों के पैदा किये, और उन भोगों से मन और इन्द्री अपना भोग बिलास कर रहे हैं ॥

२८—सुरत की धार जो ऊंचे देश से आई वह पहिले मन को चैतन्य करती है, और मन के अस्थान से जो धार सुरत और मन की मिलौनी से उठती है वह इन्द्रियों को चैतन्य करती है, और इन इन्द्रियों के द्वारे वही धार भोगों और पदार्थों में शामिल हो कर उनका रस उन्हीं इन्द्रियों के वसीले से मन को

देती है, यह करतवाई अस्थूल देह में बैठकर सुरत और मन इन्द्रियों के वसीले से इस देश में कर रहे हैं॥

बर्णन जौहर सुरत और मन और उनके अस्थान का पिण्ड में

२९—अब समझना चाहिये कि सुरत की धार दयाल देश से आई, और वह सत्तपुर्ष राधास्वामी की अंस है, अंस के अर्थ टुकड़े के नहीं हैं, अंस कहने से सिर्फ़ यह मतलब है, कि सुरत वही जौहर है जो कुल्ल मालिक का जौहर है, और वह कुल्ल मालिक सब जगह मौजूद है, पर एक देश में प्रघट और वे परदे और बाक़ी देश में गुप्त यानी परदा या तह से ढका हुआ, और यह परदे या तह जिस क़दर कि प्रघट देश से दूरी होती गई बढ़ते गये, जैसे कि प्याज़ के ऊपर या केले के दरख़्त पर तह पै तह चढ़ी होती हैं, और हर एक अंदरी तह या परदा बाहर की तह या परदा से मुलायम और साफ़ और सूक्ष्म होती है, इसी तरह यह तह या परदे गुबार यानी माया के उस चेतन्य पर चढ़े हुए हैं, और पहिला परदा या तह निहायत लतीफ़ और सूक्ष्म और दूसरा उससे कम लतीफ़ और तीसरा उससे कम लतीफ़ है, ऐसे ही अस्थूल माया के देश

में अस्थूल यानी मोटी तह या परदे हैं, और सुरत उनके अंदर गुप्त है ॥

३०–और प्रघट और गुप्त का हाल थोड़ा बहुत इस दृष्टान्त से समझ में आवेगा–जैसे कि इस लोक में पानी एक देश यानी समुद्र में प्रघट है और बाक़ी देशों में यानी ज़मीन पर गुप्त है, यानी तह या परदों से ढका हुआ है, कहीं वह तह या परदा पांच चार हाथ मोटा, कहीं दस बीस हाथ, कहीं चालीस पचास हाथ, और कहीं इससे भी ज्यादा, मगर पानी हर जगह मौजूद है, और बग़ैर परदा या तह के हटाये उसका दर्शन या उससे कुछ कररवाई मुमकिन नहीं है ॥

३१–दूसरी धार निरञ्जन से (जिसका अस्थान ब्रह्माण्ड में है और वह नीचे के देश में भी व्यापक है) निकली और इसका नाम मन हुआ, और मन उसको कहते हैं कि जिस में फुरना होवे यानी तरङ्ग और ख्याल उठे, यह नीचे के देश में दरजे बदरजे अस्थूल होता गया, और यही इन्द्रियों का प्रेरक है ॥

३२–तीसरी धार माया से निकली, इस माया का अस्थान भी ब्रह्माण्ड में है, और वही सब नीचे के देश में मौजूद है, और यह भी दरजे बदरजे मुवाफ़िक़ परदो के अस्थूल यानी कसीफ़ होती गई।

इसके मसाले से तन और इन्द्री वग़ैरह बनी, और यह सुरत की शक्ती से चेतन्य हैं, जिस शक्ती की धार मनके वसीले से पिंड में फैलती है ॥

३३-सुरत की असली बैठक पिंड में दरमियान दोनों आंखों के जो अंदर की तरफ़ तिल है उस में है, और इसी अस्थान से तमाम पिंड में फैली है, और जाग्रित के वक्त दोनों आंखों में नशिस्त है, जब सुरत की धार अंदर और ऊपर की तरफ़ खिंच जाती है, उस वक्त देह और इंद्रियां बेकार हो जाती हैं, यानी तमाम काररवाई उनकी बंद हो जाती है ॥

३४-मन की बैठक ख़ास कर सीने के नीचे कौड़ी के मुक़ाम पर है, और वहीं से धार इंद्रियों में आती है, और भी तमाम देह में फैलती है, लेकिन जब तक सुरत की धार ऊपर से मन के अस्थान पर न आवे, तब तक यह कुछ काररवाई नहीं कर सकता है ॥

३५-माया की धार से जो कि जगह २ अस्थूल रूप हो गई पिंड के अंग २ बने हैं, और वही कुल्ल देह में व्यापक है ॥

बयान हालत खिंचाव सुरत का

३६-जब आदमी की पुतली आंख की खिंच जाती है, वह फ़ौरन बेहोश हो जाता है, और देह बेकार हो

जाती है, और मन और इंद्रियां भी बेकार हो जाती हैं ॥

३७-इसी तरह जब ज़्यादा खिंचाव उस धार का हो जाता है, तब आदमी मर जाता है, और जो थोड़ा सा खिंचाव हुआ, तब बेहोश हो जाता है या नींद आजाती है, और इस तरफ़ से ग़ाफ़िल हो जाता है ॥

३८-इससे साबित हुआ कि तमाम काररवाई बदन की सुरत की धार के आसरे है, और इस धार का ऊपर से यानी दिमाग़ से आंखों में और फिर तमाम देह में उतरना और फैलना, और फिर अख़ीर वक़्त पर इसी रास्ते से यानी आंख के मुक़ाम से अंदर और ऊपर की तरफ़ होकर चले जाना और पिंड का छोड़ना, साफ़ इन आंखों से नज़र आता है, क्योंकि मरते वक़्त पावं की उंगलियों से खिंचाव उस धार का शुरू होकर रफ़ता २ ऊपर की तरफ़ को चलता जाता है, और जब पुतली उलट गई यानी खिंच गई, तब पिंड की मौत हो जाती है ॥

३९-और यह बात भी इस बयान से साबित हुई कि जब सुरत जाग्रित के वक़्त आंखों में बैठी है उस वक़्त देह और दुनिया का दुख सुख और चिंता और

फ़िकर व्यापता है; और जब अंदर की तरफ़ थोड़ी बहुत खिंच गई, उस वक़्त न देह की ख़बर रहती है और न दुनिया की, और उनका दुख सुख भी नहीं व्यापता है। देखो जब डाक्टर लोग शीशी सुंघाते हैं, उस वक़्त सुरत यानी रूह की धार हट जाती है, फिर बदन काट डालते हैं और कुछ ख़बर नहीं होती, इससे साफ़ ज़ाहिर है कि देह और इन्द्रियां जड़ हैं और सुरत चेतन्य है उसकी चेतन्यता से यह भी चेतन्य होते हैं और जब उससे यानी सुरत से सम्बंध ढीला हो जाता है या टूट जाता है, उस वक़्त यह देह और इन्द्रियां बेकार या मुर्दा हो जाती हैं॥

४०-ऊपर के बयान से ज़ाहिर होता है, कि जो कोई जीते जी दुख सुख संसार और देह से बचाव चाहे तो वह ऐसी तरकीब करे, कि जिस से जब चाहे जब वह अपनी सुरत को आंख के अस्थान से अन्दर और ऊपर की तरफ़ जिस क़दर मुनासिब और ज़रूर समझे खींच ले जावे, तब उसको तकलीफ़ और आराम देह और दुनिया से बचाव हो सकता है॥

रचना के तीन दरजों का बयान

४१-संतों ने कुल्ल रचना को तीन बड़े दरजों में तक़सीम किया है, और वह तीन दरजे यह हैं॥

(१) पहिला दरजा जिसमें निर्मल चेतन्य यानी सिर्फ़ रूह का मंडल है, और वहां के लोक और उन लोकों में सब रचना रूहानी यानी चेतन्य लतीफ़ है, और यह मंडल दयाल अथवा संत देश कहलाता है ॥

(२) दूसरा दरजा--इस पहिले दरजे के नीचे से जैसा कि ऊपर बयान हो चुका है गुबार यानी माया का ज़हूर हुआ, जितने रंग हैं लाल से लगा कर नीले यानी काले रंग तक सब मन और माया के रंग हैं, इस दरजे में सूक्ष्म यानी लतीफ़ माया निर्मल चेतन्य को तह या गिलाफ़ के तौर पर ढके हुए है, यानी लतीफ़ माया की देहियाँ तैयार होकर, और उसमें रूह बैठ कर उस देश में काररवाई करती है। यह दरजा ब्रह्माण्ड कहलाता है ॥

(३) तीसरा दरजा--इस दरजे में निर्मल चेतन्य पर सिवाय सूक्ष्म माया के गिलाफ़ों के अस्थूल माया की तहें चढ़ी हुई हैं, और इसी सबब से यहां के लोक भी कसीफ़ और उनकी रचना भी निहायत कसीफ़ यानी अस्थूल है--छः चक्र पिण्ड के इसी दरजे में शामिल हैं ॥

इस लोक में सुरत की हालत और काररवाई का बयान और उसके निकासी का जतन

४२--हमारा यह पृथ्वी लोक तीसरे दरजे में है, और इसी सबब से यहां की रचना भी अस्थूल है, और यहां सुरत यानी रूह कितने ही परदे में गुप्त है। किसी दरख़्त का बीज लेकर देखो, कि कितनी तह या छिलके उस पर चढ़े हुए हैं, और फिर उनके अंदर मग़ज़ और मग़ज़ के भी किसी दरजे में उस बीज के रूह की बैठक है, जहां से कि वक़्त पैदाइश के कुला फूटता है, यानी प्रथम धार निकलती है, और इन परदे या ग़िलाफ़ या तह को शरीर या देह कहते हैं॥

४३--इसी तरह आदमी की रूह भी कई परदों यानी शरीरों में गुप्त है, पहिला अस्थूल शरीर, दूसरा सूक्ष्म और तीसरा कारन शरीर, और इन तीनों में हर रोज़ सुरत यानी रूह की आमदरफ़्त रहती है॥

४४–ऊपर के बयान से ज़ाहिर है कि यह देश सुरत यानी रूह का नहीं है, क्योंकि यह माया का देश है, और यहां काल और माया प्रधान यानी ग़ालिब हैं, और सुरत उनकी आधीन है। हरचंद कि सब काररवाई इस देश में सुरत की धार की ताक़त से हो रही है, पर सुरत का मुख यहां नीचे और बाहर की तरफ़

हो रहा है, और इस सबब से उसकी धारें मन और माया से मिलकर जारी होती हैं, और मन और माया का असर उनमें ज़बर रहता है, इस वास्ते जीव का झुकाव संसार और उसके भोगों की तरफ़ ज़्यादा रहता है ॥

४५--अब जब तक कि किसी मनुष्य को ऊपर के देश के बासी या उस तरफ़ के चलनेवालों का संग न मिलेगा, और वह उनसे भेद रास्ता और जुगत चलने की लेकर, इस देश और इस घाट यानी अस्थान को आहिस्ता २ छोड़ना शुरू न करेगा तब तक सच्चे और पूरे तौर मन और माया का ज़ोर कम न होगा, और न उस मनुष्य की पुरानी आदतें और स्वभाव और ख़्वाहिशें और व्योहार जो संसारियों का संग करके पड़ गई हैं, बदलेंगी ॥

४६--संग और तमाशा और तजुर्बह जिस सोहबत और जिस पेशे में जो कोई कि होवे बड़ा भारी असर रखता है, यानी जैसे आदमी की सोहबत होगी और जैसा कुछ कि वह अपनी आंख से देखेगा और जो कुछ कि हालत उस पर बीतेगी, उसी मुवाफ़िक़ उसकी रहनी और व्योहार और चाह होवेगी, और जो चाह कि उसके मन में ज़बर होगी, उसी के पूरे करने के वास्ते वह मिहनत और तवज्जह के साथ जतन करेगा ॥

अमर और परम सुख की प्राप्ती के लिये जतन करना ज़रूर है और उसी का नाम सच्चा परमार्थ है

४७–सब जीव दुनिया के सुखों के वास्ते मिहनत कर रहे हैं, और दुखों के दूर करने के लिये तद-बीर करते हैं, पर इस दुनिया के जितने सुख हैं वे सब मन और इन्द्रियों के भोग हैं, और नाशमान और तुच्छ और जड़ हैं, और जिस किसी को यह सब सुख मिल भी गये तो एक दिन उनको ज़रूर मरने के वक्त छोड़ना पड़ेगा, और जो उन्हीं की चाह मन में ज़बर रही और उमर भर यही काम करता रहा, तो उसी चाह और स्वभाव और आदत के मुवाफ़िक़ फिर जनम धरना पड़ेगा, और इसी तरह हमेशा जनम मरन का चक्कर जारी रहेगा, और दुख सुख भोगता रहेगा, और चाहे जैसा जतन करे देही के दुख सुख से कभी निवृत्ती नहीं होवेगी ॥

४८–अब समझना चाहिये कि जिस क़दर सुख और ज्ञान और आनन्द और रस हैं सब सुरत की धार के वसीले से मालूम होते हैं। जो वह धार शामिल न होवे या हट जावे तो यह सब सुख और

आनन्द और ज्ञान जाते रहें, और जब कि सुरत की एक २ धार में इस क़दर रस और आनन्द है कि मनुष्य उस में फंस रहे हैं, तब सुरत के भंडार में यानी उस रूहानी और निर्मल चेतन्य देश में जहां से कि सब सुरतें आई हैं, किस क़दर रस और आनन्द और सुख और ज्ञान होवेगा ॥

४९–इस वास्ते हर एक मनुष्य को चाहे पुरुष होवे या स्त्री मुनासिब है कि उस परम आनन्द की प्राप्ती के लिये थोड़ा बहुत जतन ज़रूर करे, और जिस क़दर वह जतन करता जावेगा, इस नीचे के देश से ऊंचे देश में चढ़ कर विशेष सुख भोगता जावेगा, और रफ़्ता २ एक दिन परम और अमर आनन्द के भंडार में पहुंच जावेगा, और वहां पहुंच कर आप भी अमर हो जावेगा, और वह देश भी जो निर्मल चेतन्य का भंडार है, अमर है और वहां का सुख भी अमर है ॥

५०–जो कोई इस बात को नहीं मानेगा, वह इसी नीचे देश में पड़ा रहेगा, और बारम्बार ऊंची नीची जोनों में, और ऊंचे नीचे देशों में देह धर कर दुख सुख भोगता रहेगा, और अपनी करनी और करम के मुवाफ़िक़ उन जोनों में फल पावेगा ॥

५१—सिवाय इसके मनुष्य में तीन क़िस्म की ताक़तें मौजूद हैं—पहिली देह और इन्द्रियों की, दूसरी मन और बुद्धि की और तीसरी सुरत रूह की। जो कोई इन तीनों ताक़तों को मथन करके जगावे, वह सब में श्रेष्ट कहलावे, और ऊंचे दरजे में पहुंच सकता है, और मालिक के भेद को जान सकता है, और जो एक २ ताक़त को सिर्फ़ जगावेगा, वह उसी मुवाफ़िक़ फ़ायदा उठावेगा, लेकिन जो सुरत की ताक़त को मथन यानी अभ्यास करके जगावेगा, उसकी बराबरी कोई नहीं कर सकेगा, वह खुद मालिक का प्यारा हो जावेगा, और सब रचना उसकी फ़रमाबरदारी करेगी॥

५२—अब समझो कि जिसने देह और इन्द्री की कूवतें भी नहीं जगाईं वह सिर्फ़ कुली या हल जोतने का काम करके मुश्किल से अपना और अपने कुटुम्ब का पेट भरेगा, और हैवानों के मुवाफ़िक़ नादान रहेगा, और जिसने कि यह कूवतें जगाईं, जैसे सीने, लिखने, तसवीर खींचने, गाने बजाने वग़ैरह का काम सीखा, वह किस क़दर फ़ायदा अपनी मिहनत से उठा सकता है॥

५३—और जिसने अक़ली और इल्मी कूवत को मदरसे में अभ्यास और मश्क़ करके जगाया, वह देखो किस क़दर बड़ा दरजा हाकिमी व डाक्टरी व जज्जी व मुंसिफ़ी व आनरेरी वग़ैरह का पाता है, और अपनी मिहनत और काररवाई से किस क़दर ज़्यादा फ़ायदा उठाता है, और किस क़दर मान बड़ाई उसकी होती है, और हज़ारों लाखों आदमी पर हुक्म चलाता है ॥

५४—और जिसने अपनी सुरत यानी रूह की ताक़त को अभ्यास करके जगाया, जैसे कबीर साहब और गुरू नानक साहब जो संत हुए, और कृष्ण महाराज और रामचन्द्र और बौध जी औतार, और व्यास और बशिष्ठ जी वग़ैरह महात्मा, और हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मद और और पैग़म्बर और औलिया वग़ैरह, उनकी किस क़दर महिमा और शुहरत हुई कि औरत और मर्द और बच्चे अनेक देशों में उनके नाम की ताज़ीम करते हैं, और उनकी बानी और बचन को अपनी मुक्ती का वसीला समझते हैं, और कैसे भाव और प्यार के साथ उनकी पूजा और यादगारी करते हैं, बावजूदे कि उनको सैकड़ों और हज़ारों बर्ष गुज़र गये, मगर

उनका नाम और बानी बदस्तूर लोगों के दिलों में ताज़ा असर करती है ॥

५५--अब समझना चाहिये कि हर एक औरत और मर्द पर फ़र्ज़ है कि थोड़ा बहुत तीनों क़ुवतों को अभ्यास करके जगावे ॥

५६--और जो ऐसा नहीं करेंगे, तो यह क़ूवतें उन में जैसी सोती आई वैसी ही सोती रहेंगी, और वे उनके जगाने से जो फ़ायदा हासिल होना मुमकिन है उससे महरूम और अभागी रहेंगे ॥

५७--इन सब में से रूह यानी सुरत की क़ूवत को तो ज़रूर थोड़ा बहुत जगाना हर एक मनुष्य को लाज़िम और फ़र्ज़ है, कि उसमें उसके जीव रूह का कल्यान और मालिक के देश में पहुंच कर परम आनंद का प्राप्त होना मुमकिन है, और नहीं तो हमेशा अंधेरे यानी माया के घेर में पड़ा रहेगा और देहियों के साथ दुख सुख और जनम मरन की तकलीफ़ भोगता रहेगा ॥

५८--सिवाय इसके दफ़ा ३६, ३७, ३८, ३९, ४० के पढ़ने से मालूम होगा कि सुरत रूह मरने के वक्त आंख के रास्ते होकर जाती है, यानी जब पुतली उलट जाती है उस वक्त मौत हो जाती है। अब हर एक मनुष्य

को चाहे स्त्री होवे या पुरुष ज़रूर और मुनासिब है, कि अपने मरने के वक्त से पहिले इस रास्ते को जिस क़दर बन सके खोले यानी तै करे, और वहां की रचना और कुदरत और कैफ़ियत अपनी आंखों से देख ले, और जो ऊपर की तरफ़ चलने में आनंद और सरूर ज़रूर ज्यादा से ज्यादा मिलता जावेगा, उसका भोग मन और रूह के साथ थोड़ा बहुत इस ज़िंदगी में करे, तब अख़ीर वक्त पर और भी किसी भारी तकलीफ़ या दुख या चिन्ता के समय उसको रंज बहुत कम होगा, और ऐसे वक्त पर अपने अंदर की तरफ़ तवज्जह करने से फ़ौरन किसी क़दर फ़ायदा मालूम होवेगा ॥

५९--ऐसे अभ्यासी को कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया और मेहर और उनके अंग संग और हाज़िर नाज़िर होने का सबूत अपने अंतर में मिलकर दिन २ प्रेम और प्रतीत चरनों में बढ़ती जावेगी, और दुनिया के काम भी उसके सहज में कुल्ल मालिक की मौज के मुवाफ़िक़ सरंजाम पावेंगे, और उसके मन में सहज उदासीनता संसार और उसके पदार्थों की तरफ़ से होती जावेगी, और भक्ती बढ़ती जावेगी, कि जिससे यह अपना सच्चा उद्धार होता हुआ जीते जी आप देखता जावेगा ॥

६०--सच्चा परमार्थ इसी का नाम है, कि अपने घट में जिस रास्ते होकर सुरत रूह राधास्वामी देश से उतर कर पिंड में आकर ठहरी है, उसी रास्ते से उसको चला कर उसके निज देश में पहुंचाना, और अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुंच कर उनके दर्शन के बिलास का आनंद लेना ॥

६१--संतमत में कुल्ल मालिक की महिमा और पूजा है, और वह पूजा ज़ाहिरी नहीं है, उसका भेद लेकर उससे मिलने का जतन करना यही पूजा है, और उसके चरनों में दिन २ प्रीत और प्रतीत का बढ़ाना यही उसकी भक्ती है ॥

और जोकि सच्चा और कुल्ल मालिक सब जगह मौजूद है, और मनुष्य इस लोक में सब से श्रेष्ठ यानी उत्तम है, फिर मनुष्य के चोले में उसका प्रकाश बनिस्वत और रचना इस लोक के ज़्यादा प्रघट है। इस वास्ते जो कोई उससे मिलना चाहे, या उसका प्रकाश और जलवा देखना चाहे, उसको मुनासिब है कि अपने घट में उसका पता और भेद लेकर खोज करे, क्योंकि मनुष्य का चोला कुल्ल रचना का नमूना है, और इस चोले में जो कुछ कि बाहर रचना है, वह सब छोटे स्केल पर मौजूद है--जैसे कि एक तसवीर

बड़ी और एक उसी की नक़ल छोटी दोनों में बराबर सब आकार बड़े और छोटे के हिसाब से मौजूद हैं ॥

६२–बाहरमुख पूजा जिस क़दर कि है, वह नक़ल की है, या मनुष्य से कमतर दरजे की रचना की है– यह दोनों असल से बहुत दूर हैं, और जो इनका सिलसिला असल से नहीं लगा हुआ है, यानी असल का भेद जो घट में है नहीं मालूम और न उसके मिलने की तरकीब की ख़बर है, तो वह सब पूजा वृथा और फ़ज़ूल है, क्योंकि उस काम के करने से कभी असल नहीं मिलेगा, जब तक कि भेदी से उस का भेद लेकर, वह जुगत कि जिस से मेला होवे, अपने अंतर में कमाई न जावे ॥

६३--और वह भेद और जुगत यानी तरीक़ा अभ्यास का इस वक्त में सिर्फ़ राधास्वामी मत में मिल सकता है, और किसी मत में उस भेद और तरीक़े का ज़िकर भी नहीं है, और वह जुगत ऐसी है, कि लड़का, जवान, बूढ़ा, चाहे स्त्री होवें या पुर्ष, उसको आसानी के साथ बग़ैर किसी ख़तरे या बिघन के कमा सकते हैं ॥

६४–और मतों में प्राणायाम की सब में बढ़का तरीक़ा या योग क़रार दिया है, पर वह ऐसा मुश्किल और ख़तरनाक है कि बिरक्तों से भी उसका अभ्यास

नहीं बन सकता, फिर बिचारे गृहस्ती और ख़ास कर औरतें तो उसके संजमों की निगाहदाश्त और प्राणों के रोकने और चढ़ाने का अभ्यास बिलकुल नहीं कर सकतीं, और इस सबब से उनका उद्धार उन मतों के मुवाफ़िक़ मुतलक़ नहीं हो सकता ॥

६५—इन मतों के आचार्यों ने प्राण की धार पर सवार होकर रास्ता तै करना बतलाया--यानी प्राण योग का उपदेश किया, पर संतों ने रूह सुरत की धार की सवारी तजवीज़ की । अब ख्याल करो कि रूह की धार बड़ी है या प्राण की धार । सोते में प्राण की धार जारी रहती है, मगर कुल्ल कारखाई मन और इन्द्रियों की बंद रहती है, और जाग्रित में जब कि रूह की धार आंखों के मुक़ाम पर आकर ठहरी, उस वक्त कुल्ल काररवाई तन मन और इन्द्रियों की जारी हो जाती है। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि जो कोई रूह की धार पर सवार होकर घर की तरफ़ चलेगा, वह सुखाला पहुंचेगा, और जल्द मन और इन्द्री और तन उसके क़ाबू में आवेंगे, और किसी तरह का ख़तरा और विघन रास्ते में पैदा नहीं होगा, और जो प्राण की धार के आसरे चलेगा उसको प्राणों का रोकना और चढ़ाना वग़ैर पाबंदी (बर्ताव)

मुक़र्रर किये हुए संजमों के जो कि निहायत कठिन और मुश्किल हैं, और न गृहस्त से बन सकते हैं और न बिरक्त से, क़तई ना मुमकिन होगा। इस वास्ते यह रास्ता बिलकुल बंद हो गया, और सिर्फ़ ज़बानी या तहरीरी बात चीत इस अभ्यास की रह गई, और जो बिलफ़र्ज़ किसी एक बिरक्त से थोड़ा बहुत अभ्यास बना भी, तो बाक़ी बिरक्त और कुल्ल गृहस्तियों से तो उसका बन आना ना मुमकिन है। फिर ऐसे रास्ते के बयान करने से क्या फ़ायदा -- किताबों में उसका ज़िकर लिखने और ज़बानी बयान करने से अभ्यास का फल नहीं मिल सकता है॥

६६--इस वास्ते जो अभ्यास कि संतों ने बताया है, उसका मानना और उसके मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत काररवाई करना, हर एक को चाहे औरत होवे या मर्द मुनासिब और ज़रूर है, क्योंकि बग़ैर उसके दुनिया और देह के सुख दुख और जनम मरन के सख़्त दुक्खों से बचाव किसी तरह मुमकिन नहीं, और न सच्चा और पूरा उद्धार या मुक्ती हासिल हो सकती है॥

बर्णन कैफ़ियत सुरत शब्द अभ्यास की

६७--इस अभ्यास का नाम सुरत शब्द योग है, यानी सुरत रूह को शब्द के साथ मिलाकर चढ़ाना--और

शब्द नाम सिर्फ़ आवाज़ का नहीं है, बल्कि चेतन्य की धार से मतलब है, क्योंकि जहां धार रवां है वहां उसके साथ आवाज़ भी बराबर होती है, धार नज़र नहीं आती, पर आवाज़ से उसकी पहिचान होती है, जैसे आदमी का असली रूप यानी उसकी सुरत रूह की कैफ़ियत नज़र नहीं आती, पर आदमी के बोलने से मालूम होता है कि रूह सुरत उसमें मौजूद है और काररवाई कर रही है -- कुल्ल रचना में शब्द के वसीले से काररवाई हो रही है, और यह शब्द निशान और ज़हूरा चेतन्य का है—जहां शब्द नहीं वहां चेतन्य भी नहीं यानी गुप्त है ॥

६८—सुरत चेतन्य को शब्द चेतन्य से मिलाने का मतलब यह है, कि सुरत जो उस शब्द की धार है उसको अपने घर की तरफ़ आवाज़ की डोरी को पकड़ के उलटाना, और आवाज़ की बराबर कोई अंधेरे में उजाला करने वाला और रास्ता दिखलाने वाला नहीं है। जब कि कोई आदमी अंधेरी रात में जंगल में रास्ता भूल जावे, और उस वक्त ब सबब छाये होने बादल के किसी क़िस्म की रोशनी चाँद तारागन बिजली और मशाल वग़ैरह की नहीं है, तो जो आवाज़ आदमियों की किसी नज़दीक के गाँव से आती

होवे, उसको पकड़ के भूला हुआ आदमी गाँव में पहुंच सकता है ॥

६९--इसी तरह यह आवाज़ अनाहद शब्द की जो घट २ में पूर है, और बग़ैर मदद ज़बान या किसी बाजे के हर वक़्त जारी है, ऊंचे से ऊँचे देश यानी कुल्ल मालिक के दरबार से आरही है, और एक २ रास्ते के अस्थान पर ठहर कर, और फिर उस धार के वसीले से जो वहां से निकली है, बरामद होकर (निकल कर) कुछ तब्दीली के साथ बराबर ऊपर से नीचे के मुक़ाम तक जारी है, और कुल्ल देह और रचना भर में फैली हुई है--जो कोई इस आवाज़ का भेद और पता यानी अस्थान २ के शब्द का हाल भेदी से दरियाफ़्त करके अपने मन और चित्त से उसको सुनता हुआ आंखों के रास्ते से चलना शुरू करे, वह दिन २ उस अस्थान के, जहां से कि पहिली आवाज़ आ रही है, नज़दीक पहुंचता जावेगा, और फिर वहां से दूसरे शब्द को पकड़ के चलेगा, इसी तरह सब मंज़िलें रास्ते की तै करता हुआ एक दिन कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के देश में जा पहुंचेगा ॥

७०--मालिक कुल्ल अरूप और बिदेह है--उसका ध्यान किसी तरह कोई नहीं कर सकता है--पर शब्द

के वसीले से जो उस मालिक के चरनों से जारी हुआ है, अभ्यासी ध्यान करता हुआ पहुंच सकता है, क्योंकि शब्द उस मालिक का प्रथम ज़हूरा और निशान है, और जैसे कि वह मालिक अरूप है, शब्द भी अरूप है, पर ध्यान में बहुत भारी मदद देता है, यानी ध्याता को उसके इष्ट के पास पहुंचाता है, इसी तरह अरूप का ध्यान करके अभ्यासी उस अरूप पद में पहुंच सकता है, और कोई रास्ता या तरकीब पहुंचने की ऐसी आसान और बेख़तरा और निश्चय करके सीधी राह से पहुंचाने वाली क़तई नहीं है, क्योंकि रूह की धार जो शब्द की धार है, उस से बढ़कर और कोई धार नहीं रची गई है, वह और सब धारों की करता और चेतन्य करने वाली है, खुद प्राण की धार भी रूह यानी जान की धार से चेतन्य है, फिर सुरत शब्द से बढ़ कर और कोई जुगत न रची गई और न हो सकती है ॥

७१—यह बात सब को मालूम होवेगी कि सुरत रूह का आवाज़ के साथ प्यार और इश्क़ ज़ाती यानी असली है—जैसे कोई आदमी कैसे ही ज़रूरी काम के वास्ते जाता होवे, और जो कहीं रास्ते में उमदा गाना बजाना होता होवे, तो ज़रूर थोड़ी देर के वास्ते

वहां ठहर कर उसको शौक़ से सुनेगा, बल्कि सिर्फ़ आदमी ही नहीं जानवर भी उमदा बाजे और रसीली आवाज़ के आशिक़ हैं, और उसको बड़ी तवज्जह के साथ एकाग्र चित्त हो कर सुनते हैं और खुश होते नज़र आते हैं-सबब इसका यही है, कि सुरत का भंडार शब्द है और यह आप भी आवाज़ स्वरूप है, और इस वास्ते आवाज़ के साथ इसकी प्रीत या इश्क़ ज़ाती और असली है। रसीली आवाज़ सुन कर सुरत और मन मस्त हो जाते हैं, और गाने या बाजा बजाने वाले के संग २ फिरते हैं, और कभी खुशी में भर कर नाचने लगते हैं, और ज्यादती सरूर में बे होश हो जाते हैं ॥

७२-जिस किसी को सच्चा शौक़ होवे, इस अभ्यास का चंद रोज़ यानी एक महीने पंद्रह रोज़ इम्तिहान और परीक्षा करके आप देख ले, क्योंकि यह राधास्वामी मत करनी का है, बातों और बिद्या बुद्धी की चतुराई का नहीं है। बिद्यावान अपनी बुद्धी के अहंकार में संतों के बचन को ग़ौर और फ़िकर के साथ बिना पक्षपात के न सुन कर कोरे रह गये, और उनको सच्चे मालिक का या उसके मिलने के रास्ते और तरीक़े का पता न लगा, सिर्फ़ बातों में संतोष करके

थक रहे, और अहंकार किया कि उनकी बराबर कोई कुछ नहीं जानता है, और हक़ीक़त में असल भेद कुल्ल मालिक और जीव यानी सुरत और शब्द की धार से बिलकुल बेख़बर हैं ॥

७३--जो सच्चे खोजी और दर्दी लोग हैं, और किसी मत या तरीक़े में उनका बंधन और पक्ष नहीं है, और न अपनी विद्या और बुद्धी का ऐसा अहंकार रखते हैं कि हमने सब कुछ जान लिया और समझ लिया है, वे राधास्वामी मत के अभ्यास के लायक़ हैं, और वही राधास्वामी मत के हाल और भेद और अभ्यास की जुगत को सुन कर मगन होवेंगे, और उसको दिलो जान से मानेंगे, और उसके मुवाफ़िक़ करनी करके उसके फल को प्राप्त होंगे, यानी अपनी ज़िंदगी में अपने सच्चे उद्धार और सच्ची मुक्ती का सबूत हासिल करेंगे, और एक दिन सच्चे मालिक के देश में पहुंच कर उसके दर्शन का आनंद लेवेंगे, और जनम मरन और देह के दुख सुखों से बच जावेंगे ॥

राधास्वामी मत के अभ्यासी को प्रेम और सच्चे शौक़ की ज़रूरत और उसकी महिमा

७४--जितने काम दुनिया के हैं, बग़ैर शौक़ या मोहब्बत के वह दुरुस्ती से नहीं बन सकते हैं, यानी

जब तक कि उनमें मन और इन्द्री पूरी तवज्जह के साथ शामिल नहीं होते हैं, वह काम दुरुस्त नहीं होते, फिर परमार्थ का खोज और अभ्यास बग़ैर पूरी तवज्जह के किस तरह दुरुस्त बन सकता है। इस वास्ते सच्चे परमार्थी को राधास्वामी मत में ज़रूर है, कि प्रेम अंग लेकर सतसंग और अभ्यास करे, तो उस में फ़ायदा मालूम पड़ेगा, और नहीं तो उसकी काररवाई रूखेपन के साथ होवेगी, और उसमें रस कुछ नहीं आवेगा और न प्रीत और प्रतीत बढ़ेगी॥

७५.--जो प्रेम कि प्रतीत के साथ है उसके ठहराव का भरोसा ज़्यादा होता है, और उसमें फ़ायदा भी ज़्यादा मिलेगा, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया भी ज़्यादा आवेगी, और यह प्रतीत सतसंग करके हासिल होगी॥

७६.--सतसंग नाम गुरू या साध के संग का है, और वह गुरू और साध संत मत अथवा राधास्वामी मत के पैरौ होने चाहियें। ऐसे सतसंग में सिवाय इन बातों के और किसी लड़ाई झगड़े क़िस्से बखेड़े का ज़िकर न होगाः--(१) महिमा सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल की और भेद रास्ता और मंज़िलों का और

जुगत रास्ता तै करने की (२) तरीक़ा बढ़ाने प्रेम प्रीत का राधास्वामी दयाल और गुरू के चरनों में (३) पैदा करना हालत उदासीनता का दुनिया और उसके भोगों की तरफ़ से अपने मन में (४) बर्णन उन बिघनों का जो मन और माया अभ्यासी के रोकने को पैदा करते हैं (५) हाल उस कैफ़ियत का जो अभ्यासी को हालत सतसंग और अभ्यास में मालूम होती है (६) और ज़िकर चढ़ाई सुरत का मुक़ामों पर और उसकी हालत वग़ैरह ॥

७७--सतसंग में बैठ कर और चित्त देकर बचन सुनने से बहुत से संशय और भरम दूर होते हैं, और बहुत सी चीज़ों में या बातों में जो भाव और पकड़ जीव की अर्से से चली आती है, वह भी ढीली हो जाती है। इस तरह आहिस्ता २ जीव क़ाबिल अभ्यास करने सुरत शब्द योग के हो जाता है, और जिन्हों ने कि सतसंग नहीं किया, और सिर्फ़ अभ्यास की बड़ाई सुन कर और मत में शामिल होकर यानी उपदेश लेकर उसकी कमाई करने लगे तो उनसे अभ्यास जैसा चाहिये वैसा बन नहीं पड़ेगा और न रस आवेगा, क्योंकि जब तक संशय और भरम दूर

न होवें और अंतर में सफ़ाई न होवे तब तक मन और सुरत सर्ब अंग करके दुरुस्ती के साथ अभ्यास में नहीं लगते ॥

७८--इसी तरह जब कोई सतसंग में बैठ कर पहिचान कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम की और भेद रास्ते का और बड़ाई सुरत शब्द मारग की सुनेगा, और बुद्धी से अच्छी तरह समझेगा, तब उसके मन में संतों के बचन की थोड़ी बहुत प्रतीत आवेगी, और जब उस प्रतीत के मुवाफ़िक़ थोड़ा बहुत अभ्यास करके रस, और राधास्वामी दयाल की दया का परचा अपने अंतर में पावेगा, तब सच्ची प्रीत घट में पैदा होगी, और प्रतीत बढ़ती जावेगी, और फिर अभ्यास का भी शौक़ बढ़ता जावेगा ॥

७९--बग़ैर थोड़े बहुत ऐसे शौक़ और प्रीत और प्रतीत के रास्ता घट में तै करना और कुदरत की कैफ़ियत को देखना मुशकिल है, क्योंकि जब तक कुछ भी शौक़ और प्रीत और प्रतीत दिल में नहीं आवेगी, तब तक सुरत और मन और इन्द्रियां सिमट कर अभ्यास में नहीं लगेंगी, और न उस में रस आवेगा, और इस सबब से अभ्यासी थोड़े दिन कुछ काररवाई करके उसको थक कर और निरास होकर छोड़ देगा,

और संतों के बचन को रोचक समझ कर उनका निरादर करेगा ॥

८०--प्रेम या प्रीत खैंच शक्ती को यानी कूवत जाज़वा को कहते हैं। इसी शक्ती से तमाम रचना जो कि छोटे २ ज़र्रे या परमानू से मिल कर रची गई है क़ायम है, और कुल्ल देहियों या सूरतों का ठहराव और काररवाई इसी शक्ती के आसरे हो रही है। जो प्रेम न होवे तो कोई किसी से मेल न करे, और न किसी काम में मन लगाकर उसकी काररवाई करे ॥

८१--जब कि कुल्ल रचना की काररवाई प्रेम के आसरे जारी है, बल्कि सब रचना प्रेम के वसीले से ठहरी हुई है, तो परमार्थ की काररवाई जिससे सुरत अंश अपने अंशी यानी भंडार से मिलना चाहती है, किस तरह वग़ैर प्रेम के जारी हो सकती है, और क्यों कर बिना सच्चे शौक़ के इन दोनों का आपस में मेला हो सकता है ॥

८२--कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल प्रेम का भंडार हैं, और सुरत जो उनकी अंश या धार है, वह भी प्रेम स्वरूप है। इस वास्ते जब तक सुरत में प्रेम न प्रघट होगा, तब तक उसका मेल अपने भंडार से नहीं होगा;

यानी रास्ता ते करके उस भंडार में पहुंचने की कारखाई (जिसको सुरत शब्द का अभ्यास कहते हैं) दुरुस्ती से नहीं बन पड़ेगी ॥

८३—ऊपर के बयान से ज़ाहिर है, कि जब तक पहिले सतसंग करके प्रीत और प्रतीत मन में नहीं आवेगी, और संशय और भरम दूर न होवेंगे, तब तक प्रेम पैदा न होगा, इस वास्ते हर एक सच्चे खोजी और दर्दी परमार्थी को मुनासिब और ज़रूर है, कि पहिले राधास्वामी मत के सतसंग में शामिल होकर होशियारी से बचनों को सुन कर और समझ कर और अपने संशय और भरम दूर करके अभ्यास शुरू करे, तब उसको उसका फ़ायदा जल्द मालूम होवेगा, और आइंदा को दिन २ मुवाफ़िक़ उसकी लगन के तरक़्क़ी होती जावेगी ॥

राधास्वामी मत में पाप पुन्य यानी शुभ और अशुभ करम की शरह ॥

८४—राधास्वामी मत में शुभ और अशुभ करम यानी पुन्य और पाप की शरह ऐसे तौर पर की गई है, कि जिस में किसी को किसी तरह का शक और पकड़ के वास्ते मौक़ा नहीं रहता है और जो अनेक फ़िरक़ों और अनेक मतवालों ने बहुत से

काम पुन्य और बहुत से पाप के साथ नामज़द किये हैं, इनमें बहुत भेद रहता है, यानी बाज़े काम ऐसे हैं कि एक मत या एक देश में वे पाप समझे जाते हैं और दूसरे देश और मत में पुन्य माने जाते हैं, या एकही मत में एक वक़्त वे पाप करम और दूसरे वक़्त में जायज़ शुमार किये जाते हैं, जैसे जानदार का मारना आम तौर पर अज़ाब में दाख़िल है, और मांस अहारियों में वही काम जारी है, या आदमी का मारना गुनाह है और लड़ाई में वही काम जायज़ समझा गया, या अपने पड़ोसी का माल और ज़मीन छीन लेना या उससे ज़बरदस्ती करना नामुनासिब समझा गया, और राजे और बादशाह लोग अपने क़रीब के कमज़ोर राजों का राज ज़रा ज़रा सी बात पर नाराज़ होकर छीन लेते हैं, और यह काम मुल्कगीरी में दाख़िल किया गया, या यह कि दूसरे के माल या औरत को हाथ लगाना पाप समझा गया, लेकिन बाद फ़तह के राजा लोग शहरों के लूटने का हुक्म दे देते हैं, और उस वक़्त उनकी फ़ौज बहुत से बेगुनाह मर्द और औरत को क़तल कर डालती हैं, और उनका माल लूट लेती है, और औरतों की इज़्ज़त बिगाड़ती है, या यह कि

अपने मतलब के वास्ते झूठ बोलना नाक़िस समझा गया, और राजों की आपस की काररवाई में उनके वकील तरह २ की बातें बना कर और तहरीरात को उलट फेर कर उनके मानी और मतलब अपने मुफ़ीद लगाकर जो काररवाई करते हैं वह दानाई और उमदा कारगुज़ारी में दाख़िल होता है, या दीवानी और फ़ौजदारी के मुआमलात में जो कोई वकील या मुख़्तार क़ानून और अपनी तक़रीर के ज़ोर से सफ़ेद को सियाह या सियाह को सफ़ेद दिखला देवे वह बहुत होशियार और चालाक कारकुन समझा जाता है ॥

८५–राधास्वामी मत में जो काम कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में सुरत को पहुंचावे शुभ और पुन्य करम में दाख़िल है, और जिस काम के करने से दूरी होती जावे, वही अशुभ और पाप करम है। यह शुभ और अशुभ करम मनुष्य की ज़ात से तअ़ल्लुक़ रखते हैं ॥

८६–कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल सब की जड़ यानी आदि भंडार हैं, उन्हीं के चरनों से धार प्रघट होकर नीचे तक रचना करती चली आई। जिस धार

यानी सुरत का रुख़ मन और इंद्रियों के वसीले से बाहर और नीचे की तरफ़ है, और उसी तरफ़ उसकी काररवाई जारी है, वह दिन दिन किसी क़दर दूर होती जावेगी और जिस सुरत ने कि संतमत का भेद और जुगत लेकर अपना रुख़ चरनों की तरफ़ मोड़ना शुरू किया, और राधास्वामी दयाल के सनमुख पहुंचने और उनके दर्शन का बिलास हासिल करने का इरादा सच्चा और पक्का करके अभ्यास शुरू किया, वही सुरत दिन २ नज़दीक होकर एक दिन चरनों में पहुंच जावेगी। ऐसी समझ लेकर सुरत शब्द का अभ्यास करना यह शुभ और पुन्य कर्म है॥

८७—असली शुभ और अशुभ करम यही हैं कि जिनका ज़िकर ऊपर लिखा गया। अब वह शरह इन करमों की की जाती है जो इस लोक के व्योहार के तअ़ल्लुक़ है, और वह यह है, कि जो काम कि यह जीव अपनी निस्बत पसंद न करे उसको औरों की निस्बत भी पसंद करना नहीं चाहिये, यानी जैसा कि यह चाहता है कि लोग इससे बर्ताव करें वैसाही इसको चाहिये कि औरों के साथ आप बर्ताव करे, इस में किसी को इसके हाथ से रंज और तकलीफ़ नहीं पहुंचेगी, इस वास्ते इसी का नाम शुभ और

पुन्य करम है, और इसके बरखिलाफ़ बर्ताव करना अशुभ और पाप करम है, यानी ख़ास अपने आराम और मतलब के लिये मन और बचन और काया से दूसरों को नुक़सान या रंज या तकलीफ़ पहुंचाना पाप है, और बग़ैर अपने ख़ास मतलब के दूसरों को सुख और फ़ायदा पहुंचाना पुन्य करम है। जो फ़ायदा और आराम न दे सके तो इस मनुष्य को चाहिये कि किसी को दुख भी न देवे ॥

८८-जो कोई इन दोनों क़िस्म के शुभ और अशुभ करमों पर नज़र रखकर समझ के साथ काररवाई करेगा, उससे कुल्ल मालिक राज़ी होकर उसको प्रेम और भक्ती दान यानी अपनी नज़दीकी और मोहब्बत की बख़्शिश करेगा; और जो बरख़िलाफ़ इसके काम करेगा वह दिन २ मालिक के दरबार से दूर होता जावेगा, और अंधेरे के घेर में जनम मरन के चक्कर में देहियों के साथ दुख सुख सहता रहेगा ॥

८९-राधास्वामी मत में इस बात की बहुत ताकीद है कि अभ्यासी ऊपर की लिखी हुई हिदायत के मुवाफ़िक़ काररवाई करे तब उसका प्रेम और भक्ती दिन दिन बढ़ती जावेगी, और अभ्यास में भी आनंद और रस मिलता जावेगा, और जो इस हुक्म के

मानने में समझ बूझ कर बेपरवाही करेगा, वह अपनी कारस्वाई के एवज़ में तकलीफ़ पावेगा, और मालिक के चरनों के प्रेम से किसी क़दर ख़ाली रहेगा ॥

बयान इस बात का कि कोई सच्चा और कुल्ल मालिक ज़रूर है और जीव सुरत उसकी अंश है ॥

९०—जो कोई निस्वत मौजूदगी कुल्ल और सच्चे मालिक के शक लावे, तो उसको यह कहा जाता है कि देखो चेतन्य सब जगह मौजूद है पर बिना मदद अपने से विशेष चेतन्य के कुछ कारस्वाई नहीं कर सकता है। जैसे इस लोक में भी चेतन्य मौजूद है पर बग़ैर मदद सूरज की रोशनी और गरमी के यहां कुछ रचना नहीं हो सकती, और न क़ायम रह सकती है, और यह सूरज मय अपने कुटुम्ब परिवार के यानी तारों के दूसरे अपने से ऊंचे सूरज के गिर्द घूम रहा है जो कि इसका मरकज़ है, यानी यह हमारा सूरज उस सूरज से ताक़त ले रहा है। इस क़दर तो आसमानी इल्म और दूरबीन की मदद से मालूम हुआ, और संत फ़रमाते हैं कि उस बड़े सूरज के मंडल के ऊपर तीन सूरज मंडल एक से एक बहुत बड़े और हैं, और

इन सब के ऊपर राधास्वामी धाम है, जोकि कुल्ल का मालिक और कुल्ल का निज भंडार हैं। इस से साफ़ ज़ाहिर है कि एक के ऊपर एक मालिक चला गया है और राधास्वामी कुल्ल के मालिक हैं, राधास्वामी धाम अपार और अनंत है, उसके परे और कोई मंडल या रचना नहीं है॥

९१–जो लोग कि अपनी नादानी और बेख़बरी से कहते हैं कि कोई मालिक नहीं है, और यह रचना आपही आप मसाला यानी माया से हुई है, किस क़दर ग़लती में पड़े हैं, उनकी देह की काररवाई और इस लोक की काररवाई से साफ़ ज़ाहिर है कि कुल्ल रचना का तअल्लुक़ और उसकी काररवाई किसी ऊंचे से ऊंचे और बड़े से बड़े अस्थान से हो रही है, जैसे देह की काररवाई उस धार पर मुनहसर है, जो दिमाग़ के ऊंचे मुक़ाम से उतर कर तमाम देह में रगों के मंडलों के वसीले से फैली हुई है, और इसी तरह इस लोक और कुल्ल ऊंचे नीचे लोकों की रचना की काररवाई ऊंचे से ऊंचे और बड़े से बड़े सूरज मंडल के वसीले से जारी है, और वह मालिक कुल्ल अंतरजामी और सर्ब समरत्थ और महाज्ञानी और सब से भारी बन्दोबस्त करने वाला और कुल्ल

का पैदा करने वाला और कुल्ल रचना को चेतन्यता देने वाला यानी कुल्ल जानों की जान है—जो उस ऊंचे देश से धार हर एक मंडल में होकर न आवे तो सब रचना का खेल बिगड़ जावे और बंद हो जावे ॥

९२—इस लोक की कुल्ल रचना और भी देह की रचना से साफ़ ज़ाहिर है कि हर एक देह और उसके अंग अंग के बनाने में कुदरत और समरत्थता और इरादा और मतलब और कारीगरी पाई जाती है, फिर यह बातें बग़ैर महा समरत्थ और महाज्ञानी मालिक के किस तरह ज़ाहिर हुईं, और कुल्ल माया और उसके मसाले और शक्तियों पर उस कुल्ल मालिक की क़ुदरत का असर साफ़ मालूम होता है, यानी यह सब उसी के हुक्म से पैदा हुईं और अब उसी के हुक्म के ताबे हैं, और उसकी मौज के मुवाफ़िक़ उसी की ताक़त के साथ जाबजा काररवाई कर रही हैं ॥

९३—और सुरत जीव उसी कुल्ल मालिक की अंश है। देखो जब यह सुरत जिस शरीर में अपना ज़हूर करती है, जैसे जब किसी दरख़्त के बीज से कुल्ला फूटता है, यानी आदि धार प्रघट हुई उसी वक़्त से

जितनी कि शक्ती हैं, जैसे खैंच शक्ती, हटाव शक्ती और बनाव शक्ती और बिजली और रोशनी और पांचों तत्व और तीनों गुन सब उस देह में मौजूद होकर और इसी अकाश से मसाला लेकर उस देह का बनाव और सम्हाल करते हैं, और जब तक कि सुरत उस देह में मौजूद रहे तब तक बावजूदे कि यह सब आपस में मुख़ालिफ़ और उलटे हैं, पर हिल मिल कर काम देते हैं, और जिस वक़्त कि सुरत उस देह को छोड़ती है उसी वक़्त से आपस में बरख़िलाफ़ी के साथ काररवाई करके उसका रूप और रंग बिगाड़ देते हैं ॥

१४–ऊपर के बयान से ज़ाहिर है कि सब तत्व और गुन और शक्तियां सुरत के हुक्म बरदार हैं, जहां यह अपना ज़हूरा करे वहां यह सब हाज़िर होकर उसकी ताबेदारी में कारखाई करते हैं, और जब वह उस देह को छोड़ देवे तब सब जुदा होकर अपने २ मंडल में समा जाते हैं, और जो कि यह सुरत ही इस लोक में सत्य है कि इसके आसरे सब रचना सत्त दिखलाई देती है, यानी कुल्ल देहियां अपनी २ कारखाई कर रही हैं, और सब देहियों और रूपों की चेतन्य करने वाली भी यही सुरत है

और इसी के वसीले से कुल्ल रस और आनन्द और सरूर पैदा होता है, तो अब यही सुरत सत्त चित्त आनन्द स्वरूप हुई, और जोकि यह अमर और अजर है और शब्द इसका ज़हूरा है, तो यह उसी सिंध रूप सत्त चित्त आनन्द कुल्ल मालिक की अंश साबित हुई, यानी इसका और उसका जौहर एकही है ॥

९५–जब यह बात साबित हुई कि कोई कुल्ल मालिक सत्त चित्त आनन्द स्वरूप और सर्व समरत्थ और सर्व ज्ञानी ज़रूर मौजूद है, और सुरत जीव उसकी अंश है, तो जब तक कि यह अंश अपने अंशी से यानी बुंद अपने सिंध और किरन अपने सूरज में न पहुंचेगी, तब तक इसको परम आनन्द प्राप्त नहीं होगा, और जब तक माया के घेर में रहेगी, तब तक उसके मसाले के ग़िलाफ़ इस पर चढ़े रहेंगे, यानी इसको देहियों में बैठ कर काररवाई करनी पड़ेगी, और उनके साथ दुख सुख और जनम मरन की तकलीफ़ सहनी पड़ेगी ॥

९६–इस वास्ते जो इन तकलीफ़ों से बचना चाहे, और परम आनन्द को प्राप्त होना चाहे, उसको राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करके, आहिस्ता २ इस माया के देश को छोड़ कर, अपने निज घर की

तरफ़ चलना ज़रूर चाहिये, और कुल्ल मालिक की मौजूदगी की निस्बत मन में शक नहीं लाना चाहिये, नहीं तो मरने के बाद बहुत पछताना और शरमाना पड़ेगा, और उस वक्त का अफ़सोस कुछ फ़ायदा नहीं देवेगा ॥

नीचे दरजे के मालिकों और औतारों और देवताओं की पूजा का बयान और उसका नतीजा

९७–जो लोग कि औरों को यानी देवताओं और औतारों को मालिक समझ कर मान रहे हैं, उनका पूरा और सच्चा उद्धार नहीं हो सकता है, और जो परमेश्वर ब्रह्म या खुदा को कुल्ल मालिक समझते हैं; वे भी सच्चे कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल से बे ख़बर हैं, और इस वास्ते वे भी माया के घेर से बाहर नहीं जा सकते, और इस सबब से जनम मरन के चक्कर से नहीं बच सकते, क्योंकि ब्रह्म और ईश्वर और परमेश्वर या परमात्मा सब सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की एक २ कला हैं, और माया के संग मिले हुए हैं, यानी उससे मिलकर रचना की काररवाई कर रहे हैं, उनके लोक में जो कोई उनकी भक्ती करके

पहुंचेगा वह बहुत काल के लिये सुखी हो जावेगा, पर जनम मरन से बचाव नहीं होगा ॥

९८—और जितने औतार हुए हैं, वे सब ब्रह्म या विष्णु के हुए हैं, और ब्रह्मा विष्णु और महादेव यानी तीनों गुन बड़े देवता हैं, और बाक़ी देवता इनसे उत्पन्न हुए, इस वास्ते जो कोई इनकी भक्ती करेगा, वह इनके लोक में पहुंच सकता है, मगर इनका लोक अमर नहीं है और न वहां की रचना अमर है, इस सबब से जनम मरन से छुटकारा नहीं हो सकता है, और बनिस्बत ब्रह्म और पारब्रह्म और शक्ती के देश या लोक के देवताओं और औतारों के लोकों में उमर भी थोड़ी है, यानी वहां जनम मरन जल्द होता है, और सुख भी ऊपर के लोकों की निस्बत कम है ॥

९९—इस वास्ते मुनासिब है कि जब कोई परमार्थी काम करना चाहे तब अच्छी तरह से निरनय करके अपने सच्चे मालिक की पहिचान करे, और दूसरों की पक्ष छोड़ कर सच्चे मालिक की सेवा और भक्ती इख़्तियार करे, तब पूरा फ़ायदा होगा, क्योंकि भक्ती भाव सब जगह बराबर और एकसां बर्तना पड़ेगा, पर फल यानी फ़ायदे में हर एक के फ़र्क़ होगा ॥

१००--और जो कोई असली रूप और धाम औतारों और देवताओं से बे ख़बर हैं, और सिर्फ़ उनकी नक़ल यानी मूरत की पूजा और भक्ती करते हैं, और असल का खोज नहीं क़रते, वे असल को नहीं पा सकते, इस वास्ते उनको उस क़दर सुख भी नहीं मिल सकता, जिस क़दर कि असल के पूजने वालों को मिलता है। इनकी सीढ़ी बहुत नीची है ॥

बर्णन हाल बाचक ज्ञानी और सूफ़ी का और यह कि उनका पूरा उद्धार नहीं होता

१०१--और जो लोग कि इस वक्त में ज्ञानी और विद्वान और बेदान्ती या सूफ़ी कहलाते हैं, वे भी कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल से बे ख़बर हैं--इनको पुराने जोगेश्वर बेदान्ती और ज्ञानी की बानी और बचन से ब्रह्म पद तक का हाल मालूम हुआ, पर वह भी तफ़सीलवार नहीं--सिर्फ़ इस क़दर कि ब्रह्म सब जगह व्यापक है, और वही सत्त चित्त आनन्द स्वरूप है, और माया से न्यारा है, और कुल्ल रचना ब्रह्म या आत्मा स्वरूप है, फिर कहीं जाना आना नहीं है। इस क़दर समझ लेकर इस बात का

निश्चय कर लेना कि मैं ब्रह्म हूं और सब ब्रह्म हैं, वास्ते उद्धार के वक़्त मौत यानी जुदाई शरीर के काफ़ी समझते हैं, और मन को किसी तरकीब से कुछ दिन अभ्यास करके एकाग्र करना और उसके पीछे ऐसा विचार करते रहना, कि मैं कोई शय रचना में से नहीं हूं, तत्त्व नहीं हूं, गुन नहीं हूं वग़ैरह वग़ैरह, फिर जो कुछ कि बाद निषेद सब पदार्थों के बाक़ी रहा वही ब्रह्म है, और वह ब्रह्म मैं ही हूं, यही उन का अभ्यास है, और कोई तरकीब सुरत के चलने और चढ़ने की वे नहीं मानते, और कहते हैं कि जब ब्रह्म सब जगह मौजूद है, फिर चलना और चढ़ना क्या ज़रूर है, और सुरत जीव को वे ब्रह्म से जुदा या उसकी अंश नहीं मानते सिर्फ़ ब्रह्म ही मानते हैं ॥

१०२–और जोगेश्वर ज्ञानी और वेदान्ती जो पुराने वक़्तों में गुज़रे, उन्हों ने अष्टाङ्ग योग यानी प्राणायाम का अभ्यास करके आत्मा को पिंड यानी छः चक्र की हद्द से न्यारा किया, और ब्रह्माण्ड में चढ़ कर और ब्रह्म पद में पहुंच कर फ़रमाया कि ब्रह्म सर्वत्र व्यापक है, उनका यह कहना उस अस्थान पर पहुंच कर सही था, क्योंकि वहां पिंडी और ब्रह्माण्डी माया बहुत नीचे रह गई, और वह शुद्ध ब्रह्म का अस्थान

था, कि जहां से सिवाय ब्रह्म के और कोई वस्तु यानी माया वगै़रह और उसकी रचना नज़र नहीं आती; जैसे ऊंचे पहाड़ पर चढ़ कर नीचे देश की रचना नज़र नहीं आती, सिर्फ़ गुवार या बादल छाया हुआ दिखलाई देता है, या जो कोई समुद्र या बड़े दरिया में गहरा ग़ोता मारे उसको उस वक्त़ सिवाय पानी के दूसरी चीज़ नज़र नहीं आती, ऐसे ही जोगेश्वर ज्ञानियों को शुद्ध ब्रह्म पद में पहुंचने पर सिर्फ़ ब्रह्म व्यापक नज़र आया, और माया और उसकी रचना जो नीचे थी वहां से नज़र नहीं आई, और असल में वहां पहुंचने वाले की यह हालत सच्ची होती है॥

१०३—लेकिन हाल के ज्ञानी और वेदान्ती और सूफ़ियों की अजब हालत है, कि इन्हों ने कोई अभ्यास प्राण और आत्मा के चढ़ाने का अपने घट में नहीं किया, और न करने की ताक़त और ख़्वाहिश रखते हैं, सिर्फ़ जोगेश्वरों के सिद्धांत के बचनों को पढ़ कर या सुन कर उनका निश्चय करके अपने को ब्रह्म और ज्ञानी और विद्वान मान कर चुप हो बैठे, और जो बचन कि उन्हीं जोगेश्वर ज्ञानियों ने निस्बत जोग अभ्यास और उसके संजमों की कार-रवाई के लिखे हैं, उनको छोड़ दिया, यानी मिहनत

और अभ्यास वास्ते सफ़ाई और मर्दन करने यानी क़ाबू में लाने मन और इंद्रियों के न कर सके, और उनके सिद्धान्त के बचनों से ऐसा समझ कर कि जब ब्रह्म सब जगह मौजूद है तो उससे मिलने के लिये अभ्यास करने की क्या ज़रूरत है, और उन बचनों की तामील कि जिस में अभ्यास के वास्ते ताकीद है नहीं करते ॥

१०४–और जोगेश्वर ज्ञानियों ने साफ़ अपने ग्रंथों में फ़रमाया है, कि जब तक मन और बासना का नाश न होगा, तब तक तत्व पद का ज्ञान हासिल नहीं हो सकता है, और यह कि जब तक किसी में यह चार साधन पूरे २ न पाये जावें, वह ज्ञान के ग्रंथों के पढ़ने का अधिकारी नहीं है, और जो कोई बग़ैर चार साधन हासिल किये उन ग्रंथों को पढ़ेगा तो वह पढ़ना उसके हक़ में ज़हर क़ातिल होगा, यानी आतमघाती हो जावेगा। और वह चार साधन यह हैं, (१) बैराग (२) बिवेक (३) षट सम्पति १–सम यानी अंतःकर्ण का रोकना, २–दम यानी बाहर इंद्रियों का रोकना, ३–उपरति यानी संसार के दुख सुख और ख़्वाहिशों से उपराम यानी न्यारे रहना, ४–तितिक्षा यानी तकलीफ़ की बरदाश्त करना,

५-सरधा यानी परमार्थ की सच्ची कदर और चाह और गुरू और महात्माओं और उनके वचनों में भाव और प्यार, ६-समाधानता यानी होशियारी और पूरी समझ के साथ गुरू और महात्माओं के वचन को सुनना और चित्त में धर के उनके मुवाफ़िक़ बर्ताव करना) और (४)ममोक्षता यानी सच्ची और तेज़ चाह वास्ते हासिल करने मुक्ती यानी अपने जीव के कल्यान के ॥

१०५-अब मालूम होवे कि इन चारों साधन का हासिल होना, और मन और बासना का नाश होना, बग़ैर योग अभ्यास की मदद से किसी क़दर पिंड से न्यारे होने के, यानी बग़ैर छः चक्र के बेधने के, किसी सूरत में मुमकिन नहीं है, इसी सबब से आज कल के ज्ञानी बाचक और विद्यावान कहलाते हैं, यानी बातें तो पूरे जोगेश्वरों की सी बनाते हैं, और उनके मन और इन्द्रियों की हालत और उनका ब्योहार और बर्ताव संसारी और अज्ञानी लोगों की मुवाफ़िक़ है। जो ब्रह्म आनन्द या आत्म आनन्द उन को प्राप्त हुआ होता तो उस आनन्द में मगन और बे परवाह रहते, और मेलों और तमाशों में और देशों और मकानों की सैर के वास्ते देश बिदेश मारे न फिरते, और रेल ख़र्च और भंडारों के लिये

इससे उससे मांग कर रुपये न जोड़ते, बल्कि जो सच्ची चाह परमार्थ की और अपने जीव के कल्यान का दर्द उनके दिल में होता, तो किसी पूरे गुरू या महात्मा को तलाश करके उसके सनमुख दीनता और आधीनता के साथ रह कर कोई दिन सुरत और मन की घट में चढ़ाई का अभ्यास करते कि जिस से चारों साधन पूरे २ उन में आ जाते, और मन और वासना का किसी क़दर नाश हो जाता, और तब ज्ञान के बचन सुनने और समझने के अधिकारी बन जाते ॥

१०६–लेकिन अफ़सोस की बात है कि इन बाचक ज्ञानियों को अपने मन और इन्द्रियों के हाल की भी ख़बर नहीं कि कैसे चक्रों में उनको डाल कर घुमा रहे हैं, और जो कोई उनको चितावनी का बचन सुनावे तो उससे लड़ने को तैयार होते हैं, और जो संतों का भेद और जुगत मन और सुरत के चढ़ाने की सुनाना चाहे, तो उससे बाद बिबाद करते हैं, और अपने जीव के हित के बचनों का निरादर करके मुतलक़ नहीं सुनते–यह लोग आप भी ठगाये गये, और जो कोई उनके बचन सुनेगा और मानेगा वह भी धोखा खावेगा, और अपने जीव के कल्यान

में आप ख़लल डालेगा, यानी आत्मघाती हो जावेगा ॥

१०७-ग़ौर करने से मालूम हो सकता है, कि चेतन्य में ब सबब हायल होने (परदा डालने) माया के बहुत दरजे हो गये हैं, यानी ऊंचे से ऊंचे के दरजे का चेतन्य महा निर्मल और लतीफ़ है, और जहां से कि माया का ज़हूर हुआ है उससे नीचे की तरफ़ दरजे बदरजे माया की कसाफ़त से चेतन्य भी मलीन हो रहा है, और इस लोक का चेतन्य निहायत कसीफ़ यानी मलीन है कि अपनी ताक़त से कोई काररवाई रचना की नहीं कर सकता है, और सूरज मंडल के बिशेष चेतन्य का अधीन है-इसी तरह सूरज मंडल का चेतन्य अपने से ऊंचे के सूरज मंडल के चेतन्य का अधीन है, यानी माया की हद्द में समान और विशेष चेतन्य का हिसाब नीचे से ऊपर तक चला गया है, और माया के घेर के पार महा निर्मल चेतन्य देश है-बग़ैर वहां पहुंचे किसी का सच्चा और पूरा उद्धार नहीं हो सकता है, फिर बाचक ज्ञानियों ने जो चेतन्य को ब्यापक मान कर ऊपर की तरफ़ चलना चढ़ना नहीं माना तो किस क़दर ग़लती करी, और अपने जीव के उद्धार में किस क़दर धोखा खाया ॥

क्योंकि इस देश का चेतन्य मलीन माया के संग से आप मलीन हो रहा है, और जनम मरन यानी रचना के भाव और अभाव में पड़ा हुआ है, फिर यहां रह कर यानी पिंड में बैठ कर जहां से कि दुनिया की काररवाई मन और इन्द्रियों के वसीले से हो रही है, किसी का छुटकारा जनम मरन और देह और दुनिया के दुख सुख से नहीं हो सकता है, और यही सबब है कि वाचक ज्ञानियों की हालत नहीं बदलती, यानी उनके मन और इंद्रियों का बर्ताव मुवाफ़िक़ संसारी और अज्ञानी जीवों के रहता है ॥

१०८—जोगेश्वर ज्ञानियों ने ब्रह्म में तीन दरजे क़ायम किये, यानी माया सबल ब्रह्म जो कि माया से मिलकर रचना कर रहा है, और साक्षी ब्रह्म जो कि उसको मदद दे रहा है, और शुद्ध ब्रह्म जहां कि माया निहायत सूक्ष्म और बीज रूप है, और वह पद रचना की काररवाई से किसी क़दर न्यारा है, यानी गुप्त मदद दे रहा है। अब जो मुवाफ़िक़ समझ वाचक ज्ञानियों के ब्रह्म के सर्वत्र व्यापक होने में कोई भेद नहीं था तो जोगेश्वर ज्ञानियों ने यह दरजे क्यों मुक़र्रर किये, और माया सबल ब्रह्म और साक्षी ब्रह्म के मंडल में क्यों नहीं ठहरे, और योग अभ्यास करके पहिले

पिंड से न्यारे होकर और फिर ब्रह्माण्ड में चढ़ कर शुद्ध ब्रह्म पद में पहुंच कर क्यों बिसराम किया ॥

१०९–इससे साफ़ ज़ाहिर है कि बाचक ज्ञानी निरे विद्यावान हैं, यानी परमार्थी किताबें सिर्फ़ मुतअ़ल्लिक़ ज्ञान के पढ़ कर अपने आप को पूरा समझते हैं, और ब्रह्म रूप मानते हैं, और अमल यानी अभ्यास कुछ नहीं किया या करते हैं। विद्या यानी इल्म बग़ैर अमल यानी अभ्यास के ख़ाली है, इस वास्ते यह लोग बे अमल यानी अभ्यास से ख़ाली रहकर अहंकारी और मानी हो गये, और अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मारी, यानी घट में चलने और चढ़ने को फ़ज़ूल समझ कर संसारी और अज्ञानी जीवों के गिरोह में शुमार किये गये, बल्कि उनसे भी कम क्योंकि उन लोगों के चित्त में थोड़ी बहुत दीनता है, और जो कोई महात्मा उनको मिल जावें, तो उनके बचन को मान कर उनकी दया के भागी हो जावें, और अपना थोड़ा बहुत उद्धार का रास्ता जारी कर लेवें, और यह बाचक ज्ञानी इस क़दर अहंकारी और बे परवाह हो गये कि अपने बराबर किसी को ख्याल नहीं करते, और किसी के बचन को जो इनके हित के वास्ते कहे, नहीं मानते हैं ॥

११०-और मालूम होवे कि वाचक ज्ञानी क़रीब क़रीब नास्तिक हैं, यानी जब उन्होंने अपने आप को ब्रह्म माना तो उनको किसी की सेवा या भक्ती करने की ज़रूरत नहीं रही, तो वह असली ब्रह्म जो कि तमाम तीन लोक की रचना का करता धरता है ग़ायब कर दिया गया, और उसकी भक्ती मौक़ूफ़ हो गई। अब ख़्याल करो कि ऐसे ज्ञान का मत नास्तिक मत हुआ या क्या, क्योंकि यह वाचक ज्ञानी जीवों से अपनी भक्ती और सेवा तो कराते हैं, और आप किसी की भक्ती या सेवा नहीं करते बल्कि भक्ती से विरोध रखते हैं, और कहते हैं कि जो कोई भक्ती करेगा उसका जनम मरन दूर न होगा, और अपना जनम मरन नहीं मानते हैं, यानी ऐसा ख़्याल करते हैं कि वे देह छोड़ने पर ज़रूर मुक्त हो जावेंगे, और हाल यह है कि अपनी ज़िन्दगी भर में मुक्ती की कुछ भी हालत या कैफ़ियत नहीं पैदा करी, तब मरने पर किस तरह मुक्ती मिल सकती है॥

१११-जो लोग कि मदर्सों में विद्या पढ़ कर दरजा हासिल करते हैं, उन में से बाज़े इल्म फ़लासफ़ी और हिकमत की किताबें पढ़ कर और कुल्ल मालिक की मौजूदगी में शक लाकर नास्तिक मत की तरफ़ रुजू

क़रते हैं, उनका हाल भी थोड़ा बहुत वाचक ज्ञानियों के मुवाफ़िक़ समझना चाहिये, यानी बाज़े उनमें से चेतन्य को सब जगह ब्यापक मान कर उसकी और माया की मिलौनी से रचना का ज़हूर कहते हैं, पर उस चेतन्य को समझवार और शक्तिमान नहीं मानते ॥

और कोई २ चेतन्य को न्यारा नहीं मानते—उसको माया के मसाले का ख़ुलासा ख़्याल करते हैं, और कहते हैं कि जब जीव की मौत होती है उस वक्त माया का मसाला यानी तत्व और गुन वग़ैरह सब आपस में जुदा होकर अपने २ मंडल में जा समाते हैं, और वह चेतन्य क़ूवत जो इनकी मजमूई (मिलौनी) शकल से पैदा हुई थी गुप्त यानी ग़ायब हो जाती है, और फिर मनुष्य के आपे का कुछ निशान बाक़ी नहीं रहता है, इस वास्ते जो कुछ काम किया जाता है, वह इसी ज़िन्दगी के आराम के वास्ते है, और दूसरों को भी आराम देना चाहिये, इससे ज्यादा वे लोग कुछ नहीं मानते और मालिक की भक्ती करने वालों को नादान समझते हैं ॥

११२—यह सब मत काल पुर्ष ने वास्ते भरमाने और सत्तपद से बे ख़बर रखने जीवों के बिद्या और

बुद्धी की मदद से प्रगट कराये, और जो जीव कि उस क़िस्म की तबीयत रखते हैं, वे उन में शामिल होकर सच्चे मालिक से मुनकिर (नास्तिक) हो जाते हैं, और कुल्ल मज़हबों पर जो किसी को मालिक मानते हैं तान करते हैं, और कहते हैं कि उनके आचार्यों ने अपनी नामवरी और फ़ायदे की नज़र से उन मतों को मूरख जीवों में जारी किया, और उनको ख़ौफ़ और उम्मेद दिखाकर अपने बचनों में ख़ूब मज़बूत बांधा—असल में कोई मालिक नहीं है, और बाद मौत के करम और उसका फल बाक़ी नहीं रहता है, और न कहीं स्वर्ग और नर्क वग़ैरह है॥

११३—इन लोगों ने सिर्फ़ माया के पदार्थों के भोग बिलास को अपना आनंद और सरूर समझा है, और जीवों की अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ मदद करना उपकार समझा है। इनकी समझ पर अफ़सोस आता है कि कुल्ल काररवाई इस रचना की अपनी आंख से देखते हैं कि वह किसी न किसी रूह की ताक़त से जारी है, और वह रूह किसी न किसी क़िस्म की देह यानी जिस्म में बैठ कर काररवाई करती है, और मिसल सूरज और चांद वग़ैरह बेशुमार अरसे से उनका ज़हूर और क़याम चला आता है, और

बे शुमार अरसे तक जारी रहेगा। इसी तरह इस मंडल के ऊपर और मंडल मालूम होते हैं, और क़ानून कुदरत को निज़ाम फ़लकी और ज़मीनी यानी ऊंचे और नीचे देश की रचना के बन्दोबस्त में देख कर साबित होता है कि उनका बन्दोबस्त मुक़र्रर किये हुए क़ायदों के मुवाफ़िक़ जारी है, और बे शुमार अरसे से ऐसा ही चला आया है, और जारी रहेगा, और इस दुनिया के बन्दोबस्त में भी कोई न कोई अफ़सर और कारकुन की मारफ़त काररवाई जारी होती है। इसी तरह घर का बंदोबस्त भी किसी घर के बड़े की मार्फ़त जारी होता है, और जोकि इस दुनिया की काररवाई ऊपर की रचना की छाया यानी अक्स और नक़ल समझी जाती है, इस सबब से मुमकिन नहीं है कि ऊंचे देश की रचना का बंदोबस्त और इसी तरह कुल्ल रचना का बंदोबस्त बग़ैर किसी अफ़सर या मालिक के जारी होवे—अलबत्ता एक के ऊपर एक अफ़सर या मालिक मक़र्रर है, और सब के परे और सब के ऊपर कुल्ल मालिक का देश और तख़्त है, वहां से आदि में काररवाई रचना की शुरू हुई, और सब बंदोबस्त और क़ायदे वहीं से मुक़र्रर होते चले आये—और जो कि कुल्ल रचना

के हर एक जिस्म और चीज़ के बनाने में इरादा और मतलब और कुदरत और कारीगरी पाई जाती है [जो समरत्थ करता की मौजूदगी के गवाह हैं]; फिर जो कोई रचना को आप से आप बग़ैर किसी करता के मानते हैं, वह सरीह ग़लती में पड़े हुए हैं, पर अपनी मन हठ से इस बात के क़ायल नहीं होना चाहते, सो इसका फल उनको वक़्त सख़्त तकलीफ़ के इस ज़िंदगी में या वक़्त छोड़ने इस देह के मालूम पड़ेगा ॥

११४—बहुत से मुआमले तसदीक़ किये हुए ऐसे हैं, कि जहां एक शख़्स ने पैदा हो कर अपने पिछले जन्म का हाल बयान किया, और जो उसके कलाम की तसदीक़ उसके पिछले जन्म की सकूनत (रहने की जगह) से की गई तो सब बातें दुरुस्त निकलीं; फिर जो यह लोग रूह सुरत का मरते वक़्त अभाव मानते हैं, निहायत ग़लती करते हैं। ज़्यादा इस मुआ-मला को यहां तूल करना मुनासिब नहीं, जिस क़दर लिखा गया है, उसी क़दर समझवार सतसंगी खोजी के वास्ते काफ़ी है, और जो लोग बाद विवाद करें, वह किसी दलील से क़ायल नहीं होवेंगे, उनसे बात चीत करना फ़ज़ूल है ॥

समाजों की परमार्थी काररवाई

११५–जो समाज जहां तहां आज कल जारी हैं, उनके आचार्य विद्यावान और बुद्धिवान हुए। उन्होंने हालत इस वक़्त के जीवों की देख कर कि खान पान और आज़ादगी की ख़्वाहिश से अपने मत को छोड़ कर ग़ैर मत में शामिल होते चले जाते हैं, या इरादा शामिल होने का रखते हैं, इस सबब से मुनासिब और मसलहत वक़्त समझ कर क़रीब २ बेदान्त शास्त्र के क़ायदे और उसूल के मुवाफ़िक़ नया मत खड़ा किया, कि उसमें हर तरह की आज़ादगी खान पान वग़ैरह और शादी ब्योहार की मिसल ईसाई मत वालों के जीवों को देदी, और जो ज़ाहिरी रसूम कि पुराने वक़्तों से जारी हैं, और उनको लोग अपने मज़हब का एक अंग समझते हैं, और उनके जारी रहने में इस ज़माने में सिवाय हर्ज और तकलीफ़ के कोई ख़ास दुनियवी या परमार्थी फ़ायदा नज़र नहीं आता, उनकी क़ैद छुड़ादी, और एक मालिक का जिसको मुताबिक़ बेदान्त शास्त्र के ब्रह्म कहते हैं, इष्ट बंधवा कर उसकी अस्तुति और महिमा और शुकराने के भजन या बानी का पढ़ना या गाना जारी किया, और नक़ल यानी मूरत वग़ैरह बना कर

पूजा करने को मना और निषेद किया, और तीरथ वरत और औतार और देवताओं की पूजा (मूर्तें बनाकर) जो कसरत से जारी थी मौकूफ़ कर दी, और जो कोई ज़्यादा शौक़वाले मालूम हुए, उनको वास्ते प्राणायाम, यानी अष्टाङ्ग योग के अभ्यास करने की हिदायत की, लेकिन जो कि यह अभ्यास निहायत कठिन और उसके संजम भी बहुत कठिन हैं, इसका सच्चा अभ्यासी उनके बेड़े में ज़ाहिरा कोई नज़र नहीं आता, और कोई २ ब्रह्म को आकाशवत व्यापक मान कर उसका ध्यान आंख बंद करके या खुली आंखों से बग़ैर मुक़र्रर करने किसी ख़ास मुक़ाम के अंतर या बाहर में करते हैं। इस अभ्यास से थोड़ी सफ़ाई होती है, और जो कोई प्रेम सहित बानी का पाठ करते हैं या भजन गाते हैं, तो वह भी उस वक़्त किसी क़दर अपने मन में गद २ हो कर प्रेम की हालत में थोड़ी देर के वास्ते भर जाते हैं, मगर वह हालत ज़्यादा ठहराऊ नहीं होती, और न उसकी तरक़्क़ी सिर्फ़ इसी क़दर काररवाई से मुमकिन है ॥

इन समाजों में सिर्फ़ इसी क़दर साधन वास्ते प्राप्ती मुक्ती के जारी हैं ॥

११६—यह सब कुल्ल और सच्चे मालिक के भेद और अंतर में मन और सुरत के चढ़ाने के अभ्यास से

बिलकुल बेख़बर हैं, और इस सबब से उन जीवों का जो इन समाजों में शामिल हैं, सच्चा उद्धार बल्कि किसी ऊंचे दरजे का भी उद्धार या मुक्ती मुमकिन नहीं—बहुत से लोग तो इन समाजों में सिर्फ़ नामवरी और दुनिया की काररवाई या आज़ादी के हासिल करने के लिये शामिल होते हैं, और असल में परमार्थ की चाह उनके दिल में बिलकुल नहीं मालूम होती है ॥

११७—एक नुक़्स (कसर) इन समाजों में और भी है कि वे गुरू की ज़रूरत नहीं समझते, और न पूरे गुरू का खोज़ करते हैं। सबब इसका यह है कि इनके मत में भेद और अभ्यास नहीं है, और इसी सबब से इनको ज़रूरत पूरे गुरू की मदद की नहीं होती, क्योंकि इनके मत में सिर्फ़ किताबों का पढ़ना और पढ़ाना या भजन वग़ैरह का गाना जारी है, और इनकी किताबों में भेद रास्ता या तरकीब अभ्यास अंदरूनी (अंतरी) का कोई ज़िकर नहीं है, कि जिसके वास्ते ज़रूरत दरियाफ़्त की भेदी और अभ्यासी से होवे, बल्कि उन में तारीख़ी हाल या महिमा और सिफ़त मालिक की, या मसले इल्मी और अक़्ली या हाल तत्त्वों और गुनों का जो अस्थूल रचना की कारखाई कर रहे हैं दर्ज है, इस सबब से जिस किसी ने थोड़ी

बहुत रसूमी विद्या हासिल की है वह भी उन किताबों को पढ़ कर उनका मतलब अपनी समझ के मुवाफ़िक़ समझ सकता है। यह लोग भेदी और अभ्यासी गुरू की क़दर नहीं जानते हैं, क्योंकि इनको अपने जीव के सच्चे उद्धार और अपने मालिक से मिलने की ख़्वाहिश बिलकुल नहीं है॥

११८-इसी तरह करम काण्ड के शास्त्र भी सिर्फ़ बाहरी रसूमों और उनकी काररवाई का ज़िकर करते हैं, और इसी सबब से वहां भी पूरे गुरू की ज़रूरत नहीं है, सिर्फ़ विद्यावान गुरू जो होम और जग्य वग़ैरह, और जनम मरन और दूसरे समय के करम किताबों को पढ़ कर कराते हैं, और जिन को वे आचारज कहते हैं काफ़ी समझा जाता है। और जो लोग आप थोड़ा बहुत संस्कृत ज़बान से वाक़फ़ियत रखते हैं, वे आप सब काररवाई किताबों को देख कर कर सकते हैं-यह लोग भी यानी करम काण्डी पूरे गुरू की क़दर नहीं जानते, और न इनके मन में खोज सच्चे परमार्थ का है, सिर्फ़ करम करने से मुक्ती हासिल होने का यक़ीन करते हैं, मगर यह बात सही नहीं है, क्योंकि जब तक उपाशना करके सच्चा ज्ञान हासिल न होगा मुक्ती प्राप्त नहीं हो

सकती। और संतों के बचन के मुवाफ़िक़ यह मुक्ती भी नातमाम है, यानी पूरा और सच्चा उद्धार सच्चे ज्ञानियों का भी जिनको जोग अभ्यास करके ज्ञान प्राप्त हुआ है, नहीं होता है, जब तक कि संतमत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करके पारब्रह्म पद के पार संत देश में न जावें, फिर करम काण्डी और बाहरमुख उपाशना मूरत वग़ैरह की करने वालों को सच्ची मुक्ती किस तरह हासिल हो सकती है ॥

११९–ऊपर के लिखे हुए से ज़ाहिर है कि बाचक ज्ञानी और समाज वाले और करमकाण्डी घट के भेद से बिलकुल बेख़बर हैं, और हर चंद उनके मत में शब्द की महिमा बहुत की है, और साफ़ लिखा है कि आदि में ओङ्ग शब्द प्रगट हुआ, और इसी शब्द से कुल्ल रचना पैदा हुई, और तीन लोक की रचना की ताक़त और मसाले का भंडार भी यही शब्द है, पर यह लोग शब्द का खोज नहीं करते और न रचना का भेद दरियाफ़्त करते हैं, कि कैसे ओम् शब्द से तीन लोक की रचना हुई–जो यह ख़्वाहिश इनके दिल में होती तो ज़रूर भेदी और अभ्यासी गुरू की ज़रूरत इनको पड़ती ॥

१२०–ज़रा ग़ौर करने से मालूम होगा, और बेदों की उपनिषदों में भी लिखा है, कि जब तक अभ्यासी ओम् शब्द यानी शब्द ब्रह्म को पहिले प्राप्त होकर उसके पार न जावेगा, तब तक बेद मत के मुवाफ़िक़ उद्धार न होगा, यानी अशब्द ब्रह्म की प्राप्ती नहीं होगी, क्योंकि ओम् शब्द को ही महत्तत्व कहते हैं, और यही तीन लोक की रचना के मसाले का भंडार है, फिर जब तक उसके पार न जावेगा, तीन लोक की रचना के घेर से न्यारा नहीं होगा। यह भेद जोगेश्वर ज्ञानी जानते थे और वे जोग अभ्यास करके ओम् पद के पार पहुंचे, पर आज कल के ज्ञानी इस रास्ते और भेद से बिल्कुल बेख़बर हैं, और उन को ख़्वाहिश उसके मालूम करने और योग अभ्यास करने की नहीं है, सिर्फ़ अपनी विद्या और बुद्धि की समझ के मुवाफ़िक़ अपनी विदेह मुक्ती का यक़ीन करते हैं, यानी बाद मरने के मुक्ती का हासिल होना मानते हैं, और यह भारी ग़लती और भूल है, और सच्चे जोगेश्वर ज्ञानी और उपनिषदों के कलाम के बरख़िलाफ़ है ॥

१२१–रस्मी विद्या तो विद्यावान गुरू से हासिल हो सकती है, सो विद्यावान गुरू को यह सब मानते

हैं, पर ब्रह्म ज्ञान बग़ैर ब्रह्मनेष्ठी गुरू के हासिल नहीं हो सकता है। सच्चे ज्ञानियों ने तीन दरजे ब्रह्म ज्ञानियों के मुक़र्रर किये हैं, ब्रह्मश्रोत्तरी, ब्रह्मनेष्ठी ब्रह्मसंतुष्ट। ब्रह्मश्रोत्तरी विद्यावान ज्ञानी को कहते हैं—यह अव्वल सीढ़ी है, ऐसे ब्रह्म ज्ञानी से जीव का कारज नहीं हो सकता, जब तक कि वह पढ़े और सुने के मुवाफ़िक़ नेष्ठा यानी अभ्यास न करे। ब्रह्मनेष्ठी अभ्यासी को कहते हैं कि वह अभ्यास करके ब्रह्म पद में पहुंचना चाहता है, और ब्रह्मसंतुष्ट उसको कहते हैं कि जो ब्रह्म पद को प्राप्त होकर शान्त स्वरूप हो गया॥

१२२—अब ख्याल करो कि जितने ज्ञानी आज कल नज़र आते हैं वे सब विद्यावान हैं, यानी विद्या पढ़ कर उन्हों ने ब्रह्म का निश्चय किया है। यह निश्चय इल्मी और अक़्ली है, जीव का कल्यान इससे नहीं हो सकता है, जब तक कि उस विद्या के मुवाफ़िक़ अमल यानी अभ्यास न किया जावेगा, और वह अभ्यास, अन्तरमुख उपाशना ब्रह्म पद की है, यानी प्रेम और भक्ती के साथ जो अभ्यास कि संतों ने इस वक़्त में जारी फ़रमाया है, उसकी कमाई करके पिण्ड देश से न्यारे होकर, ब्रह्माण्ड में चढ़कर

पहुंचना, क्योंकि प्राणायाम का अभ्यास, जो पिछले वक़्त में जारी था, जीवों से बिल्कुल नहीं बन सकता है, उसके संजम वग़ैरह निहायत कठिन हैं ॥

इन मतों के अभ्यास की कमाई बग़ैर मदद अभ्यासी यानी नेष्ठावान या संतुष्ट गुरू के किसी तरह मुमकिन नहीं है—इससे साफ़ ज़ाहिर है कि यह वाचक ज्ञानी सिर्फ़ विद्या में अटके रह गये, और अंतरमुख अभ्यास इन से नहीं बना, इस वास्ते इन्होंने अभ्यासी गुरू का खोज नहीं किया, और जो कोई ऐसा गुरू मिले तो उसके बचन को भी नहीं मानते, और नहीं सुनते हैं—यह लोग साफ़ ख़िलाफ़ बचन सच्चे जोगेश्वर बेदान्ती या ज्ञानी और वेद मत के काररवाई कर रहे हैं, और फिर अपनी ग़लती और भूल के मन हठ और अहंकार से क़ायल नहीं होते ॥

१२३—यही हाल कुल्ल मतों के लोगों का है, कि अपने आचारजों के बचन के बरख़िलाफ़ काररवाई कर रहे हैं, यानी नीचे के दरजे की बातों में अटक रहे हैं, या अपने मन और बुद्धी के वसीले से बाहर-मुख पूजा ईजाद (नई ज़ारी) करके जीवों को उसमें भरमा रहे हैं, और अपने रोज़गार के ख़ातिर सच्ची

बात को छिपाते चले आये हैं, यहां तक कि अब वे उन सच्ची बातों से आप भी बेख़बर रह गये, और जो कोई उन बातों को जनावे उससे बिरोध करते हैं, और बावजूदे कि आप अपने आचारजों के बचन से ग़ाफ़िल और बेख़बर हैं, उलटा उस समझाने वाले को निंदक क़रार देकर आम जीवों को उलटे बचन सुना कर सच्चे रास्ते पर चलने से बाज़ रखते हैं, यानी इन्होंने अपना अकाज किया और औरों का भी अकाज करते हैं ॥

१२४–सच्चे परमार्थी को ऐसे लोगों और बाहरमुखी पूजा वालों के संग से क़ितई परहेज़ करना चाहिये, और उनके बचनों को सुनना नहीं चाहिये, बल्कि नेष्ठावान या अभ्यासी गुरू से (और जो मिल जावे तो संतुष्ट गुरू से) मिलकर उनसे अभ्यास की जुगत दरियाफ़्त करे, और जिस क़दर बन सके अभ्यास करके अपने अंतर में आनंद हासिल करना और जीते जी अपनी मुक्ती होती हुई देखना चाहिये ॥

संत सतगुरु और साधगुरू की पहिचान

१२५–राधास्वामी मत में संत सतगुरु या साधगुरू की ख़ास पहिचान यह रक्खी है–

(१) यह कि सुरत शब्द मारग के भेदी और अभ्यासी होवें, और घट का भेद और जुगत अभ्यास की मय नाम अस्थानों और शब्दों के समझाते होवें,

और सिवाय इसके दूसरे क़िस्म के अभ्यास की हिदायत न करते होवें।

(२) यह कि दर्दी खोजी को फ़ौरन् बचन सुन कर और अभ्यासियों की हालत देख कर दिल में शान्ती और आनंद पैदा होगा, और जिस क़दर उसके संशय और संदेह दूर होते जावेंगे, और प्रश्नों के पूरे जवाब मिलते जावेंगे, उसी क़दर उसकी प्रीत और प्रतीत संत सतगुरु या साधगुरू के चरनों में बढ़ती जावेगी, और अंतर में राधास्वामी दयाल की दया के परचे पाकर यक़ीन मज़बूत होता जावेगा, और प्रेम दिन २ बढ़ता जावेगा। इससे बढ़कर यानी बचन और भेद से ज़ियादा कोई पहिचान नहीं है कि जिससे सच्चे परमार्थी के दिल में थोड़ा बहुत यक़ीन पैदा होवे कि यहां से मेरा परमार्थी काम बनेगा।

(३) यह है कि जो कोई कुछ अरसे तक उनका रात दिन सतसंग करे, और उनकी रहनी और गहनी और बोलचाल और व्योहार और बर्ताव को देखे तो उसके मन में दिन २ इस बात का यक़ीन होता जावेगा कि वे ज़रूर पूरे अभ्यासी हैं, और रहनी उनकी सतोगुनी है, और उसका परमार्थ उनके वसीले से ज़रूर बन जावेगा। सिवाय इसके और जो कोई

पहिचान है, वह सिवाय सुरत शब्द अभ्यासी के दूसरा नहीं परख सकता है, क्योंकि अभ्यासी की हालत को अभ्यासी ही परख और समझ सकता है, दूसरे की ताक़त नहीं है ॥

१२६–जो कोई पुरानी किताबों के मुवाफ़िक़ महात्माओं के लक्षण पढ़ कर किसी महात्मा या अभ्यासी की पहिचान किया चाहें तो उनको हरगिज़ पहिचान नहीं आवेगी, क्योंकि जो काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार और मन और इंद्रियों के चक्कर में आप पड़े हैं, और मालिक के भेद और उसके मिलने की जुगत से बेख़बर हैं, उनकी क्या ताक़त है कि जो इनके चक्कर से न्यारे बर्त रहे हैं या इन कूवतों पर किसी क़दर सवार हैं, यानी उनको अपने क़ाबू में लाये हैं, उनकी हालत की थोड़ी बहुत परख और पहिचान कर सकें। ऐसे लोग हमेशा धोखा खाते हैं और धोखा खावेंगे ॥

१२७–इस वास्ते सच्चे परमार्थी को मुनासिब है कि पहिले सिर्फ़ बचन की पहिचान करे, यानी जिनके दर्शन और बचन और संग से कुल्ल मालिक के चरनों में भय और भाव पैदा होवे, और परमार्थ की क़दर और बड़ाई चित्त में समावे, और दुनिया और

उसके सामान दिन २ ओछे और रूखे और फीके मालूम होते जावें, और जिन चीज़ों और बातों में कि संसारी जीव अटके और फंसे हुए हैं, उनसे उसकी तबीयत आहिस्ता २ हटती जावे, तो जानना और समझना चाहिये कि ऐसों के संग और उपदेश से ज़रूर एक दिन संसार और उसके बंधनों से छुटकारा हो जावेगा और परम पद और परम आनंद की प्राप्ती हो जावेगी। इससे ज़्यादा हाल उनके अभ्यास और उनकी गत का जब तक कि यह आप कोई दिन अभ्यास न करेगा तब तक नहीं मालूम होगा॥

फिर उन्हीं का कोई दिन सतसंग करे, और जब उनकी रहनी और बर्ताव थोड़ा बहुत देखले तब उन में अपना गुरू भाव लावे, और जिस क़दर बने उनकी आज्ञा अनुसार कारखाई परमार्थ की करे, और जिस बात में कसर पड़े उसके दूर होने के वास्ते उनकी और राधास्वामी दयाल की दया मांगता रहे, रफ़ा २ एक दिन उसका कारज सिद्ध हो जावेगा॥

सच्चे परमार्थी के थोड़े बहुत लक्षन और स्वभाव यहां लिखे जाते हैं

१२८—हर एक परमार्थी को चाहिये कि इन लक्षनों

के मुवाफ़िक़ अपने मन के हाल और चाल को परखता चलेः—

(१) परमार्थी का मन कोमल और चित्त मुलायम होना चाहिये ताकि किसी के साथ सख़्ती न करे, और दुखिया का दुख तवज्जह से सुनकर जो बन सके तो अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ उसकी मदद करे, नहीं तो उसकी हमदर्दी गमख़्वारी और दिलदारी करे।

(२) परमार्थ की चाह सच्ची होवे और सच्चे परमार्थ का खोज बराबर जारी रहे, और जब उसका पता लग जावे तब बाद बिवाद और पक्षपात छोड़ कर उसको दिल से क़बूल करके जो अभ्यास कि उसके हासिल करने के वास्ते बताया जावे उसकी सच्चे मन से काररवाई करे।

(३) कुल्ल मालिक की मौजूदगी का पूरा यक़ीन मन में होवे, और उसकी भक्ती करने के वास्ते नई २ उमंग मन में उठती रहें।

(४) जो कोई सच्चे कुल्ल मालिक का पता और भेद सुनावे वह शख़्स प्यारा लगे, और दीनता के साथ उसका संग बारम्बार करे, और उससे पूरा भेद और जुक्ती लेकर जिस क़दर जल्दी बने अभ्यास

शुरू करके अपने अंतर में थोड़ा बहुत रस और आनंद लेवे ।

(५) क्षमा और बरदाश्त करना उसकी आदत हो जावे, और जहां तक मुमकिन होवे किसी से गुस्सा या तकरार या झगड़ा न करे ।

(६) संसारी लोग और माया के पदार्थों से मन में किसी क़दर नफ़रत होवे, यानी इन से मिलने में मन राज़ी और खुश न होवे ।

(७) सच्चे परमार्थ की काररवाई में संसारी लोगों का खौफ़ और शरम न करने का इरादा रक्खे, और जिस क़दर बने इसी मुवाफ़िक़ बर्ताव शुरू करे ।

(८) सच्चे मालिक की भक्ती तन मन और धन से शौक़ के साथ करने की चाह बनी रहे, और जिस क़दर बन सके उसकी काररवाई जारी करे ।

(९) गुरू और मालिक की प्रसन्नता की औरों की प्रसन्नता पर जहां तक मुमकिन होवे मुख्यता रक्खे ।

(१०) मन और इंद्रियों को शौक़ के साथ जिस क़दर बने क़ाबू में लाने का इरादा मज़बूत रक्खे ।

(११) जो काम या चाल या रस्म कि उसके पर-

मार्थ की कारखाई में विघनकारक होवें उनसे जिस क़दर बने बचाव करे।

(१२) निंदक लोगों के वचन सुन कर विचार के साथ कारखाई करे, और ग़ौर करके समझे और विचारे कि उनकी निंदा किस क़दर ग़लत और किस क़दर सही है, और जो सही है उस में क्या नुक़सान है, या यह कि परमार्थी फ़ायदा उसमें किस क़दर है, और जो अपनी समझ में कोई बात बखूबी न आवे, तो प्रेमी सतसंगी से उसका हाल अलहदगी में दरियाफ़्त करके अपना इतमीनान और तसल्ली करे।

(१३) किसी तरह का अहंकार या मान ज़ात पांत और धन और हुकूमत और गुन वग़ैरह का अपने मन में परमार्थी कारखाई और सतसंग में न रक्खे।

(१४) अपनी कसरों और औगुनों का ख़्याल करके आपको निबल और नाचीज़ और नाकारा देखता और समझता रहे, और हर एक से प्यार और दीनता के साथ बर्ताव करे, और उन कसरों के दूर करने की बराबर कोशिश जारी रक्खे।

(१५) जहां तक बने ईर्षा और विरोध और क्रोध को अपने मन में न आने देवे, और किसी की बुराई

भलाई दूसरे से उसकी ग़ीबत (पीठ पीछे) में न करे और न दूसरों की बुराई सुनने की आदत रक्खे ॥

(१६) बेफ़ायदा लोभ और लालच न करे और बग़ैर ज़रूरत के दूसरे से कोई पदार्थ न मांगे और न लेवे ॥

(१७) अपनी मान बड़ाई के वास्ते कोई काम दिखावे का न करे—परमार्थ में ऐसी करतूत निष्फल समझी जाती है। जो काम या सेवा करे वह गुरू और मालिक की प्रसन्नता के वास्ते निरअहंकार और चित्त में दीनता रख कर करे ॥

राधास्वामी मत के अभ्यासी को इन संजमों की सम्हाल रखना चाहिये

१२९—जो कोई राधास्वामी मत में शामिल होवे और उसके मुवाफ़िक़ अभ्यास शुरू करे, उसको यह संजम वास्ते दुरुस्ती से करने अभ्यास सुरत शब्द मार्ग के दरकार है:—

(१) मांस अहार न करे और न कोई नशे की चीज़ पीवे या खावे—हुक्का पीना नशे में दाख़िल नहीं है।

(२) मामूली खाने से आहिस्ता २ क़रीब चौथाई

हिस्से के कम कर देवे, और बहुत चिकने चुपड़े और स्वाद के भोजन ज़्यादा न खावे।

(३) सोवने में भी कुछ कमी करे, यानी आम तौर पर छः घंटे से ज़्यादा न सोवे।

(४) संसारी लोगों से ज़रूरत के मुवाफ़िक़ मेल और बर्ताव करे, उनसे ज़्यादा मेल न रक्खे, और बग़ैर ज़रूरत के किसी के संसारी मुआमले में दख़ल न देवे।

(५) संसारी पदार्थ और इन्द्रियों के भोगों की चाह फ़ज़ूल न उठावे, और न उनके वास्ते फ़ज़ूल जतन करे, बल्कि जो भोग और पदार्थ मुयस्सर आवें, उनमें भी जिस क़दर मुनासिब होवे एहतियात के साथ बर्ताव करे।

(६) वक़्त अभ्यास के बेफ़ायदा ख्याल दुनिया और उसके पदार्थों और भोगों के न उठावे, और जो पुरानी आदत के मुवाफ़िक़ ऐसी गुनावन मन में पैदा होवे, तो उसको जिस क़दर जल्दी बने दूर हटावे नहीं तो अभ्यास में रस नहीं मिलेगा।

(७) सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल और गुरू का किसी क़दर ख़ौफ़ दिल में रक्खे, और उनकी प्रसन्नता में अपनी बेहतरी समझे, और नाराज़ी में नुक़सान

परमार्थ और स्वार्थ का, और उनके चरनों में दिन २ प्रीत और प्रतीत बढ़ाता रहे।

(८) जहां तक मुमकिन होवे किसी जीव से विरोध और ईर्षा दिल में न रक्खे॥

(९) पुन्य करम मुवाफ़िक़ दफ़ा ८४ से ८८ तक के जिस क़दर बन सके करे, और पाप करम से जहां तक बने बचता रहे।

(१०) राधास्वामी दयाल की दया का हर दम भरोसा मन में रख कर अपना अभ्यास नेम से हर रोज़ दो बार या ज़ियादा करता रहे और पोथियों का भी थोड़ा पाठ किया करे कि उससे अभ्यास और मन और इंद्रियों की दुरुस्ती में मदद मिलेगी।

(११) सतसंग में शामिल होने का हमेशा शौक़ रक्खे, और जब मौज से मौक़ा मिले तब चेत कर होशियारी से बचन सुने, और उनका मनन करके अपने लायक़ के बचन छांट कर उनके मुवाफ़िक़ कारवाई और बर्ताव शुरू करे।

(१२) अपने मन और इंद्रियों की चाल को निरखता चले, यानी मन की चौकीदारी करे कि नाक़िस और पाप करमों और ख्यालों में न जावे, और जहां तक बने मन और माया के हाथ से धोखा न खावे।

(१३) सच्चे परमार्थी यानी प्रेमी जन से मोहब्बत

करे, और जब वे मिल जावें तो शौक़ के साथ उनका संग और ख़ातिरदारी और जो मौक़ा होवे तो महिमानदारी करे।

(१४) अपने वक्त़ का ख़्याल रक्खे कि जहां तक मुमकिन होवे फ़ज़ूल और बेफ़ायदा कामों और बातों में मुफ़्त ख़र्च न होने पावे।

(१५) जब कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल को सर्ब समरत्थ और सर्बज्ञ समझा तो जो कुछ कि स्वार्थ और परमार्थ के मुआमला में पेश आवे उसको उनकी मौज समझना चाहिये, और चाहे वह मन के मुवाफ़िक़ होवे या नहीं, उस मौज के साथ मुवाफ़िक़त करना चाहिये, यानी तकलीफ़ को धीरज के साथ बरदाश्त करना चाहिये और तरक्क़ी यानी सुख में परमार्थ से ग़ाफ़िल होना नहीं चाहिये॥

ख़ुलासा कुल्ल बचन का

१३०–जो कि यह बचन बहुत तूल यानी लंबा हो गया है इस वास्ते मुनासिब है कि इसका ख़ुलासा थोड़ी दफ़ों में लिख दिया जावे ताकि असली मतलब इस बचन का पढ़ने वालों की समझ में जल्द आजावे और थोड़ा बहुत याद रहे :–

(१) राधास्वामी मत सत्तमत है।

(२) राधास्वामी नाम कुल्ल और सच्चे मालिक का नाम है ।

(३) यह नाम किसी ने नहीं धरा इसकी धुन आप हर एक स्थान पर हो रही है यानी यह धुन्यात्मक नाम है, और इसको संत और साध जन और प्रेमी अभ्यासी सुनते हैं ।

(४) राधा नाम आदि धार का है, जो कुल्ल मालिक यानी स्वामी के चरन से निकली और स्वामी नाम शब्द का है, जिस में से धुन या धार निकली, और वही धुन या धार सुरत है, इस वास्ते राधास्वामी नाम के अर्थ सुरत शब्द के समझने चाहियें ।

(५) जब तक कोई इस नाम को मय इस भेद के अपने हिरदे में नहीं बसावेगा, तब तक उसको अभ्यास में मदद पूरी तौर से नहीं मिलेगी, और न धुर मुक़ाम तक का रास्ता निर्बिघन तै कर सकैगा ।

(६) आदि धार जो राधास्वामी दयाल कुल्ल मालिक के चरनों से निकली वही नूर और जान और शब्द की धार है, और उसी ने जगह २ ठहर कर और मंडल बांध कर सत्तलोक तक रचना करी, और फिर वहां से दो धारों ने यानी निरंजन और

जोत ने उतर कर ब्रह्मांड की रचना, और सहसदल कंवल से तीन धारों ने (जिनको सतोगुन रजोगुन और तमोगुन कहते हैं) उतर कर पिंड देश की रचना करी। खुलासा यह है कि कुल्ल रचना शब्द की धार ने करी है, और शब्द ही कुल्ल मालिक का प्रथम ज़हूरा यानी प्रकाश है, और सब जगह शब्द ही चेतन्य का निशान और ज़हूरा है।

(७) शब्द की धुन या धार का नाम सुरत है, और यह दोनों, यानी सुरत और शब्द कुल्ल रचना और उसकी काररवाई कर रहे हैं।

(८) इस लोक में भी कुल्ल काम शब्द (यानी बोलने वाला) और सुरत (यानी सुनने वाला) कर रहे हैं।

(९) जब बच्चा पैदा होता है और उसने शब्द किया, यानी रोया तो ज़िन्दा है, और जब तक आदमी बोलता है तो ज़िन्दा है नहीं तो मुर्दा है।

(१०) सुरत की धार उतर कर दोनों आंखों के मध्य में अंदर की तरफ़ छठे चक्र के अस्थान पर इस जिस्म यानी देह में ठहरी है, और वहीं से दो धार होकर दोनों आंखों में जाग्रित के वक्त बैठ कर इस लोक में मन और इन्द्रियों के वसीले से काररवाई करती है॥

(११) सुरत चेतन्य सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की अंश है, और मन निरंजन यानी कालपुर्ष या ब्रह्म की अंश है, और इन्द्रियां और देह माया की अंश हैं, यानी उसके मसाले से बनी हुई हैं ।

(१२) आंखों के अस्थान से सुरत की धार को घर की तरफ़ यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में बिरह और प्रेम अंग लेकर उलटाना चाहिये, तब सच्चा और पूरा उद्धार होगा, और इसी कार-रवाई का नाम सच्चा परमार्थ है ।

(१३) इसी उलटाने को सुरत शब्द का अभ्यास कहते हैं, और असली मतलब राधास्वामी मत का यही है, कि जीव यानी सुरत को जो सत्तपुर्ष राधा-स्वामी दयाल के चरनों से जुगान जुग से जुदा हो गई है, और यहां देह और मन और इन्द्रियों का संग करके दुख सुख भोग रही है, फिर उलटा कर उसके निज घर में जो महा प्रेम और महा आनन्द का आदि भंडार है, और जहां काल कलेश और माया का बीज भी नहीं है पहुंचाना, ताकि अमर अजर और महा सुखी हो जावे, और जनम मरन और देहियों के दुख सुख के कलेश से उसका हमेशा को बचाव हो जावे ॥

(१४) कुल्ल रचना के तीन दरजे हैं—पहिला निरमल चेतन्य देश, और इसी को संत देश और दयाल देश कहते हैं, यहां माया बिलकुल नहीं है, और इसी सबब से यह देश अमर और अजर है और महा सुख और परम आनन्द का भंडार है। दूसरा निरमल चेतन्य और शुद्ध माया देश—इसी दरजे के शुरू में माया का ज़हूर हुआ, लेकिन इस दरजे में वह निहायत लतीफ़ है इसको ब्रह्माण्ड कहते हैं। तीसरा निरमल चेतन्य और मलीन माया देश—यहां मलीनता ज़ियादा है, और यहां की रचना भी इस वास्ते अस्थूल है, इस दरजे को पिण्ड देश कहते हैं।

(१५) जिस वक्त पुतली आंखों की ज़रा चढ़ जाती है, आदमी फ़ौरन बेहोश हो जाता है, और जब ज्यादा खिंच जाती है तब मर जाता है, तो इससे ज़ाहिर है कि देही और मन और इन्द्रियों और संसार के बंधनों से छुटकारा इसी रास्ते से सुरत के उलटाने यानी चढ़ाने से मुमकिन है, यानी सच्ची मुक्ती और उद्धार इसी जुगत की कमाई से मुमकिन है और किसी तरह नहीं।

(१६) जिस कदर बाहरमुख करनी परमार्थ के नाम से और मतों में जारी है, वह असल में मुक्ती का साधन नहीं है, बल्कि सब भरम है।

साधन नहीं है, बल्कि सब भरम है ॥

(१७)और जो कोई साधन प्राणों के साथ या किसी और धार के साथ चढ़ाई का है, पहिले तो वह ऐसा कठिन है कि किसी से बन नहीं सकता, और जो किसी विरले जीव से बन भी गया, तो वह अभ्यासी माया के घेर से बाहर नहीं जावेगा, क्योंकि सिवाय शब्द की धार के और सब धारें जिस क़दर कि हैं, वे ब्रह्माण्ड से जारी हुई हैं, यानी जहां से कि माया का ज़हूर होकर माया और चेतन्य ने मिलकर रचना करी है, इस सबब से जो कोई इन धारों पर सवार होकर चलेगा, वह माया के घेर में रहेगा, और देह के बंधनों और जनम मरन से उसका छुटकारा नहीं होगा ।

(१८)माया सुरत चेतन्य की धार का खोल और ग़िलाफ़ हो रही है, यानी जिस क़दर माया में सूक्ष्म और अस्थूल वग़ैरह दरजे हैं उसी क़दर ग़िलाफ़ सुरत पर चढ़े हुए हैं, और यही ग़िलाफ़ या खोल देही कहलाते हैं, और इन्हीं ग़िलाफ़ों का सुरत के वियोग यानी जुदाई से बेकार हो जाने का नाम मौत है । इस वास्ते जब तक सुरत माया के देश में रहेगी तब तक ग़िलाफ़ में रहेगी, और इस सबब से जनम मरन उसका चाहे जल्दी होवे या देर से जारी

रहेगा। इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि जब तक सुरत संत देश अथवा दयाल देश यानी निर्मल चेतन्य देश में जहां माया बिलकुल नहीं है न पहुंचेगी, तब तक सच्चा और पूरा उद्धार न होगा।

(१९)यह उद्धार सिर्फ़ सतगुरु और शब्द भक्ती से हो सकता है, और किसी की भक्ती या दूसरे क़िस्म के अभ्यास से हासिल नहीं हो सकता है, और संत-मत के अभ्यासी को प्रेम और शौक़ के साथ करनी शुरू करना मुनासिब है, क्योंकि बग़ैर प्रेम और शौक़ के अभ्यास में आसानी नहीं होवेगी, और जैसा चाहिये रस भी नहीं आवेगा।

(२०)हर एक आदमी को चाहे औरत होवे या मर्द वास्ते अपने सच्चे और पूरे उद्धार के सुरत शब्द का अभ्यास करना ज़रूर और मुनासिब है, और इसी को सच्चा परमार्थ कहते हैं–बाक़ी जिस क़दर बाहर-मुख पूजा और अभ्यास है जिसका अंतर से सिल्-सिला नहीं लगा हुआ है वह भरम है, उस से जीव का सच्चा और पूरा कल्यान नहीं होगा–अलबत्ता शुभ करम का फल मिलेगा, यानी थोड़े अरसे के वास्ते सुख अस्थान मिल जावेगा, और जो अशुभ करम बनेगा उसकी एवज़ में दुख भोगना पड़ेगा।

(२१) करम का अस्थान आंखों का मुक़ाम है, यानी जब सुरत जाग्रित अवस्था में आंखों के अस्थान पर बैठती है, तब मन और इन्द्रियों से बाहरमुखी करतूत बनती है, और संत फ़रमाते हैं कि जैसे बने जीव को चाहिये कि भक्ती और अभ्यास करके आंखों के अस्थान से आहिस्ता २ सरकता जावे, यानी ऊपर और अंदर की तरफ़ चलना शुरू करे, तो जिस क़दर चाल चलेगी उसी क़दर करम थकता और घटता जावेगा, और रफ़्ता २ एक दिन यह जीव निःकर्म हो जावेगा।

(२२) संतों ने करम की दो क़िस्म करी हैं—एक जो इस जीव की ज़ात यानी आपे से तअ़ल्लुक़ रखता है, और दूसरा जिसका तअ़ल्लुक़ औरों के साथ व्योहार में है। पहिली क़िस्म यह है कि जिस करतूत करके यह जीव अपने मालिक के नज़दीक पहुंचता जावे वह असली यानी परमार्थी शुभ करम हैं, और जो करतूत कि इसको अपने मालिक के चरनों से दूर डाले, वही असली यानी परमार्थी अशुभ कर्म है। दूसरी क़िस्म यह है कि औरों के साथ मन बचन और करम करके इस तरह बर्ताव करे, कि जैसे यह जीव चाहता है कि और लोग इसके साथ बर्ताव करें—

यह ब्योहारी शुभ कर्म है, और इसके ख़िलाफ़ बर्ताव करना ब्योहारी अशुभ कर्म। परमार्थी जीवों को मुनासिब है कि ऊपर के क़ायदे के मुवाफ़िक़ अपने ज़ाती और ब्योहारी करम का दुरुस्ती से बर्ताव करें।

(२३) और मतों में बाहरमुखी करम का बहुत बिस्तार किया है– सबब इसका यह है कि सच्चे और कुल्ल मालिक की भक्ती की रीति और महिमा उन को मालूम नहीं हुई, और न सुरत शब्द अभ्यास की ख़बर हुई कि जिससे जीव बहुत जल्द करम के घेर से निकल कर अपने निज घर की तरफ़ जा सकता है, और जो करमों के बखेड़े में पड़ा रहा तो चाहे उस से ब्योहारी शुभ कर्म बने या अशुभ उसका हिसाब काल और माया के संग कभी बेबाक़ नहीं हो सकता है, और इस वास्ते जनम मरन और दुख सुख के फंदे से रिहाई मुमकिन नहीं है।

(२४) जिन मतों में कि सिर्फ़ बाहरमुखी पूजा या पोथियों का पढ़ना और पढ़ाना जारी है, और घट के भेद से बेख़बरी है, उनकी कुल्ल काररवाई ब्योहारी शुभ या अशुभ करम में दाख़िल है, उससे मुक्ती हासिल नहीं हो सकती।

(२५) और जिन मतों में थोड़ा अंतर अभ्यास जारी है, और वह वर्णात्मक नाम का सुमिरन या ध्यान किसी देवता या औतार या परमेश्वर का या मुद्रा का साधन है, और अस्थान उस अभ्यास का छः चक्र के अंदर है, और संतों के धाम का भेद मालूम नहीं है, तो भी वह सच्ची मुक्ती का साधन नहीं है—अलबत्ता सुख अस्थान कुछ काल के वास्ते मिलेगा, और फिर जनम मरन के चक्कर में आना पड़ेगा।

[२६] जो लोग कि ज्ञानी या बेदान्त या सूफ़ी कहलाते हैं, और अपने को ब्रह्म मानते हैं, पर कोई अभ्यास ब्रह्म पद में पहुंचने का नहीं करते, और न भेद से ब्रह्म पद और उसके रास्ते से वाक़िफ़ हैं, यह भी जनम मरन के चक्कर से नहीं बच सकते। ऐसा ज्ञान वाचक कहलाता है। बग़ैर मन और सुरत की चढ़ाई के [संतों के अभ्यास के मुवाफ़िक़] हालत नहीं बदल सक़्ती, और न ब्रह्म पद की प्राप्ती हो सकती है, क्योंकि प्राणायाम का अभ्यास ब सबब उसकी कठिनता के ख़ारिज है, और कोई दूसरे अभ्यास से यह मतलब हासिल नहीं हो सकता, और यह वाचक ज्ञानी और सूफ़ी अपनी विद्या और बुद्धी

के अहंकार में संतों का बचन नहीं मानते, इस सबब से ख़ाली रह गये।

[२७] नास्तिक और और मत जो विद्यावानों ने जारी किये हैं, इन में तो कोई परमार्थी बात नहीं है, सिर्फ़ पर उपकार का उपदेश है, और कुल्ल मालिक की मौजूदगी से इनकार है, फिर यह लोग क्या भक्ती और अभ्यास कर सकते हैं, इस वास्ते इनका उद्धार किसी तरह मुमकिन नहीं है।

[२८] रचना का हाल ग़ौर से नज़र करने से साफ़ ज़ाहिर होता है, कि कोई कुल्ल और सच्चा मालिक ज़रूर है, क्योंकि हर एक चीज़ से कारीगरी और मतलब और इरादा समरत्थ बनाने वाले का ज़ाहिर है, और यह जीव उसी कुल्ल मालिक समरत्थ दयाल की अंस है, यानी उसका और जीव का जौहर एक ही है, फिर जो लोग कि इस बात को नहीं मानते हैं, वे अपना भारी नुक़सान करते हैं, और अंत को बहुत पछतावेंगे।

[२९] जो लोग कि तीरथ बरत और मूरत मंदर और औतारों और देवताओं की पूजा में अटक रहे हैं, और घट के भेद और संतमत की जुक्ती से बे-ख़बर हैं, और न उसकी तलाश और खोज करते हैं,

उनका भी सच्चा उद्धार नहीं हो सकता, वे करम का फल अलबत्ता पावेंगे, पर सच्चे मालिक के दरबार में नहीं पहुंच सकते, बल्कि उस औतार और देवता के असल रूप का भी जैसा कि उसके लोक में है दर्शन नहीं मिलेगा, क्योंकि अपनी ज़िंदगी में असल का खोज नहीं किया, फिर मरने के बाद भी नक़ल का ही दर्शन पावेंगे, बशर्ते कि सच्ची लगन और किसी क़दर प्रतीत के साथ मूरत की पूजा करी होगी, और जो रसूमी परमार्थ के तौर पर काररवाई की है तो नक़ली रूप की भी प्राप्ती नहीं होगी।

[३०] सच्चे परमार्थी को चाहिये कि भेदी और अभ्यासी गुरू खोज कर, और उनकी थोड़ी पहिचान करके, सुरत शब्द मारग के अभ्यास में लग जावे, और जो संजम कि बताये गये हैं, उनके मुवाफ़िक़ काररवाई अपनी दुरुस्त करता जावे, तब जो कुछ कि बचन संतों ने कहे हैं, उनकी तसदीक़ अंतर में वह आप करता जावेगा, और कुल्ल मालिक की दया भी अपने अंतर में परखता जावेगा–इस तरह उसकी प्रीत और प्रतीत चरनों में दिन २ बढ़ती जावेगी, और एक दिन अपने मालिक के चरनों में पहुंच जावेगा॥

बचन १६

राधास्वामी दयाल के चरनों में जैसी तैसी प्रीत करना चाहिये तब सहज २ सच्चा उद्धार होता जावेगा और एक दिन काम पूरा बन जावेगा

१-इस दुनिया में जितने कारोबार हैं, और जहां तहां जिस २ का मेल और मुवाफ़िक़त है, वह शौक़ और प्रीत के सबब से जारी हैं, यानी जहां जिसकी प्रीत है, और जिस काम में जिसका शौक़ है, वहां काररवाई आसानी और दुरुस्ती के साथ जारी है, और जिस जगह या जिस काम में किसी को नामुवाफ़िक़त या नफ़रत है, वहां कुछ काररवाई नहीं हो सकती है और जो ज़बरदस्ती से कोई ऐसी जगह या ऐसे काम में कुछ काररवाई करावे, तो वह दुरुस्ती से और आराम और आसानी के साथ न होगी, बल्कि उसमें हुज्जत और तकरार होने का ख़ौफ़ रहेगा॥

२-जहां जिसकी सच्ची प्रीत या शौक़ है, वहां वह तन मन और धन से काररवाई करने को बहुत ख़ुशी के साथ तैयार होता है, और इन तीनों को

ख़र्च करके यानी काम में लाकर बहुत मगन होता है, और जिसके वास्ते ऐसी काररवाई करता है, वह भी अपने प्यार वाले की यह काररवाई देख कर बहुत ख़ुश होता है, और उलट कर उसकी भी इसी तरह ख़िदमत और सेवा करने को उमंग के साथ तैयार होता है, और आपस में मोहब्बत दिन २ बढ़ती जाती है ॥

३—जिस वक़्त जिस किसी का कोई प्यारा दूर से आने को होता है, तो चाहे जैसा बेवक़्त होवे, और चाहे उस वक़्त शिद्दत से सरदी या गरमी या बारिश होती होवे, पर वह शख़्स बग़ैर किसी ख़्याल और सोच के उसी वक़्त घर से चल कर रेल के स्टेशन पर या थोड़े फ़ासले पर पहिले से पहिले अपने दोस्त या प्यारे से मिलने को जाता है, और उस वक़्त उसकी सुरत और मन बहुत ताक़त के साथ तन को वहां पहुंचाते हैं, कि जिस से जिस क़दर जल्दी मुमकिन होवे अपने प्यारे का दीदार करे, और उस से मिल कर आनन्द पावे॥

और जब दोनों आपस में मिलते हैं, तब दोनों बहुत ख़ुश होते हैं, और उस ख़ुशी में सब तकलीफ़ या थकावट जो जागने या बारिश या गरमी और सरदी वग़ैरः के सबब से आयद हुई होवे, एक छिन में दूर हो जाती है ॥

४–इससे ज़ाहिर है कि सुरत और मन और इन्द्री सब मोहब्बत यानी प्रीत के बस हैं–जहां और जिस में प्रीत आ जाती है, वहां यह उमंग के साथ कार-रवाई करते हैं, और उस में किसी तरह का थकाव या तकलीफ़ नहीं होती ॥

५–इसी तरह जहां असली प्रीत नहीं है, पर धन या और किसी चीज़ या काम के लालच से शौक़ पैदा हुआ है, तो वहां भी मन और इन्द्री और तन बहुत तवज्जह और मिहनत के साथ काररवाई करके उस शख़्स को जिससे वह लालच का काम पूरा होने वाला है, राज़ी और खुश करके अपना मतलब निकालते हैं ॥

६–खुलासा यह है कि सुरत मन और इंद्री और तन प्रीत या कोई मतलब या किसी क़िस्म के मत-लब की आसा के आधीन हैं–जहां इन में से कोई बात होगी, वहीं वे शौक़ और उमंग के साथ कार-रवाई करने को तैयार होवेंगे ॥

७–और जहां कि प्रीत या कोई मतलब या उस के थोड़ी देर बाद पूरे होने की आस नहीं है, लेकिन खौफ़ किसी क़िस्म के नुक़सान या तकलीफ़ का है, या दबाव है, तो वहां भी हुक्म के मुवाफ़िक़ मन तन

और इन्द्रियां दुरुस्ती के साथ काम करते हैं, पर ऐसी काररवाई में वह खुशी और उमंग कि जो प्रीत और मतलब की जगह होती है, नहीं होती है, और न वैसा आराम और आसानी उस काम के करने में मालूम होती है ॥

८—लेकिन जिस जगह कि ख़ौफ़ अपने प्यारे की नाराज़गी या तकलीफ़ का है, या अपने आराम और आनन्द में ख़लल और बिघन पड़ने का है, तो ऐसे जगह मन और इन्द्रियां और तन वैसे ही उमंग और शौक़ के साथ काम देते हैं जैसे कि ख़ास प्रीत की जगह, और उस कारवाई में किसी तरह की तकलीफ़ नहीं मालूम होती है ॥

९—अब समझना चाहिये कि संत अथवा राधास्वामी मत में सिर्फ़ प्रेम के ऊपर ज़ोर दिया है, कि जितनी और जिस क़दर हो सके सच्चे मालिक और सच्चे गुरू के चरनों में प्रतीत के साथ प्रीत करना चाहिये, जो थोड़ी बहुत भी प्रीत होवेगी तो वक़्त सतसंग बाहर के मन और चित्त तवज्जह के साथ परमार्थी बचन सुनेंगे, और गुरु स्वरूप का मोहब्बत के साथ दर्शन करेंगे, और अंतर में अभ्यास के वक़्त मन और सुरत और इंद्रियां शब्द और स्वरूप में थोड़े बहुत उमंग के साथ लगेंगे,

और इस तरह जब संसार और उसके कारोबार की तरफ़ से थोड़ी बहुत अलहदगी होवेगी, और ख़ास तवज्जह परमार्थ की तरफ़ आवेगी, तो ज़रूर मन और सुरत अंतर के शब्द और स्वरूप में थोड़ी देर को लग जावेंगे, और एकाग्र होने में ज़रूर किसी क़दर रस और आनन्द आवेगा, और फिर रोज़मर्रा के अभ्यास और सतसंग से यही आनन्द और रस आहिस्ता २ बढ़ता जावेगा, और एक दिन जीव का काम पूरा बन जावेगा ॥

१०–और मालूम होवे कि प्रीत और प्रतीत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और गुरू या साध के चरनों में सतसंग में उनकी और उनके धाम की महिमा सुनकर आवेगी, और प्रेमी और भक्त जन की हालत सुन कर और देख कर और अंतर में थोड़ा बहुत अभ्यास करके वह प्रतीत और प्रीत दिन २ मज़बूत होवेगी और तरक़्क़ी करेगी ॥

११–इस प्रीत और प्रतीत के साथ थोड़ा ख़ौफ़ भी शामिल होना चाहिये, और उसकी दो क़िस्म हैं–पहिला यह है कि जो जीव से कुछ अभ्यास नहीं बन पड़ेगा या कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के

चरनों में सच्ची प्रीत और प्रतीत नहीं करेगा, तो जनम मरन के चक्कर से उसका बचाव नहीं होगा, और हमेशा देही धर कर उनके साथ दुख सुख भोगता रहेगा–और दूसरा यह कि जो जीव हुक्म के मुवाफ़िक़ कारखाई नहीं करेगा तो सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल उससे राज़ी नहीं होवेंगे, और उनकी अप्रसन्नता यानी नाराज़गी में जीव का निहायत दरजे का नुक़सान है, कि उसका रास्ता अंतर में अपने निज घर की तरफ़ चलने का बंद हो जावेगा, और फिर काल और करम और माया उस जीव को अपने घेर में रख कर दुख सुख देते रहेंगे, और उसका सच्चा और पूरा उद्धार न होने देवेंगे ॥

१२–जब इस तरह से थोड़ी बहुत प्रीत और प्रतीत जीव को कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उन के सतसंग और गुरू में आई, और दोनों या एक क़िस्म का ख़ौफ़ भी उसके दिल में सच्चा पैदा हुआ, तब उसका रास्ता आसानी से अंतर में तै होता जावेगा, यानी मन और सुरत अपने प्यारे गुरू और सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुंचने और दर्शन का बिलास और आनन्द हासिल करने के वास्ते सहज में पहिले पिंड में सिमट कर फिर ऊंचे देश यानी

ब्रह्माण्ड और उसके पार संत देश की तरफ़ शब्द की डोरी पकड़ के और स्वरूप के ध्यान का आसरा लेकर चढ़ना शुरू करेंगे, और प्रीत भाव और ख़ौफ़ के सबब से उनको ज़रा भी इस काम के करने में सुस्ती या आलस या तकलीफ़ नहीं सतावेगी, बल्कि अंतर में शब्द और स्वरूप का थोड़ा बहुत रस और आनन्द लेते हुए उमंग और शौक़ के साथ ऊपर की तरफ़ क़दम बढ़ावेंगे, और सतगुरु की मदद और राधास्वामी दयाल की मेहर से एक दिन धुर घर में जो कि अपने प्रीतम कुल्ल मालिक का महल है पहुंच कर परम आनन्द को प्राप्त होवेंगे ॥

१३–सब जीव निहायत दरजे के कमज़ोर हैं, और जिस जगह पिण्ड में सुरत बैठ कर कारवाई देह और दुनिया की कर रही है, उस जगह काम क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार और मन और दसों इन्द्रियों का बहुत भारी ज़ोर है–किसी की ताक़त नहीं है कि इनसे बच कर निज घर की तरफ़ को अपने बल से चल कर रास्ता तै करे, लेकिन राधास्वामी दयाल की मेहर और सतगुरु अथवा साध के संग से आहिस्ता २ जीव के अधिकार यानी शौक़ के मुवाफ़िक़ काम बन सकता है, और जो शौक़ कम

भी है, तो सतगुरु अपनी दया और मदद से उसको बढ़ा सकते हैं, और अभ्यासी के दिल में थोड़ा बहुत ख़ौफ़ भी पैदा कर सकते हैं, कि जिससे उसका शौक़ बढ़ता रहे, और ढीला और सुस्त न होवे ॥

१४–सब जीव अजान हैं, यानी अपने निज घर और अपने सच्चे माता और पिता कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के भेद से नावाक़िफ़ हैं, और न जुगत चलने की जानते हैं, सब करम और भरम में अटके हुए हैं, और बाहरमुख पूजाओं में अपना वक़्त और तन मन धन मुफ़्त ज़ाया कर रहे हैं, या विद्या पढ़ कर और बुद्धि और चतुराई बढ़ा कर अपने आपको ब्रह्म मान कर निचिंत हो जाते हैं, या कुल्ल मालिक की मौजूदगी और सुरत के चेतन्य और अमर होने से इनकार करके नास्तिक बन जाते हैं–इनको जब तक सतगुरु का संग न होगा, और यह उनका बचन प्रीत भाव से सुन कर असल हाल रचना और अपनी मौजूदा हालत से वाक़िफ़ न होंगे, और वास्ते बचाव दुख सुख और जनम मरन के सन्तों की जुगत चलने की सुरत शब्द मारग के मुवाफ़िक़ दरियाफ़्त करके अपने अन्तर में सतगुरु का बल और दया लेकर थोड़ा

बहुत रास्ता काटना शुरू न करेंगे, तब तक इनको सच्चे मालिक की प्रतीत और प्रीत नहीं आवेगी, और न अन्तर में कुछ रस और आनन्द प्राप्त होगा॥

१५–इस वास्ते ज़रूर है कि पहिले भेदी और अभ्यासी गुरू की तलाश करे, और जब वे मिल जावें, तो उनसे भेद रास्ते का लेकर अभ्यास शुरू करे और उनका और उनकी बानी का संग करके अपनी समझ बूझ बढ़ावे, और संसारी मत और समझ और बर्ताव को बदलता जावे, और उनके चरनों में सच्ची प्रीत और प्रतीत जिस क़दर हो सके करे, तब उनकी दया और मदद से इसका रास्ता तै होवेगा, और एक दिन अपने निज घर में पहुंच कर जनम मरन से रहित हो जावेगा, और नहीं तो बारम्बार संसार में ऊंचे नीचे देश और ऊंची नीची जोनों में जनम लेकर माया के भोगों में भरमता रहेगा, और अनेक तरह के कष्ट और क्लेश देह के संग भोगता रहेगा, और कभी इसका छुटकारा इस चक्कर से न होवेगा॥

१६–जो प्रीत कि सिवाय सच्चे मालिक के दर्शनों की प्राप्ती के और किसी मतलब या चाह लेकर लगाई जावेगी, वह परमार्थी हिसाब में स्वार्थ यानी कपट की भक्ती कहलाती है–ऐसी प्रीत से जीव का

कारज किसी तरह से नहीं बन सकता है, चाहे दुनिया का मतलब शायद किसी क़दर पूरा हो जावे, पर गुरू और राधास्वामी दयाल के चरनों में सच्चा प्रेम जो सफ़ाई करके सुरत और मन को उनके निज घर में पहुंचावे कभी हासिल नहीं होगा ॥

१७–इस वास्ते मुनासिब है कि चाहे थोड़ी प्रीत होवे पर सच्ची प्रीत वास्ते प्राप्ती दरशन सच्चे मालिक के अपने हिरदे में धारन करे, और सतगुरु और सतसंग और अन्तर अभ्यास की मदद से उसको आहिस्ता २ बढ़ाता जावे, तो एक दिन निज घर में पहुंच कर बासा पावेगा, यानी राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुंच कर परम आनन्द को प्राप्त होगा ॥

इसी प्रीत के आसरे मन और सुरत घर की तरफ़ आहिस्ता २ चलना शूरू करेंगे, और जिस क़दर रस मिलता जावेगा, उसी क़दर चाल उनकी बढ़ती जावेगी–इस वास्ते हर एक मर्द और औरत को मुनासिब और लाज़िम है, कि जैसे बने वैसे थोड़ी या बहुत प्रीत राधास्वामी दयाल और गुरू के चरनों में पैदा करके परमार्थ की कारवाई जारी करदें, और जनम मरन और देह धर के दुख सुख भोगने का ख़ौफ़ दिल में लाकर इस काम में सुस्ती और

ग़फ़लत न करें, नहीं तो अन्त को बहुत पछताना पड़ेगा, और फिर वह अफ़सोस कुछ फ़ायदा नहीं देगा, और अमोल नर देह जो बड़ी मुश्किल यानी चौरासी का चक्कर खाकर हाथ आई है, पशुओं के मुवाफ़िक़ खान पान यानी इन्द्रियों के भोग बिलास और उनके हासिल करने की मिहनत और मशक़्क़त में मुफ़्त बरबाद जावेगी ॥

बचन १७

हर शख़्स को अपने जीव चेतन्य के भंडार का खोज और पता लगा कर वहां पहुंचने का जतन करना चाहिये, कि जिस से परम आनन्द को प्राप्त होवे और जनम मरन और देह के दुख सुख से बचाव हो जावे ॥

१—इस रचना में दो पदार्थ हैं—एक चेतन्य और दूसरा जड़—चेतन्य वह है जो चेष्टा करता है, और जिस देह में वह बिराजमान होता है, उस देह की सम्हाल और उसके औज़ारों के (यानी इन्द्री वग़ैरह के) वसीले से इस लोक में काररवाई करता है, और बल्कि और देहियों की भी सम्हाल करता है ॥

और जड़ पदार्थ वह है, जो अपने आपसे किसी क़िस्म की चेष्टा और हरकत नहीं कर सकता है, और बिना मदद और सहारे चेतन्य के, उससे कोई काररवाई नहीं हो सकती है ॥

२—अब इस चेतन्य की कैफ़ियत और ताक़त समझना चाहिये, कि जिस जगह या जिस बीर्ज से कि इसकी प्रथम धार प्रघट होती है, वही धार उस बीर्ज के स्वरूप और कुल्ल देह को करता है, और जब से कि वह धार प्रघट हुई, उसी वक़्त से जिस क़दर शक्तियां यानी कूवतें और तत्त्व और गुन इस रचना में काररवाई कर रहे हैं, वे सब इस धार के बढ़ाव और उसकी देह के बनाव में (आपस में रलामेलकर) काररवाई जारी करती हैं, और वे शक्तियां और तत्त्व वग़ैरः यह हैं, (१) खैंच शक्ती (२) हटाव शक्ती (३) बनाव शक्ती (४) मिलाव शक्ती [५] मिक़नातीसी यानी चुम्बक शक्ती [६] सिंघार शक्ती [७] बिजली की शक्ती [८] रोशनी की शक्ती—और तीन गुन सतोगुन रजोगुन और तमोगुन—और पांच तत्त्व आकाश पवन अगिन जल और पृथवी ॥

३—देह जड़ है और पांच तत्त्व और तीन गुन की मिलौनी से बनी है, और सुरत चेतन्य की शक्ती से चेतन्य और काररवाई करती नज़र आती है ॥

४—सुरत चेतन्य की ताक़त किस क़दर भारी है, कि जब और जहां वह ज़हूर करे, वही सब शक्तियां और तत्त्व और गुन वग़ैरह हाज़िर होकर (बावजूद मुख़ालफ़त के) आपस में रल मिल कर काररवाई करती हैं, और जब सुरत किसी देह को छोड़ती है, उसी वक्त़ से रूप और रंग और ताक़त उस देह की जाती रहती है, और निहायत भयानक यानी ख़ौफ़नाक और डरावना रूप उस देह का हो जाता है, और कुल्ल कारखाई उस देह और उसके औज़ारों की बंद होकर वह देह जल्द गल कर मिट्टी के मुवाफ़िक़ हो जाती है ॥

५—सब जगह [मैदान यानी आकाश में और लोकों में] तमाम रचना सुरत के बल से हुई है, और क़ायम है, और आइन्दा को जारी रहेगी—यानी एक २ सुरत को जो महा चेतन्य की अंस है, हर एक जिस्म यानी लोक में [सूरज चांद तारागन] बैठ कर उस देह का बनाव और सम्हाल कर रही है, और जब वह सुरत उस देह को छोड़ती है, तब उसकी फ़ौरन परलय हो जाती है, यानी उसका अभाव हो जाता है ॥

६—जिस क़दर सूरज और चांद और तारागन नज़र आते हैं, यह सब एक २ देह हैं, और सुरत अंस इन में बैठ कर उनके रचना की सम्हाल और कारखाई करती रहती है—और जो २ तारे हर एक

सूरज और चांद के मुतअल्लिक़ हैं, उनके रचना की भी सम्हाल वही सूरज और चांद करते हैं ॥

७—इससे साबित हुआ कि जिस क़दर रचना हुई है सब सुरत की धार से प्रघट हुई है, और सुरत चेतन्य ही के आसरे क़ायम है, और उसी की ताक़त से सब काम दुनिया के जारी हैं ॥

८—जब इस सुरत की जो एक किरन के मुवाफ़िक़ है इस क़दर ताक़त और काररवाई है फिर उस भंडार या कुल्ल सूरज की, जहां से यह किरन आई है, ताक़त और समरत्यता का क्या अंदाज़ हो सकता है। वह भंडार कुल्ल रचना का करता, और कुल्ल का पालन करता, और कुल्ल की सम्हाल करने वाला और महा ताक़त वाला यानी सर्व समरत्थ है, वहीं से आदि धार या किरन प्रगट हुई, और नीचे उतर कर और मंडल बांध कर रचना करती चली आई, और पिंड में आंखों के मुक़ाम पर बैठ कर देह और दुनिया की कार-रवाई कर रही है, और दुख सुख और चिंता और ख़ौफ़ वग़ैरह इसी जगह जाग्रित अवस्था में व्यापते हैं ॥

९—जब आंखें मिच जाती हैं, या पुतली ज़रा खिंच जाती है, तब आदमी बेहोश और देह उसकी बेकार हो जाती है, और जब ज्यादा खिंचाव हो जाता है, तब सुरत देह को छोड़ जाती है ॥

१०—यह देश सुरत का नहीं है—यह सुरत अंस या किरन या धार उस सर्ब समरत्थ भंडार की है, जिसको संतों ने कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल कहा है, और जब तक यह उलट कर उसी धार को पकड़ के जिस के वसीले उतरी है, अपने भंडार में न जावेगी पूरन सुख और आनंद इसको नहीं मिलेगा, और न जनम मरन से छुटकारा होगा, क्योंकि जनम मरन देह यानी खोल का होता है, और खोल माया के मसाले यानी तत्त्वों और गुनों वग़ैरः का बना है, और जब तक सुरत माया के घेर में रहेगी ज़रूर उस पर खोल चढ़े रहेंगे, और जिस मंडल में सुरत प्रगट होगी उसी मंडल के मसाले के बने हुए खोल में उसका बर्ताव होगा, और जैसी वहां की रचना है उसके मुवाफ़िक़ दुख सुख भोगना पड़ेगा। और माया सत्तलोक यानी दयाल देश के नीचे से प्रगट हुई है, और उस में बहिसाब शुद्धता और मलीनता के बहुत से दरजे हैं, सो जब तक कि इन सब दरजों को तै करके, माया के घेर के बाहर दयाल देश यानी अपने निज भंडार में सुरत न जावेगी, तब तक निर्मल और सुखी न होवेगी ॥

११-इस वास्ते हर एक जीव को चाहे मर्द होवे या औरत लाज़िम और मुनासिब है कि जैसे बने तैसे संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ रास्ता घर जाने का तै करना शुरू करे, तब देह के बंधन और कष्ट और कलेश से सच्चा छुटकारा होगा, और इसी को सच्ची मुक्ती और पूरा उद्धार कहते हैं ॥

१२-और जो सुरतें यानी जीव मन और इंद्रियों के भोग बिलास की चाह उठा कर उन्हीं के हासिल करने के जतन में उमर भर लगे रहेंगे, तो उनकी चाल दिन २ माया के मंडल में नीचे की तरफ़ जारी रहेगी, और इस सबब से जल्दी २ जनम मरन और ज्यादा से ज्यादा तकलीफ़ उनको भोगनी पड़ेगी, और जड़ पदार्थ के साथ (क्योंकि सब भोग दुनिया के जड़ हैं) दिन २ उन सुरतों का मेल बढ़ता जावेगा, और अपने निज भंडार से दूरी होती जावेगी ॥

१३-इस दुनिया में सब जीव मन और इंद्रियों के भोगों से सुख हासिल करने की चाह में फंसे हुए हैं, और रात दिन इसी चाह के पूरा करने के लिये मिहनत कर रहे हैं, और हाल यह है कि यह सुख तुच्छ और नाशमान है, और बारम्बार उनकी प्राप्ती के लिये मिहनत करनी पड़ती है, और फिर एक बार देह छोड़ने के वक्त इन सब को छोड़ना पड़ेगा ॥

जब ऐसे ओछे और नाशमान सुखों के वास्ते जीव उमर भर पचते हैं, तो परम आनंद और अमर सुख के हासिल करने के लिये उनको किस क़दर तवज्जह और मिहनत करना मुनासिब और लाज़िम है—ख़ास कर जब कि इस काम के बनाने के वास्ते सिर्फ़ एक बार किसी क़दर मिहनत बहुत आराम और ख़ुशी के साथ करनी पड़ेगी, और फिर वह सुख और आनंद हमेशा क़ायम रहेगा ॥

१४—अब ग़ौर करना चाहिये कि जब इस दुनिया में दो बड़े पदार्थ, एक चेतन्य और दूसरा जड़ यानी माया है, और ऊंचे से ऊंचे देश में चेतन्य का भंडार हैं, और नीचे के देश में जड़ यानी माया का भंडार है, तो चेतन्य को जो जीव का निज आपा है, उसके भंडार में पहुंचाना वास्ते प्राप्ती परम आनंद के निहायत ज़रूर मालूम होता है, और जड़ पदार्थ यानी माया की तरफ़ से जिस क़दर जल्दी मुमकिन होवे हटना वास्ते बचने दुक्खों से उसी क़दर ज़रूर और मुनासिब है ॥

१५—इस वास्ते हर एक आदमी पर यह काम करना अपने आपे को सुख देने के निमित्त फ़र्ज़ है, यानी चेतन्य या सुरत की धार को पकड़ कर, एक समान

चेतन्य से बिशेष, और फिर उससे ज़्यादा बिशेष, औ
इसी तरह से दरजे बदरजे चढ़ कर महा बिशे
चेतन्य यानी निज भंडार में कि जिसके ऊपर औ
बिशेष नहीं है, और जो आप अपार और अनंत है
पहुंचना चाहिये ॥

१६–कुल्ल रचना में बसबब मिलौनी माया वे
चेतन्य में दरजे हैं, यानी जहां माया ज़्यादा है, वह
का चेतन्य किसी क़द्र उसके ग़िलाफ़ से ढका हुआ
है, यानी उसकी ताक़त और प्रकाश वहां कम है
और जिस दरजे में माया कम यानी सूक्षम है, वहां
चेतन्य का प्रकाश और ताक़त का ज़हूर ज़्यादा है
जैसे इस लोक का चेतन्य सूरज चेतन्य की धारों के
आधीन है, यानी जब तक कि सूरज की रोशनी
और गरमी इस लोक में न आवे तब तक यहां कुछ
रचना नहीं हो सकती, और न ठहर सकती है, इसी
तरह यह सूरज मय अपने तारागन के अपने से बड़े
सूरज का आधीन है, और उसके ऊपर इसी तरह
कई सूरज मण्डल हैं; आख़िरी महा सूरज या महा
मण्डल और कुल्ल का भण्डार और करता और रक्षक
सत्त पुर्ष राधास्वामी दयाल हैं, और जो कि सुरत
उसी महा सूरज की अंस है, इस वास्ते उसको अपने

कुल्ल माता पिता निज सूरज या भंडार में पहुंचना चाहिये, नहीं तो माया के घेर में रहेगी ॥

१७–जो धार कि निज सूरज से निकल कर नीचे के देश में उतर कर ठहरी है, वही सुरत और चेतन्य और जान और रूह और नूर और शब्द की धार है, और जिस जगह पिंड में उतर कर ठहरी है, वहां उसका नाम सुरत है ॥

इस सुरत को शब्द की धार के वसीले से चढ़ाकर उसके निज घर में पहुंचाने को सुरत शब्द योग कहते हैं, और वही भंडार यानी आदि शब्द कुल्ल का मालिक सत्त पुर्ष राधास्वामी दयाल हैं; ऐसी समझ धारन करके अभ्यास करना राधास्वामी मत का उपदेश है, और यही रचना भर में सच्चा और कुदरती मत और सहज अभ्यास है, और बाक़ी जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, और जिन में यह भेद और यह अभ्यास नहीं है, वे मन और बुद्धी के रचे हुए हैं, चाहे वे मन और बुद्धी ब्रहमाण्डी हैं या पिंडी, यानी जिसमानी, और उनसे जीवों का कारज दुरुस्त होना जैसा कि चाहिये मुमकिन नहीं है, और न उन में पूरी शान्ती हासिल हो सकती है ॥

१८–जिन्हों ने कि प्राणों के रोकने और चढ़ाने

का अभ्यास पिछले वक़्त में जारी किया, वह इस क़दर कठिन है, और उसके संजम ऐसे मुश्किल हैं, कि उसका किसी से दुरुस्ती के साथ बनना ख़ासकर इस ज़माने में नामुमकिन मालूम होता है, इस वास्ते वह अभ्यास ख़ारिज समझना चाहिये, और मुद्रा वग़ैरह के अभ्यास से भी माया के पार जाना मुमकिन नहीं है, इस वास्ते सुरत शब्द का अभ्यास जो कि संतों ने दया करके इस ज़माने में जारी फ़रमाया है, कुल्ल जीवों के वास्ते चाहे गृहस्त होवें या विरक्त, और पुर्ष होवें या इस्त्री सब के वास्ते मुफ़ीद है, और इसी के वसीले से सुरत धुर-पद में माया के पार पहुंच सकती है, और मुद्रा और प्राणायाम का अभ्यास सिर्फ़ विरक्तों ही के वास्ते था, और अब उनसे भी नहीं बन सकता, और वह अभ्यास माया के घेर के अंदर ख़तम हो जाता है, इस सबब से उस में जीव का पूरा उद्धार भी मुमकिन नहीं है ॥

अर्थ शब्द नम्बर २ सफ़ा ८६८ पोथी सार बचन छन्द बचन ४१

कड़ी १

सुन्नी सुरत शब्द बिन भटकी, अटकी मन संग दुखपाई १

अर्थ

जो सुरत कि सुन्न यानी चेतन्य मंडल की बासी थी शब्द की धार को छोड़ कर इस संसार में भटक गई और मन का संग करके दुख पाती है ॥

कड़ी २

भरमत फिरे चक्र की न्याई, उलट गई तन में छाई ॥२॥

अर्थ

और चक्र यानी चकई के मुवाफ़िक़ चंचल हो कर भरम रही है, और उलटी होकर देह में फैल गई ॥

कड़ी ३

बिष खावत जग में झख मारत,
समझ सोच धुर नहिं लाई ॥ ३ ॥

अर्थ

और भोगों में जो ज़हर से भरे हुए हैं बर्त्त कर जगत में टक्करें खाती है और अपने धुर मुक़ाम की समझ नहीं लाती है ॥

कड़ी ४

सोवत रही मोह अन्धियारी,
जागन चौंप नहीं पाई ॥ ४ ॥

अर्थ

और मोह के अंधकार यानी रात में बेहोश सो रही है, और जागने का इरादा नहीं करती ॥

कड़ी ५

इन्द्री के बस पड़ी बिकल होय,
काल कला घट में छाई ॥ ५ ॥

अर्थ

और इन्द्रियों के बस होकर हर वक़्त चंचल और बेकल हो रही है, और इस सबब से काल की कला यानी ज़ोर घट में ब्याप रहा है ॥

कड़ी ६

भोगन में अति कर लिपटानी,
रोग सोग दिन दिन खाई ॥ ६ ॥

अर्थ

और भोगों में लिपट कर दिन २ रोग और सोग सहती है ॥

कड़ी ७

बंधन बंधी जगत में गाढ़ी,
बाढ़ी ममता रस पाई ॥ ७ ॥

अर्थ

इस तरह जगत में बंधन इसके खूब मज़बूत हो गये, और थोड़ा २ रस पाकर हर एक चीज़ में पकड़ यानी मोह बढ़ गया ॥

कड़ी ८

जग व्योहार लगा अति प्यारा, धारा उलटी यहां आई॥८॥

अर्थ

और जगत में बर्ताव प्यारा लग कर जो धार कि सुरत की ऊपर को चढ़नी चाहिये थी, वह उलटी देह और संसार में बहने और बिखरने लगी ॥

कड़ी ९

बिना मेहर सतगुरु पूरे के, कस उलटे कस घर जाई॥ ८ ॥

अर्थ

जब ऐसा हाल हो गया तो अब बिना मेहर पूरे सतगुरु के मुख इसका ऊपर यानी निज घर की तरफ़ कैसे मोड़ा जावे ॥

कड़ी १०

सुखमन द्वार गगन का नाका,
कठिन हुआ नहिं सुध पाई ॥ १० ॥

अर्थ

और इसी सबब से आकाश का द्वारा जो कि पहिला सुखमन अस्थान है खुलना कठिन हो गया, बल्कि उसकी सुध भी भूल गई ॥

कड़ी ११

श्याम धाम से हुई न न्यारी, सेत पदम कस २ पाई ॥११॥

अर्थ

और श्याम अस्थान यानी काल के घेर से जुदा न हो सकी, फिर सेत धाम जो उसका निज अस्थान है कैसे पावे ॥

कड़ी १२

धुन की छांट होत नहिं भाई, कैसे सूरत धुन पाई १२

अर्थ

और इसी सबब से धुन की छांट भी नहीं हुई फिर निज धुन को कैसे प्राप्त होवे ॥

कड़ी १३

घट में बैठ निरख दृग द्वारा, यहां से राह अधर जाई ॥१३॥

अर्थ

अब चाहिये कि अपने घट में निश्चल होकर और नेत्रों के द्वारे को झांक कर अंदर को चले, यही सड़क ऊंचे और निज देश की है ॥

कड़ी १४

घाटा तोड़ काल मति मोड़ो, करम काट ऊंचे जाई ॥१४॥

अर्थ

पहिली घाटी को कि जिसकी हद्द त्रिकुटी तक है तोड़

कर और काल का मुख मोड़कर, और करमों को काटते हुए ऊंचे को चलना चाहिये ॥

कड़ी १५

राधास्वामी कहत सुनाई, समझ समझ पग धर भाई ॥१५॥

अर्थ

राधास्वामी दयाल फ़रमाते हैं कि इस रास्ते में निरख २ और परख २ क़दम रखना चाहिये ॥

बचन १८

मालिक का संसार में नर रूप धरकर औतार लेना जीवों के सच्चे उद्धार और कल्यान के वास्ते निहायत दरजे की दया और मेहर का निशान है

१—मालिक को अपने जीवों की तरक़्क़ी समझ बूझ और प्राप्ती विशेष सुख की हमेशा मंजूर नज़र है, इस वास्ते जब और जिस क़िस्म और दरजे के जीव संसार में पैदा होते हैं, उनके समझाने बुझाने और तरक़्क़ी देने के वास्ते कोई न कोई कला किसी ऊंचे दरजे से संसार में पैदा करके काररवाई परमार्थ और ब्योहार की जारी कराई जाती है, यानी दुनियावी मुआमलों में इल्म और हुनर और इख़लाक़ यानी

धर्म की नई २ रीत से तरक्की दी जाती है, और इसी तरह जब और जिस लियाकृत के जीव रचना में आते हैं, उनकी परमारथी काररवाई और ज्ञान ध्यान और भक्ती की तरक्की दरजे बदरजे की जाती है ॥

२—और जब प्रेमी और भक्तिवान जीव ऊंचे दरजे के पैदा होते हैं, और पुरानी काररवाई जीवों की मनमुखता के सबब से ढीली और उलट पलट हो जाती है, और जीवों के उद्धार का रास्ता भूल और भरम की ज़ियादती और भोगों की तरफ़ कसरत से झुकाव होने के सबब से किसी क़दर बंद हो जाता है, तब कुल्ल मालिक अति दया करके आप इस संसार में संत सतगुरु रूप धारन करके प्रगट होते हैं, और सच्चा और सहज रास्ता पूरे उद्धार का, जिससे कुल्ल जीव फ़ायदा उठा सकें, उपदेश करते हैं ॥

३—जो कोई ऐसा कहे कि क्या कुल्ल मालिक जो कि सर्व समरत्थ है, बग़ैर औतार रूप धरने की तकलीफ़ गवारा करने के हिदायत नहीं कर सकता, उसका जवाब यह है कि उस मालिक में सब ताक़त मौजूद है, और बिना नर रूप धारन करने के कई तरह से हर एक के अंदर में उपदेश कर सकता है, लेकिन जीवों को ऐसे उपदेश शुरू में; यानी जब तक

कि उनको किसी ऊंचे दरजे की समझ बूझ हासिल न होवे, और प्रीत और प्रतीत और शौक़ उनके दिल में गहरा पैदा न होवे, कुछ फ़ायदा नहीं हो सकता है, और न भूल और भरम क़तई दूर हो सकते हैं, और न मन और इंद्रियों के भोगों की तरफ़ से सच्चा और सहज बैराग हासिल हो सकता है, और न ऐसे उपदेश का जब तक कि उपदेशक नज़र न आवे, और उससे सवालात करके उस उपदेश का निरनय न किया जावे; यानी जब तक भरम और संशय दूर न होवें, पूरा २ यक़ीन हो सकता है ॥

४—जीवों की हालत ऐसी है कि अपनी २ अक़ल और समझ के मुवाफ़िक़ हर एक नई बात को खोज और निरनय करके समझना चाहता है, और जो जो भरम और संशय मन में धरे हुए हैं, उनका दूर होना चाहता है, और जब तक यह बात न होवे, उससे काररवाई किसी क़िस्म की दुरुस्ती से बन नहीं सकती, और ख़ास कर अंतर की कार-रवाई में तो ज़ाहिरी और अंतरी मदद दोनों की निहायत ज़रूरत है, और जब उपदेशक नज़र न आवे, तो अनेक तरह के भरम और ख़ौफ़ दिल में पैदा होकर काररवाई में बिघन डाल कर उसको चलने न देंगे ॥

५-तजुर्बा और इम्तिहान से मालूम हुआ है, कि बावजूद हासिल करने भेद के पूरे गुरू से, और मालूम होने बहुत से हालात और अंतर की कार-रवाई के, फिर भी अभ्यासी जीव अंतर के बचन और नई कैफ़ियत जब २ उनको सुनाई और नज़राई देवें, ज्यों का त्यों नहीं समझ सकते, और अक्सर बेजा संशय और भरम चित्त में उठा कर उसके फ़ायदे और बड़ाई का तमीज़ नहीं कर सकते, फिर जब कि उनको अंतर के हालात और मुक़ामात और कैफ़ियतों से बिल्कुल बेख़बरी होगी, तब किस तरह मालिक की दया की जो वह अंतर में किसी जीव पर करे, या कोई तमाशा कुदरत का दिखलावे, कैसे समझ और परख आ सकती है ॥

६-जीवों की ताक़त और लियाक़त इस लोक में इस क़िस्म की रक्खी गई है, कि वह दूसरे शख़्स की मदद से जो उनसे ज़्यादा ताक़त और लिया-क़त रखता होवे, आहिस्ता २ बारम्बार समझाने बुझाने और काररवाई का नमूना दिखलाने से बढ़ सकती है, और सिर्फ़ एक दफ़े के बचन का असर चाहे जैसा वह बचन ज़बर होवे क़ायम नहीं रह सकता, क्योंकि मन और इन्द्रियां जो कि काम करने

के औज़ार हैं, हर रोज़ किसी क़दर बदलते रहते हैं, और इसी सबब से भूल भी ज़्यादा है, इस वास्ते जब तक कि किसी काम का बराबर सीखना और अभ्यास करना जारी नहीं रहेगा, और कोई शख़्स बतौर उस्ताद या गुरू के उस काररवाई की निगरानी और ताकीद नहीं करेगा, तब तक मन और इन्द्रियां जिनका ख़वास आरामतलबी और भोगों में लिपट कर और उनका रस लेकर मगन और निहचिंत हो रहने का है, कभी ऐसे काम, कि जिन में इनको मिहनत और अपनी आदत से बिलक्षन यानी जुदी और नई काररवाई करनी पड़े, दुरुस्ती से अंजाम नहीं देंगे ॥

७–दुनिया में जितने काम हैं, कोई मनुष्य बल्कि जानवर भी बग़ैर सिखाये, और अपने हम जिन्सों को वह काम करते हुए देखे बग़ैर नहीं सीखते, और न दुरुस्ती से उसकी काररवाई करते हैं, यहां तक कि उठना बैठना चलना फिरना खाना पीना कपड़ा पहिरना खाना बनाना और इल्म और हुनर और कारीगरी और चालाकी और बहुत से और काम मामूली या ग़ैर मामूली बग़ैर सीखने और औरों को वह काम करते हुए देखने के नहीं आते, फिर

जब कि दुनिया के काम कि जिन में मन और इन्द्री अपने पिछले जनमों के स्वभाव के मुवाफ़िक़ आसानी से लग जाते हैं, बग़ैर सिखाने वाले और हम जिन्सों में बैठ कर उसकी काररवाई करने के नहीं सीखे जाते हैं, तब मनुष्य लोग परमार्थ की काररवाई जो कि कठिन है, और उसकी चाल भी उलटी है, किस तरह से अंतर में मालिक का बचन एक दफ़े सुन कर सीख सकते हैं, और उस बचन को कैसे ज्यों का त्यों समझ सकते हैं ॥

८—मालिक जब किसी को कोई बात बतावेगा, तो यही करेगा कि अंतर में उसको बचन सुनावेगा, या उसके मन में प्रेरना करेगा, पर दोनों हालत में बग़ैर बाहर की मदद के कोई काररवाई उस बचन या प्रेरना के मुवाफ़िक़ नहीं बन सकती है; या यह कि मालिक उसको अंतर में सच्चे सतसंग और पूरे गुरू के सन्मुख जाकर उपदेश लेने की हिदायत या प्रेरना करेगा, और जब वह यह बचन मानेगा तो उसका अभ्यास करके सच्चे उद्धार का रास्ता जारी हो जावेगा, और सतगुरु की मेहर से एक दिन पूरा काम बन जावेगा ॥

९-जीवों में बहुत दरजे हैं, और हर एक की समझ बूझ और लियाक़त अपने २ दरजे के मुवाफ़िक़ है-बाहर के बचन हर एक जीव अपनी २ लियाक़त और समझ के मुवाफ़िक़ समझते हैं, और सब की समझ एकसां नहीं होती, फिर अंतर का बचन जो निहायत सूक्ष्म होगा, कैसे सब जीव ज्यों का त्यों समझ सकते हैं। हर एक की समझ जुदी २ है, और हर एक के मन और इन्द्री की ताक़त भी मुवाफ़िक़ उनके बर्ताव और ब्योहार और स्वभाव यानी रहनी के जुदी २ है, फिर सब जीव एकसां नहीं हैं, और उनकी समझ और रहनी भी एकसां नहीं है, इस वास्ते वे अंतर या बाहर का बचन भी एकसां नहीं ग्रहन कर सकते हैं, और आपस में फ़र्क़ ज़रूर रहेगा, फिर मालिक अपने अंतरी बचन या प्रेरना से हर एक की सम्हाल जैसा कि चाहिये नहीं कर सकता, इस वास्ते सिखाने और समझाने वाले की मदद बाहर से हर एक जीव को ज़रूर दरकार है ॥

१०-और मालूम होवे कि अंतर का बचन सुन कर जीवों को कैसे यक़ीन हो सकता है, कि यह मालिक का बचन है, या उनकी अपने २ मन और ब्रह्म यह काम करते, या कोई और रूह मिसल भूत

या जिन्न के या कोई काल की कला अंतर में बोलती है; इस में अभ्यासियों को जिनके सिर पर गुरू मौजूद हैं भरम हो जाता है, फिर जिनको गुरू नहीं मिले वे कैसे भरम और संशय से इस मुआमले में बच कर किसी क़िस्म की काररवाई अंतरी बचन के मुवाफ़िक़ कर सकते हैं, या उसको जैसा कि चाहिये वैसा समझ सकते हैं ॥

११-अब मालूम होवे कि जिस क़दर काररवाई दुनिया या परमार्थ की है, वह बिदून मोहब्बत या प्रेम के दुरुस्ती से बन नहीं सकती, और मोहब्बत या प्रेम जीव को किसी में बग़ैर देखने या उसकी महिमा सुनने के आ नहीं सकता, और जो महिमा सुनकर भी प्रेम आवे तो वह बिदून देखने यानी दर्शन के और उस तरफ़ से थोड़ी बहुत मदद मिलने के बढ़ नहीं सकता, फिर मालिक के चरनों का प्रेम किसी के मन में पहिले तो महिमा सुन कर आवेगा, और फिर वह दर्शन और दया पाकर बढ़ेगा, इस वास्ते जो मालिक अंतर में किसी को बचन सुनावे या प्रेरना करे, तो वैसा प्रेम जो दर्शन पाकर और दया की परख करके आवेगा, पैदा नहीं हो सकता ॥

१२-जो करनी बताई जावे वह ऐसी कठिन है, कि बग़ैर मन और इन्द्रियों के रोकने के दुरुस्ती से बन नहीं सकती, और माया के पदार्थ और इन्द्रियों के भोग ऐसे ज़बर हैं कि उनसे बिदून बाहरी और अंतरी मदद के हटना और उनसे नफ़रत करना, जीवों की ताक़त से बाहर है; फिर किसी क़िस्म की करनी जीवों से दुरुस्ती से बन आना और दिन २ उस में तरक्क़ी करना किस क़दर मुशकिल है। इसी सबब से जितने उपाय और जतन कि पोथियों में लिखे हैं, सब कहने और सुनने की बातें रहीं, और करनी किसी से उनके मुवाफ़िक़ नहीं बनती, और इसी वजह से जीव का सच्चा उद्धार दुर्लभ हो गया ॥

१३-इस वास्ते ऐसी हालत और बे ताक़ती जीवों की देख कर, कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल आप संत सतगुरु रूप धार करके प्रगट हुए, और जीवों को अपने पुत्र की तरह प्यार करके चरनों में खींचा, और मेहर और दया से अपने चरनों की प्रीत उनके मन में बसाई, इस प्रीत का हिरदे में बसाना यही दया ख़ास है, क्योंकि प्रीत से जीव एक दूसरे से मिलते हैं, और प्रीत के सबब से एक दूसरे की तरफ़ खिंचता है, सो जिसके दिल में राधास्वामी दयाल के

चरनों में प्रीत पैदा हुई, वही उस प्रीत के सबब से भेद रास्ते का लेकर उनके चरनों की तरफ़ खिंचता है, और चौरासी के चक्कर और काल और माया के घेर से निकल कर मुक्ति पद को प्राप्त होता है ॥

१४–ज़ाहिर है कि जीवों की प्रीत अनेक पदार्थों और भोगों में और कुटुम्ब परिवार और बिरादरी में लग रही है, यानी उनका मन अनेक जगह बंध रहा है, सो उन सब से हट कर पहिले एक ज़ाहिरी स्वरूप में जब तक नहीं ठहरेगा, तब तक उसका सूक्ष्म और अति सूक्ष्म और अरूप में लगना मुश्किल और ना मुमकिन है। अब समझना चाहिये कि ऐसा चेतन्य और समरत्थ ज़ाहिरी स्वरूप जो कि जीवों के मन को सब तरफ़ से हटा कर अपने में लगावे कौन है–वह स्वरूप सच्चे और पूरे गुरू का ज़ाहिरी यानी देह रूप है, उन्हीं के दर्शन और बचन से कुल्ल मालिक के चरनों में प्रीत जागेगी और महिमा चित्त में समावेगी, और सच्चे अनुरागी जीवों को उनका ज़ाहिरी स्वरूप और बचन निहायत प्यारे लगेंगे, और जिस क़दर जीवों की प्रीत उन में बढ़ती जावेगी, उसी क़दर वह दुनिया से आहिस्ता २ न्यारे होते जावेंगे, और फिर वही

प्रीत गुरू के सूक्षम और अति सूक्षम और बिदेह रूप में लगती जावेगी, और ज़ाहिरी स्वरूप से किसी क़दर नज़र हटती जावेगी। इस तौर से अनुरागी जीव भेद रास्ते का और जुगत चलने की दरियाफ़ करके राधास्वामी दयाल के चरनों की तरफ़ दिन२ चलता जावेगा, और एक दिन धुर पद यानी राधास्वामी धाम में पहुंच कर कुल्ल मालिक के दर्शन पाकर सच्ची मुक्ति को प्राप्त होगा ॥

१५–बग़ैर ऊपर की तरकीब के मुवाफ़िक़ चलने के कोई जीव धुरपद में नहीं पहुंच सकता; क्योंकि चलना और चढ़ना बग़ैर प्रेम के नहीं बन सकता है, इस वास्ते पहिले गुरू के चरन में प्रीत लगाना ज़रूर है, और ऐसे चेतन्य पुर्ष और समरत्थ गुरू सिवाय मालिक के, या जिसको कि वह आप अपनी दया से इस दरजे पर पहुंचावें, दूसरा नहीं हो सकता; फिर ज़ाहिर है कि जब तक मालिक आप नर रूप धर कर संसार में न आवें, तब तक जीवों के सच्चे उद्धार की काररवाई जारी नहीं हो सकती ॥

१६–और मालूम होवे कि कुल्ल मालिक सिवाय गुरू स्वरूप के निज रूप से भी जीवों के उद्धार में मदद देता है, यानी जो जीव कि गुरू का सतसंग

करके निर्मल किये गये, यानी अन्तर में रास्ता तै कर के किसी ऊंचे दरजे पर पहुंचाये गये, वहां उनको ताक़त परखने कुल्ल मालिक की दया और मदद की हासिल होवेगी, और वहां से धुर मुक़ाम तक कुल्ल मालिक अपनी मेहर से उनको आप मदद देकर यानी गुरु स्वरूप में दर्शन देकर पहुंचावेगा ॥

१७—लेकिन जब तक कि जीव नीचे दरजे में माया और तमोगुण के घेर में पड़े हुए हैं, उनको कुल्ल मालिक की दया की धार नज़र नहीं आ सकती है, इस वास्ते पहिले उनकी सफ़ाई और किसी दरजे तक चढ़ाई बग़ैर गुरु स्वरूप के उपदेश और मदद के नहीं हो सकती है; यानी पहिले उनका भाव और प्यार गुरू के देह स्वरूप में लगाया जावेगा, और उस प्रीत के वसीले से उनके अस्थूल और सूक्ष्म बन्धन काटे जावेंगे तब अन्तर में वह दरजा हासिल होगा, कि जहां से कुल्ल मालिक के चरनों में सच्ची और गहरी प्रीत प्रघट होकर सुरत को निज धाम यानी राधास्वामी के चरनों में पहुंचावेगी ॥

१८—ऊपर के लिखे हुए से साफ़ ज़ाहिर है, कि मालिक का संसार में नर रूप धारन करके प्रघट होना, वास्ते उद्धार जीवों के यानी खींचने ऊपर की

तरफ़ को नीचे के दरजों में से निहायत ज़रूर है, क्योंकि उन नीचे दरजों से सुरत का उबार सिवाय कुल्ल मालिक के, जब वह आप सतगुरु रूप धारन करके संसार में प्रघट होवे, या उसकी ख़ास अंस के, जिसको वह अपनी ताक़त देकर संसार में भेजे, दूसरा कोई नहीं कर सकता ॥

१९—यह सतगुरु रूप जीवों को अपने चरनों में लगा कर और अपनी प्रीत उनके हिरदे में बसा कर दिन २ ऊपर की तरफ़ खींचता है। बिना सतगुरु के प्रेम प्रीत के कोई जीव नीचे का देश छोड़ कर ऊंचे देश में नहीं पहुंच सकता, और इस वास्ते कुल्ल मालिक का या उसके निज अंस का गुरु स्वरूप धारन करके संसार में आना निहायत ज़रूर है, और यही उसकी ख़ास दया जीवों के उबार के वास्ते है, कि उनको प्रेम प्रीत यानी भक्ती का दान देकर और सुरत शब्द अभ्यास की जिस क़दर मुनासिब और ज़रूरी है कमाई करा कर माया और काल और चौरासी के चक्कर से बचाकर निज धाम में पहुंचा कर अपने निज स्वरूप के दर्शन देता है, और जनम मरन की फांसी से अपनी मेहर और दया से छुड़ा लेता है ॥

२०—जो जीव कि ज्यादा नीचे दरजे में पड़े हैं, और मन और इन्द्रियों के भोग बिलास में अटक

रहे हैं, उनका उद्धार भी मंजूर है, लेकिन उनकी सफ़ाई बग़ैर उनके तन और मन को थोड़ा बहुत कष्ट देने के नहीं हो सकती, सो यह कष्ट और कलेश जो उनको वक्त मुनासिब पर दिया जाता है, शुरू दरजे की दया है। जैसे कि खिलाड़ी और नटखट लड़कों को बाप या उस्ताद ताड़ मार करके सम्हालता है, यानी उनका चाल चलन अपनी मरज़ी के मुवाफ़िक़ दुरुस्त कर लेता है, इसी तरह मालिक नीचे के दरजों के जीवों को तकलीफ़ और तंगी का दण्ड देकर निर्मल कर लेता है, तब वे लायक़ गुरू की सेवा और सतसङ्ग के होते हैं, और फिर गुरु स्वरूप की मेहर और मदद से यह ज़्यादा ऊंचे दरजे पर चढ़ाये जाते हैं, जहां से कि कुल्ल मालिक उनको अपनी अन्तरी मेहर व दया से अभ्यास कराके और प्रेम बढ़ा कर अपने महल में बुला लेता है—इसी का नाम सच्ची मुक्ती और सच्चा उद्धार है ॥

बचन १९

इतसे मोड़ और उतको जोड़, यानी संसार और माया के पदार्थों से चित्त को हटा कर राधास्वामी दयाल के चरनों में यानी स्वरूप और शब्द की धार में जोड़ना चाहिये ॥

१—जो कोई सच्चा कल्यान और उद्धार अपने जीव का चाहे, उसका यह काम सिर्फ़ संत अथवा राधास्वामी मत में शामिल होकर और सुरत शब्द के अभ्यास की कमाई करके पूरा २ बन सकता है, और किसी मत में जो दुनिया में जारी हैं, यह काम जैसा चाहिये दुरुस्त नहीं बन सकता ॥

२—कुल्ल मालिक का देश यानी सुरत का भंडार ऊंचे से ऊंचा है, और वहीं से आदि सुरत की धार निकली और उतर कर जगह २ ठहर कर और मंडल बांध कर रचना करती हुई पिण्ड में तीसरे तिल के मुक़ाम पर ठहरी है, और वहीं से पिण्ड की रचना की सम्हाल कर रही है, और दो धारें दोनों आंखों के तिल के मुक़ाम पर ठहर कर, देह और दुनिया की काररवाई करती हैं, और मुख उनका बाहर की तरफ़ और पिण्ड में नीचे की तरफ़ है ॥

३–जो धारें कि नीचे की तरफ़ पिण्ड में फैली हैं उनका बंधन देह के अङ्ग २ में हो रहा है, और जो कि बाहर की तरफ़ जारी है, वह अनेक प्रकार के भोगों और पदार्थों में और भी कुटुम्ब परिवार और बिरादरी वग़ैरह में बंध रही है–अपनी धारों की ज़ंजीरों से मन और सुरत संसार में बंध कर फंस गये हैं ॥

४–मन अनेक तरंगें भोग बिलास और संसार के मान बड़ाई की उठाता रहता है, और उनके पूरा करने के वास्ते अनेक तरह के जतन यानी करम करता है ॥

५–इस काररवाई में जो और जीवों को सुख पहुंचा तो उसका फल किसी क़दर सुख मिलता है, और जो जीवों को दुख पहुंचा तो उसकी एवज़ दुख भोगना पड़ता है; खुलासा यह कि करमों के चक्कर से जीव कभी बाहर नहीं होता, और ऊंच नीच देश और जोनों में सदा भरमता रहता है ॥

६–इस चक्कर से जो कि माया के घेर में हर वक़्त चल रहा है, कोई जीव बाहर नहीं जा सकता, क्योंकि देह की आसा और भोगों की इच्छा, उसको हमेशा नीचे के देशों में और करम अनुसार जोनों

में भरमाये रखती है, यानी उसके मन और सुरत का रुख़ और झुकाव अपनी चाहों के सबब से सदा नीचे और बाहर की तरफ़ माया के मण्डल में रहता है ॥

७—जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, उन सब में जो कुछ कि परमार्थी काररवाई अक्सर की जाती है वह सब बाहरमुखी है, और जो कुछ किसी मत में अंतरी अभ्यास जारी है, उसकी काररवाई छः चक्रों के अंतर गत यानी पिण्ड की हद्द के अन्दर में की जाती है, और कहीं २ पिण्ड के परे ब्रह्माण्ड के नीचे के दरजे तक उस काररवाई की रसाई बयान की है, पर वहां के अभ्यास का तरीक़ा, मिसल प्राण जोग वग़ैरह के ऐसा कठिन और ख़तरनाक है, कि किसी जीव से चाहे वह गृहस्त आश्रम छोड़ कर विरक्त भी हो जावे, वह अभ्यास दुरुस्ती से बनना निहायत मुश्किल बल्कि ना मुमकिन है ॥

८—इसी सबब से सब जीव बाहरमुखी परमार्थ में लग रहे हैं, और जो कि ऐसी काररवाई का सिलसिला सच्चे मालिक के देश या उसके चरनों की धार से अंतर में नहीं लगा हुआ है, इस वास्ते वह बाहरमुखी काररवाई सिर्फ़ शुभ करम का फल देती है,

और जनम मरन और दुख सुख से छूटना और सच्चे मालिक के चरनों में पहुंच कर अमर और परम आनन्द को प्राप्त होना मुमकिन नहीं है ॥

९—और जो कोई बिल्फ़र्ज़ थोड़ी बहुत अन्तरी काररवाई करके, पिंड के नाके तक या ब्रह्माण्ड के नीचे के दरजे में पहुंचे, वह बहुत काल को सुखी हो जावेगा, पर जनम मरन से बिलकुल रहित नहीं होवेगा। इस तरह सच्चा उद्धार किसी का न होगा, यानी सच्चे मालिक का दर्शन किसी को हासिल नहीं हो सकता, और न उसके देश की जो कि पिंड और ब्रह्माण्ड के परे है, और जहां माया बिल-कुल नहीं है, किसी को ख़बर मिल सकती है ॥

१०—ऐसी हालत जगत के जीवों की देख कर परम पुर्ष पूरन धनी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल संत सतगुरु रूप धार कर इस संसार में प्रघट हुए, और जीवों को अति दया करके सच्चे और पूरे उद्धार की सहज जुगत बताई, यानी सुरत शब्द मारग का उपदेश किया, जिसकी कमाई जो सच्चा शौक़ रखता होवे, चाहे मर्द होवे या औरत, जवान होवे या बूढ़ा, बिद्वान होवे या अनपढ़, आसानी के साथ कर सकता है, और रफ़ा २ एक दिन सच्चे और कुल्ल

मालिक के चरनों में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त हो सकता है ॥

११-इस अभ्यास का मतलब यह है, कि मन और सुरत की धार को, जो नीचे और बाहर की तरफ़ भोगों और माया के अनेक पदार्थों में बह रही है, इधर से हटा कर या मोड़ कर, ऊंचे की तरफ़ को अपने अंतर में चलाना चाहिये ॥

१२-कुल्ल मालिक का देश ऊंचे से ऊंचा है, और उसका भेद और रास्ता और अस्थानों का हाल संतों के उपदेश से मालूम होगा, यानी हर एक अस्थान का नाम और रूप और आवाज़ वग़ैरह का भेद संत बताते हैं, सो उस उपदेश के मुवाफ़िक़ स्वरूप और शब्द के आसरे, मन और सुरत को समेट कर निज घट में चढ़ाना चाहिये ॥

१३-कुल्ल काम दुनिया के प्रीत और शौक़ के साथ दुरुस्त बनते हैं, इसी तरह जिसके मन में सच्चे और कुल्ल मालिक और उसके देश की महिमा सुनकर प्रीत और शौक़ आया, वही अधिकारी संत मत के उपदेश का है, और उसी के मन और सुरत की धार आसानी के साथ अंतर में ऊपर की तरफ़ चढ़ेगी ॥

१४-दुनिया में जिसका जिससे विशेष प्यार और मोहब्बत है, वह एक दूसरे से चलकर मिलते हैं, इसी तरह जिसका प्यार चरनों में कुल्ल मालिक के आया, और भेद रास्ते और मंज़िलों का और जुगत चलने की उसको मालूम हुई, तब शौक़ और प्रेम के साथ, उसके मन और सुरत अपने प्रीतम सच्चे मालिक के दर्शन के वास्ते उसी रास्ते पर आहिस्ता २ चलना शुरू करेंगे, और जिस क़दर उनकी चाल चलेगी, उसी क़दर आनंद रास्ते में उनको मिलना शुरू हो जावेगा, यानी कुछ २ रोशनी या प्रकाश भी नज़र आता जावेगा, और आवाज़ भी रसीली सुनने में आवेगी, इस तरह शौक़ और प्यार दिन २ बढ़ता जावेगा, और उसके साथ चाल भी बढ़ती जावेगी ॥

१५-फिर जिस क़दर कि अंतर में कैफ़ियत नज़र आवेगी, और आनंद मिलेगा, उसी क़दर शौक़ मालिक के दर्शनों का बढ़ता जवेगा, और उसी क़दर मन और इन्द्रियां इस तरफ़ यानी दुनिया के भोग बिलासों की तरफ़ से हटती जावेंगी, और दुनिया और उसका सामान फीका लगता जावेगा, और दुनियादारों के संग से तबीअत में उदासीनता आती जावेगी-इसी का नाम इधर से मोड़ना और उधर को जोड़ना है ॥

१६–सच्चे शौक़ीन और दर्दी परमार्थी को इस अभ्यास के करने में ज़रा भी तकलीफ़ नहीं होती, बल्कि और रस और आनंद आता है, और कुल्ल मालिक की दया भी उसको अंतर और बाहर मालूम होने लगती है, तब प्रतीत यानी यक़ीन बढ़ेगा, और उसके साथ प्रेम प्रीत भी बढ़ेगी, और दिन २ तरक़्क़ी होती जावेगी, और इसी तरह एक दिन निज घर में जो कि अमर और अजर और प्रेम और आनन्द का महा भण्डार है पहुंचकर अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल का दर्शन पावेगा, और तब बिलास और आनन्द में मगन रहेगा; काल कष्ट और कलेश और जनम मरन वहां नहीं है, क्योंकि वहां माया का नाम निशान भी नहीं है ॥

१७–यह दुनिया और देह दुखसुख और मल मूत्र का भांड़ा है। यहां रह कर कोई परम आनंद को जो एक रस सदा क़ायम रहे प्राप्त नहीं हो सकता, इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि जो कोई दुक्खों से और जनम मरन की फांसी से बचना चाहे वह जिस क़दर जल्दी मकिन होवे उसी क़दर संत सतगुरु की दया और मेहर लेकर, इस पिण्ड और संसार से न्यारे होने का ज शुरू कर देवे, तो एक दिन कुल्ल

मालिक राधास्वामी दयाल की दया से पिण्ड और ब्रह्मांड के पार संत अथवा दयाल देश में पहुंच जावेगा ॥

१८–ज़ाहिर है कि जिस क़दर कारवाई स्वार्थ और परमार्थ यानी दुनिया और दीन की जो आदमी से बन रही है या बन सकती है, वह सब इसकी तवज्जह की धार के सबब से बनती है, और तवज्जह या चित्त की धार में मन और सुरत की धार शामिल है। अब जब तक कि आदमी की तवज्जह की धार बाहर की तरफ़ जड़ पदार्थों में जैसे इन्द्री भोग वग़ैरह में जारी रहेगी, तब तक समझना चाहिये कि चेतन्य धार का ख़र्चही ख़र्च है, और जड़ पदार्थों के साथ मेल और बंधन होता है, और इस वास्ते उनके भाव और अभाव में (जिस क़दर आशक्ती होगी) उसी क़दर सुख दुख ज़रूर भोगना पड़ेगा; जो तवज्जह दुखदाई पदार्थ की तरफ़ से हटा कर दूसरी तरफ़ जोड़ दी जावे, तो वह दुख बहुत हलका और कम हो जावेगा, और जो पूरी २ तवज्जह बदल दी जावे, तो वह दुख बिल्कुल मालूम नहीं पड़ेगा ॥

१९–राधास्वामी मत के अभ्यास की यही खूबी और बड़ाई है, कि इस में आदमी की तवज्जह

इसके सुरत चेतन्य के भण्डार की तरफ़ सहज में फेरने की तरकीब काम में लाई जाती है; वह चेतन्य भण्डार आनंद और सुख का घर है, सो जब तवज्जह उस तरफ़ को पूरी २ आती है, फ़ौरन थोड़ा बहुत सुख और आनंद प्राप्त होता है और दुख और चिन्ता बिसर जाती है ॥

२०–जो कोई चिन्ता और तकलीफ़ या रोग सोग की हालत में अपनी तवज्जह पूरी पूरी–१ बानी के पाठ के सुनने में, २ या मुक़ाम का ख्याल करके नाम के सुमिरन और स्वरूप के ध्यान में, ३ या शब्द की धुन में, ४ या संत और साध की ज़बानी चर्चा और बचन में लावे, तो उसी वक्त संतों के अभ्यास का असर अपने अन्तर में मालूम कर सकता है, यानी ज़रूर उसकी चिंता या तकलीफ़ या बीमारी या रंज किसी क़दर हलके और कम हो जावेंगे, और इस तरह पिछले करमों का भोग बहुत कम ब्यापेगा और जो अभ्यास जारी रहा, तो दिन २ पाप करम कटते जावेंगे, और कुछ अर्से में पूरी सफ़ाई हो जावेगी, और आइंदा को आनंद बढ़ता जावेगा, और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया व मेहर की परख आती जावेगी, और चरनों में प्रीत और प्रतीत और अभ्यास की लगन बढ़ती जावेगी ॥

२१–अब ग़ौर करना चाहिये कि सब जीव वास्ते प्राप्ती सुख और दूर होने दुक्खों के उमर भर रात दिन जतन करते रहते हैं, और जो सुख कि हासिल होता है वह तुच्छ और नाशमान है, और हर चंद कि यहां का दुख भी नाशमान है, पर बाज़े २ दुख ऐसे भारी हैं कि उमर भर तकलीफ़ देते हैं, फिर वास्ते प्राप्ती निर्मल और ठहराऊ सुख और आनंद के और दूर करने या जड़ से काट देने तकलीफ़ और दुक्खों के, किस क़दर तवज्जह हर एक शख़्स को चाहे मर्द होवे या औरत करना वाजिब और मुनासिब है, और इस काम के करने की जुगत सिर्फ़ राधास्वामी मत में जारी है, और वह इस क़दर सहज है कि जो थोड़ा भी सच्चा शौक़ होवे, तो वह दुरुस्ती से बन पड़ेगी, और वह शौक़ दिन २ बढ़ता जावेगा, और पूरी करनी कराकर एक दिन अभ्यासी को निज घर में पहुंचाकर निहचिंत कर देगा ॥

बचन २०

मन और सुरत का मुख अंतर में ऊपर की तरफ़ मोड़ने और आहिस्ता २ चढ़ाने में हमेशा सुख और आनन्द ज्यादा से ज्यादा मिलेगा और दुख और तकलीफ़ और चिन्ता दूर और कम होते जावेंगे इस वास्ते यह अभ्यास कुल्ल जीवों को चाहे औरत होवे या मर्द वास्ते अपने असली फ़ायदा के करना लाज़िम और मुनासिब है ॥

१–दुनिया में सब जीव वास्ते प्राप्ती सुख और आनन्द के रात दिन मिहनत और कोशिश करते हैं, और दुक्खों से बचने या उनको दूर करने के वास्ते भी बराबर तदबीर और जतन करते हैं, पर जो सुख कि यहां प्राप्त होते हैं वह सब मन और इन्द्रियों के विषय हैं, यानी मन और इंद्रियों को उन से स्वाद और रस मिलता है, और उसका असर बहुत थोड़ी देर तक ठहरता है, और फिर जाता रहता है, और जो दुख कि भारी हैं, जैसे सख़्त बीमारी और मौत उनके दूर करने का कोई जतन या तदबीर आदमी

के इख़्तियार में नहीं है, यानी वे लाइलाज हैं, और सब को चार नाचार सहने पड़ते हैं, बल्कि छोटे दुक्खों को भी कोई शख़्स पहिले उनके मुक़र्ररह वक़्त से हटा नहीं सकता और न कम कर सकता है ॥

२–सबब तुच्छ और नाशमान होने दुनिया के सुक्खों का यानी इंद्रियों के भोगों का यह है कि यह रस और स्वाद जड़ पदार्थों के संग से प्राप्त होते हैं, और जड़ पदार्थों में चेतन्य अंस बहुत कम है, और जो कि यह बात तहक़ीक़ और निर्णय हो चुकी है, कि जितने सुख और आनंद और रस और स्वाद हैं वह सब सुरत चेतन्य की धार के वसीले से जो इंद्रियों के घाट यानी द्वारे पर आकर ठहरती है, हासिल होते हैं, इस वास्ते जो धार कि इन्द्रियों के घाट से ऊंचे देश में जारी है, उससे सुरत और मन को मिलने से ज़रूर सुख और आनंद और रस निर्मल और ज़्यादा मालूम होवेगा, और उसी वक़्त में बग़ैर करने दूसरे जतन के तकलीफ़ चाहे किसी क़िस्म की होवे, यानी मान्सी या देह की कम मालूम पड़ेगी यानी किसी क़दर उसको इफ़ाक़ा हो जावेगा ॥

३–अब ग़ौर करना चाहिये कि जो कोई इस तरह का जतन बतावे कि जिससे सुरत और मन और

इन्द्रियों का रुख़ ऊंचे देश की तरफ़ को सहज में उलटता जावे और अंतर में स्वतंत्र यानी अपने इख़्तियार से जितनी देर चाहे ऊपर के दरजे का रस और आनंद ले सके तो उस जतन या जुगत को किस क़दर तवज्जह के साथ हर एक औरत और मर्द को सीखना और उसके मुवाफ़िक़ काररवाई करना लाज़िम और मुनासिब है, ख़ासकर जब कि वह जुगत ऐसी है कि विशेष रस और आनंद प्राप्त करावे और भी उसी वक़्त चिंता और तकलीफ़ को हटा देवे या कम कर देवे, यानी वह जतन दुहरे फ़ायदा का असर रखता है ॥

४-और वह जतन यह है कि मन और सुरत को तवज्जह के साथ ऊंचे देश में संतों के भेद के मुवा-फ़िक़ रूप में जोड़े और शब्द की धुन के साथ जो हर वक़्त घट २ में हो रही है लगावे, और उसी धार को पकड़कर ऊपर को चढ़ावे-इस जतन का नाम ध्यान और सुरत शब्द योग है, और परम पुर्ष राधा-स्वामी दयाल ने उसको इस क़दर सहज कर दिया है कि लड़का जवान बूढ़ा, औरत होवे या मर्द, गृहस्त होवे या बिरक्त पढ़ा लिखा होवे या अनपढ़, हर एक शख़्स आसानी और आराम के साथ बग़ैर किसी

खतरे के कर सकता है, और जल्द उसका असर और फ़ायदा अपने अंतर में देख सकता है॥

५-इसी जतन की काररवाई करके जीव दरजे ब दरजे अपने मन और सुरत को घट में चढ़ाकर माया के घेर से बाहर जा सकता है, और देहियों के बंधन और उनके लाज़िमी दुख सुख से सच्चा छुटकारा हासिल कर सकता है, और फिर वहां से आलम रूहानी यानी निर्मल चेतन्य देश में पहुंचकर अपने सच्चे माता पिता कुल्ल मालिक सत्त पुर्ष राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर अमर और अजर हो सकता है॥

६-यह जतन कोई जादू या मंत्र नहीं है, सिर्फ़ तवज्जह का दरजे बदरजे और आहिस्ता २ ऊंचे अस्थानों में जो कि घट २ में वक्त उतार सुरत के कुदरती रचे गये हैं, लगाने और जमाने का काम है। जिस क़दर जिसकी तवज्जह अंतरी रूप या शब्द में ठहरेगी, उसी क़दर उसको रस और आनन्द प्राप्त होगा, और दिन २ सफ़ाई होती जावेगी, और दुनियां का मैल और आलायश और नापाकी घटती जावेगी, यानी संसारी चाहें और इन्द्री भोगों की बासना कम होती जावेंगी, और रफ़्ता २ सुरत मन और इन्द्रियों का संग छोड़कर और विदेह होकर निर्मल चेतन्य यानी

दयाल देश में चढ़ जावेगी। इस मुक़ाम में पहुंचने पर सच्चा उद्धार और सच्ची मुक्ती हासिल होती है, यानी जनम मरन से सच्चा छुटकारा हो जाता है और अमर और परम आनंद की प्राप्ती होती है, क्योंकि वह देश रूहों का भंडार है, और महा विशेष और निर्मल चेतन्य वहां भर पूर है, और जो कि सुरत चेतन्य है और सत्त और अमर और अजर और महा आनंद स्वरूप है, फिर उस देश के अबिनाशी सुख और आनन्द का क्या अनुमान किया जावे, कि उसका अंदाज़ा बिलकुल अक़्ल और क़यास में नहीं आता है॥

७—ऊपर के लिखे हुए फ़ायदे की तसदीक़ और जांच अभ्यासी जीव अपनी इसी ज़िंदगी में कोई दिन के अभ्यास के बाद अच्छी तरह कर सकता है, और थोड़ा बहुत रस और आनंद अभ्यास शुरू करते ही मिलने लगता है, इससे ज्यादा क्या सबूत इस जतन और अभ्यास की बड़ाई का दरकार है। इस वक्त के जीवों पर निहायत दरजे की दया कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने फ़रमाई है कि ऐसा बढ़ के दरजे का अभ्यास इस क़दर सहज कर दिया है कि हर कोई उससे आसानी के साथ फ़ायदा उठा सकता है॥

८—अब जीवों को निहायत ग़ौर के साथ अपने

असली नफ़े और नुक़सान का बिचार करना ज़रूर है, कि जब कि वे इस दुनिया के तुच्छ और नाशमान सुख और आराम के लिये ऐसी मिहनत और मशक़्क़त कर रहे हैं, कि उमर भर इसी में खो देते हैं, तो फिर वास्ते प्राप्ती अमर और परम आनंद के किस क़दर तवज्जह और कोशिश उनको करना वाजिब है, कि जिससे बारम्बार जनम धरकर दुख सुख भोगने से हमेशा के वास्ते रिहाई हो जानी मुमकिन है ॥

९—जो कोई यह ख़्याल करे कि अभ्यासी को इस काम के करने में घर बार या रोज़गार छोड़ना पड़ेगा, सो इस बात की सन्त अवथा राधास्वामी मत में कुछ ज़रूरत नहीं है, इस मत में जिस क़दर त्याग है वह मन से है, बाहर से गृहस्ती और रोज़गार के छोड़ने की ज़रूरत नहीं पड़ती, यानी जब तक कि अभ्यासी को गहरा रस और आनंद अंतर में ऊंचे दरजे का हासिल न होवे, तब तक वह दुनिया की कुल्ल कार-रवाई मुख़्तसर तौर पर यानी संक्षेप करके बराबर किये जावेगा, और जब इस क़दर आनंद हासिल होगा कि फिर तवज्जह दूसरी तरफ़ को यानी दुनिया के काम में नहीं कर सकता, तब कुल्ल मालिक सत्त पुर्ष राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से

उस अभ्यासी के कारोबार का बन्दोबस्त आप कर देंगे, कि जिस में उसको और उसके कुटुम्बियों को किसी क़िस्म की तकलीफ़ न होगी ॥

१०–ऊपर लिखा गया है कि दुनिया में बाज़े दुख बहुत भारी और बाज़े रोग लाइलाज यानी असाध हैं, सो उन की तकलीफ़ भी सुरत शब्द के अभ्यास से बहुत कम और हलकी हो जावेगी, यानी जिस क़दर कि अभ्यासी को ताक़त चढ़ाने मन और सुरत की आंख के मुक़ाम से ऊंचे की तरफ़ दिमाग़ में अभ्यास के वसीले से हासिल होगी, उसी क़दर चिन्ता और फ़िकर और दुख और तकलीफ़ मन और देह की उसको कम व्यापेगी ॥

११–देखने में आता है कि तवज्जह के रुख़ बदलने से यानी चित्त के एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ मुख मोड़ने से, आदमी की हालत फ़ौरन बदल सक्ती है–जैसे कोई आदमी किसी फ़िकर और चिन्ता में बैठा हुआ है, और उस वक़्त उससे कोई अचरजी ख़बर या बात कोई शख़्स आकर कहे, तो जितनी देर उस बात का ज़िकर और निर्णय वग़ैरह होता रहेगा, और उसकी तवज्जह उस तरफ़ लगी रहेगी, तब तक वह चिन्ता या फ़िकर उसको नहीं सतावेगा–ऐसे ही अगर किसी

अंग में बदन के किसी क़िस्म की तकलीफ़ है, और उस वक्त बीमार की तवज्जह किसी ख़ास काम या बात की तरफ़ लगा दी जावे, तो उसको वह तकलीफ़ जब तक कि तवज्जह बटी रहेगी बहुत कम मालूम होगी॥

१२–अब मालूम होवे कि राधास्वामी मत में अभ्यास मन और सुरत की धार या मुख को, घट में ऊंचे की तरफ़ मोड़ने का कराया जाता है, और वह ऊंचे का देश दरजे ब दरजे विशेष सुख और आनंद का भंडार है, और जीव की बैठक से नीचे के देश में और बाहर की तरफ़ उस क़दर सुख और आनंद नहीं है, यानी दरजे ब दरजे कम होता गया है, और दुख और तकलीफ़ का मसाला और सामान उस नीचे के देश में बढ़ता गया है, फिर जिस किसी को कि अभ्यास के बल से ताक़त सुरत और मन के मुख मोड़ने और चढ़ाने की हासिल है, वह जब चाहे अपने इख़्तियार से ऊंचे देश में चढ़ कर विशेष आनंद ले सकता है, और दुख और तकलीफ़ के मुक़ाम से हट सकता है॥

१३–अब समझना चाहिये कि यह बात किस क़दर भारी फ़ायदे की है, कि एक ही काम करने से एकही

वक़्त में दुख और तकलीफ़ और चिन्ता और फ़िकर घट जावे या बिल्कुल हट जावे, और सुख और आनंद उसी वक़्त ज़्यादा से ज़्यादा मिलता जावे ॥

१४–ऐसी जुगत हर एक को चाहे औरत होवे या मर्द इस दुनिया में जानना बहुत ज़रूर और मुनासिब मालूम होता है, क्योंकि इस देश में दुख और सुख दोनों का चक्कर चल रहा है, और जीव उनके भोगने में लाचार हैं, फिर जिन जीवों को संतों की जुगत सुरत शब्द जोग की मालूम है, और वह उसका नित्त अभ्यास करते रहते हैं, और जिन्हों ने घट का भेद और सच्चे मालिक का पता और निशान राधास्वामी मत का उपदेश लेकर मालूम कर लिया है, और उस सच्चे मालिक की सच्ची सरन हिरदे से दृढ़ कर ले ली है, उनको किस क़दर आसानी के साथ मदद हर वक़्त अपने घट में कुल्ल मालिक की दया से मिल सकती है, और सुख दुख की हालत में किस क़दर शान्ती और ताक़त अपने अंतर में जब चाहें जब हासिल कर सकते हैं ॥

१५–जब कोई सख़्त तकलीफ़ या चिन्ता पैदा होती है, उस वक़्त कोई जीव किसी की मदद नहीं कर सकता, और न धन और सम्पति और न हकूमत कुछ काम

दे सकती है। ऐसे कष्ट के समय में सिर्फ़ सच्चा मालिक ही अपनी दया से कष्ट निवारन कर सकता है, सो उस कुल्ल मालिक का पता और भेद और निशान किसी मत में खोल कर नहीं बयान किया है, कि जिसको समझ कर जीव दुख की हालत में उस मालिक के चरनों में इस तौर से बिनती और प्रार्थना करे कि जिसकी ख़बर चरनों तक पहुंच सके, और वहां से दया आवे, और उससे थोड़ी बहुत शान्ती उस वक्त हासिल होवे॥

१६–यह भेद सिर्फ़ राधास्वामी मत में खोल कर समझाया जाता है, बल्कि जीव का इसके पिंड में बैठक के स्थान से कुल्ल मालिक के चरनों तक सूत लगा दिया जाता है, और कुल्ल मालिक के धाम का निशाना और वहां तक अपने मन और सुरत के पहुंचाने की जुगत बतला दी जाती है, कि जिससे जब यह चाहे उसी वक्त अपने मन और सुरत की धार को चरनों से जोड़ सकता है, बल्कि निजधाम तक कुछ रसाई हासिल कर सकता है, और इस काररवाई का उसी वक्त फ़ायदा मालूम कर सकता है, यानी किसी क़दर ताक़त और शान्ती और सरूर और आनंद को प्राप्त हो सकता है; यह किस क़दर भारी

फ़ायदा है, कि किसी को दुनिया भर में, सिवाय सच्चे और प्रेमी परमारथी के, जो कि राधास्वामी मत के भेद और अभ्यास से वाक़िफ़ है, और चरन सरन दृढ़ करके उसकी कमाई कर रहा है, हासिल नहीं है ॥

१७—अब इस बात को समझकर जीवों को इख़्तियार है, कि अपने हाल और आइंदा के फ़ायदे के वास्ते चाहे राधास्वामी मत के उपदेश को अंगीकार करें या नहीं। यह काम जब्र या ज़बरदस्ती या झूठे लालच और आसा से हासिल नहीं हो सकता, लेकिन जो कोई कि सच्चा परमारथी है, यानी जिसके मन में सच्चे मालिक के चरनों में सच्ची प्रीत और प्रतीत है, चाहे वह थोड़ी होवे, वह इस अभ्यास को आहिस्ता २ करके उससे ऊपर का लिखा हुआ फ़ायदा उठा सकेगा, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया को अपने हर कामों में अंतर और बाहर और परमार्थ और स्वार्थ में दिन २ परखता जावेगा, और तब अपने भागों को सराह कर राधास्वामी दयाल के चरनों में सच्चा शुकराना अदा करके दिन २ प्रीत और प्रतीत बढ़ाता जावेगा, और एक दिन निज धाम में पहुंच कर दुख सुख यानी माया के देश से न्यारा होकर, हमेशा के वास्ते परम आनंद को प्राप्त होगा॥

बचन २१

वर्णन रोशन और अंधेरी किरनियों का जो कि पिंड और ब्रह्माण्ड की रचना में चेतन्य और जड़ की प्रघट अंस हैं और उपदेश वास्ते पहुंचने निर्मल चेतन्य यानी हमेशा नूरानी देश में जहां अंधेरा यानी काल और माया बिलकुल नहीं है ॥

१-इस रचना में दो पदार्थ हैं, एक चेतन्य और दूसरा जड़-चेतन्य का ज़हूरा रोशन किरनियां हैं, जड़ का अंधेरी किरनियां ॥

२-जो कि यहां की रचना अस्थूल है, और जड़ चेतन्य की मिलौनी से हुई है, इस वास्ते यहां रोशनी और अंधेरा दोनों मिलकर कारखाई कर रहे हैं, यानी कभी रोशनी होती है और कभी अंधेरा हो जाता है ॥

३-अंधेरा काल स्वरूप है, और इस में हमेशा भूल और भरम पैदा होते हैं, इसी सबब से यहां परमार्थ की निस्बत जो कि रोशनी रूप है भूल और भरम का बहुत गलबा रहता है, यानी परमार्थी बात जल्दी भूल जाती है, और परमार्थी कारखाई में अनेक तरह के संसय और भरम पैदा होते हैं कि जिसके सबब

से कोई जीव सच्चे मालिक की पहिचान या उसके चरनों में पहुंचने का जतन दुरुस्ती के साथ नहीं कर सकता है ॥

४-जिस किसी को भाग से संत सतगुरु का सत-संग मिल जावे, तो उसके सब संसय और भरम दूर होकर सच्चे मालिक के चरनों में सच्ची प्रीत और प्रतीत पैदा होकर दिन २ बढ़ सकती है, और वही प्रीत और प्रतीत एक दिन उस अभ्यासी को परम आनंद देश में सच्चे मालिक के सन्मुख पहुंचाकर, हमेशा को जनम मरन से रहित कर देगी ॥

५-इस वास्ते हर एक आदमी को औरत होवे या मर्द, चाहिये कि अंधेरे और उजेले की मिलौनी के अस्थान से जहां कि भूल और भरम की कसरत है हटकर जिस क़दर जल्द मुमकिन होवे, निज्ज रोशनी यानी महा विशेष चेतन्य के धाम में पहुंचने का जतन शौक़ और प्रेम के साथ अपने घट में करे, और जो ऐसा नहीं करेगा, तो वह हमेशा के वास्ते अंधेरे के मुक़ाम में जहां रोशनी यानी चेतन्य की धार बहुत कम है पड़ा रहेगा, और नीच ऊंच जोनों में जनम मरन का कष्ट सहता रहेगा, और दिन २ ज्यादा अंधेरे के देश में उसका उतार होता जावेगा, और अज्ञान यानी नादानी और कष्ट और कलेश बढ़ते जावेंगे ॥

६-इस अंधेरे के देश को छोड़कर ऊपर की तरफ़ यानी नूरानी देश में जाने के वास्ते सिर्फ़ एकही सच्चा और सहज और कुदरती जतन मुक़र्रर है, और वह यह है कि रोशनी की धार को जो कि चेतन्य की धार है, पकड़ कर ऊंचे देश की तरफ़ चलना शुरू करे, वह रोशनी और चेतन्य की धार शब्द और रूह यानी जान और अमृत की धार है, सो धुन की डोर पकड़ कर जहां से कि शब्द या नूर या जान की धार आती है, उलट कर अपने घट में चलना और चढ़ना चाहिये ॥

७-जो कोई कहे कि हम रोशनी की धार को पकड़ के स्वरूप के आसरे निर्मल चेतन्य देश में पहुंच जावेंगे, यह बात मुमकिन नहीं है; इस तरकीब के साथ सिर्फ़ एक दर्जा तै होवेगा, लेकिन जब भारी रोशनी नज़र आवेगी, तब उसके मंडल से गुज़रना मुशकिल या नामुमकिन हो जावेगा, और रोशनी में बहुत दरजे हैं, यानी माया के घेर में (जिसमें पिंड और ब्रह्माण्ड शामिल हैं) बसबब मिलौनी माया के कमी बेशी होती चली गई है, सो इन दरजों का तै करके निर्मल चेतन्य देश यानी हमेशा के नूरानी अस्थान में पहुंचना, जहां अंधेरी किरनें और माया का गुबार बिलकुल नहीं है, बग़ैर भेद रास्ता और अस्थानों के स्वरूप के और मदद शब्द के अभ्यास के नामुमकिन है ॥

८–निर्मल चेतन्य देश हमेशा नूरानी है, वहां स्याही यानी अंधेरा अथवा काल और माया का गुबार बिलकुल नहीं है, वह नूर और रोशनी सेत रंग है, उस सेत का बर्णन कुछ नहीं हो सकता है, और न इस लफ़्ज़ के कहने से किसी की समझ में उस सेत की कैफ़ियत आ सकती है ॥

९–महा निर्मल चेतन्य देश में रंग रूप और रेखा नहीं है, सिर्फ़ नूरही नूर है और सत्तलोक से नीचे के देश में नूर थोड़ी बहुत स्याही यानी अंधेरी किरनों से मिला हुआ है ॥

१०–जितने रंग हैं सब ब्रह्माण्ड और पिंड देश यानी दूसरे और तीसरे दरजे में रचना के हैं, और यह चेतन्य और माया यानी नूरानी और अंधेरी किरनों की मिलौनी से ज़ाहिर हुए–पहिले लाल रंग और फिर पीला रंग और फिर नीला यानी श्याम रंग और यही रंग तीनों गुन सतोगुन रजोगुन और तमो गुन के हैं, और बाक़ी के रंग इन तीनों की कमी और बेशी और मिलौनी से ज़ाहिर हुए। इस देश में जो सेत रंग है, वह किसी क़दर निर्मल है, पर थोड़ीसी श्याम किरनियां उसमें भी मिली हुई हैं, और सब रंग इसी से प्रघट हुए ॥

११-रोशनी यानी नूर का इस क़दर तेज है, कि इसके आसरे चलना और चढ़ना मुशकिल है, और अजान अभ्यासी को इसके दरजे और कैफ़ियत की पहिचान करना भी मुमकिन नहीं है, लेकिन शब्द की धार को पकड़ के सहज २ अभ्यासी चल सकता है और रोशनी के मैदानों और अस्थानों को पार कर सकता है ॥

१२-अब ख्याल करो कि अंधेरा यानी श्याम रंग और श्याम किरनें काल और माया का ज़हूरा हैं, सो जहां तक कि अभ्यासी को अंधेरा और उजाला मिले, या जहां तक कि श्याम रंग या अंधेरा थोड़ा या बहुत नज़र आवे, वहां न ठहरे, और अपना अभ्यास जारी रखकर ऊंचे देश की तरफ़ अपनी चाल शब्द और स्वरूप के आसरे जारी रखे-यह स्वरूप हर एक अस्थान पर, वक्त उतार सुरत के कुदरती रचा गया है, और जब तक कि उस मंडल की रचना क़ायम है बराबर क़ायम रहेगा ॥

१३-पिंड देश यानी तीसरे दरजे में परलय के वक्त रचना का अभाव यानी सिमटाव हो जाता है और महापरलय का असर जो कभी २ होती है, ब्रह्माण्ड तक पहुंचता है। महा सुन्न के परे किसी क़िस्म की परलय का असर नहीं पहुंचता, यानी उसके ऊपर

जो कुछ कि रचना है, वह अव्वल दरजे यानी निर्मल चेतन्य देश में शामिल है, और सदा एक रस क़ायम रहती है, और वही देश संतों का है, जहां काल कलेश और जनम मरन नहीं है ॥

१४–अंधेरे का ख़वास है कि वह नूरानी किरनों को निगल जाता है, इसी तरह काला कपड़ा या कम्मल रोशनी या बिजली की धार को खींचता है यानी अपने में जल्द जज़्ब कर लेता है या समा लेता है ॥

१५–सुरत चेतन्य नूरानी है और काल अंधेरा रूप है, इस वास्ते अपनी हद्द में यह हमेशा उसको निगलता उगलता रहता है, अपना रूप उसको नहीं बना सकता, यानी सुरत का और अंधेरे या काल का जौहर एक नहीं है, और न यह दोनों आपस में तदरूप होकर मिल सकते हैं, पर अंधेरा सुरत को अपने पेट में धर लेता है, इसी सबब से रचना के तीसरे दरजे में जहां काल और माया का बहुत ज़ोर है, जनम मरन जल्द होता है, और जीवों को दुख और कलेश भी ज़ियादा है, क्योंकि अमृत रूपी नूरानी किरनें यहां बहुत कम हैं, और अंधेरी यानी ज़हरी श्याम.ियां बहुत हैं, और यह हमेशा नूरानी किरनियों रंग इसी से यानी ग़िलाफ़ हो जाती हैं ॥

१६–सिंघार शक्ती काल का ख़वास है, यानी हर एक चीज़ की सूरत को बदल देना या बिगाड़ देना, और स्वरूप उसका भयानक है। असल में सुरत को काल कुछ नुक़सान नहीं पहुंचा सकता, पर उसके ख़ोल यानी देह को खा जाता है, क्योंकि वह उसी मसाले का बना हुआ है, इस सबब से सुरत हमेशा काल से डरती रहती है, और यह आम बात है कि अंधेरे में सब को डर लगता है, इस सबब से जब तक कि सुरत अंधेरे के अस्थान से यानी काल की हद्द से बाहर न होगी और संतों के हमेशा के नूरानी देश में नहीं पहुंचेगी, तब तक काल से निरभय नहीं होगी, यानी जनम मरन का ख़ौफ़ काल की हद्द में बराबर लगा रहेगा ॥

१७–संतों ने और ख़ासकर परम पुर्ष राधास्वामी दयाल ने मुफ़स्सिल भेद काल और दयाल का मय उसकी हद्द के बयान किया है; काल की हद्द में जितने अस्थान हैं, वे सब परलय या महा परलय के समय ज़रूर सिमट जावेंगे, यानी उनकी रचना का अभाव हो जावेगा; इस वास्ते लाज़िम हुआ कि काल की हद्द के पार ज़रूर जैसे बने तैसे हर एक जीव को जाना चाहिये नहीं तो जनम मरन नहीं छूटेगा, और नीचे

के देश में सुरत सरगरदां और परेशान भरमंती रहेगी, और कहीं बिश्राम या सच्चा चैन नहीं मिलेगा ॥

१८–इस वास्ते राधास्वामी दयाल के मत में शामिल होकर भेद काल और दयाल देश का लेकर जिस क़दर अस्थान कि काल देश में हैं, वहां से अभ्यास करके पार होकर दयाल देश में पहुंचना, और वहां राधास्वामी धाम में बिश्राम करना चाहिये, तब कारज पूरा बनेगा, यानी तब सच्चा उद्धार और सच्ची मुक्ती हासिल होगी ॥

शब्द १२ सफ़ा ८८२ सार बचन नज़म

निरखोरी कोई उठकर पिछली रतियां ॥ टेक ॥

कड़ी १

माया छलन तरंग मन रोकन, घट में कंवल खिलतियां।

अर्थ–पिछली चार घड़ी पहिले सूरज के निकलने से सुबह तक रात के वक़्त अभ्यास करने से माया को छलने और मन की तरंग रोकने की किसी क़दर ताक़त आवेगी, और घट में कंवल का भी दर्शन होगा॥

कड़ी २

सीतल सागर मीन मरम जस, न्हावत मल मल गतियां।

अर्थ–तब सुरत मछली की तरह सीतल सागर में अश्नान करके सफ़ाई हासिल करेगी ॥

कड़ी ३

सिला उठाय कंवलदल फोड़त,

तोड़त द्वार सुनत जहां बतियां ।

अर्थ—पहिले परदे को उठाकर और श्याम कंवल का दल फोड़कर यानी तीसरे तिल के अंदर सुरत ने धस कर शब्द की आवाज़ सुनी ॥

कड़ी ४

चमक जोत धारा धुन झांकियां,

मन माया कूटत जहां छतियां ।

अर्थ—जोत की चमक और वहां की धुन की धार मालूम हुई, और मन और माया वहां पर छाती कूटने लगे कि यह अभ्यासी सुरत हमारी हद्द से निकल गई॥

कड़ी ५

हरष हरष धावत पद उत्तम,

तम संसार सकल बिनसतियां ।

अर्थ—और खुश होकर सुरत वहां से आगे को बढ़ती चली और संसार यानी त्रिलोकी की माया का अंधेरा दूर हुआ ॥

कड़ी ६

मौज निहार पुर्ष घर पावत, धावत सुरत निरतियां ।

अर्थ—राधास्वामी दयाल की मौज के अनुसार सुरत और निरत सत्तलोक की तरफ़ को दौड़ने लगीं ॥

कड़ी ७

पीवत अमीं झकोल कंवलपद, केल करत सत मतियां ॥

अर्थ—सुरत ऊपर को चढ़कर और दसवें द्वार में अमीं का रस लेती हुई, और वहां से आगे बढ़कर सत्त शब्द के साथ बिलास करती हुई चलती है ॥

कड़ी ८

को कह सके नाम की महिमा, संत बतावत जो गत पतियां

अर्थ—संतों के नाम की महिमा कोई नहीं कर सकता है वे आपही उसकी गत और पत बर्णन करते हैं ॥

कड़ी ९

राधास्वामी कहत सुनाई, मूल मिलो चढ़ हटियां ।

अर्थ—राधास्वामी दयाल समझा कर फ़रमाते हैं कि मूल पद से मिलना चाहिये रास्ते के मुक़ामात ते करके ॥ इति ॥

बचन २२

चेतन्य को बिशेष चेतन्य और महाचेतन्य से मेल करना चाहिये न कि समान चेतन्य और जड़ से

कड़ी नम्बर ४ शब्द नम्बर १० सफ़ा नम्बर २५३ पोथी सार बचन नज़म ॥

कड़ी

तू चेतन यह जड़ सब मिथ्या क्यों कर मेल मिलानी ॥

१-इस लोक की रचना में मनुष्य सब में श्रेष्ट और विशेष चेतन्य है, और हरचंद थोड़े फ़ायदे या कुछ काम लेने के लिये अपने से कम चेतन्य वालों से व्योहार या बर्तावा करता है, पर चाह उसकी हमेशा यही रहती है, कि अपने से बढ़ कर या बराबर वालों से व्योहार और बर्तावा करे, बल्कि जो कोई सब से बढ़ कर है, उससे मिलने और बर्तावा करने की चाह सब के मन में बहुत ज़बर बनी रहती है ॥

२-कुल्ल मनुष्य अपने से कम के साथ मिलना और बर्तावा करना सिर्फ़ कोई काम लेने या कुछ धन और पदार्थ के फ़ायदे के लिये करते हैं, जैसे चौपायों के साथ दूध पीने और सवारी लेने या बोझा लादने या और कोई मिहनत और मशक़्क़त का काम लेने की नज़र से बर्तावा किया जाता है, और इसी तरह परिंदों को उनकी ख़ूबसूरती देखने या ख़ुश आवाज़ सुनने या और कोई क़िस्म का खेल या उनकी आपस में लड़ाई का तमाशा देखने के लिये पालते हैं, और ऐसे ही कीड़े मकोड़े वग़ैरह भी वास्ते तमाशा दिखाने या उनकी ख़ूबसूरती देखने और दिखाने की नज़र से पकड़ कर रक्खे जाते हैं, और फल और फूल वाले और उम्दा लकड़ी के दरख़्तों की परवरिश और

निगहबानी फल खाने और खुशबू लेने और खूब-सूरती देखने और लकड़ी काम में लाने के लिये की जाती है, और अनेक जड़ पदार्थों की और उनकी खानों की निगहबानी और हिफ़ाज़त यानी रक्षा, उनकी पैदावार को अपने काम में लाने और बेच कर उससे धन पैदा करने की नज़र से की जाती है ॥

३–खुलासा यह है कि जितने चेतन्य यानी जान-दारों और जड़ पदार्थों से जिनका ज़िकर ऊपर लिखा गया, जो कोई मनुष्य मेल करता है, वह सिर्फ़ कुछ काम लेने या धन पैदा करने के निमित्त है, और जितना जिससे फ़ायदा होता है, उसी क़दर उसके पालन या निगहदाश्त में तवज्जह और धन ख़र्च करता है, इससे ज्यादा मेल करने की ख़्वाहिश या और किसी क़िस्म की आसा उन जानवरों या जड़ पदार्थों से नहीं रखता ॥

४–लेकिन जो कोई आदमी कोई ख़ास गुन या जौहर रखता है, या किसी गुन में सब से ज़बर है, या विशेष धनवान या हकूमत वान या अमीर या राजा है, या बिशेष खूबसूरत है, तो उसके देखने और उससे मिलने की चाह सब मनुष्यों के दिलों में पैदा होती है, और ऐसों से मिलकर निहायत ख़ुशी

दिल में पैदा होती है, और अपनी खुश नसीबी समझी जाती है, और खास कर राजों और अमीरों से मिल कर अपने तईं बड़ा आदमी ख्याल करते हैं, और इस मेल के हासिल करने के वास्ते तन मन धन उमँग के साथ खर्च करते हैं॥

५--जो कुछ कि ऊपर लिखा गया है, यह सब दुनियवी काररवाई में दाखिल है, और जो कुछ कि इस में फ़ायदा या खुशी हासिल होती है, वह भी दुनियवी है, और मालूम होवे कि दुनिया के जितने फ़ायदे या खुशी के काम हैं, वह सब परमार्थ के मुकाबले में तुच्छ और नाशमान हैं॥

६--परमार्थी लाभ यानी फ़ायदा और परमार्थी खुशी का इस क़दर भारी दरजा है, कि जिस किसी को यह सच्चा २ और पूरा हासिल होवे, तो फिर उसको किसी चीज़ की चाह बाक़ी नहीं रहेगी, और सब रस और सुख और खुशी दुनिया की उसकी नज़र में फीके मालूम होंगे, और वह मर्तबा और दरजा सच्चे और पूरे परमार्थी को हासिल होता है, कि जिसकी बराबरी कुल्ल रचना में कोई नहीं कर सकता, यानी न तो इस लोक के भोग बिलास और पदार्थ और राज और हुकूमत वग़ैरह सच्चे परमार्थी को

लुभा सकते हैं, और न ऊंचे लोकों के भोग और राज उसकी तवज्जह को अपनी तरफ़ खींच सकते हैं ॥

७—सच्चा और पूरा परमार्थी नाम सच्चे और कुल्ल मालिक के आशिक़ यानी भक्त का है, सो उसकी नज़र में सिवाय अपने प्रीतम कुल्ल मालिक के दूसरा नहीं ठहर सकता, वह भक्त अपने माशूक़ सच्चे मालिक के सिवाय दूसरे से मिलना या प्रीत भाव का बर्ताव करना भी नहीं चाहता, क्योंकि इस लायक़ उसकी नज़र में सिवाय सच्चे गुरू के जिनकी मेहर और मदद से अपने प्रीतम का भेद और निशान और उससे मिलने का रास्ता और तरीक़ा मालूम हुआ है, और कोई नहीं मालूम होता, इस वास्ते उसकी प्रीत पहिले सतगुरु में और फिर सच्चे मालिक में जो सतगुरु का निज रूप है, क़ायम होती है, और दिन २ बढ़ती जाती है, जब तक कि निज धाम में पहुंचकर सच्चे मालिक का दर्शन न पावे, और वहां पहुंचकर परम आनंद को प्राप्त होता है, और जहां किसी क़िस्म का कष्ट और क्लेश और दुख और धन्धा और चिन्ता और फ़िकर का नाम और निशान भी नहीं है, ऐसा भारी फल सच्चे परमार्थी को सच्चे परमार्थ की कमाई से मिलता है ॥

८-अब ख़्याल करो कि दुनिया में कोई मनुष्य किसी से नहीं मिलता है, जब तक कि थोड़ा बहुत अपना फ़ायदा और काम निकलता न देखे, और न अपना तन मन धन वहां ख़र्च करता है, तो फिर किस क़दर अचरज और अफ़सोस की बात है, कि परमार्थ के हासिल करने के वास्ते जीव जड़ पदार्थों के सन्मुख दीन होवें, या वहां तन मन धन लगावें, जैसे धातु या पाषान की बनी हुई मूरत या पिछले महात्माओं के किसी निशान या पोथी और ग्रन्थ या मकान या दरिया वग़ैरह की जात्रा और पूजा करना, या कोई दरख़्त या किसी और जानदार को (जो कि मनुष्य से बहुत नीचे दरजे पर हैं) परमार्थी फ़ायदा उठाने की नज़र बड़ा मान कर उसकी पूजा या जात्रा करना॥

९-जब कि कुल्ल दुनिया में लोग अपने से बड़े की मिलने की चाह रखते हैं, और उसके लिये मिहनत और जतन बल्कि रुपये ख़र्च करते हैं, फिर परमार्थ में कुल्ल मालिक से मिलने और उसको प्रसन्न करने की चाह ज़बर मन में होनी चाहिये--किस तरह लोग जड़ यानी बेजान चीज़ों या जानवरों की पूजा करना पसंद करते हैं, कि जहां से कोई क़िस्म का जवाब रज़ामंदी या ग़ैर रज़ामन्दी का नहीं मिल सकता है,

और न किसी तरह की हिदायत या उपदेश निस्बत काररवाई के होना ममुकिन है ॥

१०–यह चाल आम तौर पर सब क़ौमों और मुल्कों में जारी है, और कोई भी इस चाल को ना पसंद नहीं करता, या यह कि उसको ना मुनासिब नहीं कहता, बल्की और उसके जारी रहने में मदद देते हैं ॥

११–इससे मालूम होता है कि आम तौर पर जीवों के दिल में सच्चे और कुल्ल मालिक के मिलने की सच्ची चाह नहीं है, और जो कुछ कि लोग कारखाई करते नज़र आते हैं, वह या तो पैरवी ख़ानदानी रसम की है, या यह कि ऐसा ख़ौफ़ दिल में पैदा हुआ है कि पुरानी रसम के मौक़ूफ़ करने में दुनियावी नुक़-सान या किसी तरह का हर्ज न हो जावे ॥

१२–बल्कि बहुत सी क़ौमों और मुल्कों में ऐसा ख्याल जम गया है, कि सच्चे मालिक को कोई जान और पहिचान नहीं सकता, और न उसके चरनों तक किसी की पहुंच हो सकती है, इस वास्ते सब की तवज्जह का झुकाव करम और धरम की तरफ़ या जीवों के उपकार के कामों में हो गया है, और मालिक का खोज और उसके मिलने के रास्ते की तलाश किसी क़दर बंद हो गई ॥

१३—और जो किसी क़ौम में भेद और मुक़ाम मालिक का ज़ाहिर किया है, तो उसके मिलने का रास्ता और जुगत ऐसी कठिन और ख़तरनाक बयान की है, कि जिसकी काररवाई गृहस्तियों से नामुमकिन और विरक्तों से निहायत मुशकिल नज़र आती है, जैसे प्राणों का रोकना और चढ़ाना वग़ैरह, इस सबब से भी आम तौर पर खोज और तलाश सच्चे मालिक और उसके मिलने के तरीक़ा का बंद हो गया॥

१४--इस वास्ते बजाय सच्चे मालिक के औतारों और महात्माओं और पैग़म्बरों और वलियों के निशान और मकान और तसवीरों और नक़ल वग़ैरह की पूजा सब देशों में जारी हो गई, और आम लोग उतनी ही ज़ाहिरी काररवाई करके तृप्त होगये॥

१५--पर जो कोई कि सच्चा खोजी है, और दर्द परमार्थ का यानी शौक़ मिलने अपने मालिक का मन में रखता है, और इस दुनिया के हाल और चाल को देख कर चित्त उसका उदास हुआ है, वह कभी इस क़िस्म की पूजाओं में जिनका ज़िकर ऊपर लिखा गया राज़ी नहीं होगा, और जो कुछ कि काररवाई परमार्थ की उसको करनी मंजूर होगी, वह चेतन्य पुर्ष की जो परमार्थ में अपने से बढ़ कर होगा करेगा,

और वहां से उपदेश और हिदायत लेता हुआ अपना काम बनावेगा, यानी रास्ता तै करके एक दिन सच्चे मालिक के दरबार में पहुंच कर अपना जनम सुफल करेगा ॥

१६--जो इस क़िस्म के सच्चे परमार्थी जीव हैं, उन्हीं के वास्ते यह बचन कहा गया है, और जो कि भूल या भर्म या अनजानता के सबब से आम लोगों के साथ परमार्थी काररवाई में शामिल हो गये हैं, पर जिनके मन में सच्चा दर्द है, वे भी सच्चे अधिकारी हैं, वह इस बचन को सुन कर ग़फ़लत की नींद से जाग उठेंगे, और सच्चे परमार्थ का तरीक़ा और चाल दरियाफ़्त करके, उसके मुवाफ़िक़ काररवाई शुरू करेंगे। इन्हीं जीवों से यह कहा जाता है, कि अपने से बढ़ कर चेतन्य पुर्ष ढूंढ़ो, और वह चेतन्य पुर्ष वक़्त के सच्चे गुरू हैं, उनका सतसंग करके महा चेतन्य पुर्ष का जो कि कुल्ल मालिक है पता और भेद लेकर उसकी प्राप्ती का जतन शुरू कर दो, और कुल्ल मालिक और सतगुरु की मेहर और दया को अपने अन्तर और बाहर परखते हुए और प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ाते हुए रास्ता तै करते जाओ, रफ़्ता २ एक दिन काम पूरा बन जावेगा ॥

१७--और उन्हीं सच्चे परमार्थी जीवों को यह समझाया जाता है कि तुम चेतन्य हो, और महा चेतन्य पुर्ष अविनाशी की अंस हो, यानी उसका और तुम्हारा जौहर एक ही है, और माया के रचे हुए भोग और पदार्थ जिनका रस इन्द्रियों के वसीले से लेते हो, सब जड़ हैं, और नाशमान, फिर तुम्हारा उनसे असली मेल नहीं है, इस वास्ते उन में अपना बर्तावा होशियारी के साथ रक्खो ॥

१८--उन भोगों से देह और इन्द्री और किसी क़दर मन को अहार यानी ताक़त मिलती है, पर सुरत यानी रूह को उनसे कुछ मदद या फ़ायदा हासिल नहीं होता, बल्कि जो कोई ज्यादा तर बर्ताव इन भोगों में करेगा, तो उसकी सुरत और मन सिथिल और गदले हो जावेंगे, यानी उनकी सफ़ाई में बहुत ख़लल पड़ जावेगा, और सुस्ती और तमोगुण यानी माया का नशा दिन २ बढ़ता जावेगा, और नतीजा उसका यह होगा कि वह शख़्स नीचे के दरजे की रचना में गिरता जावेगा ॥

१९--इस वास्ते कुल्ल मालिक दयाल और संत सत गुरु अपने सच्चे परमार्थी जीवों को यानी प्रेमी जन और भक्तों को होशियार करते हैं कि तुम चेतन्य

हो, और महाचेतन्य कुल्ल मालिक की अंस हो, सो तुमको चाहिये कि अपने माता पिता महा चेतन्य से नाता जोड़ो, और गहरा मेल पैदा करो, यहां तक कि उसके धाम यानी निर्मल चेतन्य और निरमाया देश में पहुंच कर, उसके दर्शनों का विलास और आनंद हासिल करो ॥

और जड़ पदार्थों यानी माया रचित भोगों से दिन २ अपनी तवज्जह हटाते जाओ, और सिर्फ़ ज़रूरत मात्र उनमें बर्ताव रक्खो, यानी इस क़दर कि जिसमें औसत दरजे पर देह का गुज़ारा हो जावे, और फ़ज़ूलियों को जिस क़दर बन सके कम और दूर करते जाओ ॥

२०—सिवाय सच्चे परमार्थी जीवों के बाक़ी कुल्ल जीवों को जो थोड़ा बहुत भी सोच और बिचार करके अपने नफ़े और नुक़सान की काररवाई की जांच कर सकते हैं, कहा जाता है कि जब कि तुम सब कामों में अपना नफ़ा और फ़ायदा सरीह देख कर कारवाई करते हो, और हमेशा अपने से बढ़-कर बल्कि सब से बढ़कर लोगों से मेल और बर्ताव करना चाहते हो, तो फिर परमार्थी कामों में क्यों कामी बे परवाही और ढीलम ढाल के तौर पर कार-

रवाई करते हो, कि ज़रा भी अपना नफ़ा हाल या आइंदा का नहीं देखते, और अंधाधुंध नादानों के साथ शामिल होकर अपना तन मन धन फ़ज़ूल और वेफ़ायदा ख़र्च करते हो ॥

तुमको मुनासिब है कि ऐसे का संग करो कि जिसके दर्शन और वचन से तुम्हारे मन और बुद्धि साफ़ होवें, और हिरदे की आंख दिन २ खुलती जावे, कि जिससे असली हाल और कैफ़ियत इस दुनिया की और भी बड़ाई और भारी नफ़ा सच्चे परमार्थ का नज़र में आता जावे, और सत्य वस्तु को ग्रहण करते जाओ, और धोखे देने वाले और नाशमान पदार्थों से हटते जाओ, कि जिससे अख़ीर वक़्त पर पछताना न पड़े, क्योंकि उस वक़्त का अफ़सोस कुछ फ़ायदा न देगा, जो कुछ बने इसी ज़िंदगी में बनाओ, बल्कि जवानी के वक़्त से काररवाई सच्चे परमार्थ की शुरू कर दो, और बुढ़ापे के वक़्त इसी ज़िंदगी में, उसका फल थोड़ा बहुत देख लो, जिससे अपने मरने के पीछे के फ़ायदे का हाल जीते जी मालूम हो जावे, और कोई संदेह बाक़ी न रहे ॥

२१-यह वचन संत सतगुरु दया करके सुनाते हैं। जिनका जल्द उद्धार होने वाला है वे इसको शौक़

और खुशी के साथ मानेंगे, और जिनका अभी चक्कर जनम मरन का बाक़ी है, वे नहीं मानेंगे, पर उनके हिरदे में भी बीजा सच्चे परमार्थ का पड़ जावेगा, और आइंदा किसी वक़्त पर शाख़ और बर्ग यानी डाल पत्ते पैदा करके रफ़्ता २ फूल और फल देगा, यानी वे जीव भी एक दिन संतों के परमार्थ के भागी हो जावेंगे ॥

बचन २३

ध्यान में आसानी अभ्यास की और भजन में किसी क़दर कठिनता का बर्णन

१—अकसर अभ्यासी लोग शिकायत इस बात की करते हैं, कि भजन में मन कम लगता है, और गुनावन और ख़्यालात तरह २ के बहुत उठा करते हैं, सबब इसका यह है कि मन अभी जैसा चाहिये साफ़ नहीं हुआ है, यानी उसमें दुनिया की ख़्वाहिशें अनेक तरह के भोगों की धरी हुई हैं, जब भजन में बैठ कर तवज्जह शब्द की धार की तरफ़, जो ऊपर से नीचे को उतरती है की जाती है, उस वक़्त जो ख़्यालात या चाहें ज़बर हैं, उन्हीं की गुनावन पैदा होती है, और उस गुनावन के साथ सुरत की धार, बजाय

आवाज़ को पकड़ के ऊपर की तरफ़ चढ़ने के, ज़बर तरंग के साथ नीचे को उतर आती है, और उस ख़्याल में इस क़दर लिपट जाती है, कि अभ्यासी को अकसर ख़बर भी नहीं रहती कि मैं क्या कर रहा हूं ॥

२-इलाज उसका यह है कि सतसंग चेत कर करे, और बचनों को विचार कर सोचे और समझे, और मन में से फ़ज़ूल ख़्वाहिशें भोग बिलास की घटाता और हटाता जावे, और सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल के चरनों की प्रीत और प्रतीत दिन २ बढ़ाता जावे। जिस क़दर शौक़ तरक़्क़ी अभ्यास और प्राप्ती दर्शन का बढ़ता जावेगा, और संसार और भोगों की तरफ़ से तबीअत किसी क़दर हटती जावेगी, उसी क़दर सफ़ाई मन और सुरत की होती जावेगी, और जब वक़्त अभ्यास के माया और काल, मन और सुरत को अपनी तरफ़ भोगों का ललचाव देकर खींचेंगे, तो निर्मल मन और निर्मल सुरत उस वक़्त होशियार होकर, भोगों की तरंग और ख़्यालों को हटा कर बदस्तूर अपनी तवज्जह शब्द की धुन में रख कर चढ़ते रहेंगे ॥

३-जो कि ऐसी सफ़ाई के हासिल होने के लिये यानी मन से ख़्वाहिश भोगों की घटने या दूर होने

के वास्ते, निरन्तर यानी बराबर अभ्यास शौक़ के साथ कुछ अर्से तक करना ज़रूर है, और फिर भी कोई न कोई इन्द्री या पांचों में से कोई न कोई दूत थोड़ा बहुत ज़बर बना रहता है, और ज़ोर उसका आहिस्ता २ बहुत देर में घटता है—इस वास्ते मुनासिब और बेहतर मालूम होता है, कि अभ्यासी ऐसी हालत में, कि जब भजन के वक़्त तरंगें काम क्रोध लोभ मोह और अहंकार वग़ैरह, या किसी इन्द्री के बिषय की ज़बर उठती होवें, तब अभ्यासी ध्यान पर ज़्यादा ज़ोर देवे, यानी उसको ज़्यादे अर्से तक करे, और भजन थोड़ी देर करे, यानी जिस क़दर थोड़ी बहुत सफ़ाई के साथ बन पड़े उतनाही करे, और बाक़ी वक़्त अपने अभ्यास का सुमिरन और ध्यान में लगावें॥

४—भजन के अभ्यास में मन और सुरत को शब्द की धार के आसरे, जो ऊपर से नीचे को आती है चढ़ाना पड़ता है, और इस सबब से जब कोई तरंग उठती है, और उसका रुख़ नीचे की तरफ़ को है, तो शब्द की धार ज़बर तरंग के साथ, मन और सुरत को नीचे की तरफ़ रुजू होने में मदद देती है, और इस सबब से अभ्यासी को अपनी सम्हाल रखना कठिन हो जाता है॥

५-लेकिन ध्यान के अभ्यास में जिस क़दर कि शौक़ और प्रेम है, उसी मुवाफ़िक़ मन और सुरत की धार हिरदे के मुक़ाम से उठ कर, अपने प्रीतम से मिलने या उसका दर्शन करने या उसके चरनों को स्पर्श करने के लिये, ऊपर को उस मुक़ाम की तरफ़ जहां कि ध्यान जमाया गया है चढ़ती है, इस हालत में दूसरी क़िस्म की तरंग का पैदा होना और नीचे की तरफ़ को उसका झुकाव बन नहीं सकता, जब तक कि अभ्यासी आपही ध्यान को छोड़ कर दूसरा ख़्याल न उठावे, और जो ऐसा करेगा तो उसका ध्यान और शौक़ प्रीतम से मिलने का ग़लत हो जावेगा ॥

६-खुलासा यह कि भजन के समय जो कोई ज़बर ख़्वाहिश मन में धरी हुई है, उसको शब्द की धार जगा देती है, और ध्यान के समय शौक़ और प्रेम की धार, जो अभ्यासी के हिरदे से उठती है, वह और ख़्वाहिशों की तरंग को नहीं उठने देती, यानी दबाये और सुलाये रखती है, और जिस क़दर कि प्रेम ज़्यादा होगा, उसी क़द्र और तरंगें ज़ईफ़ और कमज़ोर होती जावेंगी, इस सबब से ध्यान में अभ्यासी को आसानी से कारवाई करने का मौक़ा मिलता

है, और भजन में बग़ैर तीव्र यानी ज़बर बैराग के भोगों की ज़बर ख़्वाहिश का रोकना और हटाना मुशकिल हो जाता है ॥

७–मतलब यह कि ध्यान में अभ्यासी जिस क़दर कि प्रेम और शौक़ उसके दिल में है, उसी से थोड़ी बहुत कारवाई बग़ैर मुक़ाबला विरोधी ख़्वाहिशों के कर सकता है, और भजन में विरोधी ख़्वाहिशें जल्द जाग उठती हैं, और ताक़त पैदा करके अभ्यासी के मन और सुरत की धार को, जल्द नीचे की तरफ़ गिरा देती हैं ॥

८–सबब इसका यह है कि शब्द ज़्यादा सफ़ाई चाहता है, और जब तक कि अभ्यासी के मन और सुरत में, भोगों की चाह की मलीनता धरी हुई है, वह उसको फ़ौरन प्रघट करके मन और सुरत की मलीन धार को नीचे को गिरा देता है, यानी अपने सन्मुख से हटा देता है ॥

और ध्यान में इस क़दर फ़ायदा है कि शौक़ और प्रेम की धार, जो अभ्यासी के हिरदे से उठकर ऊपर को रवां होती है, वह अभ्यासी के मन और सुरत की धार को जो प्रेम की धार के संग चलती है, निर्मल और साफ़ करती हुई ऊपर की तरफ़ को

खींचती है, और स्वरूप उस प्रेम की धार को ताक़त देता है, और मिलने के शौक़ को बढ़ाता जाता है, और जिस क़दर कि वह प्रेम और शौक़ की धार ऊपर को चढ़ती जाती है, उसी क़दर ऊंचे देश का रस और आनन्द मिलता जाता है, और शान्ती और शीतलता आती है कि जिसके सबब से मलीन ख़्वाहिशें कमज़ोर होती जाती हैं, और अभ्यास दिन २ बढ़ता जाता है, यानी एक धाम से दूसरे और दूसरे से तीसरे और इसी तरह सत्तलोक तक ध्यान के वसीले से अभ्यासी अपनी सुरत की धार को गौन अंग करके पहुंचा सकता है ॥

९-हर चंद कि ध्यान में किसी क़दर आसानी है, पर जो शौक़ चढ़ाई का और स्वरूप में थोड़ा बहुत प्रेम नहीं है, या सुरत और मन किसी क़दर ऊंचे चढ़कर रस और आनन्द नहीं लेते, तो इस अभ्यास में भी गुनावन और ख़्यालात तरह २ के उठते हैं, और जब तक कि अभ्यासी के चित्त में किसी क़दर सच्चा वैराग दुनिया की तरफ़ से और सच्चा अनुराग सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल और सतगुरु के चरनों में न होगा, तब तक उसके सुरत और मन गुनावन और ख़्यालात के संग लिपट कर नीचे उतर आवेंगे,

और ध्यान दुरुस्त नहीं बनेगा, और न कुछ रस और आनन्द आवेगा, इस वास्ते हर हालत में थोड़ा बहुत बैराग भोगों से, और अनुराग चरनों में ज़रूर दरकार है, तब अभ्यास दुरुस्त बन पड़ेगा, और कुछ आनन्द भी प्राप्त होगा, और तब आहिस्ता २ तरक्की भी होती जावेगी, और यह बैराग और अनुराग सतगुरु या साध के संग से आवेगा, और साध से मुराद सच्चे और प्रेमी अभ्यासी से है ॥

१०--ध्यान में इस क़दर आसानी है कि यह अभ्यास स्वरूप के आसरे किया जाता है, और स्वरूप में प्रेम जल्द आ सकता है, चाहे वह स्वरूप मुक़ामी है या गुरू का, और ज़ाहिर है कि जिस स्वरूप या जिस चीज़ में प्यार होता है, तो उसकी तरफ़ मन और सुरत की धार जल्द उठ कर रवां होती है, और भजन में शब्द की धार को पकड़ के शब्दी की तरफ़ चलना बग़ैर सफ़ाई और गहरे प्रेम के मुशकिल है ॥

११--अंतरी यानी मुक़ामी स्वरूप का जब कभी मौज से अभ्यास के वक्त दर्शन हो जाता है, तो फिर चाहे वह हर रोज़ प्रघट न होवे, उसका ख्याल करके थोड़ा बहुत प्यार हिरदे में पैदा हो सकता है, और गुरु स्वरूप का तो साक्षात दर्शन बाहर होता है, तो

जो कोई उसका तसव्वुर यानी ध्यान अंतर में करे, और वह कभी २ प्रघट हो जावे तो उसमें बिशेष प्यार जल्द आसकता है, और जब कभी प्रघट न होवे तो उसका ख्याल करने से भी (अगर मन में सच्चा प्यार और भाव है) किसी क़दर प्रेम हिरदे में पैदा हो सकता है। और मालूम होवे कि जो स्वरूप गुरू का अंतर में प्रघट होता है वह हाड़ मास का नहीं है; बल्कि ऐन चेतन्य है, क्योंकि चेतन्य मंडल में अंतर-जामी पुर्ष अपने प्रेमी और भक्त जन के निमित्त गुरु स्वरूप का आकार धारन करता है, और वह चेतन्य आकारी स्वरूप बराबर अभ्यासी के संग अगुवे के तौर पर मदद देता जावेगा, और जिस क़दर कि अभ्यासी ऊंचे मुक़ाम पर ध्यान करेगा, उसी क़दर वह स्वरूप भी ऊंचे देश में ज़्यादा निर्मल यानी सूक्ष्म और लतीफ़ और ज़्यादा नूरानी होता जावेगा— खुलासा यह कि गुरू का आकारी स्वरूप अभ्यासी के संग बराबर सत्तलोक तक रहेगा, और रास्ते में मन और सुरत के सिमटाव और चढ़ाई में बराबर मदद देता जावेगा॥

१२—यह गुरु स्वरूप चेतन्य और अबिनाशी और देखने में आकार सहित पर असल में निराकार है,

और जो अभ्यासी सेवक का गुरु स्वरूप में सच्चा प्यार और भाव है, तो यह स्वरूप हमेशा उसके संग रहेगा, और ज़ाहिर है कि इस स्वरूप के सामने कोई बिघन मन और माया का ठहर नहीं सकता, बल्कि जब तक कि अभ्यासी के मन और सुरत इस स्वरूप के ध्यान या ख़्याल में लगे रहेंगे, तब तक दूसरा ख़्याल और किसी क़िस्म का पैदा नहीं हो सकता, इस तौर से माया और मन और काल और करम के बिघन ध्यानी अभ्यासी से दूर रहते हैं ॥

१३–जो सच्चा परमार्थी है वह जिस वक़्त कि सत-संग में गुरू के सनमुख जाता है, फ़ौरन् उसकी हालत बदल जाती है, यानी दर्शन करते ही प्रेम हिरदे में उमंगता है, और दुनिया के ख़्याल उसी वक़्त दूर हट जाते हैं, और जिस क़दर देर तक कि गुरू के सन्मुख हाज़िरी रहती है, मन और सुरत दर्शन और बचन में सिमट कर लगे रहते हैं, और अंतर में रफ़्ता २ उनका खिंचाव ऊंची तरफ़ को होता रहता है, फिर जब ऐसा अभ्यासी अपने अंतर में ध्यान या भजन के समय गुरु स्वरूप का ध्यान या ख़्याल करेगा, तब वही हालत उसकी जो बाहर गुरू के सन्मुख होती है, अंतर में हो जावेगी, यानी प्रेम

उमंगेगा, और संसारी ख़्याल और चाहें दूर हो जावेंगी, फिर ऐसी हालत में ध्यान का रस और आनंद निर्विघ्न मिलेगा, और शब्द भी जो कि अंतर में हर वक़्त मौजूद है आसानी से प्रघट होकर गुंजारने लगेगा, और उस वक़्त अभ्यासी को इख़्तियार होगा, कि चाहे धुन में लग जावे या स्वरूप का रस लेवे, या दोनों कामों यानी भजन और ध्यान को मिला कर उनका रस लेवे ॥

१४-संतों ने और राधास्वामी दयाल ने ख़ासकर अपनी बानी में प्रेम पर ज़्यादा ज़ोर दिया है-मतलब उसका यह है कि प्रेम की मदद से काम जल्द और आसानी से बन सकता है, और निरे बैराग से इस क़दर फ़ायदा हासिल नहीं हो सकता, और न निरी समझ बूझ मत की ऐसा फ़ायदा दे सकती है ॥

कुल्ल काम दुनिया के शौक़ और मुहब्बत से चल रहे हैं, और जहां किसी का शौक़ और प्यार नहीं है, वहां उससे कुछ काररवाई नहीं हो सकती, इस वास्ते सब जीवों को चाहिये, कि सच्चे और पूरे परमार्थ के हासिल करने के लिये, सच्चे मालिक के चरनों में सच्चा प्रेम लावें, और जो कि कुल्ल मालिक अरूप है, और किसी को दर्शन उसका पहिले हो नहीं सकता, इस

सबब से उसमें प्रेम करना मुश्किल है, लेकिन जो कोई पहले गुरु स्वरूप में प्यार लावे, और फिर गुरू के निज स्वरूप से मिलने का जतन करना शुरू करे, तो उसका प्यार अरूप पद में आहिस्ता २ पैदा होता और बढ़ता जावेगा, और सच्चे गुरू उपदेश के वक्त भेद उस निज रूप का देंगे, जो कि अकह और अपार और रूप रंग रेखा से न्यारा है, और उनका और सेवक का और कुल्ल रचना का वही निज रूप है, तब इस तौर पर भेद को समझ कर और रास्ते की मंज़िलें और ठेके दरियाफ़्त करके अभ्यासी चलना शुरू करेगा, और जो प्रेम उसे गुरु स्वरूप में आया है, वही उलट कर उनके निज स्वरूप में लगता और बढ़ता जावेगा, और इस तरह एक दिन कारज उसका पूरा बन जावेगा ॥

१५—कुल्ल मतों में जो कि दुनिया में जारी हैं, यही क़सर नज़र आती है, कि या तो नक़ली और जड़ रूप में मिसल मूरत और तसवीर और निशान और ग्रन्थ वग़ैरह के अटक गये, और असल का खोज न किया, और या अरूप का थोड़ा बहुत भेद सुनकर और बुद्धी से समझकर और आपको वही लक्ष स्वरूप मानकर तृप्त हो गये, और उस अरूप के देश की

ख़बर और मिलने की जुगत न पाकर इस माया देश के समान चेतन्य को व्यापक ठहरा कर उसके साथ एकता कर बैठे, और इस तरह दोनों गिरोह ने भारी धोखा खाया, कि न इधर के हुए न उधर के, यानी सच्चे मालिक का पता और भेद न पाकर उससे मिलने का जतन न करके परम और अमर आनन्द को प्राप्त न हुए, और इस दुनिया में भी अपनी मनमुखी करतूत के सबब से सुख और चैन न पाया, यानी चौरासी की भरमना न मिटी ॥

१६–यह लोग गुरू की महिमा ज़बानी करते हैं, और पुराने आचारजों ने अपने ग्रन्थों में साफ़ २ और खोलकर ज़ोर के साथ लिखी है पर यह लोग बसबब न मिलने सच्चे गुरू के, उस महिमा के मुवाफ़िक़ काररवाई नहीं करते, और इसी सबब से प्रेम से ख़ाली फिरते हैं, और सिद्धान्त पद की पहुंच और प्राप्ती नहीं होती ॥

१७–इख़लाक़ और धरम और पर उपकार और सच्च बोलने वग़ैरह की चाहे जिस क़दर बड़ाई बयान की जावे, पर उसके मुवाफ़िक़ बर्ताव करना और रहनी रहना बग़ैर अंतरमुख अभ्यास के कि जिस से मन और सुरत इंद्रियों के घाट से हट कर प्रेम

और ज्ञान के अस्थान पर अंतर में पहुंचे, किसी सूरत और किसी शख़्स से ज्यों का त्यों मुमकिन नहीं है–एक वक़्त में चाहे जैसा त्याग और बैराग कोई दिखला देवे, पर वह हालत जब तक कि अंतर में घाट नहीं बदलेगा, कभी एक रस क़ायम नहीं रह सकती, इस वास्ते बजाय धरम और इख़लाक़ और पर उपकार वग़ैरह पर ज़ोर देने के मुनासिब है कि वह जतन किया जावे, कि जिससे प्रेम मालिक के चरनों में पैदा होवे, और उससे मिलने की चाह निरमाया देश में कुल्ल रचना के परे प्रघट होकर, उसके मुवाफ़िक़ काररवाई शुरू की जावे, तो आहिस्ता २ यह गुन भी यानी धरम और इख़लाक़ वग़ैरह ऐसे अभ्यासी में आपही आप बरतने लगेंगे, और प्रेम जो कि कुल्ल रचना की जान है, और महा निर्मल देश में जिसका असली बासा है, प्रघट होकर कुल्ल सफ़ाई कर देगा, और सब विकारों को हटा देगा, और ऐसा प्रेमी निज देश में जो कुल्ल मालिक का धाम है, बासा पाकर परम आनंद को प्राप्त होगा॥

१८–इस बचन से ऐसा नहीं समझना चाहिये कि भजन करना मना है, या ओछा काम है, बल्कि उस को दुरुस्ती से करने के वास्ते मन में सफ़ाई और प्रेम

पैदा करना चाहिये। इस क़दर समझ इस बचन से लेनी चाहिये, कि जब कभी भजन में नापाक गुनावन और बुरे ख्याल या अपवित्र और पाप की भरी हुई तरंगें बारम्बार उठें तो ऐसी हालत में भजन कम कर देना चाहिये, और बजाय उसके ध्यान का अभ्यास ज्यादा करना चाहिये, और संत संग्रह भाग पहिले में से काम क्रोध और मन माया और साध और मृतक का अंग पढ़ कर और उसके मतलब को विचार कर अपने मन को धिरकार देकर समझाना चाहिये कि आइंदा अपवित्र और ना मुनासिब तरंगें न उठावें, और राधास्वामी दयाल और संतगुरु की अप्रसन्नता और पाप करमों के दुखदाई फल का डर दिला कर, मन को होशियार और सफ़ाई की तरफ़ रुजू करना चाहिये, जब मन सफ़ाई और प्रेम के साथ काररवाई करने लगे तब भजन का वक्त जिस क़दर मुनासिब हो बढ़ा दिया जावे, नहीं तो ध्यान का अभ्यास बदस्तूर ज्यादा किया जावे, और उसके बाद थोड़ी देर के वास्ते भजन का अभ्यास भी जारी रहे॥

१९—जिस किसी की ऐसी हालत है कि जब भजन में बैठे, तबही नाक़िस और ना मुनासिब तरंगें उसके मन में प्रघट होकर उसके भजन को ख़राब करती

हैं, और शब्द का रस नहीं लेने देती, और वह शख़्स उन तरंगों को अपने बल से नहीं रोक सकता, या बिषयों के ख्याल के आधीन होकर उन तरंगों को रोकना नहीं चाहता, तो उसको चाहिये कि भजन बिलकुल मौकूफ़ कर दे, या सिर्फ़ दस मिनट करे, और मन और माया और काम क्रोध वग़ैरह के अंगों का पाठ समझ २ कर, संत संग्रह भाग पहिले में से रोज़मर्रह करे, और भी शब्द हुक्मनामा को—चेतो मेरे प्यारे तेरे भले की कहूं—रोज़ दो मर्तबा पढ़े, और सिर्फ़ सुमिरन और ध्यान करता रहे, और जब तक इस अभ्यास से मन और सुरत उसके किसी क़दर निर्मल और साफ़ न होवें, तब तक शब्द का अभ्यास यानी भजन मुल्तवी रक्खे, और संसार में और परमार्थ में बहुत होशियारी और डर के साथ बर्ताव करे कि जिसमें पाप करम उससे न बने, और न उनके ख्याल अंतर में उठें, नहीं तो भारी हर्ज उसके परमार्थ की कमाई में होगा ॥

बचन २४

बर्णन निर्मल और कपट या लपेट की भक्ती का

१—निर्मल भक्ती उस सच्चे प्रेम को कहते हैं, जो

सच्चे मालिक के चरनों में, उसके दर्शनों की प्राप्ती के निमित्त, सच्चे दर्दी परमार्थी के मन में पैदा होवे, और सतगुरु और साध यानी प्रेमी जन का संग करके दिन २ बढ़ता जावे ॥

२–कपट और लपेट की भक्ती उसको कहते हैं, कि जो किसी दुनिया के मतलब के हासिल होने के निमित्त, या सिद्धी और शक्ती के प्राप्ती की आस धर कर, या किसी के दबाव से, या किसी की नाराज़गी, या किसी क़िस्म के नुक़सान के डर से, या किसी की ख़ातिरदारी और ख़ुशामद, या उसको अपनी तरफ़ मुतवज्जह करने की ग़रज़ से, संत सतगुरु या मालिक के चरनों में की जावे, ऐसी भक्ती जब कोई मतलब पूरा हो जावेगा, या जब कि दबाव और डर नहीं रहेगा, तब घट जावेगी, या बिल्कुल जाती रहेगी ॥

३–निर्मल भक्ती चाहे थोड़ी हो या कच्ची हो, वह सतगुरु और प्रेमी जन के सतसंग और अन्तर अभ्यास की मदद से दिन २ बढ़ती और पकती जावेगी, और सच्चे मालिक और सतगुरु की दया उस भक्त पर दिन २ विशेष होती जावेगी, और उसका असर अंतर और बाहर वह सच्चा भक्त देखता जावेगा, यानी अभ्यास में रस और आनंद और परचे मिलते जावेंगे,

और अंतर और बाहर रक्षा और सम्हाल होती हुई उसको मालूम होती जावेगी ॥

४–कपट और लपेट की भक्ती करने वाला अंतर अभ्यास बहुत कम करेगा लेकिन बाहर की काररवाई में बड़े शौक़ और जोश के साथ शामिल होवेगा, और अपने मतलब के थोड़ा बहुत हासिल हो जाने को ही दया समझ कर, आइंदा को कारवाई ढीली या बंद कर देगा ॥

५–संतों के सतसंग में सिर्फ़ कुल्ल मालिक सत्त पुर्ष राधास्वामी दयाल की महिमा और उनके दर्शन और धाम की प्राप्ती के निमित्त जो जतन कि मुक़र्रर किया गया है, उसी का बर्णन किया जाता है, और उस सतसंग की रक्षा कुल्ल मालिक आप करते हैं। इस सबब से जो जीव कि सच्ची और निर्मल भक्ती करते हैं, उनको मदद और तरक्क़ी दिन दिन मिलती जाती है, और जो कि कपट और लपेट की भक्ती करते हैं, उनको सतसंग में बराबर ठहराने की मौज नहीं होती है, क्योंकि सतसंग को गंदला करना मंज़ूर नहीं है, लेकिन ऐसे जीवों के हिरदे में सच्चे परमार्थ का बीजा डालना मंज़ूर है, और इस वास्ते जब तक कि वे लपेट की भक्ती के आसरे सतसंग में शामिल

रहें, तब तक उनको बचन सुना कर बहुत कुछ गढ़त उनके मन और बुद्धी की की जाती है, और जो थोड़ा बहुत भी भागवान परमार्थ का है, तो जहां तक मुमकिन होता है, संत सतगुरु अपनी मेहर और दया से कपट और लपेट को हटा कर उसकी भक्ती निर्मल कर देते हैं, और फिर वह भी सच्चे और निर्मल प्रेमियों में शामिल होकर अपने घट में अभ्यास का रस और आनन्द लेकर, और निर्मल परमार्थ की क़दर और महिमा जान कर, और अपनी पिछली हालत पर शरमा कर, और पछता कर, सच्ची भक्ती में दिल और जान से क़दम रखता है, और अपने सच्चे मालिक और सतगुरु को रिझाने और अपने ऊपर मुतवज्जह करने का शौक़ दिन २ उसके दिल में बढ़ता जाता है॥

६—इस वास्ते भक्तों की चार क़िस्म मुक़र्रर करी है—(१) पहिला गुरुमुख कि जिसको सतगुरु की किसी क़दर पहिचान और परख आई, और तन मन धन से पूरी भक्ती कर रहा है, (२) दूसरा खोजी परमार्थी कि जो सच्ची और निर्मल चाह परमार्थ की लेकर सतगुरु के चरनों में आया, और सतसंग करके दिन २ अपनी समझ बूझ और प्रेम और अभ्यास को बढ़ाता जाता है, (३) तीसरा आरती जो कोई तकलीफ़

या बीमारी या किसी क़िस्म के दुख और कलेश से निहायत दुखी होकर चरनों में आया, और वास्ते दूर होने दुख के दया मांगता है, और हित चित से सतगुरु का दर्शन करता है, और बचन सुनता है, और जब मौज से उसकी तकलीफ़ या रोग दूर हो गया, तब परमार्थ की महिमा समझ कर निर्मल भक्ती करने लगा, और फिर वह भी सच्चे परमार्थियों के ग़ोल में दाख़िल हो गया, (४) चौथा स्वार्थी जो कि दुनिया के कोई मतलब या काम बनाने के इरादे से संतों के सतसंग में आया, और होशियारी से बचन सुनता रहा, और सच्चे भक्तों के साथ भक्ती के सर्व अंगों में शौक़ के साथ बर्ताव करता रहा, और जब मेहर और दया से वह काम उसका थोड़ा बहुत बन गया, तब उमंग के साथ सच्चा और निर्मल परमार्थ कमाने लगा, और दुनिया के मतलब और कामों को तुच्छ और ओछा देख कर अपनी पिछली सकाम भक्ती की हालत पर अफ़सोस करके आइंदा को निर्मल भक्ती करने लगा, और सच्चे प्रेमी और भक्तों के ग़ोल में दाख़िल हो गया ॥

७—आरती और स्वार्थी जीवों को भक्तों की ज़ैल में इस सबब से दाख़िल किया कि इन में से बाज़े

सच्ची और निर्मल भक्ती में शामिल हो जाते हैं, और वहुतेरे अपनी आसा पूरन होने पर सतसंग छोड़ कर चले जाते हैं। जो सतसंग से अलहिदा हो गये उन के भी बीजा पड़ जाता है, और कुछ अर्सा बाद इसी जनम में उनको सच्चा परमार्थी बना कर सतसंग में मिला देता है, और नहीं तो दूसरे जनम में ज़रूर सच्चे परमार्थी वन कर, और सतसंग में सतगुरु के शामिल होकर कमाई करेंगे ॥

८—जीवों को मुनासिब है कि अपने मन की हालत दरियाफ़्त करके जहां तक मुमकिन होवे सच्ची और निर्मल भक्ती कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में करें, यानी दाता से दाताही को मांगें, और दात पर सिवाय इस क़दर के कि जो वास्ते औसत दरजे के गुज़रान के ज़रूरी है ज्यादा तवज्जह न करें, तो मन और सुरत उनके निर्मल होते हुए अंतर में चरनों की तरफ़ चलेंगे, और एक दिन माया के घेर से निकल कर निर्मल चेतन्य यानी निरमाया पद में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होंगे, और जो आसा सिर्फ़ दात की रही, और वह दात माया के पदार्थ हैं, और हमेशा क़ायम नहीं रह सकते, तो जो थोड़ी वहुत दात मिली भी तो वह ठहराऊ न होगी, और न उसका भोग सदा एक रस प्राप्त

होगा, और आख़िर को नतीजा यह होगा कि जिस ने दात चाही, और दाता का निरादर किया, तो उसको न दाता मिला, और न दात का पूरा २ सुख मिला, और लपेट की भक्ती की कमाई मुफ़्त बरबाद गई ॥

९–अब समझना चाहिये कि जितने भोग मन और इन्द्रियों के हैं, वह सब जड़ और नाशमान हैं, और माया देश की रचना में शामिल हैं, फिर जो कोई उनकी प्राप्ती के लिये जतन करेगा, या तरंग उठावेगा, वह भी माया देश में रहेगा, इस सबब से देहियों के दुख सुख और जनम मरन की तकलीफ़ से उसकी रिहाई हरगिज़ नहीं होगी । इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि संसार के भोगों की चाह ज़रूरत के मुआफ़िक़ उठावें, और ज़रूरत के मुवाफ़िक़ उनकी सम्हाल और रक्षा करें, और उनकी असली हालत और कैफ़ियत को समझ कर उन में ऐसा भरोसा और चित्त का बंधन पैदा न करें, कि जिससे उन्हीं के प्राप्ती के निमित्त चाह उठाना और जतन करना फ़र्ज़ समझें, और वही आसा सतसंग में और मालिक के चरनों में हर दम पेश करें, क्योंकि जो उनके मन और बुद्धी की ऐसी हालत रही, तो उनकी सुरत माया के संग लिपटी रहेगी, और भूल और भरम दिन २ बढ़ते जावेंगे, और

परमार्थ की महिमा और उसकी क़द्र उनके चित्त में कभी नहीं समावेगी, और इस में बहुत भारी हर्ज और नुक़सान उनके परमार्थ का होगा ॥

१०-जो जीव कि इस बचन को मान कर उसके मुवाफ़िक़ काररवाई शुरू कर देंगे, तो वे अलबत्ता सच्चे परमार्थ की दौलत पावेंगे, और उन्हीं को सच्चा परमार्थी समझना चाहिये, और बाक़ी के जीव जो जगत की आसा नहीं छोड़ना चाहते हैं, और संसारी पदार्थों और भोगों में आशक्त रहते हैं, उन्हीं का नाम दुनियादार है, और जब तक वे संतों के बचन के मुवाफ़िक़ काररवाई नहीं करेंगे, तब तक वे मन और माया के जाल में फंसे रहेंगे, और उनका उद्धार नहीं होगा ॥

बचन २५

सच्चे परमार्थ की कमाई के वास्ते सच्ची और निर्मल चाह और प्यार और ख़ौफ़ ज़रूर है और जो यह बातें न होंगी तो जो कुछ काररवाई परमार्थ की की जावेगी वह कर्म में दाख़िल होगी, प्रेम और भक्ती की तरक्क़ी नहीं होगी

१-दुनिया में विचित्र रचना हर एक खान की

यानी क़िस्म २ के जीव और बनस्पती वग़ैरह को
देखकर, सोच और ग़ौर करने वाले मनुष्य को, बहुत
भारी तमाशा कुल्ल मालिक की क़ुदरत का नज़र
आवेगा, और ऐसे ही आसमानी रचना सूरज और
चांद और तारागण की, और उनका दौरा कि जो
सैकड़ों और हज़ारों बर्षों में ख़तम होता है, और
चाल जो कि क़ायदा मुक़र्ररा पर बराबर बेशुमार
बर्षों से चली आई है, और जारी रहेगी, देखकर भारी
अचरज और रोब और दबदबा कुल्ल मालिक की
महा बड़ाई और महा कारीगरी और महाशक्ती का दिल
में पैदा होगा। ऐसी भारी क़ुदरत और ताक़त और
ऐसे ऊंचे दरजे की रोशनी नज़र आवेगी, कि उसको
ज़रूर अक़ल हैरान होगी, और दृष्टी की ताक़त नहीं
और उने दरजे के नूर और रोशनी को भी बरदाश्त
कर उन में सी कैफ़ियत और हालत रंग बरंग रचना
न करें, कि दिल बहुत जोश और शौक़ के साथ
उठाना और इस क़ुदरत का तमाशा नज़दीक से नज़-
आसा सतसंग में, और रात दिन उसी की सैर करता
पेश करें, क्योंकि ऊंचे कुल्ल करतार यानी मालिक के
हालत रही, तो उनवान का बिलास और आनन्द
रहेगी, और भूल और

२—और जब ऐसा सोच और बिचार वाला मनुष्य दुनिया के सामान की नाशमानता और दूसरे हाल पर नज़र करेगा, तो उसका दिल एकाएक ख़ौफ़ लाकर ठंडा होकर भिच जावेगा, और यहां के सामान और कारख़ाना को दिल लगाने के लायक़ न देखकर खोज और तलाश इस बात की शुरू करेगा, कि उस कुल्ल मालिक का देश कहां है, और वह मालिक कैसा है, और कैसे मिले, और जनम मरन और दुख सुख के घेरे से निकलकर कैसे पार पहुंचे, और अमर और परम आनन्द देश को कैसे प्राप्त होवे ॥

३—जब ऐसा शौक़ देखने सैर मालिक की कुदरत का और भी उसके दर्शनों का, और ऐसा ख़ौफ़ इस संसार की हालत, और काररवाई दुख सुख और जनम मरन की कैफ़ियत का देखकर मन में पैदा होवे, उस को सच्चा खोज और दर्द परमार्थ का कहते हैं। ऐसे सच्चे खोजी को अवेर सबेर यानी जल्द या थोड़े अर्से के बाद ज़रूर संत सतगुरु जो कुल्ल मालिक और उसके भेद से वाक़िफ़ हैं, और नित्त उसके धाम में जाकर दर्शन का रस और आनन्द लेते हैं, मिलेंगे, और भेद रास्ते का, और जुगत चलने की बताकर, अपनी मेहर और दया से उसको सब कैफ़ियत कुदरत

की दिखलाते हुए, एक दिन निज घर में पहुंचा देंगे। जिसके दिल में ख़ौफ़ और शौक़ इस क़िस्म का जैसा कि ऊपर ज़िकर हुआ पैदा हुआ है, वही सच्चा खोज सच्चे मालिक का करेगा, और कुल्ल मालिक की दया और सतगुरु की मदद से रास्ता उसका जारी हो जावेगा ॥

४–ऐसे खोजी को जिस वक़्त संत सतगुरु भेद के बचन सुनावेंगे, और जुगत चलने की समझावेंगे, तब उस खोजी को ज़रूर अंतर और बाहर एक क़िस्म का रस और आनन्द प्राप्त होगा, और उस रस और आनन्द की चाट पाकर दिन २ वही ख़ौफ़ और शौक़ बढ़ता जावेगा, और उस खोजी से कमाई यानी अभ्यास ज़्यादा कराता जावेगा, और थोड़े अर्से में वह अभ्यासी अपनी हालत अंतर और बाहर बदलती हुई देखकर मगन होता जावेगा ॥

५–जब तक इस क़िस्म का ख़ौफ़ और शौक़ या दोनों में से एक किसी के दिल में पैदा न होगा, तब तक उसको सतसंग में रस नहीं आवेगा, और न इस का मन अभ्यास की तरफ़ तवज्जह करेगा, बल्कि इस संसार को ही अपना देश और देह ख़ाकी को अपना स्वरूप समझकर भोगों में उसका झुकाव रहेगा, और दुनिया प्यारी लगेगी, और इस सबब से देह के

सम्बन्धी दुख सुख और जनम मरन की तकलीफ़ उसको हमेशा भोगनी पड़ेगी ॥

६-अब समझना चाहिये कि यह संसार और उस के सब पदार्थ और भोग और यह देह और इंद्रियां वग़ैरः सब नाशमान हैं, यानी हमेशा इनका रंग और रूप बदलता रहता है, और इसमें दुख और क्लेश विशेष और सुख थोड़ा है, और चाहे किसी राजा और महाराजा और सेठ या साहूकार को सर्व भोग और सर्व पदार्थ इस संसार में हासिल भी हो जावें, तो भी वक़्त मौत के एक दम ज़बरदस्ती छोड़ने पड़ेंगे, और उस वक़्त भारी दुख उनके वियोग का सहना पड़ेगा, और आइन्दा करमों के मुवाफ़िक़ नीच ऊंच जोनों में भरमना और नाक़िस करनी का फल भोगना पड़ेगा, और वहां ऐसी हालत में कोई उसका सहाई और मददगार न होगा ॥

७-इस वास्ते कुल्ल जीवों को चाहे औरत होवे या मर्द मुनासिब और लाज़िम है कि थोड़ा बहुत ख़ौफ़ और शौक़ कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों का अपने जीव के कल्यान के निमित्त अपने दिल में पैदा करें, और संत मत के मुवाफ़िक़ प्यार और डर के साथ थोड़ी बहुत काररवाई सुरत और मन को

आकाश में और उसके परे चढ़ाने की करें, इससे उन जीवों पर सच्चे और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया आवेगी, और आहिस्ता २ उनके जीव का कारज बनना शुरू हो जावेगा, और एक दिन धुर-धाम में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त हो जायंगे॥

८—जिस किसी के मन में थोड़ा भी प्रेम और भाव सतगुरु और मालिक के चरनों में आवेगा, तो सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल उसको आहिस्ता २ अपनी दया से बढ़ाते जावेंगे, और जब वह प्रेम और भक्ती गहरे हो जावेंगे, तब वह जीव विशेष दया का अधिकारी होकर रफ़्ता २ एक दिन परम पद में पहुंच जावेगा ॥

९—ऐसा प्यार और भाव और ख़ौफ़ कुल्ल मालिक और सतगुरु और सतसंग की महिमा सुन कर और उस सतसंग में शामिल होकर आवेगा, क्योंकि वहां पर हर क़िस्म के बचन सुनने और समझने में आवेंगे, और उनके असर से मन और चित्त की मलीनता दूर होती जावेगी, और घट में सफ़ाई और रोशनी बढ़ती जावेगी, और ना मुनासिब जगह या पदार्थों में उसकी प्रीत दिन २ घटती जावेगी ॥

१०—जो सच्चा ख़ौफ़ या सच्चा प्रेम मालिक के चरनों

में या सतगुरु की तरफ़ दिल में नहीं पैदा हुआ है, तो न सतसंग दुरुस्ती से बनेगा और न अभ्यास में मन लगेगा, और इस वास्ते जो यह करतूत की भी जावेगी, तो वह नेम मात्र या दिखलावे के लिये या कोई और मतलब से की जावेगी, और उस में परमार्थी फ़ायदा बहुत कम मिलेगा, क्योंकि वह करम में दाख़िल होगी, भक्ती और प्रेम में नहीं शुमार हो सक्ती है ॥

११-भक्ती और प्रेम अंग के साथ जो काम किया जावे, और उसमें कोई बासना या आसा संसारी मतलब की न होवे, तो वह करतूत मालिक के दरबार में क़बूल और मंजूर होती है, और उसके एवज़ में दया और मेहर आती है, कि जो दिन २ प्रेम और भक्ती को बढ़ाती है, और संसार और उसके पदार्थों की तरफ़ से सहज में चित्त उदास होता जाता है ॥

१२-लेकिन जो करतूत परमार्थी संसारी कामना लेकर या दिखावे या नेम के तौर पर की जावे, तो उस में सुरत और मन शामिल नहीं होंगे, या यह कि वह करतूत भक्ती अंग से ख़ाली होगी, और इस वास्ते सिर्फ़ करम का फल उस में मिलेगा ॥

१३-हर एक परमार्थी को मुनासिब है कि अपनी

चाह और प्यार की जांच करता रहे, कि यह कोई संसारी मतलब के सबब से तो पैदा नहीं हुए हैं, या उसकी वजह से इन में कमी और ज्यादती तो नहीं हुई है ॥

जब कभी ऐसा शक गुज़रे, या थोड़ी बहुत मिलौनी मालूम पड़े, तो फ़ौरन अपने मन की सफ़ाई करे, यानी संसारी अंग को परमार्थ की चाह और प्यार से निकाल देवे, नहीं तो उसका परमार्थ गदला रहेगा, और जैसी चाहिये तरक़्क़ी नहीं होगी, यानी सच्चे मालिक और सतगुरु का ख़ास प्यार और दया उस पर नहीं आवेगी, और यह भारी नुक़सान की बात है ॥

१४–ख़ौफ़ चाहे किसी सबब से पैदा हुआ होवे, जो वह जीव को परमार्थ की तरफ़ मुतवज्जह करे, तो उस हालत में जो परमार्थी करतूत, जैसे सतसंग और सेवा और ध्यान और भजन और सुमिरन और पाठ वग़ैरः बन पड़ेगा, वह सब सच्ची भक्ती में दाख़िल होगा, यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और सतगुरु उस करतूत को सच्ची परमार्थी कार-रवाई में दाख़िल फ़रमा कर उसके एवज़ में प्रीत और प्रतीत की दात बख़्शेंगे, और यह दात जीव को सच्चा परमार्थी बनावेगी, और उसकी परमार्थी कारखाई

को दिन २ बढ़ावेगी, और कुल्ल मालिक और सतगुरु के चरनों में सच्चा प्यार और भाव उसके हिरदे में पैदा कर देगी, इस वास्ते जो ख़ौफ़ कि जीव को परमार्थ में लगावे, चाहे वह किसी क़िस्म का है, हमेशा मुबारक है, और जिस किसी के दिल में वह पैदा होवे, वही बड़भागी जीव है, और उसी का परमार्थी कारज एक दिन दुरुस्त बन जावेगा ॥

१५–यह कड़ी इस जगह मुनासिब और ज़रूर मालूम होती है–

"डर करनी डर परम गुरु, डर पारस डर सार ।
डरत रहे सो ऊबरे, ग़ाफ़िल खाई मार" ॥

इस कड़ी के अर्थ यह हैं कि डर जिस किसी के दिल में आया वह करनी का फल देगा, यानी ज़रूर जीव से परमार्थी करनी करावेगा, और नाक़िस कामों से बचावेगा । इस वास्ते वह डर ऐन करनी रूप है, और वही डर गुरु स्वरूप है कि हिरदे में जीव के बैठ कर उससे भलाई और बुराई का तमीज़ कराके, भलाई के कामों में लगावेगा, और कुल्ल मालिक के चरनों में दिलोजान से सेवा करावेगा, और दिन २ प्यार और भाव पैदा करके बढ़ावेगा, और फिर वही डर हिरदे की सफ़ाई करता हुआ उसको लोहे से कंचन

बनावेगा, और फिर वही डर सार यानी कुल्ल का खुलासा और जौहर है--जिसके हिरदे में वह बैठा, उसको सर्ब अंग से निर्मल करके, जौहर कुल्ल से मिला देगा ॥

जिस किसी के दिल में ऐसा डर पैदा हुआ वही माया के घेर के पार जावेगा, और उसी का सच्चा उबार समझना चाहिये, कि निर्मल चेतन्य, यानी निरमाया देश में पहुंच कर, अपने सच्चे माता पिता कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर परम आनंद को प्राप्त होगा ॥

और जिस किसी के दिल में किसी क़िस्म का ख़ौफ़ नहीं पैदा हुआ, वह बेहोश और ग़ाफ़िल रहेगा, यानी जो करतूत कि अपने फ़ायदे के वास्ते उसको करना चाहिये वह नहीं करेगा, और इस सबब से नुक़सान उठावेगा, और अपने पाप करमों का फल दंड भोगेगा ॥

१६--ख़ौफ़ में भी दरजे हैं--पहिले बालकपन में माता पिता का डर जीव को फ़ायदे की तरफ़ मुतवज्जह करेगा, और नुक़सान से बचावेगा, इससे ज्यादा उमर में उस्ताद का डर जीव के हक़ में मुफ़ीद होगा, यानी उसकी बुद्धी को रोशन करेगा,

और समझ बूझ और नेक और बद की तमीज़ को जगावेगा, और जब विद्या और बुद्धी हासिल हो गई, तब हाकिम और बिरादरी का डर जीव को संसार और ब्यौहार में सीधे रास्ते पर चलावेगा, यानी वाजिबी तौर पर काररवाई करना सिखावेगा, और जब दुनिया का हाल और उसकी नापायदारी (नाशमानता) और पदार्थों की तुच्छ कैफ़ियत की थोड़ी बहुत ख़बर हुई, तब सतगुरु का उपदेश और ख़ौफ़ जीव को परमार्थ की तरफ़ लगावेगा, और संसार और भोगों की तरफ़ से हटाता जावेगा, और जब थोड़ा बहुत अंतरी अभ्यास बन आवेगा, तब कुल्ल मालिक का ख़ौफ़ इसकी तवज्जह को चरनों की तरफ़ खींचेगा, और संसार और उसके सामान की तरफ़ से (जो कि एक दिन ज़रूर छोड़ना पड़ेगा) इसके चित्त को उदासीन और बेपरवाह कर देगा, और तब इस का परमार्थी काम सब तरह दुरुस्त हो जावेगा, और तब वह कुल्ल से सच्चा निडर हो जावेगा ॥

१७—जो कोई दरजे बदरजे इन ख़ौफ़ों में जिन का ज़िकर ऊपर हुआ नहीं बरता, और जिसकी चाल ढाल निडर के तौर पर रही है, वह गुरू और मालिक का भी ख़ौफ़ नहीं मानेगा, और इन दोनों

जगह निडरताई के साथ बर्ताव करने में उसका सरासर नुक़सान होगा, नहीं तो जिस किसी के दिल में सच्चा ख़ौफ़ गुरू और मालिक का आया, वह उनकी दया के प्रताप से एक दिन तमाम रचना से निडर हो जावेगा ॥

मा बाप और उस्ताद और हाकिम और बिरादरी का डर संसारी है, और दुनिया की काररवाई दुरुस्ती के साथ कराने के वास्ते ज़रूर दरकार है, लेकिन परमार्थ में सिर्फ़ गुरू और मालिक का डर काफ़ी है, वह सब काम बना देगा, और उसके मुक़ाबले में संसारी डर को पेश करना, या उसके सबब से परमार्थी काररवाई में, या गुरू और मालिक के हुक्म के बर्ताव में, कसर करना, या उनको छोड़ देना, निहायत ना मुनासिब और ना दुरुस्त है, और ऐसे संसारी डर के मानने वाले का भारी नुक़सान परमार्थ का होता है । इस जगह पर इस क़दर बयान करना ज़रूर है, कि इस बचन में जहां कहीं लफ़्ज़ परमार्थ और गुरू का आया है, वहां मतलब सच्चे और पूरे परमार्थ और सच्चे और पूरे गुरू से है, और ऐसा परमार्थ और ऐसे गुरू सिर्फ़ संतमत में, कि वही कुल्ल रचना में सत्त मत है, मिल सकते हैं ॥

बचन २६

सतसंग अंतर और बाहर सम्हालकर करना चाहिये, तब फल और फ़ायदा उसका प्रघट होगा

१–सच्चे परमार्थी को मुनासिब है कि सतसंग होशियारी से करे, तब उसका फ़ायदा उसको प्रत्यक्ष मालूम होगा ॥

२–जब बाहर के सतसंग में शामिल होवे तब चाहिये कि अपने नेत्रों से गुरू या साध के नेत्रों को (जो सतसंग के अधिष्ठाता यानी अफ़सर हैं) दृष्ट जोड़ कर ताकता रहे, चाहे वे उसकी तरफ़ देखें या नहीं, और फिर चंद मिनट बाद मध्य में दोनों आंखों के यानी तीसरे तिल का ख्याल करके दृष्ट को जमावे, जो इस तरह अभ्यास करने में आंखें पूरी २ खुली न रहें तो कुछ हर्ज नहीं ॥

३–इस तरह दृष्ट जोड़ के बैठने में दर्शन का भी रस आवेगा, और बचन भी कुछ कैफ़ियत के साथ सुनने में आवेंगे, यानी उनके अर्थ साफ़ और गहरे समझ में आवेंगे, या यह कि उनके अर्थ का असर दिल पर ज्यादा होगा, और वह प्यारे लगेंगे ॥

४—इस तरह की बैठक, ध्यान के अभ्यास में शुमार की जाती है, और इस क़दर एहतियात चाहिये कि कोई दूसरा ख्याल किसी क़िस्म का दिल में न आवे, बल्कि जैसा कि बचन सुनता जावे, उसको उसी वक्त अपने ऊपर घटा कर अपने मन की हालत की जांच करता जावे, यानी बिचार करे कि कौन अंग ना मुनासिब उसके मन में धरा है या बर्ताव में आता है, और उसका नुक़सान उसी वक्त समझ कर, उसको सच्चे मन से त्याग करे, और जो अंग बेहतर और माकूल बचनों से मालूम होवे, उसकी बड़ाई अपने अंतर में उसी वक्त तौल कर सच्ची ख्वाहिश के साथ ग्रहन करता जावे ॥

५—इस तौर पर इस अभ्यास की हालत में नाक़िस अंग के छोड़ने की ख्वाहिश और माकूल यानी बेहतर अंग के ग्रहन करने की सच्ची चाह का असर दिल पर बहुत मज़बूत होता है पर शर्त यह है कि इसी तरह पर मनन और बिचार बचनों का जो वक्त सतसंग के सुनने में आवें, हर रोज़ जारी रहे, तो कोई दिन में बहुत सफ़ाई मन की हासिल होवेगी, और अपने हाल की निरख और परख की ताक़त बचन सुनते २ आती जावेगी, और उसका यह फ़ायदा होगा

कि सिवाय सतसंग के और वक़्तों में भी अपने मन के चाल की ख़बर और उसकी सम्हाल थोड़ी बहुत होती रहेगी, और रफ़्ता २ इस अभ्यास से होशियारी और सम्हाल की ताक़त बढ़ती जावेगी, और ग़फ़लत और भूल घटती जावेगी ॥

६–जब कोई दिन इस पर बाहर का सतसंग जारी रहेगा, तो अंतर का सतसंग भी किसी क़दर दुरुस्त हो जावेगा, यानी ध्यान के वक़्त मन और सुरत चंचलता छोड़कर स्वरूप और नाम में, और वक़्त भजन के शब्द में एकाग्र होकर थोड़ी देर को जमने लगेंगे, और जब कोई गुनावन या किसी क़िस्म के ख़्यालात पैदा होंगे, तो अभ्यासी को जल्द उनकी ख़बर हो जावेगी, और अपनी सम्हाल थोड़ी सी कोशिश से कर सकेगा, यानी उन ख़्यालों को आसानी से दूर कर सकेगा, इसी तरह रफ़्ता २ ध्यान और भजन का रस थोड़ा २ मिलना शुरू हो जावेगा, और आइंदा को तरक़्क़ी होती जावेगी ॥

७–और जो कि ऐसे अभ्यासी को घंटे दो घंटे बाहर के सतसंग में बैठ कर, मन और सुरत के सिमटाव और जमाव का रस लेने की आदत हो जावेगी, तो जब सतसंग से अलहदा होगा तब उसी वक़्त जो वह

ध्यान और भजन करेगा, तो ज़रूर उसके मन और सुरत आदत के मुवाफ़िक़ अंतर में थोड़े बहुत निश्चल होकर अभ्यास का रस हासिल करेंगे, और यही अभ्यास और आदत रस और आनंद के आसरे आहिस्ता २ बढ़ती जावेगी, और दिन २ हालत भी बदलती जावेगी ॥

८—मालूम होवे कि अंतर के सतसंग में अभ्यासी को इस क़दर एहतियात और होशियारी दरकार है, कि भजन के वक़्त मन और सुरत जिस क़दर मुमकिन होवे धुन का रस लेते रहें, और ध्यान के वक़्त नाम और स्वरूप में स्थिर होकर सिमट जावें, और थोड़ा बहुत सिमटाव और जमाव का रस पावें, लेकिन यह हालत अंतर के सतसंग की उस वक़्त हासिल होगी, कि जब अभ्यासी गुनावन और ख़्यालों को छोड़ कर धुन और रूप में लगेगा ॥

जो शौक़ तेज़ है और भोगों की तरफ़ से किसी क़दर चित्त में वैराग है, तो मन और सुरत जल्द सिमट कर काम में लग जावेंगे, नहीं तो बाहर का सतसंग जो इस तरकीब से कि जो ऊपर लिखी गई किया जावेगा, उससे बहुत मदद अंतर के सतसंग में वास्ते एकाग्र करने मन और सुरत के मिलेगी,

यानी अंतर का सतसंग या अभ्यास किसी क़दर दुरुस्ती से बन पड़ेगा, और आइंदा आहिस्ता २ तरक़्क़ी भी होती जावेगी ॥

९--और जो सच्चे परमार्थी जीव शौक़ भी तेज़ रखते हैं, और किसी क़दर दुनिया से वैराग भी उनके चित्त में है, और मौक़ा पाकर बाहर का सतसंग ऊपर की लिखी हुई तरकीब के मुवाफ़िक़ करेंगे, तो उनको दोनों सतसंग में यानी अंतर और बाहर ज़्यादा रस मिलेगा, और मन और सुरत उनके जल्द उमंग के साथ अभ्यास में लगेंगे, और तरक़्क़ी भी ज़्यादा होती जावेगी ॥

१०-ऊपर की तरकीब के मुवाफ़िक़ जो कोई परमार्थी जीव सतसंग करेंगे, उनकी हालत ज़रूर बदलती जावेगी, यानी उन पर सतसंग का रंग चढ़ता जावेगा, और नतीजा उसका यह होगा कि दिन २ सतगुरु और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी, और दुनिया और उसके सामान और उसका कारख़ाना दिन २ उनकी नज़र में फीका पड़ता जावेगा, और उस तरफ़ से तवज्जह हटती जावेगी, यानी ज़रूरत के मुवाफ़िक़ कि जिसमें दुनिया में गुज़ारा औसत

दरजे पर हो जावे, तवज्जह दुनिया के कारोबार में रहेगी, और फ़ज़ूल चाह और फ़ज़ूल कोशिश उसके कामों में दूर हो जावेगी ॥

११–इसी तरह दिन २ ऐसे परमार्थियों की मालिक के चरनों में नज़दीकी और मन और इन्द्रियों के घाट से (यानी दुनिया से) अंतर में किसी क़दर दूरी होती जावेगी ॥

यही मतलब सतसंग या परमार्थ की कमाई का है, और सच्चे परमार्थियों को यह कैफ़ियत सच्चे मालिक की दया से ज़रूर हासिल होती जावेगी–इसकी परख वे आप बख़ूबी कर सकेंगे, और कुछ थोड़ी सी उन लोगों को भी जो रात दिन शुरू से उनके संग रहते हैं ख़बर पड़ेगी ॥

मालिक के चरनों में प्रेम की तरक़्क़ी का हाल निकटवर्ती लोगों को ठीक नहीं मालूम हो सकेगा, लेकिन दुनिया और उनकी तरफ़ से अभ्यासी के चित्त का हटाव का हाल, उनको थोड़ा बहुत ज़रूर मालूम हो जावेगा ॥

जो वे भी थोड़े बहुत परमार्थी हैं, तो ऐसी हालत अपने प्यारे रिश्तेदार की देखकर खुश होंगे, और उस में प्यार और भाव ज़्यादा लावेंगे, और जो वे संसारी

हैं तो ऐसी हालत देखकर, अपने रिश्तेदार से नाराज़ होवेंगे, और उसके परमार्थ की शिकायत करेंगे, और आप उसके साथी न होंगे ॥

१२–जो लोग कि सतसंग करते हैं पर न तो दर्शन में चित्त लगाते हैं और न बचन चेतकर सुनते हैं, उनकी हालत बहुत सुस्ती के साथ देर में बदलेगी– जब २ कोई बचन सुनने में आजावेगा, और उसका थोड़ा बहुत असर दिल पर होवेगा, तो थोड़े अर्से के लिये तवज्जह और मिहनत के साथ अभ्यास करेंगे, और कुछ फ़ायदा भी हासिल होगा, लेकिन जब उस बचन का असर कम होजावेगा, तब करनी में भी ढीले होते जावेंगे, फिर कोई दिन बाद जब बसबब हुजूम (भीड़) और शामिल होने बड़े आदमियों के, सतसंग में कोई बचन चित्त देकर सुनेंगे, फिर शौक़ के साथ करनी शुरू करेंगे, और थोड़े दिन बाद फिर ढीले हो जावेंगे, लेकिन जो मौज से सतसंग कभी २ ज़ोर शोर के साथ होता रहा, तो यह लोग भी होशियार होते रहेंगे, और रफ़्ता २ बराबर काररवाई दुरुस्ती से करने लगेंगे, और तब उनकी भी हालत बदल जावेगी, यानी परमार्थ का रंग चढ़ता जावेगा ॥

१३–कोई २ ऐसे जीव भी सतसंग में आते हैं कि

वे बचनों के वक़्त या तो गुनावन करते रहते हैं, या दूसरे से आहिस्ता २ बातें करते रहते हैं, और जो यह काम न करें तो सो जाते हैं, इन जीवों की हालत ज्यादा देर के बाद बदलेगी, यानी पहिले उनका चित्त कोई दिन में दर्शन और वचन में लगना शुरू होगा, और फिर आहिस्ता २ शौक़ और प्रेम बढ़ता जावेगा, और करनी दुरुस्त होती जावेगी, तब हालत भी सच्ची बदलती जावेगी ॥

१४–खुलासा यह है कि जब तक जीव सच्चा होकर, तवज्जह के साथ सतसंग नहीं करेगा, तब तक उसके मन और बुद्धी और इन्द्रियों की गढ़त दुरुस्ती से नहीं होगी, और न अंतर सतसंग यानी अभ्यास उससे दुरुस्ती से बन पड़ेगा, और इस वास्ते उसकी पुरानी चाल ढाल भी नहीं बदलेगी, लेकिन इस क़िस्म के जीव भी कि जो हर रोज़ सतसंग में नेम से शामिल होते हैं, पर अभी पूरी तवज्जह के साथ बचन नहीं सुनते दुनियादारों से बेहतर हैं कि यह रफ़्ता २ एक दिन प्रेमी हो जावेंगे, और फिर दुरुस्ती के साथ करनी करके, अपना काम सतगुरु राधास्वामी दयाल की दया से बनवा लेंगे, और संसारी लोग जो कभी सतसंग का दर्शन भी नहीं करते, दिन २ माया के चक्कर में फं[illegible] प्यार और [illegible] दरजों में गिरते चले जावेंगे ॥

१५--सच्चे और पूरे गुरू यानी संत सतगुरु और उनके सतसंग की महिमा बहुत भारी है, जो कोई थोड़े बहुत भाव के साथ कोई दिन भी उनके सतसंग में जैसे तैसे शामिल होगा उसके भी उद्धार का रास्ता दया से जारी हो जावेगा, बल्कि जो कोई भाव से एक दिन भी सतसंग में शामिल होकर बचन सुनेगा, उसके भी किसी क़दर करम कटेंगे, और सच्चे परमार्थ का बीजा उसके हिरदे में बो दिया जावेगा, और वह आइन्दा किसी न किसी वक्त़ पर फले फूलेगा, यानी संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होकर भक्ती करके अपने जीव का कारज करा लेगा॥

१६--इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि जहां कहीं संत सतगुरु का सतसंग जारी होवे, वहां जैसे बने तैसे शामिल होकर अपने परमार्थ का भाग बढ़ावें। जो जीव कि थोड़े बहुत संसकारी या अधिकारी परमार्थ के होंगे, उनको फ़ौरन असर उसका मालूम होगा, और शौक़ के साथ भक्ती में शामिल हो जावेंगे, और जो अधिकारी नहीं हैं, उनके हिरदे में संत सतगुरु अपनी दया से बीजा परमार्थ का डाल देंगे, कि वह आइन्दा उन जीवों को भक्ती में शामिल करके उनका कारज बनावेंगे॥

१७--संतों की महिमा और दया का क्या बर्णन किया जावे, कि अपने निंदकों को भी दया से भक्ती दान बख़्शते हैं, और अबेर सबेर यानी इसी जन्म में ख़्वाह आइन्दा के जनम में उनको भी सतसंग में शामिल करके और भक्ती और अभ्यास कराके मुक्ति पद या परमधाम में पहुंचाते हैं ॥

१८--सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की ऐसी दया है, कि जो कोई सच्चे मन से उनकी सरन में आया, और भक्ती और अभ्यास सुरत शब्द मारग का करने लगा, और प्रीत और प्रतीत चरनों में दिन २ बढ़ाता जाता है, तो सिर्फ़ उसी का नहीं बल्कि उसके निज रिश्तेदार और प्यार वालों का जैसे माता, पिता, स्त्री, पुत्र, भाई और भतीजों का भी उद्धार अपनी दया से फ़रमावें--जो इनमें से कोई भक्ती में शामिल हो गया तो वह अपने वास्ते आप कमाई करने लगा, और ख़ास दया का अधिकारी हो गया, और जो कोई शामिल नहीं हुआ, तो उसके ऊपर राधास्वामी दयाल इस वजह करके कि वह उनके सच्चे प्रेमी भक्त की सेवा और दर्शन करता रहा, और कभी २ परमार्थी काम में मदद भी देता रहा है, अपनी तरफ़ से दया करके उसके उद्धार का रास्ता जारी फ़रमावेंगे ॥

१९--जिस क़दर जिस किसी की राधास्वामी दयाल के चरनों में भक्ती ज़बर है, और सरन पक्की और मज़बूत है, उसी क़दर उसके कुटुम्बी और रिश्तेदारों पर बल्कि नौकरों पर भी दरजे बदरजे दया वास्ते उनके उद्धार के राधास्वामी दयाल फ़रमावेंगे ॥

२०--और जिस किसी की भक्ती बहुत ज़बर है, उसके दूर तक के रिश्तेदारों पर भी दया का असर वास्ते उनके जीव के सुख और कल्यान के पहुंचेगा, और जो कोई उसके ख़ास रिश्तेदारों में से जैसे माता, पिता, स्त्री, पुत्र, बहन, भाई और दादा और नाना, नानी और सास ससुर में किसी का चोला भी छूट गया है, तो जहां कहीं उसकी सुरत होगी, वहीं उसको दया का असर और फ़ायदा पहुंचेगा ॥

२१--और जिस किसी की भक्ती सर्व अंग करके परी और निहायत ज़बर है, तो आप तरन तारन हो जावेगा, यानी उसको साध या संत गती जीते जी हासिल हो जावेगी, और वह आप राधास्वामी दयाल की दया से जिस क़दर जीवों को वह चाहेगा, उनका उद्धार कर देगा ॥

बचन २७

जीवों के वास्ते बचाव तकलीफ़ और दुक्खों से और प्राप्ती सच्चे और अमर सुख और आनन्द के अपने घट में संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ स्वरूप का ध्यान और शब्द के सुनने का थोड़ा बहुत अभ्यास ज़रूर करना चाहिये ॥

१—कुल्ल जीव सुख और आराम चाहते हैं, और दुक्खों से डरते और घबराते हैं, और जो कोई किसी क़िस्म का जतन वास्ते प्राप्ती सुख और घटने और दूर होने दुख के बताता है, तो उसको ख़ुशी से करने को तैयार होते हैं ॥

२—दुनिया में अनेक तरह के सुख हैं, लेकिन वह या तो इन्द्रियों के भोग हैं, या मन को ताक़त और ख़ुशी देने वाले हैं, जैसे धन और मान बड़ाई और हकूमत वग़ैरह, और यह सब नाशमान हैं, और हमेशा कम और ज़्यादा होते रहते हैं, और जीव का इनमें से कोई संगी और सच्चा मददगार नहीं है, यानी तकलीफ़ और भारी दुख और कलेश और मौत के वक़्त में, इन से बहुत कम मदद और सहारा

मिलता है, पर जीव मन और इंद्रियों के रस लेने में ऐसे ग़ाफ़िल हो जाते हैं, कि उन सुक्खों को अपनी ज़िंदगी भर का संगी और आराम देनेवाला समझ कर सच्चे और अविनाशी सुख की तलाश और क़दर नहीं करते, और बारम्बार धोखा खाकर आख़िर को हाथ मलते और पछताते रह जाते हैं ॥

३–इसी तरह दुख और कलेश और मुसीबत भी तरह २ की जीवों को सताती है, किसी किसी का थोड़ा बहुत उपाव या इलाज बन जाता है, पर बहुत से दुख और आफ़तें ऐसी हैं, कि उसमें कोई जतन या तदबीर काम नहीं देती, और आदमी निहायत लाचार होकर उनको भोगता है, और बे इख़्तियारी में रोता और चिल्लाता है ॥

४--संत दयाल ऐसी हालत जीवों की देख कर निहायत दया करके समझाते हैं, कि यह दुनिया धोखे की जगह है, और यहां के भोग और सुख तुच्छ और नाशमान, और जीव को लुभा कर जड़ पदार्थों में फंसाने वाले हैं, इन से होशियार रह कर सच्चे और परम आनन्द का खोज करके, उसके प्राप्ती के निमित्त थोड़ा बहुत जतन इस ज़िन्दगी में अपने जीव के सच्चे कल्यान के वास्ते ज़रूर करना चाहिये, उस

का फ़ायदा इसी ज़िंदगी में इस क़दर मालूम हो सकता है, कि जब वह आनन्द (जो कि घट घट में भर पूर है) अपने इख़्तियार से कोई दिन के अभ्यास के बाद एक छिन में अपने अंतर में मिल सकता है, तो उसके रूबरू कुल्ल भोग संसार के (जो कि मन और इंद्रियों के बिषय यानी रस देने वाले हैं) किसी क़दर फीके और तुच्छ नज़र आवेंगे, और तबीयत उनकी तरफ़ तवज्जह कम करेगी, और दिन २ उस सच्चे और परम आनन्द के बढ़ाने के वास्ते ज्यादा कोशिश करेगी, और भारी तकलीफ़ और दुख के वक्त वह आनन्द बहुत सहारा देगा, और मौत के वक्त ज्यादा से ज्यादा या पूरा हासिल होकर जीव को निहाल कर देगा, कि उसकी बराबर कोई ख़ुशी इस दुनिया में नहीं है और न हो सकती है ॥

५--इस आनन्द का भंडार हर एक जीव के घट में मौजूद है, और उसकी धारा भी पिंड की तरफ़ जारी है, पर जीव उससे बिलकुल बे ख़बर हैं, इस सबब से वह निर्मल और गहरा रस नहीं ले सकते, और तुच्छ और नाशमान रस के वास्ते जो कि भोगों और अनेक जड़ पदार्थों से इन्द्री द्वारे किसी क़दर हासिल होता है, निहायत मिहनत और कोशिश करते हैं ॥

६—ज़ाहिर है कि जिस क़दर सुख और रस और आनंद जीव को हासिल होता है, वह असल में सुरत चेतन्य की धार में है, तो उस भंडार में जहां से यह धारें निकली हैं, किस क़दर गहरा और विशेष रस और आनन्द होना चाहिये, और उसके थोड़ा बहुत हासिल करने के वास्ते, हर एक जीव को औरत होवे या मर्द किसी क़दर तवज्जह और कोशिश करना ज़रूर और उसके हक़्क़ में मुफ़ीद मालूम होता है ॥

७—और जो कोई अपने घट में वास्ते प्राप्ती परम आनंद के जतन नहीं करेंगे या संतों के बचन की प्रतीत न करके, सारी तवज्जह अपनी संसार के सुख और आराम के प्राप्ती में लगावेंगे, तो उन जीवों को भारी तकलीफ़ और मौत के वक़्त अपनी काररवाई की ख़बर पड़ेगी कि कैसा धोखा खाया, और जम दूतों के हाथ से अनेक तरह के कष्ट और कलेश सहने पड़ेंगे ॥

८—ऐसी भारी भूल इस दुनिया में पड़ी हुई है कि जीव इसी जिन्दगी में अपने प्यारों और भरोसे वालों के हाथ से धोखा खाते हैं, और ख़ूब उनको जांच हो जाती है, कि कोई उनका सच्चा मददगार नहीं है, कि जो आराम और तकलीफ़ के वक़्त में एकसां

बरते, फिर भी उनका झुकाव और खिंचाव उन्हीं लोगों की तरफ़ रहता है, और इस सबब से बार-म्बार अपनी कारवाई का फल भोगते हैं, और उस में दुखी सुखी होते हैं, और अपनी कारवाई पर पछताते हैं और अफ़सोस करते हैं ॥

९-जो किसी को अंतर में विशेष सुख और आनंद के मौजूद होने का यक़ीन न आवे, और उसके लिये जतन करने को मन नहीं चाहे, तो सिर्फ़ इसी मतलब से कि दुख और कलेश के वक़्त सहारा और मदद मिले, और अख़ीर यानी मौत के वक़्त की तकलीफ़ न ब्यापे, वह जुगत कि जो संतों ने वास्ते छुड़ाने संसारी घाट के, और चढ़ाने मन और सुरत के ऊंचे से ऊंचे देश, यानी कुल्ल मालिक के चरनों की तरफ़ की बताई है, उसका अभ्यास ख़ौफ़ और शौक़ के साथ ज़रूर करे, क्योंकि दुक्खों से सब जीव डरते हैं, और जहां तक मुमकिन होवे उनसे बचना या उनको दूर हटाना चाहते हैं ॥

जो इस तरह कारवाई अंतर अभ्यास की थोड़ी बहुत बन पड़ेगी, तो फिर सुरत और मन अभ्यास करते २ अन्तर में रस और आनंद ज़रूर पावेंगे, और उस आनंद की थोड़ी बहुत चाट पैदा होकर दिन २

करनी ज़्यादा कराती जावेगी, और ज़्यादा से ज़्यादा आनंद पाकर पूरी पूरी प्रतीत संतों के बचन की आजावेगी, तब वह जीव अपने भागों को सराहेंगे, और संतों की दया और मेहर का शुकराना करेंगे ॥

१०–संतों ने जो जुगत कि बताई है वह यह है, कि शब्द यानी आवाज़ को (जो घट २ में भरपूर है) सुनते हुए, और स्वरूप का ध्यान करते हुए, अपने सुरत और मन को निज घट में, ऊपर की तरफ़ थोड़ा बहुत चढ़ाना चाहिये, और यह अभ्यास नित्त जारी रखना चाहिये । इसकी बरकत से दिन २ सफ़ाई होती जावेगी, और मालिक के चरनों में प्रीति बढ़ती जावेगी, और उसके साथही आनंद भी दिन २ ज़्यादा मिलता जावेगा, और वह आनंद सुरत को एक दिन उसके निज घर में पहुंचा कर छोड़ेगा, और वहां पहुंच कर सच्चे मालिक का जो कुल्ल रचना का माता पिता है दर्शन पावेगा, और महा आनंद को प्राप्त होवेगा, और तब अपनी नर देही और संतों की भारी दया की महिमा जान पड़ेगी ॥

११–धुर मुक़ाम या दयाल देश में पहुंचना तो आहिस्ता २ ज़्यादा अर्से में होगा, पर जिस क़दर जिस किसी के मन और सुरत अंतर में चढ़ेंगे, उसी

क़दर वह संसार और उसके सामान से अलहदा होता जावेगा, और मालिक के से ख़वास उसमें आते जावेंगे, और रस और आनंद मिलता जावेगा, और चिंता फ़िकर और ख़ौफ़ और तकलीफ़ और दुख वग़ैरह का असर, दिन २ कम और दूर होता जावेगा, और एक दिन सच्चा निरभय और अचिन्त कर देगा, कि जहां संसारी दुख सुख का असर नहीं पहुंचता है ॥

१२-यह संतों का अभ्यास इस क़िस्म का है, कि जब जो कोई संसार के दुक्खों से डर कर अपने अंतर में ऊपर की तरफ़ को चलेगा, तो फ़ौरन उसको थोड़ा बहुत सहारा मिलेगा, यानी जैसे कि बालक डर कर या कोई चोट खाकर, अपने माता पिता की गोद की तरफ़ भागता है, और वहां पहुंचते ही उसको सच्ची पनाह और सहारा मिल जाता है, इसी तरह कुल्ल मालिक के चरनों से, अंतर में सुरत मिल कर, ताक़त और रस और सहारा और पनाह पा सकती है। इस वास्ते हर एक जीव को अपने आराम और कल्यान के वास्ते मुनासिब और लाज़िम है, कि इस आसरे और मदद के ठिकाने को, अपने अंतर में नित्त खोजते और उसका रास्ता काटते रहें, तो एक दिन संसार की तकलीफ़ और दुक्खों और जनम

मरन की आफ़त से बचकर परम और अमर आनंद को प्राप्त होंगे ॥

१३-जो किसी हालत में मन और सुरत शब्द में दुरुस्ती से न लग सकें, तो चित्त से स्वरूप का ध्यान ऊंचे अस्थान पर करना चाहिये, या अपने ख्याल को उस मुक़ाम पर पहुंचा कर जमाना चाहिये, इस तरह तवज्ज़ह ऊंचे की तरफ़ करने से ज़रूर थोड़ा बहुत सहारा अंतर में दया का मिलेगा ॥

बचन २८

साध के संग की महिमा और उसका फ़ायदा, जो सच्ची दीनता और प्रेम के साथ संग किया जावे

१-ऐसा कहा है कि साध के संग से कोटि जनम के पाप एक छिन में कट जाते हैं, यह बात ज़ाहिरा मुश्किल मालूम होती है, लेकिन जब ग़ौर किया जावे तब मालूम होवेगा, कि यह कुछ अचरज की बात नहीं है, क्योंकि साध ने साधना करके परम तत्त को जाना और पहिचाना और पाया है, और उसके आनंद में मगन रहता है, जो कोई भाव के साथ उसके सन्मुख जावे, तो उसको दया करके थोड़ी चर्चा में वह जुगत समझा देता है, कि जिससे कोई दिन के

अभ्यास में जीव का सच्चा कल्यान होता हुआ मालूम पड़ता है, फिर जो यह जुगत किसी अधि-कारी के अच्छी तरह समझ में आगई, और वह उसकी कमाई करने को तैयार हो गया, तो करोड़ों जनम के पाप जिनके सबब से वह संसार में बार-म्बार देह धरता और भरमता रहा है, उसी वक़्त नष्ट हो गये, यानी जब से कि साध के बचन का निश्चय करके अभ्यास शुरू कर दिया, उसी वक़्त से चौरासी का फेरा मिट गया, और दिन २ घर जाने का रास्ता खुलता और साफ़ होता चला—इस तरह वह अभ्यास उस जीव के कुल्ल पाप करमों के नष्ट होने का कारन हुआ—ऐसी महिमा साध के संग की है॥

२—साध उन्हीं का नाम है जिन्हों ने साधना करके अपना काम पूरा बनाया है—जो कोई सच्ची दीनता और प्रेम के साथ उनका संग करे, उसको वह ऐसी सहज जुगत बता सकते हैं, कि जिसकी कमाई से वह भी एक दिन उनके मुवाफ़िक़ साध गती को प्राप्त हो जावे, पर संग निष्कपट और हित के साथ होना चाहिये, यानी जैसे साध हिदायत करें उसी के मुवाफ़िक़ काररवाई की जावे, और शक और सन्देह और बेपरतीती को दख़ल न दिया जावे,

जैसा सोना या चांदी या रांगा पिघला कर जिस सांचे में डाला जावे, वह उसी का रूप बन जाता है, इसी तरह जो जीव सच्ची दीनता और प्रेम के साथ निष्कपट होकर साध का संग करे, वह भी उनकी दया से साध बन जाता है ॥

३–सच्ची दीनता से मतलब यह है कि खोजी दर्दी सच्चे परमार्थ का ऐसा ग़रज़मंद होवे, जैसे बीमार हकीम और दवाई का मुहताज है, जैसे हकीम कहता है उसी मुवाफ़िक़ दवा खाता पीता है और परहेज़ करता है, या जैसे नौकरी का चाहने वाला हाकिम के सामने सच्चा दीन अधीन होता है, यानी जो हाक़िम हुक्म करे, और काम सुपुर्द करे, उसको दिल और जान से दुरुस्ती के साथ अंजाम देता है, और हाकिम को राज़ी करने के वास्ते, अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ पूरी मिहनत और कोशिश करता है, ऐसी सच्ची ग़रज़ जिस किसी के मन में पैदा हुई, वह सच्चे और पूरे परमार्थ के हासिल करने के लिये सर्ब अंग से साध या संत के वचन को सुनेगा, और मानेगा, और तन मन से उसकी काररवाई यानी अभ्यास दुरुस्ती से करेगा, तब उनकी मेहर और दया से उसकी ताक़त बढ़ती जावेगी, और दिन २ उसका

काम बनता जावेगा, और वे उसको एक दिन अपने मुवाफ़िक़ बना लेवेंगे ॥

४-इस वास्ते हर एक जीव को जिसके मन में सच्ची और पूरी चाह अपने जीव के कल्यान की पैदा हुई है, मुनासिब है, कि पहिले सच्चे और पूरे संत या साध का खोज करके, उनके सनमुख प्रेम भाव और दीनता के साथ जावे, और चित्त देकर उनके बचन सुने, और सिर्फ़ बचन से उनकी परख करे, यानी जो उनके दर्शन और बचन से इसके मन में सच्चे मालिक के चरनों में प्यार और भाव पैदा होवे, और संसार और उसके पदार्थों की तरफ़ से किसी क़दर नफ़रत यानी उदासीनता चित्त में आवे, और सच्चे मालिक के दर्शनों का चाव दिन दिन बढ़ता जावे, और जो जुगत कि वे बतावें, उसके अभ्यास से दिन २ मन और सुरत पिंड और संसार की तरफ़ से हट कर, ऊंचे देश की तरफ़ घट में चलते और चढ़ते जावें, और थोड़ा बहुत इस काररवाई का रस मिलता जावे, और मालिक के चरनों में अनुराग और संसार से बैराग बढ़ता जावे, तो यही निशान और सबूत इस बात का है, कि जिनके संग से ऐसी हालत पैदा हुई, वे ज़रूर सच्चे और पूरे संत या

साध हैं, और उनके संग और उनकी जुगत की कमाई से ज़रूर एक दिन काम पूरा बन जावेगा, इसी क़दर पहिचान शुरू में (जो एक दो या तीन महीने के संग से थोड़ी बहुत हासिल हो सकती है) काफ़ी है, फिर ज्यादा संग और अंतर में अभ्यास करने से यही पहिचान बढ़ती जावेगी, और उनकी गत मत और दया और मेहर की थोड़ी बहुत परख और प्रतीत होती जावेगी, और फिर यही परख और प्रतीत दिन २ बढ़ती जावेगी, और उसके साथ प्रेम भी बढ़ता जावेगा, और उनके चरनों की सरन भी पक्की जावेगी, इस तरह तरक्क़ी होते २ एक दिन काम पूरा बन जावेगा ॥

५–सच्चे परमार्थी को जो ऊपर लिखे के मुवाफ़िक़ काररवाई करता है मुनासिब है, कि अपने परमार्थी और संसारी व्योहार और चाल चलन की अच्छी तरह सम्हाल रक्खे, कि जिससे उसकी परमार्थी काररवाई और उसकी तरक्क़ी में ख़लल न पड़े, यानी परमार्थी शुभ करम की दिन २ काररवाई बढ़ती जावे, और परमार्थी अशुभ करम में ज़रूरत के मुवाफ़िक़ और मुनासिब और वाजिबी तौर पर बर्ताव करे, और व्योहारी शुभ कर्म की काररवाई जहां तक

बन सके जारी रक्खे, लेकिन अशुभ करम से बिल्कुल परहेज़ करे ॥

६–परमार्थी शुभ अशुभ करमों की तफ़सील यह है–

परमार्थी शुभ करम उसको कहते हैं, कि जिससे मन और सुरत और इंद्रियों की धार को इधर यानी बाहर और नीचे की तरफ़ से रोक कर मुवाफ़िक़ उस भेद और जुगत के जो संत सतगुरु या साधगुरू ने उपदेश किया है उलटा कर बारम्बार शब्द और स्वरूप के आसरे घट में ऊंचे मुक़ाम पर चढ़ाता और जमाता रहे, और परमार्थी अशुभ करम यह है, कि मन और सुरत और इन्द्रियों की धार नीचे की तरफ़ पिंड में और बाहर की तरफ़ दुनिया और देह के कारोबार में रवां होवे ।

(१) इस काररवाई में इस क़दर एहतियात चाहिये, कि जो कारोबार घर के और अपने कुटुम्ब परिवार के और भी अपने रोज़गार और पेशे के होवें, उनको दुरुस्ती से करना चाहिये, और इसी तरह अपनी देह के सब काम वक्त़ २ पर करने मुनासिब हैं, और इन सब की निस्बत ज़रूरी फ़िकर और ख्य़ाल करना भी जायज़ और दुरुस्त है ।

(२) फ़ज़ूल कामों में या फ़ज़ूल बात चीत में जिनका ख़ास तअ़ल्लुक़ अपने या अपने कुटुम्ब के साथ नहीं

है, या जिसमें अपने तईं ख्याल और फ़िकर करना या शामिल होना फ़ज़ूल है, उस काररवाई से परहेज़ करना वाजिब है।

[३] ग़ैरों के कामों में दख़ल देना या संसारी लोगों से बिला ज़रूरत बेफ़ायदा बात चीत में अपना वक्त ख़र्च करना ना मुनासिब है।

[४] ग़ैर वाजिब और ना मुनासिब कामों की तरंगें उठाना, या उनके मुवाफ़िक़ जतन सोचना और उसका अमल दरामद करना नहीं चाहिये, क्योंकि इसमें परमार्थी जीव का नुक़सान होता है।

[५] इसी तरह भोगों की चाह उठाना और उनके हासिल करने के लिये जतन करना, जहां तक मुमकिन होवे नहीं करना चाहिये, लेकिन जो भोग कि अनिच्छित [यानी बग़ैर चाह उठाने के प्राप्त होवें] या पर इच्छित यानी कोई दूसरा शख़्स प्यार और ख़ुशी से उनको लावे या सनमुख रक्खे, तो उनमें एहतियात और होशियारी के साथ बर्ताव करें, यानी उनका ज्यादा भोग न करें, और न उनका रस और स्वाद पाकर अपनी चाह उठावें, कि फिर वही भोग उसके वास्ते तैयार किये जावें।

[६] ग़ैर वाजिब और ना मुनासिब भोगों और पदार्थों से, चाहें वह अनिच्छित या पर इच्छित

प्राप्त होवें, संत सतगुरु की दया का आसरा लेकर परहेज़ करे।

[७] जब कभी माया और उसके पदार्थ विशेष करके प्राप्त होवें, तो एहतियात रक्खे कि अपनी परमार्थी कारर्वाई में जहां तक मुमकिन होवे ख़लल न पड़े, और अहंकार और मद न आने पावे, और न ग़फ़लत और भूल अपना असर करने पावे।

[८] जहां तक मुमकिन होवे किसी से लड़ाई झगड़ा या तकरार न करे, अगर थोड़ा सा रुपया ख़र्च करने से या थोड़ा अपना हक़्क़ छोड़ देने से लड़ाई और झगड़ा दूर हो सकता होवे, तो ऐसे ख़र्च करने या हक़्क़ के छोड़ने में ताम्मुल न करे, और जहां तक बने आपस में मिलकर फ़ैसला कर लेवे, ताकि अदालत तक नौबत न पहुंचे, क्योंकि ऐसे झगड़ों में पीछे करके बहुत ख़र्च बेफ़ायदा होता है, और तकलीफ़ और चिंता बेफ़ायदा उठानी पड़ती है, कि जिससे परमार्थी के अभ्यास में बहुत ख़लल पड़ता है।

[९] परमार्थ और अपने मत के मुआमले में भी मूर्खों के साथ बहस और हुज्जत बेफ़ायदा न करे। जो कोई न माने तो उस पर किसी तरह का ज़ोर और दबाव न डाले, और न लड़ाई और झगड़ा

करे, बल्कि ऐसे लोगों से अपने मत और अभ्यास को गुप्त रक्खे।

[१०] बिरादरी और दोस्त और आश्ना और पड़ोसी लोगों की तान और मलामत का ख़्याल कर के अपनी परमार्थी काररवाई में ढीला न होवे–यह सब मूर्ख हैं, और इनकी परमार्थी अक़्ल और समझ बालकों के मुवाफ़िक़ है, फिर इनकी बात चीत पर ख़्याल करना अक़्लमन्दों का [जो कि परमार्थ की समझ दुरुस्त रखते हैं] काम नहीं है–जहां तक बने ऐसे लोगों से अपना बचाव करके दूर रहना या ज़्यादा हेल मेल न करना मुनासिब है, और उनके हक़्क़ को इस वजह से कि वे परमार्थ में बिघ्न डालते हैं रोकना या बंद करना मुनासिब नहीं है–परमार्थी शख़्स को क्षमा और बरदाश्त करना चाहिये।

[११] जो कोई परमार्थी कारवाई में ख़लल डाले या उलटी सलाह बतलावे उसकी बात नहीं माननी चाहिये, लेकिन उसके साथ हुज्जत या तकरार करना या अपनी समझौती देना नामुनासिब है।

७–ब्योहारी या संसारी शुभ अशुभ करम की तफ़सील यह हैः–

[१] शुभ करम यह है कि जहां तक मुमकिन होवे मन से बचन से और करम करके सब को सुख पहुंचाना, और जो सुख न पहुंचा सके तो दुख भी न देना, जो तन और धन थोड़ा बहुत इस काम में लगे और अपने परमार्थ में किसी तरह का ख़लल न पड़ता होवे, तो उसके लगाने में दरेग़ [सोच] न करे।

[२] अशुभ करम यह है कि ख़ास अपने या किसी अपने अज़ीज़ के मतलब के लिये, किसी को मन से बचन से या करम करके दुख पहुंचाना—जहां तक मुमकिन होवे इस मुआमले में परमार्थी को एहतियात और परहेज़ करना मुनासिब है ॥

लेकिन जो लोग बसबब परमार्थी [कारवाई के दुखी होवें, यानी जो वे उलटी सलाहें देवें, और यह उनकी बात न माने और समझौती न लेवे, और इस सबब से वे नाराज़ होवें या उसके साथ अदावत करें, और अपने चित्त में दुखी रहें, तो जहां तक मुमकिन होवे उनको मोहब्बत और दिलदारी के साथ, सच्चे परमार्थ की समझौती देकर उनका दुख दूर करने में कोशिश करे, पर जो वे अपनी नादानी और हठ के सबब से न मानें, और बेफ़ायदा तकलीफ़ और दर्द अपने ऊपर आप उठावें, तो उसका ज़्यादा सोच

न करे, बल्कि यह समझे कि उनके मन की गढ़त इसी तरह से होने वाली है, थोड़ा दुख पाकर उनकी आइंदा थोड़ी बहुत सफ़ाई होगी, और शायद रफ़्ता २ परमार्थ की क़द्र उनके चित्त में थोड़ी बहुत समावे ॥

८-खुलासा यह है कि सच्चे परमार्थी को किसी सबब से अपने भक्ती और अभ्यास में ढीला होना नहीं चाहिये, क्योंकि जिस काम से गुरू और मालिक राज़ी होते हैं, वह काम ज़रूर करना लाज़िम है,चाहे दुनिया के लोग [जो कि मनमुखी हैं, और परमार्थ से बिलकुल बेख़बर] राज़ी होवें या नहीं-इस मुआमले में उनके डर या ख़ातिरदारी का ख्याल नहीं करना चाहिये-इस में परमार्थी का और उन लोगों का फ़ायदा भी नहीं तो दोनों का नुक़सान होगा ॥

दुनिया के लोगों की नज़र हमेशा अपने मतलब यानी स्वार्थ पर रहती है, और परमार्थी नफ़ा और नुक़सान यानी जीव के कल्यान या अकल्यान का उनको बिलकुल ख्याल नहीं है, फिर ऐसे लोगों का परमार्थ में संग देना या उनकी सलाह मानना ना मुनासिब है-अलबत्ता दुनिया के कामों में उनकी सलाह के मुवाफ़िक़ काम करना वाजिब है, बल्कि दुनिया के कामों को उन्हीं की राय पर छोड़ देना

बेहतर होगा, कि इस में वे राज़ी रहेंगे, और परमार्थी के कारोबार में कम दख़ल देंगे ॥

९–जो कोई विद्यावान या बुद्धिवान ऐसी तान मारें, कि परमार्थी शख़्स को संस्कृत या और कोई इल्म और विद्या पढ़नी ज़रूर है, और बग़ैर विद्या के या बग़ैर पढ़ने संस्कृत के परमार्थ हासिल नहीं हो सकता, यह कहना उन लोगों का बिलकुल ग़लत है, क्योंकि सच्ची विद्या गुरू का उपदेश है, जो पूरे गुरू हैं उन्हों ने अपने अभ्यास के बल से कुल्ल कुदरत का भेद मालूम करके मक्खन निकाल लिया है, और एक नुक़ते में जीव का परमार्थ बना सकते हैं, फिर वे थोड़े से उपदेश में कुल्ल दुनिया और दीन की पूरी समझौती दे सकते हैं, कि जो विद्यावान हज़ारों किताबों को पढ़कर भी हासिल नहीं कर सकते, क्योंकि वह प्रेम विद्या यानी मालिक का भेद और उसके मिलने का रास्ता और जुगत सीना बसीना मालूम होती चली आई है, किताबों में वह भेद नहीं है, और न लिखने में आ सकता है–फिर जो कोई ऐसे पूरे गुरुओं का सच्चे मन और सच्ची दीनता और भाव के साथ संग करेगा, वे उसको थोड़े अर्से में दर्द अपनी हुई बातें और जुगती जो कि कुल्ल का

मक्खन है, अपनी मेहर और दया से समझा कर और अंतर में अभ्यास करा कर सब कारख़ाना कुद-रत का दिखला देंगे, फिर विद्यावान की क्या ताक़त कि ऐसे परमार्थी अभ्यासी का मुक़ाबला करे, या उसके साथ परमार्थ की बात चीत कर सके, क्योंकि वह लिखी पढ़ी बातें तोते की तरह बना सकता है, और अंतर के कुदरत के भेद से बिलकुल बेख़बर है, और अभ्यासी परमार्थी असल हाल कुदरत का अंतर दृष्टी के साथ देख कर कहता है, इस वास्ते इन दोनों में ज़मीन और आसमान का फ़र्क़ है, यानी विद्यावान मन और इंद्रियों के घाट पर बैठा हुआ अक़्ली बातें अंधों के मुवाफ़िक़ करता है, और अभ्यासी रूहानी यानी सुरत की दृष्टी से देख कर भेद कहता है—वह विद्यावान मंज़िल पर कभी नहीं पहुंचेगा, और जनम मरन की फांसी उसकी कभी नहीं काटी जावेगी, और यह प्रेमी परमार्थी एक दिन अपने निज घर में पहुंच कर, सच्चे मालिक का दर्शन पाकर, और जनम मरन से रहित होकर, परम आनंद को प्राप्त होगा ॥

बचन २९

बर्णन महिमा सुरत शब्द मारग और संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधा-स्वामी दयाल की मेहर और दया का कि जिससे सहज में जीवों का सच्चा उद्धार होता है

१– इस दुनिया में आम तौर पर और ख़ास कर इस ज़माने में दुख ज़्यादा है और आराम कम और सब जीव आराम की प्राप्ती और दुख की निवृत्ती के लिये, अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ जैसा कि दुनिया में दस्तूर है जतन करते हैं, पर निर्मल और ठहराऊ सुख और आनंद किसी को हासिल नहीं है, और जो कोई ज़्यादा सुखी नज़र आता है, वह भी दुख से ख़ाली नहीं है, क्योंकि रोग और सोग सब जीवों के साथ लगे हुए हैं, और उनके मुतलक़ दूर करने का जतन किसी के इख़्तियार में नहीं है ॥

२–ऐसा सुख और आनंद कि जो हमेशा क़ायम रहे, और महा निर्मल होवे, सिर्फ़ संतों की जुगत की कमाई से हासिल हो सकता है, और वह अभ्यास

रूहानी है, यानी सुरत को अंतर में चढ़ाने से हासिल होता है ॥

३–कुल्ल दुक्खों का इलाज चाहे वह कैसेही सख़्त होवें, वही रूहानी अभ्यास है, कि जिसके वसीले से सुरत यानी रूह और मन की धार घट में ऊंचे देश की तरफ़ चढ़ाई जाती है, और जिस क़दर वह ऊंचे चढ़ती है, उसी क़दर मन और सुरत का बंधन देह और दुनिया से ढीला होता जाता है, और इसी सबब से देह और संसार का दुख सुख भी कम ब्यापता है ॥

४–मालूम होवे कि कुल्ल रचना का कोई सर्व समरत्थ और सर्व जानकार करता ज़रूर है, और संतों ने उसका राधास्वामी नाम प्रघट किया है, और यह नाम किसी का रक्खा हुआ नहीं है, इस नाम की धुन बग़ैर वसीले ज़बान या बाजे के आप ही आप कुल्ल ऊंचे देश यानी मंडलों में हर एक जीव के घट में हो रही है, और उसी सर्व समरत्थ कुल्ल मालिक के चरनों से, रूह की धार उतर कर और रास्ते में कई जगह ठहरती हुई, इस पिंड में दोनों आंखों के मध्य में अंतर की तरफ़ बैठ कर, कुल्ल काररवाई इस देह की अपनी धारों के वसीले से [जो जाबजा पिंड में फैली हुई हैं] कर रही है, और

वहां से बवसीले दो धारों के जो कि दोनों आंखों के तिल में ठहरी हैं, दुनिया के कारोबार करती है, और मन और इन्द्रियों का संग करके अनेक पदार्थों और ख़्वाहिशों और कुटुम्ब परिवार में इस रूह का ज़बर बंधन हो गया है, और उनकी हालत के बदलने में या ख़्वाहिश और आसा के पूरे होने और न होने में, इसकी भी हालत बदल जाती है, यानी दुख सुख भोगना पड़ता है ॥

असली रूप रूह या सुरत का आनंद स्वरूप है, पर बंधनों और ख़्वाहिशों की वजह से इसकी हालत बदलती रहती है, सो कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुरु रूप धारन करके, निहायत दया के साथ ऐसी सहज जुगत मय भेद अपने देश के बतलाई, कि जिससे जीव अपने बंधनों को आहिस्ता आहिस्ता ढीला और कम करके, दुनिया के दुख सुख की हालत से बच सकते हैं, और अपने परम आनंद स्वरूप का थोड़ा बहुत रस लेकर मगन हो सकते हैं ॥

५–जो कोई संत बचन अथवा कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के उपदेश की प्रतीत करके सुरत शब्द मारग की कमाई करना शुरू करे, तो अंतर में थोड़ा बहुत रस पाकर, दिन २ उसकी प्रीत और प्रतीत

चरनों में बढ़ती जावेगी, और उसी क़दर मन और सुरत स्वरूप और शब्द के वसीले से ऊपर को चढ़ते जावेंगे, और जिस क़दर चढ़ाई होवेगी, उसी क़दर पिंड देश से न्यारे होते जावेंगे, और फिर उसी मुवाफ़िक़ देह और दुनिया का दुख सुख कम ब्यापेगा, और घट में निर्मल आनंद बढ़ता जावेगा ॥

६–जो कोई यह काम नहीं करेगा, तो वह हमेशा देह धर कर दुख सुख सहता रहेगा, और जिस क़दर उसकी आशक्ती और बंधन जीवों और पदार्थों में होगा, उसी क़दर करम करेगा, और उनका फल दुख सुख भोगेगा, और फिर उसी स्वभाव और भोगों की आसा के सबब से, बारम्बार ऊंचे नीचे देश में देह धरता रहेगा, यानी जनम मरन के चक्कर से उसका बचाव नहीं होगा, और सख़्त दुक्खों में कोई उसकी सहायता नहीं कर सकेगा ॥

७–इस वास्ते बग़रज़ बचाव जनम मरन और दुक्खों के, जो करमों के सबब से भोगना पड़ता है, हर एक जीव को लाज़िम और मुनासिब है, कि राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत लाकर अपने जीव के कल्यान के वास्ते थोड़ा बहुत

अभ्यास सुरत शब्द मारग का और ध्यान संत सतगुरु का करें ॥

८—दुनिया में सब जीव सुख के कारन और दुख के निवारन के वास्ते, हर एक तरह का जतन और मिहनत कर रहे हैं, और यह सुख तुच्छ और नाशमान हैं, और चाहे जैसे भोग और पदार्थ हासिल हो जावें, लेकिन वह एक दिन मृत्यु के समय छोड़ने पड़ेंगे, और उनके छोड़ने का भारी दुख सहना पड़ेगा, फिर किस क़दर जीवों पर फ़र्ज़ और लाज़िम है कि वास्ते हासिल करने निर्मल और ठहराऊ आनंद और दूर होने तकलीफ़ और दुक्खों के थोड़ी मिहनत अभ्यास की जो कि निहायत सहज है, और जिसमें थोड़ा सा वक़्त ख़र्च करने से भारी फ़ायदा मिल सकता है, गवारा करें ॥

९—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की मेहर और दया का, और भी बड़ाई उनकी जुगत यानी सुरत शब्द मारग का बर्णन किस तरह किया जावे, कि ऐसी दया जीवों पर आज तक किसी ने नहीं की, और न ऐसी सहज जुगती कि जो ग्रहस्त और बिरक्त और औरत और मर्द और जवान और बूढ़ा आसानी बहुत रस कमा सके, कभी प्रगट हुई—इस अभ्यास से

जीवों का उद्धार सहज में होना मुमकिन है, और पिछले ज़माने में महा कठिन अभ्यास ऋषीश्वर और मुनीश्वर और जोगी और जोगीश्वरों और औलियाओं ने जारी किये कि जो विरक्तों से मुश्किल से बन पड़ते थे, और फिर भी उसमें ख़तरे बहुत थे और गृहस्तियों से और ख़ासकर औरतों से तो बिलकुल नहीं बन सकते थे, और इस सबब से यह सब कोई कमाई अपने जीव के कल्यान के वास्ते न कर सके—अलबत्ता शुभ करम कोई २ जीवों से बन पड़े, और उसका फल उन्होंने कोई दिन के वास्ते दुनिया में या स्वर्ग लोक में पाया, यानी कुछ अर्से तक सुख भोगा, और फिर मृत्यु लोक में जनम लिया, यानी उनका आवागवन न छूटा ॥

१०—अब जो जुगत यानी अभ्यास कि राधास्वामी दयाल ने जारी फ़रमाया, उसकी ऐसी भारी महिमा है, कि जो वह किसी जीव से मत को समझ कर शौक़ के साथ तीन दिन भी बन पड़ा, तो भी उसके उद्धार का सिलसिला जारी हो गया, और चार पांच जनम में सतगुरु का संग पाकर, और उस जुगती की कमाई करके सत्तलोक यानी संत देश में पहुंच कर अजर अमर हो गया, और परम आनंद को प्राप्त

हुआ कि जहां काल कलेश और आवागवन का चक्कर नहीं है ॥

११—सबूत इस बात का यह है कि जो कोई एक मर्तबा जुल्लाब लेता है, या फ़सूद खुलवाता है, या जोंक लगवाता है, तो उसी मौसिम में बर्ष या छः महीने बाद माद्दा और ख़ून की रुजू उसी तरफ़ को वास्ते निकलने के होती है, जब कि माद्दा और ख़ून में, जो कि बमुक़ाबले सुरत यानी रूह के निहायत जड़ हैं, ऐसा ख़वास पाया जाता है, कि एक मर्तबा उनकी रुजू एक तरफ़ को हो जावे, तो फिर बारम्बार वक्त मुक़र्रेरा पर उसी तरफ़ को दौड़ते हैं, फिर सुरत चेतन्य जिसका देश सब से ऊंचा है, जो शौक़ के साथ तीन दिन अपने घर की तरफ़ को रुजू करके चलने लगे तो वह उसी ख़वास के मुवाफ़िक़ बारम्बार उसी तरफ़ को वक्त २ पर दौड़ेगी, और नीचे के देश की तरफ़ जो चौरासी का घर है कमतर रुजू करेगी, और जब कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु जिनकी सरन में आकर मत को अच्छी तरह समझा, और उसकी प्रतीत लाकर अभ्यास शुरू किया, उसके सहाई हुए, तब उनकी मेहर और दया से चौरासी का चक्कर ज़रूर बन्द हो जावेगा, और जब तक कि

सत्तलोक में पहुंचना न होगा तब तक वे उसको ऊंचे देश में बासा देते जावेंगे, और उसकी प्रीत और प्रतीत बढ़ाकर, और नर देही में जनम देकर, और हर जनम में आप मिलकर उससे सतसंग और अभ्यास बराबर कराते जावेंगे, और एक दिन अपने धाम में पहुंचा कर, उसको अमर आनंद बख़्श देंगे ॥

१२--सुरत शब्द मारग के अभ्यास की ऐसी महिमा है, कि जिस किसी ने इसकी कमाई शुरू कर दी, और ज़िस क़दर कि उससे एक जनम में बन पड़ी, वह दूसरे जनम में संत सतगुरु का उपदेश लेते ही और अभ्यास शुरू करते ही फ़ौरन फुर आवेगी, यानी जिस क़दर रास्ता तै करके जिस मुक़ाम तक उसकी सुरत पहुंची है, उस मुक़ाम पर फ़ौरन चढ़ जावेगी, और उसके आगे कमाई यानी चलना और चढ़ना शुरू कर देगी, इसी तरह से हर जनम में कमाई और चढ़ाई बढ़ती जावेगी, जब तक कि संत सतगुरु के देश में पहुंच कर निहचिंत न होगी, और फिर जनम नहीं होगा, और अपने सच्चे मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल के दर्शनों का आनंद और बिलास पाकर हमेशा को मगन हो जावेगी ॥

१३–संत सतगुरु दयाल की मेहर और दया की क्या महिमा बर्णन की जावे कि जो जीव सच्ची दीनता और भाव के साथ, एक मर्तबा उनकी सरन में आया, और सतसंग करके उनके मत और भेद को समझ कर और उपदेश लेकर, चंद रोज़ भी उनके अभ्यास की कमाई करी, तो मृत्यु के समय [जब कि सुरत का अंतर में ऊपर की तरफ़ को खिंचाव कुदरती तौर पर शुरू होता है] उस वक्त़ वे आप मेहर और दया से उस को तीसरे तिल के मुक़ाम पर अपना दर्शन देकर, और चरनों में उसकी सुरत को लपेट कर ऊंचे देश में ले जाते हैं, और उसकी लगन और कमाई के मुवाफ़िक़ जहां मुनासिब समझते हैं उसको बासा देकर, और अपने अमृत रूपी बचन सुना कर, उसकी प्रीति और प्रतीत को बढ़ाते रहते हैं, और फिर जब संत सतगुरु संसार में आवें, और सतसंग खड़ा करें, तब उस सुरत को नर देही में जनम देकर और अपनी दया से खींच कर सतसंग में शामिल करते हैं, और दिन २ उसकी प्रीति और प्रतीत बढ़ा कर और सुरत शब्द मारग का अभ्यास करा कर उसको चढ़ाते चले जाते हैं, और जो कि मंज़िल दूर दराज़ है, इसी तरह उसको जब तक कि उनके धाम में न पहुंचे, जनम

देकर और कमाई कराकर रास्ता ते कराते जाते हैं, और जब २ देह छूटे तब उसको ऊंचे से ऊंचे देश में, उसकी कमाई के मुवाफ़िक़ पहुंचा कर बासा देते हैं, और जिस जनम में निजधाम में पहुंच गया, तब ही काम पूरा हो गया और फिर जनम लेने की ज़रूरत नहीं रही ॥

१४–खुलासा यह है कि संत सतगुरु ऐसे दयाल हैं, कि जब तक उनका जीव निजधाम में न पहुंचे तब तक उसको जनम देकर और हर जनम में कमाई करा कर, मृत्यु के समय आप उसके अंतर में प्रघट होकर उसको अपने संग ऊंचे देश में लेजा कर बासा देते हैं, और वहां भी उसकी ख़बरगीरी और सम्हाल करते रहते हैं, यानी बचन सुना कर उसकी प्रीत और प्रतीत को बढ़ाते रहते हैं, कि वही ताक़त लेकर जीव दूसरे जनम में ज्यादा से ज्यादा कमाई करता चला जाता है, और इस तरह एक दिन निज धाम में पहुंच कर निहचिंत हो जाता है ॥

१५–संत सतगुरु की दया ज्यादा से ज्यादा है, उसकी महिमा कहन सुनन से ज्यादा है, ऐसी दया कभी किसी ने नहीं करी, और न कोई कर सकता है, यानी जो जीव कि उनकी सरन में आये, और तन मन

धन से उनकी भक्ती करी, तो सिर्फ़ उनका ही उद्धार नहीं बल्कि उनके कुटुम्बियों तक का उद्धार फ़रमाते हैं, यानी जिस क़दर जिसकी भक्ती है उसी क़दर उसकी और उसके कुटुम्ब की रक्षा और सम्हाल और उद्धार करते हैं, यानी तीन कुल और सात कुल और जो सब से बढ़ कर भक्ती होवे तो बेशुमार जीवों का उद्धार उसके वसीले से हो जाता है ॥

१६–कुलों की तफ़सील यह है कि तीन कुल में एक अपने मा बाप का एक ननूसाल का और एक सुसराल का, और सात कुल में तीन पुश्त भक्त की दो ननूसाल और दो सुसराल की, यानी भक्त के (१) मा बाप और (२) दादा दादी और (३) भक्त की औलाद और [४] नाना नानी और [५] मामा मामी [६] सास ससुर और [७] साला और सलहज का उद्धार होता है ॥

१७–अब ग़ौर करना चाहिये कि किस क़दर महिमा सुरत शब्द मारग की है, कि जिससे बढ़ कर अभ्यास कोई रचना भर में नहीं है, यानी शब्द की धार पर जो कि रूह और जान की धार है, अभ्यासी सवार होकर निज घर को जाता है–प्राण की धार सुरत की धार से चेतन्य है, और कुल्ल धारें (जो कि माया

के घेर से निकली हैं) सुरत की धार से ताक़त लेती हैं–फिर सुरत यानी जान की धार से बढ़ कर कोई धार नहीं रची गई, इस वास्ते सुरत शब्द मारग से बढ़ कर कोई अभ्यास नहीं हो सकता–अब इसके आसान और निरविघ्न होने की क्या सिफ़त की जावे, कि लड़का और जवान और बूढ़ा इस अभ्यास को बग़ैर किसी क़िस्म के ख़तरे के अपने गृहस्ती में बैठे हुए और उद्यम करते हुए, थोड़े शौक़ के साथ संत सतगुरु का बल लेकर कर सकते हैं–ऐसा मारग आज तक प्रघट नहीं हुआ, नहीं तो पिछले वक़्त के लोग क्यों हठ जोग और प्राणायाम वग़ैरह के साधन में पचते और खपते, और फिर भी पूरा फल यानी सच्चा उद्धार हासिल नहीं हुआ ॥

१८–सिवाय इसके सुरत शब्द मारग की एक और भारी सिफ़त यह है, कि जो कोई इसका अभ्यास करता है, वह भारी से भारी कष्ट और कलेश और ख़ौफ़ और चिंता में, थोड़ी तवज्जह अपने अन्तर में ऊंचे के देश की तरफ़ करने से, फ़ौरन थोड़ा बहुत बचाव यानी रफ़ाह हासिल कर सकता है । ऐसे वक़्त में इस दुनिया में कोई किसी का मददगार नहीं हो सकता, लेकिन शब्द का अभ्यास फ़ौरन थोड़ी बहुत

उसकी कमाई के मुवाफ़िक़ मदद दे सकता है, यह बात इस दुनिया में नापैद है, मगर संत सतगुरु की दया से, अदने से अदने जीव को जो उनकी सरन में आया सहज में प्राप्त हो सकती है-यह महिमा इस अभ्यास की सब से भारी है ॥

१९-इसी तरह संत सतगुरु की दया और मेहर की बड़ाई का ख्याल करो, कि जो जीव सच्चे मन से सरन में आया, उसका उद्धार और उसके कुटुम्ब का उद्धार अपनी दया से आप करते हैं, यानी अपनी मेहर का बल देकर और थोड़ा बहुत अभ्यास कराकर उसको ऊंचे देश में आप ले जाते हैं, और फिर तीन चार जनम देकर, और हर जनम में ज़्यादा कमाई कराकर निज घर में पहुंचा कर, सच्चा और पूरा उद्धार फ़रमाते हैं-ऐसी दया न कभी हुई और न सिवाय संत सतगुरु के और कोई कर सकता है। पिछले ज़माने में हज़ारों और सैकड़ों वर्ष लोगों ने तप जप वग़ैरह बड़ी मिहनत और तकलीफ़ के साथ किये, पर सिवाय शुभ करम के और फल नहीं मिला और न उनका सच्चा उद्धार हुआ ॥

२०-अब सुरत शब्द मारग और संत सतगुरु की दया की ऐसी महिमा सुन कर जो जीवों को प्रतीत

न आवे, और उनके हिरदे में प्रीत और शौक़ न जागे, तो जानना चाहिये कि वे महा अभागी हैं, और काल और माया के साथ उनका संजोग लगा हुआ है, कि जिसके सबब से उन्हीं के घेर और जाल में फंसे रह कर बारम्बार जनमेंगे और मरेंगे, और ऊंची नीची जोनों में भरम कर दुख सुख सहते रहेंगे, और कोई उनकी सहायता नहीं करेगा ॥

संत सतगुरु बचन से जीवों को समझाते बुझाते हैं, और जो कोई न माने तो उस पर किसी तरह का ज़ोर और दबाव नहीं डालते, यानी जीवों की आज़ादगी में जो मौज से हर एक को दी गई है दख़ल नहीं देते, जो उनके बचन की प्रतीत लाकर उनकी जुक्ती का अभ्यास करेगा, वह परम पद को पावेगा, और जो नहीं मानेगा वह काल देश में भरमता रहेगा ॥

—

बचन ३०

कुदरती सबूत इस बात का कि सिर्फ़ राधास्वामी मत में असल भेद सच्चे मालिक और उसकी कुदरत का, और सच्चा और पूरा तरीक़ा जीव यानी सुरत के सच्चे और पूरे उद्धार का बर्णन किया है, और जिसके समझने और अभ्यास करने के वास्ते कुछ ख़ास ज़रूरत बिद्या के पढ़ने की नहीं है, यानी राधास्वामी मत के भेद और जुगत को मर्द और औरत पढ़े लिखे और अनपढ़ सब आसानी से समझ सकते हैं, और उसका अभ्यास मेहर और दया से बेखतरे और निरबिघ्न कर सकते हैं ॥

१—संत सतगुरु राधास्वामी दयाल फ़रमाते हैं, कि कुल्ल रचना में तीन दरजे हैं, एक निर्मल चेतन्य देश जहां चेतन्य ही चेतन्य है, और माया की मिलौनी नहीं है, और यही देश संत देश और दयाल देश

कहलाता है, और इसी देश के ऊपर की तरफ़ कुल्ल मालिक का धाम है, और वह अपार और अनंत है, और यहीं से आदि शब्द की धार प्रगट हुई, जिसने किसी क़दर फ़ासले पर ठहर कर अगम लोक और अलख लोक और सत्तलोक की रचना करी ॥

२-दूसरा दरजा ब्रह्माण्ड कहलाता है, इस में निर्मल माया प्रगट हुई, और चेतन्य से मिलकर इस देश में रचना हुई, और वह रचना जोत निरंजन ने (जो कि दो कला सत्तलोक से निकस कर नीचे आईं) करीं ॥

३-तीसरा दर्जा निर्मल चेतन्य और मलीन माया देश है, जहां देवता और मनुष्य और असुर और बाक़ी चारों खान के जीव पशू और परिंद और कीड़े मकोड़े और वनस्पति वग़ैरह पैदा हुए ॥

४-इसी देश में मनुष्य अस्थूल देह में बैठ कर अनेक पदार्थों यानी इंद्रियों के भोगों में और कुटुम्ब परिवार के संग बंध गये हैं, अब जो कोई कि आप छुटा हुआ है, या छुटे हुए का संग करके अपने छूटने का सच्चा होकर जतन कर रहा है, और थोड़े अर्से में जो धुर मंज़िल पर पहुंचने वाला है, वह बंधे हुए जीवों के बंधन काट कर निज घर में लेजा सकता

है, लेकिन शर्त यह है कि जीव उसके बचन को मानें यानी उसकी हिदायत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करें, और जो हालत कि सच्चे अभ्यासियों पर गुज़रती है, वह जीते जी देखते जावें, और उस हालत के मुवाफ़िक़ उनकी रहनी दिन २ बदलती जावेगी ॥

५—संतों ने फ़रमाया है कि कुल्ल रचना धारों की है, और वह धारें सूक्ष्म देश में सूक्ष्म हैं, और अस्थूल देश में अस्थूल हो गई हैं, इस वास्ते जिस धार के साथ सुरत नीचे उतर कर आई, वह उसी धार को पकड़ के अपने निज देश को लौट सकती है, यही धार नूर और ज्ञान और शब्द की धार है, सो शब्द की धुन को पकड़ के अस्थान २ पर चढ़ना और चलना चाहिये, क्योंकि शब्द को बराबर कोई सच्चा और पूरा गुरू नहीं है, और शब्द ही अंधेरे में प्रकाश करने वाला और रास्ता दिखा कर धुर पद में पहुंचाने वाला है ॥

६—बच्चे की पैदाइश और उसके जिस्म के बढ़ाव से और भी मौत के वक्त रूह के खिंचाव की हालत को देख कर साफ़ ज़ाहिर होता है कि सुरत रूह की धार मस्तक से उतर कर जाबजा पिंड में फैली है, और जाग्रत के समय निज बैठक उसकी आंख के तिल में है, क्योंकि जहां तिल ज़रा भी ऊपर की तरफ़

को खिंचा, फ़ौरन देह और इंद्रियां वग़ैरह बेकार हो जाती हैं, फिर जो हालत कि सुरत के खिंचाव की अपने भंडार यानी मस्तक की तरफ़ जैसा कि मौत के वक़्त होती है, अपने जीते जी यानी इसी ज़िंदगी में अभ्यास की मदद से होती जावे, तो ऐसे अभ्यासी को फ़ौरन सबूत इस बात का मिल जाता है, कि रूह के खिंचाव में आसानी से बंधन अंतर और बाहर के ढीले हो जाते हैं, और दुख सुख संसार की हान और लाभ का और देह और कुटुम्ब परिवार का बहुत कम व्यापता है, और अंतर में आनंद और सरूर थोड़ा बहुत मिलता जाता है ॥

७—संत कहते हैं कि यह दुनिया नाशमान है, और कोई चीज़ यहां थिर नहीं है, और भोग और बिलास भी यहां के तुच्छ हैं, यानी पूरी शान्ती उनसे हासिल नहीं हो सकती, इस वास्ते इस संसार में बर्ताव ज़रूरत के मुवाफ़िक़ और मुनासिब तौर पर चाहिये कि जिस में गहरा बंधन और गिरिफ़्तारी न हो जावे, नहीं तो थोड़े से सुख के साथ दुख और तकलीफ़ भी सहनी पड़ेगी ॥

८—और हर एक आदमी को चाहे मर्द होवे या औरत लाज़िम है, कि गहरे और ठहराऊ सुख की

प्राप्ती के लिये थोड़ा बहुत जतन ज़रूर करें, और वह सुख सिर्फ़ निर्मल चेतन्य देश में जहां काल और माया नहीं है, प्राप्त हो सकता है, इस वास्ते उस देश में पहुंचने की जुगत संत सतगुरु से दरियाफ़्त करके अपने घट में उसका अभ्यास करना चाहिये, तो थोड़ा बहुत आनंद अंतर में मिलना शुरू हो जावेगा, और वही आनंद रफ़्ता रफ़्ता अभ्यासी की प्रीति और प्रतीत को जगा कर बढ़ता जावेगा, और एक दिन निज घर में पहुंचा देगा ॥

६—अब हर एक आदमी को चाहे औरत होवे या मर्द इन बातों पर जो नीचे लिखी जाती हैं, और जो रोज़मर्रा उनकी नज़र से गुज़रती हैं, या जिन का बर्ताव रोज़मर्रा उनकी देह यानी उनके आपे में जारी है, ग़ौर करके अपने जीव के कल्यान के वास्ते और भी वास्ते फ़ायदे और आराम के इस दुनिया में ज़रूर काररवाई मुनासिब मुवाफ़िक़ हिदायत संतों के करना चाहिये, नहीं तो यहां भी और आइंदा भी बहुत कष्ट और कलेश सहना पड़ेगा, और फिर उसके दूर करने का जतन बहुत मुश्किल हो जावेगा, और फिर पछताने और अफ़सोस करने से कुछ हासिल नहीं होगा ॥

१०—और वह बातें यह हैं:—

[१] सुरत रूह कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है, जैसे सूरज और सूरज की किरन, क्योंकि कुल्ल काररवाई रचना की सुरतों के द्वारे हो रही है, और सम्हाल उसकी कुल्ल मालिक जो सब सुरतों का भंडार है कर रहा है, यानी एक २ सुरत एक २ पिंड में बैठ कर, चाहे वह पिंड ज़मीन पर है या आसमान में, उसकी काररवाई कर रही है, और यह बात जिस वक्त से कि पिंड का ज़हूर और बनाव शुरू होता है, और जब तक कि वह पिंड क़ायम रहता है, यानी जब तक कि सुरत उसमें ठहरती है, इस दुनिया में इन आंखों से दिखलाई देती है। देखो किसी दरख़्त के बीज को जिस वक्त कि उसमें से कुला फूटता है, यानी सुरत की धार अपना ज़हूर करती है, उसी वक्त से तमाम शक्तियां कुदरत की [खैंच शक्ती, हटाव शक्ती, बनाव शक्ती सिंघार शक्ती, चुम्बक शक्ती, बिजली की शक्ती और रोशनी की शक्ती वग़ैरह] और पांच तत्व [आकाश, हवा, अग्नी, पानी और पृथ्वी] और तीन गुण [सतोगुन, रजोगुन और तमोगुन] जिनका नमूना यहां पर आक्सीजन हाइड्रोजन, और नाइट्रोजन गैस हैं, हाज़िर होकर सुरत रूह की ताबेदारी

में, आपस में रल मिल कर पिंड के बनाव और बढ़ाव और सम्हाल में मदद देते हैं, और जब तक रूह उस पिंड में ठहरी रहे, तब तक बराबर इसी तरह खिदमत और सेवा करते हैं, और जिस वक्त कि रूह पिंड को छोड़ती है, उसी वक्त आपस में लड़ भिड़ कर उसका रूप और रंग बिगाड़ कर सब हट जाते हैं सिर्फ़ पृथ्वी तत्व का कारज यानी खाक पड़ी रह जाती है; यही हाल कुल्ल जानदारों का वक्त पैदाइश से और अखीर दम तक इन आंखों से जिस क़दर कि मुमकिन है नज़राई देता है, और यही सबूत इस बात का है कि यह सुरत उस कुल्ल मालिक की अंस है—क्योंकि जब इसकी ताक़त ऐसी बड़ी है, कि जहां यह अपना ज़हूर करे यानी इसकी प्रथम धार प्रगट होवे, उसी जगह और उसी वक्त से तमाम कुदरत की शक्तियां और मसाला इसकी ताबेदारी में हाज़िर होकर कारवाई करते हैं, फिर वह भंडार कि जिसकी यह सुरत एक ज़र्रा है कुल्ल का करता और कारफ़रमा यानी सर्व समर्थ हुआ, और उसी का नाम सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल है, और यह सुरत उसकी अंस साबित हुई।

(२) माया एक पदार्थ गुबार रूप और जड़ है, सुरत चेतन्य की धार के मिलने से इसमें से पांच तत्व और तीन गुन और अनेक शक्तियां जो कि रचना का मसाला और कारकुन हैं पैदा हुईं—यह माया वक्त उतार सुरत के अपने घेर में उसका गिलाफ़ होती चली आई, यानी तह पर तह उस पर चढ़ते गये, यहां तक कि इस लोक में सुरत निहायत अस्थूल गिलाफ़ यानी पिंड में बैठ कर, उसके औज़ार यानी इंद्रियों के द्वारे काररवाई करती है, और इसी तरह सूक्ष्म देह से सूक्ष्म रचना में, जिसको सुपन देश और आलम मलकूत कहते हैं, काररवाई करती है। अब जब तक कि सुरत माया के घेर के यानी रचना के तीसरे और दूसरे दरजे के पार न जावे तब तक अपने निज देश में पहुंच कर परम सुख को प्राप्त नहीं होगी।

(३) माया के गिलाफ़ को देही कहते हैं, और इस का जड़ होना इस तरह पर साबित है, कि जब आदमी सो जाता है, उस वक्त उसको अपनी देह और दुनिया की कुछ खबर नहीं रहती, या जब डाक्टर लोग क्लोरोफ़ार्म सुंघा देते हैं, और उसके सूंघने से रूह की धार आंख के मुक़ाम से (जहां कि उसकी

जाग्रित अवस्था में बैठक है) हट जाती है तब बदन काट डालते हैं, और उसका कुछ दर्द और दुख नहीं होता, या यह कि जाग्रित में कोई दुख या दर्द या तकलीफ़ हो रही है, और जब नींद आ गई फिर वह दुख नहीं व्यापता बल्कि सुपन अवस्था में सूक्ष्म शरीर से भोग बिलास और ऐश और आराम करता है, और अस्थूल देह के रोग सोग और चिन्ता का वहां ख्याल भी नहीं रहता—इसी तरह जब गहरी नींद में सो जाता है, तब सूक्ष्म शरीर और उसकी काररवाई भी मौकूफ़ हो जाती है। इस बयान से इन दोनों शरीरों का यानी अस्थूल और सूक्ष्म का गिलाफ़ होना साबित हो गया, और यह कि सुरत रूह का स्वरूप उनसे बिलकुल जुदा है और उसी की धार से यह चेतन्य हैं, और धार के खिंच जाने पर बेकार हो जाते हैं।

(४) जितने भोग बिलास हैं, उनका सुख और रस स्वाद, सुरत की धार के वसीले से मालूम होता है, जो वह धार शामिल न होवे तो कोई स्वाद और रस नहीं आवें, और सुपन अवस्था की काररवाई का बिचार करने से साबित होगा, कि सर्व सुख रस और स्वाद सुरत चेतन्य की धार में हैं, क्योंकि सुपन

अवस्था में कुल्ल इन्द्रियों के भोग करता है, और उस वक्त वहां कोई पदार्थ बाहर मौजूद नहीं होता, और न अस्थूल इन्द्रियां कुछ काम करती हैं, फिर सर्व रस और स्वाद और उनके भोगने की शक्ती का अंतर में सुरत की धार में मौजूद होना साबित हो गया।

अब ग़ौर करो कि जब सुरत की धार में सर्व रस और सुख मौजूद हैं, और यह सुरत एक ज़र्रा है उस कुल्ल मालिक की, जिसका रचना के पहिले दरजे में अथाह सिंध रूप करके बासा है, और जहां माया की मिलौनी का गदलापन नहीं है, फिर वहां के सुख और रस और आनंद का कौन और कैसे अंदाज़ा कर सकता है, वह आनंद बेअंत और अपार है।

[५] यह संसार माया का देश है, और सुरत का निज घर पहिले दरजे यानी राधास्वामी धाम में है, यहां शुरू में जोत निरंजन यानी माया ब्रह्म, सुरत को सत्तपुर्ष से मांग कर नीचे लाये, और फिर इस को तन मन में घेर कर करम जाल में फंसाया, और तरह २ की आसा इस संसार की बंधवाई, जिसका नतीजा यह हुआ कि सुरत करम और बासना के सबब से देह में बारम्बार आती है, और उसके संग यहां जड़ पदार्थों और दूसरे जीवों के संग बंध कर

दुख सुख भोगती है, और जब देह को छोड़ जाती है, और जो इसकी चाह भोगों में रही, और देही को अपना रूप और इस संसार को अपना देश जाना तो बारम्बार उस ज़बर चाह और स्वभाव के मुवाफ़िक़ देह धारन करेगी, और फिर छोड़ेगी, यानी जनम मरन का चक्कर नहीं हटेगा, और जो दुख सुख कि देह के साथ लाज़िमी हैं, ज़रूर भोगने पड़ेंगे, और उन सख़्त दुक्खों में कोई इसका सच्चा और पूरा सहाई और मददगार नहीं हो सकता।

(६) जब तक कि सुरतें इस देश में देहियों के साथ बंधकर सुख भोगती रहीं, तब तक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल ने ख़ास तवज्जह उनकी तरफ़ नहीं की, लेकिन जब से कि सुरतों को इस संसार में दुख बिशेष होने लगा, तब दया करके राधास्वामी दयाल संत सतगुरु रूप धारन करके आप इस संसार में प्रघट हुए, और अपने बचन से सुरतों को समझाया कि यह देश काल का है, रास्ते का भेद और जुगत चलने की सुरत शब्द मारग से बतला कर, अपनी दया के बल से उनको अंतर में चढ़ाना और आहिस्ता २ पिंड से न्यारे करना शुरू किया, और ऐसी मौज मेहर और दया से फ़रमाई, कि जो कोई उनके चरन

की सरन लेकर, उस जुगत की कमाई सच्चे मन से प्रेम अंग लेकर शुरू करे, उसको वे आप दया से मदद देते हुए, काल और करम और माया के विघ्नों से बचा कर, घट में एक मुक़ाम से दूसरे और दूसरे से तीसरे और इसी तरह धुर धाम में पहुंचा कर चरनों में वासा देंगे, कि जहां हमेशा के वास्ते परम आनंद को प्राप्त हो कर, दर्शन के बिलास का सुख और आनंद लेता रहे। सुरत शब्द मारग से मतलब यह है, कि जिस धार पर सुरत उतर कर आई, उसी धार को पकड़ कर लौट जावे, और वही धार रूह और जान और अमृत और नूर और शब्द की धार है, यानी आवाज़ आसमानी को सुनते हुए, जहां से कि वह आवाज़ आती है उस मुक़ाम पर पहुंचना।

[७] जो जीव कि इस बचन को सुन कर और ऊपर की लिखी हुई बातों का अपने मन में ग़ौर और विचार करके समझेंगे, कि जो कि इस देह और देश को छोड़ना ज़रूर पड़ेगा, और जो वासना देह और भोगों की रही तो फिर जनम लेना भी ज़रूर होगा, इस वास्ते जनम मरन और देह के दुख सुखों से बचने की नज़र से, और वास्ते हासिल करने परम आनंद के सुरत के निज देश में मुनासिब और ज़रूर

है, कि आंख के अस्थान से सुरत को अंतर में ऊंचे तरफ़ (जहां कि सुरत का निज देश है) उलटाने का जतन, जैसा कि राधास्वामी दयाल ने बताया है किया जावे, तो उनको वक़्त तलाश मौज से ज़रूर पता राधास्वामी दयाल के सतसंग का मिल जावेगा, और वहां से जुगत अभ्यास की भी मालूम हो जावेगी, और जब वह सच्चे मन से प्रेम के साथ अभ्यास शुरू करेंगे, तब उनको राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से, अंतर और बाहर मदद करते जावेंगे, कि जिस में उनका रास्ता आहिस्ता २ ते होता जावे, और एक दिन धुर धाम में पहुंचा देंगे ॥

और जो जीव कि इस बचन की प्रतीत न करके संसार और उसके भोग बिलास में फंसे रहेंगे, वे बदस्तूर जनम मरन और देहियों के साथ जो दुख सुख लाज़िमी हैं भोगते रहेंगे, और काल के जाल से छुटकारा उनका नहीं होगा, क्योंकि सिवाय संत सतगुरु के और किसी की ताक़त नहीं है कि जीवों को काल के जाल से निकाल कर निज घर में पहुंचावे। रास्ते के यानी तीसरे और दूसरे दरजे के मुक़ामों में, जोगी और जोगीश्वर और दूसरे महात्माओं की

मदद से चाहे कोई पहुंच जावे, पर कुछ अर्से तक सुख भोग कर फिर नीचे उतारा जावेगा, यानी जनम मरन की फांसी चाहे जल्द होवे या देर करके काटी नहीं जावेगी, और निज घर में जो कि माया के घेर के पार है, बासा नहीं पावेगा।

(८) तीरथ बरत और मूरत पूजा और जप तप आदिक साधन करने वाले, और विद्या के पढ़ने वाले लोगों को, इन कामों के करने से सच्ची मुक्ती का फल नहीं मिल सकता, क्योंकि इन कामों का कुछ भी तअ़ल्लुक़ सुरत रूह की धार से जो मस्तक से उतर कर आंखों के मुक़ाम में ठहरी है, और न इन का असर कुछ उस पर पहुंचता है, फिर यह काम मुक्ती के साधन कैसे हो सकते हैं। मुक्ती या उद्धार बंधनों से छूटने और निज घर में (जहां माया नहीं है) पहुंचने का नाम है, और जब कि सुरत बदस्तूर आंखों के मुक़ाम पर तन मन और इंद्री और जगत में बंधी रही, और कुछ भी उसको इस अस्थान से तरफ़ अपने निज घर के हरकत नहीं हुई तो बंधन कैसे छूट सकते हैं, और सुरत और मन ऊपर की तरफ़ को कैसे चढ़ सकते हैं, इस वास्ते जिस क़दर बाहरमुख काररवाई कि कुल्ल मतों में जो आज कल

जारी हैं हो रही है, वह सब शुभ करम का फल यानी थोड़े अर्से के वास्ते सुख दे सकती है, पर सच्चे उद्धार की प्राप्ती के लिये यह काररवाई कुछ काम नहीं दे सकती।

[९] इसी तरह जो लोग किसी मत में अन्तर मुख काररवाई करते हैं, यानी मुक़ाम नाफ़ या हिरदे या किसी और चक्र में [जो छः चक्र में शामिल है] अभ्यास नाम का या ध्यान वग़ैरह या पवन का रोकना और ठहराने का जतन कर रहे हैं, और उस काररवाई का सिलसिला सुरत की धार से नहीं लगा हुआ है, तो वे भी संत मत के मुवाफ़िक़ बाहरमुखी हैं, क्योंकि घट दो हैं—एक अस्थूल तअ़ल्लुक़ पिंड के उस में छः चक्र हैं, और दूसरा सूक्ष्म यानी निज घट जो मस्तक में है, यह दोनों आपस में मुंह मिला कर गर्दन के मुक़ाम पर जमे हुए हैं—एक नीचे का घट सीधा और ऊपर का घट उलटा रक्खा हुआ है, कुल्ल शक्तियां और क़ूवतें ऊंचे दरजे की निज घट में हैं, और कुल्ल मालिक और भी सुरत का बासा निज घट में है, फिर जो अभ्यास कि निज घट तक उसका सिलसिला या असर नहीं पहुंचता है, वह बाहरमुखी और ख़ारिज है, उससे रूह सुरत पर

कोई असर नहीं पहुंचता, और इस वास्ते वह सच्ची मुक्ती का साधन नहीं हो सकता।

[१०] जान की धार से बढ़कर रचना भर में कोई दूसरी धार नहीं है, कुल्ल धारें सुरत यानी जान की धार के आधीन हैं, यानी इसी धार से चेतन्य हैं, फिर सुरत शब्द मारग से [जिसमें सुरत रूह को उसकी धार से जो ऊपर से आ रही है मिला कर ऊपर की तरफ़ चढ़ाया जाता है] बढ़कर कोई दूसरा रास्ता या जतन असल में पैदा नहीं हुआ, और न हो सकता है, इस वास्ते कुल्ल जीवों को चाहिये कि अपने जीव के कल्यान के वास्ते सिर्फ़ इसी रास्ते पर चलें, यानी सुरत शब्द जोग की जुगती कमावें, और दूसरे झगड़ों और बखेड़ों में न पड़ें, नहीं तो मुफ़्त तन मन धन बरबाद करेंगे, और हासिल उसका सिवाय थोड़े अर्से के सुख के और कुछ नहीं होगा, और जब वह पुन्य करम जिन से सुख हासिल हुआ ख़तम हो जावेगा, फिर जनम मरन के चक्कर में गिरिफ़्तार होकर नीची ऊंची जानों में चक्कर खावेगा, और अपने करम और वासना के मुवाफ़िक़ दुख सुख भोग करेगा॥

वचन ३१

बर्णन इस बात का कि संतमत के मुवाफ़िक़ राधास्वामी पद कुल्ल का अख़ीर और सिद्धान्त है, और यही अपार और अनंत है, इसके परे और कोई पद नहीं है और न हो सकता है

१–सब सत संगियों को इस बात का पूरा निश्चय होना चाहिये, कि राधास्वामी धाम कुल्ल का आदि और अंत पद है, और उसके परे कोई और पद नहीं है और न हो सकता है ॥

२–कुल्ल रचना में तीन दरजे हैं–एक निर्मल चेतन्य देश जहां सिवाय चेतन्य के दूसरा नहीं है, दूसरा ब्रह्म और शुद्ध माया देश जिसको ब्रह्माण्ड कहते हैं, और जहां ब्रह्म [यानी ब्रह्माण्डी मन] प्रधान है, तीसरा पिंड यानी जीव और मलीन माया देश जहां माया प्रधान है ॥

३–इन्हीं तीन देश और उन तीनों देश के प्रधानों के मुवाफ़िक कुल्ल रचना में तीन दरजे हो गये, कुल्ल जिसमों में चाहे वह ज़र्रे के मुवाफ़िक़ होवें या सूरज

के, हर एक में वह तीन दरजे मौजूद हैं, इन दरजों को मस्तक काया और चरन कहते हैं, और उसी मुवाफ़िक़ यह तीन दरजे यानी उत्तम मध्यम और निकृष्ट यानी आला औसद और अदना मुक़र्रर हुए ॥

४–रचना में मस्तक यानी आला और ऊंचा दरजा निर्मल और महा विशेष चेतन्य का भंडार है, और मध्यम दरजा यानी काया विशेष चेतन्य यानी ब्रह्मा-गडी मन का [जिसको ब्रह्म कहते हैं] देश है, इसी के यह फुरना हुई कि मैं सत्तलोक यानी ऊंचे दरजे के मुवाफ़िक़ रचना करूं, और एक से अनेक हो जाऊं, और पिंडी मन इसी की अंस यानी कारज है, और तीसरा दरजा जिसको चरन और निकृष्ट करके कहा है, माया का देश है, यहां जड़ता यानी तमो गुन विशेष है, और देह और उसके औज़ार इंद्रियां वग़ैरह उसका कारज हैं ॥

५–अब समझना चाहिये कि कुल्ल रचना में तीन प्रधान हैं, और हर एक का ख़ास या निज देश जुदा जुदा है, यानी उस ख़ास देश में उसी की प्रधानता यानी विशेषता है, और वह तीनों प्रधान यह हैं, पहिले सुरत चेतन्य जिसका निज देश पहिला दरजा है, और वही सब से ऊंचा और उत्तम है,

दूसरा मन जिसका निज देश दूसरा दरजा यानी ब्रह्माण्ड है, तीसरी माया जिसका निज देश तीसरा दरजा यानी पिंड [जो कि निकृष्ट है] समझना चाहिये, इन्हीं तीन से कुल्ल रचना दूसरे और तीसरे दरजे में प्रघट हुई और ठहरी हुई है, लेकिन पहिले दरजे यानी दयाल देश में निर्मल रूहानी रचना है, और वहां मन और माया बिलकुल नहीं है, वहां की रचना का ग़िलाफ़ हुबाबी निहायत लतीफ़ और रूहानी है, माया की मिलौनी वहां नहीं है, इसी सबब से वह देश महा उत्तम और महा आनंद का भंडार है ॥

६—अब मालूम होवे कि हर एक दरजे में दो २ भाग हैं, एक ऊपर का और एक नीचे का, और हर एक भाग में तीन २ दरजे हैं, यानी हर एक बड़े दरजे में छः छोटे दरजे हुए, चुनांचे पिंड में छः दरजे यानी चक्र हैं, इसी तरह ब्रह्माण्ड में भी तीन ऊंचे भाग के दरजे और तीन दरजे नीचे के भाग में [जहां कि तीनों गुन ब्रह्मा विष्णु महादेव का निजरूप है] हैं, और ऐसेही अव्वल दरजेमें भी छः अस्थान का भेद किया है—सब में ऊंचा दरजा अपार और अनंत और अथाह और अगाध है, और वही कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का निजधाम है ॥

७-अब ग़ौर करके समझना चाहिये, कि जब कि इस रचना में तीन प्रधान का मौजूद होना साफ़ ज़ाहिर है, यानी हर एक जानदार में [१] सुरत रूह और [२] मन और [३] देह और इन्द्री वग़ैरह मौजूद मालूम होते हैं, और इन्हीं तीन के वसीले से कुल्ल काररवाई हो रही है, यानी सुरत चेतन्य कुल्ल की करता और प्रेरक है, और मन उससे ताक़त लेकर अपनी काररवाई करता है, यानी संकल्प बिकल्प उठाता है, या आंकि पहिले उसमें गुप्त फुरना या हिलोर होती है [यानी तरंग उठती हैं] और फिर उसी मुवाफ़िक़ देह और उसके औज़ार इन्द्रियां प्रघट काररवाई करती हैं, और सिवाय इन तीनों के और कोई कारज करता या कारज देने वाला नहीं है ॥

८-और जब कि इन तीनों यानी (१) सुरत कारज करता और (२) मन और (३) देह इन्द्रियां वग़ैरह के सिवाय और कोई नहीं है, और इन तीनों का देश जुदा २ मुक़र्रर हो गया, तो इन तीन देशों के परे और कोई देश या दरजा नहीं हो सकता, इस वास्ते जो कोई ऐसा कहे कि राधास्वामी धाम के परे और भी मुक़ाम मुमकिन है, यह कहना उसका महज़ ग़लत और नादुरुस्त है, और इस वास्ते राधास्वामी धाम

ही कुल्ल का अख़ीर और सिद्धान्त पद है, और इसके परे दूसरा पद हरगिज़ नहीं हो सकता, वही पद अपार और अनंत और अथाह है, उसमें कोई दरजा या भाग का होना मुमकिन नहीं है ॥

९–इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो राधास्वामी मत में शामिल होवें, इस बचन को अच्छी तरह समझ कर, पूरा निश्चय कुल्ल मालिक राधास्वामी का हिरदे में धारन करके, उन्हीं के चरनों में पहुंचने की आसा दृढ़ करके जतन में लगना चाहिये, और किसी तरह का भरम और संदेह अपने चित्त में इस क़िस्म का न लाना चाहिये, कि जब बेद मत के सिद्धान्त के परे संत मत का सिद्धान्त उससे ऊंचे देश में समझा गया, तो शायद आइंदा इसके भी परे कोई दूसरा मत अपना सिद्धान्त पद ज़ाहिर करे, क्योंकि ऊपर के लिखे हुए बचन से साफ़ ज़ाहिर और साबित होता है, कि राधास्वामी पद के परे और कोई देश का होना ना मुमकिन है, और जो कोई अपने मत की बड़ाई दिखाने को कोई पद अपनी तरफ़ से नया नाम रख कर बयान करे, तो उसका कहना बिलकुल झूंठ और नामुमकिन समझना चाहिये, और पहिले तो वह पिंड और ब्रह्माण्ड और उसके परे संत

अथवा दयाल देश का भेद तफ़सील के साथ नहीं बयान कर सकेगा, क्योंकि किसी मत में यह भेद खोल कर जैसा कि संतों ने दया करके फ़रमाया है किसी दरजे तक का भी नहीं लिखा है, फिर जो कोई कि झूंठा दावा करे, और थोड़ा बहुत भेद रास्ते का भी बयान करे, तो जानना चाहिये कि वह राधास्वामी मत की किताबों से चोरी करके कहता है, और जो उसकी कहन की बग़ौर जांच की जावेगी, तो ज़रूर उसकी चोरी और नादानी भेद के उलटे पलटे या नीचे ऊपर के बयान में निकल आवेगी ॥

१०—इस वक़्त में जो रास्ते का भेद इस क़दर खोल करके कहा गया है, यह कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने आप संत रूप धर कर प्रघट किया है-किसी पिछले संत ने भी इस तरह सफ़ाई और आसानी के साथ नहीं खोला, फिर किसी जीव की क्या ताक़त कि जो इस क़िस्म का भेद कह सके, सिवाय उस हालत के कि उसने खुद संत सतगुरु से सीखा और समझा होवे, अब संसय और भरम छोड़ कर पूरा और पक्का निश्चय राधास्वामी के बचन का मन में धारण करके, सच्ची और पक्की आसा उनके चरनों में पहुंचने की बांधकर, सुरत शब्द मारग का अभ्यास शुरू

करना चाहिये, और उनकी दया का बल लेकर आहिस्ता २ रास्ता तै करना चाहिये, संत सतगुरु राधास्वामी दयाल की मेहर से एक दिन धुर पद में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होगा, और वहीं बिसराम पावेगा, और मालूम होवे कि राधास्वामी मत के अभ्यासी को कुल्ल मतों का सिद्धान्त और फिर बेद मत का सिद्धान्त पद रास्ते में मिलेगा, और वहां की सैर करके अभ्यासी की सुरत ऊपर चढ़ कर, राधास्वामी के निज धाम में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होवेगी ॥

बचन ३२

शब्द द्वारे सुरत अपने निज घर में (जो कि राधास्वामी धाम है) पहुंच सक्ती है और द्वारों से धुर मंज़िल तक नहीं पहुंचेगी कहीं न कहीं रास्ते में अटक रहेगी और कारज पूरा नहीं बनेगा

१-जितने द्वारे पिंड में हैं, उन सब पर रूह की धार उतर कर, भोग बिलास और संसार का कारज करती है, सो इन सब द्वारों से सुरत के सिमटाव का

जतन मुमकिन है, यानी चाहे जिस द्वारे से जो कोई सुरत को उलटाना चाहे तो वह उलट सकती है ॥

२–कुल्ल द्वारे पिंड में नौ हैं, यानी दो द्वारे आंखों के, दो कानों के, दो नासिका के, एक मुख, एक लिंग यानी पेशाब की इन्द्री, और एक गुदा यानी पाखाने की इन्द्री ॥

३–जाग्रित अवस्था में अगर्चे सुरत की धार सब इंद्रियों के द्वारों पर मौजूद हो कर कारवाई करती है, पर आंख के मुक़ाम पर उसकी ख़ास बैठक समझी जाती है, क्योंकि पुतली के ज़रा से खिंचाव और चढ़ाव में फ़ौरन देह और कुल्ल इन्द्रियां बेकार हो जाती हैं ॥

४–सुरत के चढ़ाने के वास्ते चाहे जिस द्वारे से शुरू किया जावे, कोई आसरा यानी सवारी ज़रूर दर्कार है, बग़ैर इसके तनाव और खिंचाव और चढ़ाव मुमकिन नहीं है ॥

५–जिस किसी ने गुदा चक्र से खिंचाव और चढ़ाई शुरू की, वह प्राणों के आसरे चले–यह सवारी बहुत कठिन है, और इसके संजम और परहेज़ भी बहुत मुश्किल हैं, गृहस्ती जीवों से इस अभ्यास का बन आना ना मुमकिन है, और ख़ौफ़नाक है, यानी ज़रा

सी बद परहेज़ी और बेतरतीबी में सख़्त बीमारी या जान के जाने का ख़ौफ़ है, और इसी तरह विरक्तों से भी यह अभ्यास दुरुस्ती से पूरा २ नहीं बन सकता, इस द्वारे पर यानी गुदा चक्र में गनेश का बासा है, और बहुतेरे इस देवता के ध्यान और पूजा में अटक कर यहां के यहीं रह गये, और जो किसी विरले विरक्त से यह अभ्यास प्राणों की चढ़ाई का थोड़ा बहुत दुरुस्ती से बन पड़ा, तो वह नाभी या हिरदे या कंठ चक्र में पहुंच कर थक गये, और वहीं थोड़ी बहुत सिद्धी और शक्ती हासिल करके रह गये, कोई विरला अभ्यासी छठे चक्र तक पहुंचा, और भक्त राज कहलाया, और कोई २ उसके परे चिदाकाश में समाये, और जोगी ज्ञानी कहलाये ॥

६—किसी २ ने इन्द्री द्वारे से अभ्यास शुरू किया, और काम की धार के आसरे चढ़ने का इरादा किया, और किसी क़दर प्राणों के रोकने का अभ्यास भी उसके संग किया, लेकिन यह आसरा या सवारी ऐसी सख़्त और अजीत है, कि कोई चलने वाला इस रास्ते से सिवाय किसी बिरले के, छठे चक्र तक या उसके परे नहीं पहुंचा, और इसी द्वारे यानी इंद्री चक्र में थक कर रह गये, इस मुक़ाम के अभ्यासी

यानी उपाशना वालें वाम मारगी और भैरवी चक्र वाले कहलाते हैं, और आज कल के वक्त में यह लोग निपट बाहरमुखी चाल ढाल और खान पान नामुनासिब में वर्ताव कर रहे हैं, कि जिससे कोई परमार्थी फ़ायदा हासिल नहीं होता, बल्कि और घाटा होता है ॥

७–कोई २ मुख के द्वारे जिभ्या को और उसके साथ सुरत चेतन्य की धार को उलटा कर और तालू के मुक़ाम पर जमा कर, अमृत रस जो ऊंचे से टपकता है, पीकर तृप्त हो गये, और इतने ही को मुक्ती का साधन समझ कर आगे न चले, और इसी आनंद को आत्मानंद समझा ॥

८–कोई २ नासिका के द्वारे पवन खींच कर और भृकुटी तक लेजा कर और वहां चंद मिनट ठहरा कर, फिर दूसरे द्वारे से नासिका की पवन को निकालने का अभ्यास करने लगे, और इतने ही ठहराव को कुंभक समझ कर और कुछ रोशनी जो नज़र आई उसको आत्मा का प्रकाश मान कर, इतने ही आनंद में तृप्त हो गये, इस अभ्यास को पूरक रेचक और कुम्भक कहते हैं, इनकी भी रसाई इससे ज्यादा नहीं हुई ॥

९–कोई २ कानों को बंद करके और उन द्वारों से चेतन्य धार को समेट कर, मजमुआ का शब्द यानी अनहद घोर (जो मुताबिक़ पाताञ्जल शास्त्र के दस प्रकार की आवाज़ है) सुन कर मगन हो गये, और जब मन और इन्द्रियां उनकी आवाज़ का रस पाकर निश्चल हो गईं, तब चित्त के एकाग्र होने से उनको विशेष रस प्राप्त हुआ, और समाधी कीसी हालत हो गई, वे इसी आनंद को आत्मानंद और समाधी की हालत को अपना सिद्धान्त समझ कर इतनी ही कार-रवाई करके तृप्त हो गये, और शब्द का खोज कि कौन धुन कहां से आती है न किया, और इसी सबब से पिंड के परे उनके मन और सुरत नहीं गये, यानी अंतरगत छः चक्र के रहे ॥

१०–किसी २ ने दृष्टी की साधना इस तौर पर करी, कि अपनी नज़र को दोनों आंखें खुली रखकर नाक की नोक पर जमाया, या श्याम बिंदी सफ़ेद दीवार पर लगा कर या चिराग़ की लौ पर ठहराया, और तरह २ की रोशनी देख कर और कुछ थोड़ी सी शक्ती दूर नज़री की हासिल करके तृप्त हो गये, या किसी ने आंखें बंद करके अपनी नज़र को दोनों भवों के मध्य में या उससे ऊपर की तरफ़ जमाया, और

पांच रंग की रोशनी को (जो कि तत्वों का सूक्ष्म और नूरानी स्वरूप है) या सुफ़ेद रोशनी ज़्यादा से ज़्यादा चमक के साथ चारों तरफ़ मिसूल चांदनी के छाई हुई देख कर और उसी को आत्मानंद और आतम दर्शन समझ कर मगन और तृप्त हो गये, और इससे आगे न बढ़े ॥

११–यह सब अभ्यास वाले सत्त पद से बेख़बर थे, क्योंकि इनको सतगुरु धुर पद के भेदी और पहुंचे हुए नहीं मिले, और इसी सबब से यह थोड़ी दूर चल कर रास्ते में रह गये–हर चंद कि यह सब जुक्तियां ओछी हैं, यानी माया के मंडल में ख़तम हो जाती हैं, पर यह अभ्यासी लोग इन जुक्तियों के भी पहुंच यानी रसाई के मुक़ाम तक नहीं पहुंचे, और उनका आनंद भी कच्चा और ओछा रहा, यानी जब माया का भारी चक्कर आया उस वक़्त उसी की तरफ़ झोका खा गये, सिवाय इसके इनके अभ्यास में बड़ी भारी कसर भक्ती की रही, यानी इन्होंने किसी को अपना भगवंत क़रार न दिया, और न उसके नाम और धाम का भेद पाया–सिर्फ़ आत्मा को सर्व व्यापक मान कर और उसको रोशनी रूप समझ कर उसी में लै होने का इरादा करके अभ्यास करते रहे, और

हाल यह कि जो रोशनी उनको नज़र आई, वह या तो तत्त्वों की थी या आत्मा का भाश नीचे के दरजे में था–सिर्फ़ जोगी ज्ञानी आत्मा के मुक़ाम तक पहुंच कर चिदाकाश में, जो कि छः चक्र के परे है, लै हुए, और जोगीश्वर ज्ञानी त्रिकुटी में पहुंच कर, उसके परे महा आकाश में लै हुए, लेकिन यह दोनों प्राणों के चढ़ाने का अभ्यास करके, अपने २ सिद्धान्त पद में पहुंचे॥

१२–लेकिन जो कि प्राणों की चढ़ाई का अभ्यास महा कठिन और ख़तरनाक था, इस सबब से कोई बिरले अभ्यासियों को जोगी और जोगीश्वर पदवी हासिल हुई, और बाक़ी अभ्यासी छः चक्र के अंतर गत किसी न किसी अस्थान पर रह गये–ऐसी हालत अभ्यासियों की और बाक़ी लोगों का झुकाव बाहरमुखी काररवाई में मिस्ल तीरथ बरत और मूरत पूजा वग़ैरह के, और वाचक ज्ञानी और बेदान्तियों का फंसाव बिद्या और ग्रंथों के पढ़ने और पढ़ाने में मुलाहेज़ा करके, कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल आप संत सतगुरु रूप धर कर प्रघट हुए, और अति दया करके सीधा और सहज और धुर पद में पहुंचाने वाला मारग सुरत शब्द और ध्यान का प्रघट फ़रमाया कि जिसका अभ्यास हर कोई औरत और मर्द लड़का

जवान और बूढ़ा और पढ़ा लिखा और अनपढ़ चाहे गृहस्त होवे या विरक्त आसानी से बग़ैर किसी ख़तरे और विघ्न के कर सकता है ॥

१३–शरह उस अभ्यास की जो कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने दया करके प्रघट किया, यह है, कि पहिले तो भेद धुर धाम का मय मंज़िलों यानी अस्थानों के जो कि रास्ते में जीव यानी सुरत की पिंड में बैठक के मुक़ाम से धुर पद तक बाक़ै हैं, बतलाया, और फिर हर एक अस्थान का रूप और वहां के शब्द का भेद, जो कि जुदा २ है, समझाया और हुक्म दिया कि मन और सुरत और दृष्ट को आहिस्ता २ उलटा कर, धुन और रूप के संग घट में ऊपर की तरफ़ चढ़ाना शुरू करो, जिस क़दर मन और सुरत सिमट कर ऊपर की तरफ़ सरकते जावेंगे, उसी क़दर रस और आनंद मिलता और बढ़ता जावेगा, और सतगुरु की दया और राधास्वामी दयाल की मेहर से आहिस्ता २ और सहज २ सुरत और मन पिंड से न्यारे होकर ब्रह्माण्ड में चढ़ते जावेंगे, और फिर मन का संग छोड़ कर उसके परे सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल के देश में चढ़कर पहुंचेगी, और वही इसका निज घर है, जहां से आदि

में उतरी थी, सो वहीं पहुंच कर महा आनंद को प्राप्त होगी—वहां किसी तरह का कष्ट और कलेश और जनम मरन और काल और करम का चक्कर नहीं है ॥

. १४—सुरत शब्द मारग के अभ्यासी को दिन २ अपने बंधन जो कि पिंड और कुटुम्ब परिवार और भोगों और संसारी पदार्थों के साथ लगे हुए हैं, ढीले होते और छूटते हुए मालूम होंगे, और उसी क़दर दिन २ कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रेम और बिस्वास और भी सतगुरु के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी, यानी अपनी इसी ज़िंदगी में अपना उद्धार होता हुआ दिखलाई देता जावेगा ॥

१५—बड़ी महिमा इस अभ्यास की यह है, कि इसके कराने वाले और हरदम रक्षक आप राधास्वामी दयाल हैं, सच्चे अभ्यासी को इस करनी के करने में किसी क़िस्म की तकलीफ़ या कलेश अंतर में नहीं होता, बल्कि दिन २ उमंग और शौक़ इस अभ्यास के करने और बढ़ाने का बढ़ता जाता है, और अपने प्रीतम कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की मेहर और दया और हर तरह की रक्षा अन्तर और बाहर

प्रत्यक्ष मालूम होकर प्रेम और निश्चय को बढ़ाती और पकाती जाती है, कि जिससे दिन २ आनंद बढ़ता जाता है, और अपने सच्चे और पूरे उद्धार के होने में किसी तरह का शक और शुभा बाक़ी नहीं रहता ॥

१६–राधास्वामी मत के अभ्यासी की सुरत अपनी यानी जान की धार पर सवार हो कर निज घर की तरफ़ उलट कर चढ़ती है, और बाक़ी जितने अभ्यास कि और मतों में जारी हैं, उन में चढ़ाई किसी न किसी मायक धार पर सवार हो कर की जाती है, और इस सबब से वे माया के घेर में (कि जहां जनम मरन का चक्कर देर सवेर जारी है) ख़तम हो जाते हैं, यानी ऐसे अभ्यासियों का चाहे वे अपने मत के सिद्धान्त पद तक भी पहुंच जावें, सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होता ॥

१७–और मालूम होवे कि किसी मत का कोई अभ्यास चढ़ाई का इस वक़्त में बग़ैर कमाई संतों की जुगत यानी सुरत शब्द मारग के क़ितई नहीं बन सकता, और इस मारग का भेद सिर्फ़ संत सतगुरु या साधगुरू या उनके सच्चे और प्रेमी अभ्यासी सतसंगी से मिल सकता है, और किसी तरह कोई

वह भेद और जुगत अभ्यास की मालूम नहीं कर सकता, और जो कोई किताबों को देख कर या थोड़ा बहुत हाल ज़बानी लोगों से सुन कर अपनी तजवीज़ पर अभ्यास शुरू करेगा, उसका रास्ता हरगिज़ नहीं चलेगा, बल्कि धोखा और झटका और ख़ौफ़ खा कर उस अभ्यास को थोड़े अर्से में छोड़ देगा ॥

१८-इस वास्ते अब आम तौर पर पुकार के कहा जाता है, कि जो कोई अपना सच्चा और पूरा उद्धार सहज और सुखाला चाहता है, और दुनिया और उसके कारोबार को देख कर, जिसका दिल इस तरफ़ से उदास हुआ है, उसको बल्कि कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि अपने जीव के कल्यान के निमित्त कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन में आवें, यानी दीन अधीन होकर उनकी मेहर और दया के आसरे और भरोसे पर उनकी सहज जुगत की कमाई थोड़ी बहुत (जिस क़दर बन सके) शुरू कर दें, तो उनकी मेहर और दया से थोड़ा बहुत रस मिलता जावेगा, और अभ्यास दिन २ आहिस्ता २ बढ़ता जावेगा, और इसी तरह एक दिन धुर पद में पहुंच कर निर्भय और निहचिन्त हो जावेंगे ॥

१९--सुरत शब्द मारग की ऐसी महिमा है, कि जिसने प्यार और शौक़ के साथ थोड़े दिन भी इस

अभ्यास को किया, और जो उसका चोला छूट गया तो वह किसी नीचे की जोन में नहीं जावेगा, और फिर नर देही पिछले जनम से उत्तम और विशेष सुखदाई धारन करके, सतगुरु के सतसंग में शामिल होवेगा, और जहां से कि अभ्यास छोड़ा है वहां से शुरू करके ऊपर की तरफ़ चढ़ाई की तरक्क़ी करेगा, और जब तक कि धुर पद यानी राधास्वामी धाम में नहीं पहुंचेगा, तब तक बराबर मनुष्य स्वरूप धारन करके तीन चार या पांच जन्म में संत सतगुरु राधास्वामी दयाल की दया से अपना अभ्यास पूरन करेगा ॥

२०–एक और सिफ़त राधास्वामी मत के अभ्यास की यह है, कि जो कोई सच्चा होकर शौक़ के साथ इस काम में लगेगा, वह नित्त जितना अभ्यास दुरुस्ती से करेगा, उसी क़दर उसको रस और आनंद मिलता जावेगा, यानी अपनी कमाई का जिस क़दर बन सके रोज़मर्रह फल लेता जावेगा, और दिन २ वह रस और आनन्द बढ़ता जावेगा, कि जिससे अभ्यासी के शौक़ और प्रीत प्रतीत की तरक्क़ी होती जावेगी, और नई २ उमंग प्रेम और भक्ती की, सतगुरु और कुल्ल मालिक दयाल के चरनों में जागती जावेगी, और उसी क़दर

संसार और उसके भोगों और पदार्थों से, चित्त में, उदासीनता पैदा होती और बढ़ती जावेगी, इस तरह राधास्वामी मत के अभ्यासी को पूरा और सच्चा सहज बैराग और सहज अनुराग हासिल होकर, उसका काम पूरा हो जावेगा, और संत सतगुरु राधास्वामी दयाल की मेहर और दया से कोई विघन काल और माया का उसके काम में हर्ज नहीं डाल सकेगा ॥

२१-एक और भारी सिफ़त राधास्वामी मत के अभ्यास की यह है, कि इसमें रोज़गार और गृहस्त आश्रम के छोड़ने की ज़रूरत नहीं है-सुरत शब्द अभ्यासी का चित्त सहज स्वभाव, जैसा कि उसका अभ्यास बढ़ता जावेगा, दुनिया और उसके भोगों और बंधनों से उपराम होता जावेगा, यानी मन से पदार्थों का भाव और चाव जाता रहेगा, फिर चाहे वह गृहस्त में रहे, और चाहे विरक्त में, कोई भोग और संसारी चाह उसको बांध नहीं सकेगी, यानी उसमें उसकी आशक्ती न होवेगी, बरख़िलाफ़ इस और मतों में जो अभ्यास जारी हैं, उनके संजम कठिन हैं, कि शुरू करते ही अभ्यासी को गृहस्त आश्रम का छोड़ना लाज़िम और ज़रूर होता है, जिसने प्यार से गृहस्तियों में किसी क़िस्म के अभ्यास

का करना या उसका खोज और दरियाफ़्त करना मौकूफ़ हो गया, यानी उनके उद्धार का रास्ता ही बिल्कुल बंद हो गया, और वे संजम ऐसे कठिन हैं कि बिरक्तों से भी दुरुस्ती से नहीं बन पड़ते, इस वास्ते उन में से कोई बिरला उस रास्ते पर कुछ दूर तक चला, और फिर मन और माया के चक्कर में आकर वहीं थक गया या उलटा गिरा, और किसी का काम दुरुस्त नहीं बना, यानी बसबब न मिलने संत सतगुरु और उनकी जुगती के, यह सब ख़ाली रह गये, और सच्चा और पूरा उद्धार किसी का नहीं हुआ ॥

२२–राधास्वामी मत के अभ्यासी को सिर्फ़ इस क़दर संजम दरकार हैं–(१) सच्चा शौक़ राधास्वामी दयाल के दर्शनों का और उनके धाम में पहुंच कर परम आनंद और बिलास का प्राप्त होना, (२) और दुनिया के सामान की चाह, औसत दरजे के गुज़ारे के लायक़ उठाना, और फ़ज़ूल और ना मुनासिब या ग़ैर वाजिब चाहों को घटाना और दूर करना, (३) नशे की चीज़ों और मास अहार से परहेज़ करना, (४) अपने मन रंजन के लिये किसी को बे सबब और बे फ़ायदा और ना मुनासिब तौर पर अंतर या बाहर दुख या तकलीफ़ न देना–जो शौक़

थोड़ा सा है तो वह सतसंग और अभ्यास करके दिन २ बढ़ता जावेगा, और यह संजम भी सहज बनते जावेंगे, और रफ़ा २ पुष्ट हो जावेंगे, और इस तरह राधास्वामी दयाल की मेहर और दया से एक दिन पूरा शौक़ और पूरा प्रेम हासिल होकर धुर घर में पहुंचा देगा ॥

२३–राधास्वामी मत के अभ्यासी को सब मतों के सिद्धान्त पद रास्ते में पड़ेंगे, यानी वह कुल्ल मुक़ामों की सैर करता हुआ, एक दिन कुल्ल मालिक के चरनों में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होगा, और वह रास्ते के मुक़ाम यह हैं–शिवलोक, ब्रह्मलोक, विष्णुलोक, रामलोक, कृष्णलोक, शक्ती का लोक, और आत्मा और परमात्मा, और ईश्वर और परमेश्वर, और ब्रह्म और पारब्रह्म पद, और जैनियों और सरावगियों का निरवान पद, और शुद्धसिला और बौधमत वालों का सिद्धान्त पद, और मुसल्मानों के मुक़ामात मलकूत जबरूत और लाहूत और अर्श और कुरसी वग़ैरह, और ईसाइयों का मुक़ाम हज़रत ईसा और खुदा, और पिछले संतों का सत्तलोक और सत्त-नाम और अनामी वग़ैरह ॥

२४–इस क़दर बड़ा दरजा जैसा कि ऊपर ज़िकर हुआ, सुरत चलने वाली, यानी अभ्यासी को, संत

सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की मेहर और दया से हासिल होना मुमकिन है ॥

२५-अब मालूम होवे कि जितने अभ्यासों का ज़िकर ऊपर हुआ है, और वह नौ द्वारों के मुक़ाम से शुरू किये जाते हैं, उनमें सुरत की एक २ धार का सिमटाव और फिर खिंचाव होता है, और जो जुगत कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने जारी फ़रमाई, उसमें संतों के प्रथम अस्थान सहसदल-कंवल के (जो कि कुल्ल मतों का सिद्धान्त और आख़िरी मुक़ाम है) रूप और शब्द के आसरे से, सुरत की पूरी धारा के सिमटाव और खिंचाव और चढ़ाई का अभ्यास किया जाता है, यानी सुरत के असली बैठक का मुक़ाम जो तीसरा तिल है, वहां से उसकी चढ़ाई शुरू की जाती है, और इस अभ्यास के करते ही अंग २ से और भी नौ द्वारों से सिमटाव और खिंचाव सुरत का शुरू हो जाता है, और वह तीसरे तिल में भरती जाती है, और वहां ऊंचे की तरफ़ सहसदलकंवल और त्रिकुटी वग़ैरह पर चढ़ती जाती है, और यही अभ्यास करने से रफ़ा २ एक दिन धुर मुक़ाम में पहुंच कर पूरा काम बन जाता है ॥

२६—यह तीसरा तिल जोगियों का दसवां द्वार है, और संतों के बचन के मुवाफ़िक़ यह पिंड का नाका है, यानी इसके नीचे पिंड और ऊपर की तरफ़ ब्रह्माण्ड की हद्द है—राधास्वामी मत का अभ्यास इसी मुक़ाम और द्वारे से शुरू होता है ॥

जिसका शौक़ सच्चा है, और विरह और प्रेम अंग लेकर अभ्यास शुरू करता है, उस पर यह हालत सुरत के सिमटाव और खिंचाव और चढ़ाई की गुज़रती है, और वही अभ्यासी निज कर देखता है, और जांच करता है, कि इस जगत की कमाई से (जो दुरुस्ती से बन आवे) बहुत जल्द मन और सुरत का खिंचाव और सिमटाव होता है, और उस वक्त तमाम बदन सुन्न होता जाता है ॥

२७—अब बुज़ुर्गी और बड़ाई राधास्वामी मत के जुगत की, कुल्ल अभ्यासों पर ऊपर के लिखे हुए हाल से साफ़ ज़ाहिर है, और उसका असर भी मन और इन्द्री और देह पर, बहुत जल्द और पूरा २ होता है, और बसबब लेने सरन और ओट संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के इस मत के अभ्यासी को कोई बिघन काल और माया का नहीं सताता है, यह बड़ाई और आसानी और रक्षा और

किसी अभ्यास में नहीं पाई जाती है, हर चंद कि मन और इन्द्रियां और पांचों दूत (काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार) थोड़ा बहुत अपनी पुरानी आदत और चाल के मुवाफ़िक़, किसी क़दर अपना ज़ोर दिखाते हैं, पर संत सतगुरु के सतसंग की मदद और राधास्वामी दयाल की दया से वे दिन २ ढीले और कमज़ोर होते जाते हैं, यानी अभ्यासी के चित्त में दिन २ संसार और उसके पदार्थों की तरफ़ से उदासीनता बढ़ती जाती है, और उसके साथही चरनों में प्रेम और दीनता बढ़ती जाती है, और रास्ता आहिस्ता २ तै होता जाता है, कि जिसके सबब से दिन २ सुरत का माया के मंडल से उबार यानी निकास होता जाता है, और उसी क़दर संसार के बंधन ढीले और हलके होते जाते हैं, और जिस क़दर इस तरह चढ़ाई होती जाती है, उसी क़दर निर्मल रस और आनंद मिलता और बढ़ता जाता है ॥

२८—जैसी कि भारी दया कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने, इस वक़्त के जीवों को दुखी और बलहीन देखकर, इस आसान और पूरी जुक्ती के प्रघट करने में फ़रमाई है, ऐसी किसी वक़्त में जीवों पर नहीं हुई, इसका पूरा २ शुकर किसी की ताक़त नहीं कि

अदा कर सकें, जिस किसी की समझ में यह बात अच्छी तरह से आगई, उसके मुवाफ़िक़ दुरुस्ती से अमल दरामद यानी कारवाई शुरू करना यही उस गहरी और पूरी दया राधास्वामी दयाल की क़दर-दानी यानी महिमा जाननी है, फिर वही जीव दया पात्र और बड़ भागी समझना चाहिये, क्योंकि वह राधास्वामी दयाल की चरन सरन दृढ़ करके और नित्त अभ्यास करके दिन २ विशेष दया हासिल करता हुआ, एक दिन धुर पद में पहुंच कर अपना काम पूरा बनवा लेगा, और परम आनंद को प्राप्त होकर काल के कष्ट और कलेश और जनम मरन के दुक्खों से हमेशा को बच जावेगा ॥

२९—ऐसी बड़ी महिमा राधास्वामी मत और उसके अभ्यास और जुक्ती की है, कि जिसकी बराबरी कोई अभ्यास किसी क़िस्म का, जो दुनिया भर में जारी हैं, नहीं कर सकता, सबब यह है कि राधास्वामी मत के अभ्यास का रक्षक कुल्ल मालिक आप है, और संत सतगुरु जो उस मालिक के निज अंस, यानी निज पुत्र या उसका निज रूप हैं, इस संसार में प्रघट होकर उस अभ्यास को जारी फ़रमाते हैं, और अपने सरन आये हुए जीवों, यानी अभ्यासियों

की आप रक्षा और ख़बरगीरी करते हैं, और दिन २ उनके मन और सुरत को निर्मल करके आप अपनी दया से उबारते और चढ़ाते जाते हैं, और जब २ उनके इस क़िस्म के जीव संसार में वास्ते पूरे करने अपने अभ्यास के भेजे जाते हैं, तब २ आप भी अति दया करके, वास्ते उनकी सम्हाल और तरक़्क़ी के प्रघट होकर, सतसंग खड़ा करते हैं ॥

३०–और मतों के अभ्यास में न तो ऐसी सहज जुगत चलने की है, और न पूरा भेद धुर घर और उसके रास्ते का है, और न किसी बड़े का अंतर और बाहर सहारा और आसरा लेकर चाल चलती है, बल्कि यह सब जीव अपने बल और पुरुषार्थ का अहंकार लेकर काररवाई करते हैं, इस सबब से रास्ते में धोखा और ठोकरें खाते हैं, और कहीं न कहीं थक कर या ख़ौफ़ खाकर, या थोड़ी बहुत सिद्धी और शक्ती में आशक्त होकर ठहर जाते हैं, और आगे चलने का रास्ता उनका बंद हो जाता है, यानी माया के घेर के पार कोई नहीं गया और न जा सकता है ॥

३१–कुल्ल रचना प्रेम की धार से प्रघट हुई, और प्रेम ही के आसरे ठहरी हुई है, और कुल्ल कार-रवाई रचना और जीवों की प्रेम के वसलों से हो रही

है, यानी जहां जिसका शौक़ है, वहीं वह तन मन धन और इंद्रियों को लगाता है, यानी काम में लाता है, फिर राधास्वामी मत में सिर्फ़ प्रेम की महिमा है, यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में पहिले प्रीत और प्रतीत करना ज़रूर है, और फिर सतसंग और अभ्यास करके वही प्रीत और प्रतीत दिन २ बढ़ाई जाती है, यानी दर्शनों का शौक़ और प्रेम रोज़ बरोज़ तेज़ होता जाता है, जिस क़दर कि अभ्यास में चरनों का रस और आनंद मिलता जाता है ॥

३२–जिस मत में कि प्रेम नहीं है, वह मत और उसका अभ्यास ख़ाली और थोथा है, इसी सबब से और मतों के अभ्यासी जो कि अपने बल से चले या अपने को ब्रह्म मान कर खुश हो गये, रास्ते में थक कर रह गये, बल्कि उनको सीधा और सच्चा रास्ता भी मालूम न हुआ, माया और काल के जाल में फंसे रहे, और उन्हीं के मारग होकर के चले कि जिससे उस जाल से बाहर न निकले ॥

यह बड़ी भारी कसर कुल्ल मतों में है, कि पहिले तो प्रेम का कुछ ज़िकर ही नहीं और जो कहीं है, तो वह मूर्तों और ग्रंथों और २ नक़लों में लगाया

या ब्यापक चेतन्य में ख़र्च किया, कि जहां से उलट कर कोई फ़ायदा या मदद नहीं मिली और न आइंदा को तरक्क़ी हुई, और फल उसका यह हुआ कि यह प्रेम रास्ते के तै करने के वास्ते कुछ मदद न दे सका, क्योंकि सच्चे कुल्ल मालिक का भेद न पाया, और न उसका रास्ता जाना, और जिनको मालिक क़रार दिया उनका कोई ठिकाना सिवाय मंदिर और मूरत या तीरथ या ग्रंथ या और किसी नक़ल के मुक़र्रर न किया, और ब्यापक चेतन्य को हर जगह मौजूद समझ कर चलना और चढ़ना सुरत का फ़ज़ूल समझा, इस सबब से सब के सब पिंड ही में रहे, और उसकी हद्द के बाहर नहीं गये, और इस वास्ते मन के आकाश में समाये, और अपने करम और बासना के अनुसार बारम्बार देह धर कर जगत में भरमे—यह हालत उनकी सिर्फ़ न जानने भेद कुल्ल मालिक और न करने प्रेम उसके चरनों में और न मिलने पूरे सतगुरु से हुई—बरख़िलाफ़ इसके राधास्वामी मत में अव्वल खोज सतगुरु का और प्रीत उनके चरनों में करना पड़ता है, और फ़िर प्रेम और दीनता कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरन कंवल में, जिनका भेद संत सतगुरु समझा कर मिलने

का जतन बतलाते हैं, किया जाता है, और नित्त सतसंग और अभ्यास करके यही प्रेम बढ़ाया जाता है, कि जिसकी मदद से रास्ता आसानी से तै होता है, और राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया से सब बिघन हटाकर अभ्यासी एक दिन निज चरनों में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होता है ॥

३३-हरचंद सब मतों में थोड़ी बहुत महिमा और ज़रूरत गुरू की बर्णन की है, पर गुरु भक्ती का बर्तावा प्रेम के साथ सच्चे तौर पर इस ज़माने में कहीं जारी नहीं है, बल्कि इस वक़्त में जो विद्या और बुद्धिवानों ने समाज खड़े किये हैं, उन में तो कुछ गुरू की ज़रूरत और क़दर बिल्कुल नहीं रक्खी है, क्योंकि इन समाजों में सिर्फ़ किताबों का पढ़ना और पढ़ाना और भजन वग़ैरह का गाना बजाना, जिनमें अंतरी अभ्यास का सिवाय ध्यान (बे ठिकाने) व्यापक चेतन्य के कुछ ज़िकर नहीं है, जारी है, और यह काररवाई सब आदमी जिन्होंने थोड़ी बहुत विद्या क़ाबिल पढ़ने उन किताबों के हासिल की है, बग़ैर मदद अभ्यासी गुरू के कर सकते हैं, और ऐसी आसानी और आज़ादगी देख कर, नये विद्या पढ़े हुए लोग कसरत से शामिल हो गये हैं, यह लोग सच्चे मालिक

के भेद और निशान से बेख़बर हैं, और न उनको उसका खोज और तलाश है, और इस वास्ते वे सच्चे और पूरे गुरू की (जिन से यह भेद पूरा २ मिल सकता है, और भी हाल रास्ते का और जुगत चलने की मालूम हो सकती है) क़द्र नहीं जान सकते, और न उनकी पहिचान कर सकते हैं ॥

३४–राधास्वामी अथवा संत मत में सच्चे और पूरे गुरू की तलाश और वक्त प्राप्ती के उनके चरनों में सच्ची भक्ती और प्रेम करने के वास्ते निहायत ताकीद है, क्योंकि इस मत में सच्चे मालिक से मिलने और उसके धाम में चलकर और चढ़कर पहुंचने की काररवाई की जाती है, और इसी के दुरुस्ती से बन आने के लिये भेदी और पहुंचा हुआ या चलता हुआ और पहुंचनहार गुरू दरकार है, बग़ैर उसकी मदद के इस मत और उसके अभ्यास की काररवाई क़ितई नहीं बन सकती है, और कुल्ल मालिक और भी ब्रह्म यानी तिरलोकी नाथ का हुक्म है, कि मेरे धाम में कोई बग़ैर वसीले पूरे गुरू के नहीं दख़ल पा सकता है, और न वहां ठहर सकता है, यानी जब तक कि पूरे गुरू से मिल कर, योग अभ्यास (यानीं मिलने का जतन) न करेगा, और जो लक्षन

और सफ़ाई या जिस क़िस्म की रहनी दरकार है, वह पूरे गुरू की दया और जो अभ्यास वह बतावें उसकी मदद से हासिल न होंगे तब तक कोई जीव मालिक के धाम में यानी ब्रह्म पद और धुर पद में नहीं पहुंच सकता है, और न वहां ठहर सकता है ॥

३५–जब हक़ीक़त हाल यह है जैसा कि ऊपर लिखा गया, तब समझवार और निरपक्ष सच्चा दर्दी परमार्थी ज़रा ग़ौर करके आप समझ सकता है, कि जिन मतों में अंतरी भेद और अभ्यास चढ़ाने मन और सुरत का ज़ारी नहीं है, और न उसके भेदी और सिखाने वाले गुरू की ज़रूरत या तलाश है तो वह मत और जो कुछ कि काररवाई उन में जारी है, सब ज़ाहिरी और ऊपरी मिसल छिलके के है, और मग़ज़ यानी तत्त्व वस्तु की समझ और पहिचान और प्राप्ती उसमें बिलकुल नहीं है–फिर जीव का उद्धार और माया के मंडल से उबार वहां कैसे हो सकता है–शुभ करम का फल ऐसी काररवाई से अलबत्ता हासिल हो सकता है, पर सच्चे और कुल्ल मालिक का दीदार या उसके धाम में रसाई या चढ़ाई की काररवाई शुरू करने के वक़्त से थोड़ा बहुत चरनों का रस और आनंद का मिलना और बढ़ना हरगिज़ मुमकिन नहीं है ॥

बचन ३३

मन और सुरत नौ द्वारों से झांक कर इस लोक के भोगों में फंस गये हैं, सो दसवें द्वार की तरफ़ झांकने और चलने से उन बंधनों से छुटकारा होगा और संत सतगुरु की दया से एक दिन निज घर में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होंगे

१—मालूम होवे कि सुरत की धार अव्वल मन के अस्थान पर और फिर वहां से (अनेक धारों में तक़सीम होकर) इन्द्री घाट पर बैठी, और इन्द्रियों के मुक़ाम से धारें जारी होकर, उनका मेल इस संसार की रचना और भोगों और पदार्थों के साथ हुआ, और हर एक इन्द्री द्वार पर जुदा २ रस और स्वाद भोगों का मन लेकर मगन होने लगा ॥

२—हर एक इन्द्री का रस भारी है, और मन सर्व अंग करके इन रसों का आशिक़ और आधीन हो गया है; और तवज्जह उसकी इन द्वारों के वसीले से बाहर पदार्थों में और अनेक चीज़ों में निहायत मज़बूती के साथ जम गई है, यहां तक कि उन

पदार्थों और चीज़ों की हालत बदलने में मन की भी हालत बदल जाती है, और उस तवज्जह को जो कोई हटाया चाहे तो नहीं हटती है, और ज़ोर और दबाव डालने में निहायत दुख मन को होता है ॥

३–यह धारें जो इन्द्री द्वारों से निकस कर अनेक जीवों और चीज़ों में बंध गई हैं, इस मन के बांधने के वास्ते गोया जंज़ीरें हो गई हैं, और आदत करके ऐसी कड़ी और मज़बूत हो गई हैं, कि उनके हटाने या तोड़ने में मन को भारी तकलीफ़ होती है, और जो कुदरती तौर पर एकाएक कोई बंधन ढीला होता है या टूट जाता है, तो मन निहायत ग़मगीन और उदास होता है, और वा वैला करता है यानी चिल्लाता बिल्लाता है, और रोता है, और झींकता है ॥

४–दुनियादारों की समझ ऐसी ओछी है, कि जिस किसी के ऐसे बंधन भारी और कसरत से हैं, उसी को वे दुनिया में भागवान और सुखी समझते हैं, और वह शख़्स आप भी अपनी गिरिफ़्तारी को बड़भागता समझ कर, बहुत ख़ुशी के साथ झेलता है, और दिल और जान से उसको कबूल करके दिन २ उसकी ज़्यादती चाहता है, और बावजूदे कि हर रोज़ झटके और धक्के खाता है, फिर भी ऐसा उस नशे में

मस्त और दीवाना हो रहा है कि ज़रा ख़ौफ़ और होश नहीं लाता, और ज़रा भी सोच और बिचार नहीं करता कि मैं किस आफ़त में फंस गया हूं, और आइंदा क्या हालत होगी, और कैसी सख़्ती और तकलीफ़ उठानी पड़ेगी ॥

५–जब कभी ऐसे जीवों को कोई परमार्थ का बचन सुनावे, और उनके हाल की ख़राब हालत से उनको ख़बर देवे, और जो कुछ कि इस तरह की रहनी का आइंदा नतीजा, यानी फल होवेगा, उसको जतावे, तो यह जीव अचरज करके उसके बचन को तवज्जह के साथ नहीं सुनते, बल्कि वह बचन इनको बहुत बुरे और सख़्त मालूम होते हैं, क्योंकि उनमें इनके भोगों और प्यारे रिश्तेदारों और पदार्थों की नाशमानता और बेवफ़ाई का ज़िकर है, और जो २ हरज इन में प्रीत और बंधन जारी रखने से आइंदा पैदा होंगे, उनका बयान है ॥

६–यह लोग बावजूदे कि रोग सोग और मरी और मौत वग़ैरह की काररवाई हर रोज़ अपनी आंख से इस दुनिया में देखते हैं, और जीवों को अनेक तरह की तकलीफ़ों और बीमारियों और मुसीबतों में मुब्तिला और निहायत दुखी मुलाहेज़ा करते हैं, पर

उनके दिल पर बहुत कम असर इन बातों का होता है, और कभी सोच और विचार इस बात का नहीं करते, कि एक दिन दुनिया और देह और घर और कुटुम्ब परिवार और माल और असबाब को ज़रूर छोड़ना पड़ेगा, और उस वक़्त कैसी सख़्त चोट मन पर पड़ेगी, और आइंदा कहां जाना होगा, और वहां क्या हाल होवेगा, यानी सुख मिलेगा या दुख, और इस ज़िंदगी में उसका कुछ बंदोबस्त करना चाहिये या नहीं ॥

७–जो जीव कि संसार में पैदा होते हैं, शुरू में सब भोले और अनजान होते हैं, पर संग करके उनकी हालत और चाह बदलती जाती है, यानी जैसा संग मिला, और जैसी हालत की महिमा सुनी, और जिन चीज़ों का लोगों की तबीअत में भाव और बड़ाई देखी, उसी मुवाफ़िक़ चाहें भी उठती हैं, और वैसी ही हालत पसंद आती है, और उसके हासिल करने को जतन किया जाता है–जतन सिद्ध होने पर मन खुश होता है, और सिद्ध न होने में दुखी होता है ॥

८–और परमार्थ का यह हाल है कि अनेक मत मन और बुद्धी के रचे हुए, या ईश्वर और देवताओं और महात्माओं के (जो ब्रह्मांडी मन की अंस और कला हैं) जारी किये हुए, इस दुनिया में फैल

रहे हैं, और हर एक अपनी २ समझ और तजर्बा और चाह और पहुंच के मुवाफ़िक़ अनेक रीत से बयान करता है, कि फ़लां २ काम करने से आइंदा सुख मिलेगा, या ईश्वर या किसी देवता या महात्मा की भक्ती और सेवा करने से यह २ फ़ायदा होगा, फिर बिचारे जीव हैरान हैं कि किसका कहना मानें और किस का न मानें, इस वास्ते सब के सब अपने २ क़ौम और बुज़ुर्गों की चाल ढाल और काररवाई के मुवाफ़िक़ थोड़ा बहुत अमल दरामद करने लगे, और खोज और तलाश पूरी और सच्ची समझ देने वाले का किसी के दिल में पैदा नहीं हुआ, और जो किसी ने अपनी बुद्धी और विद्या के बमूजिब तलाश भी करी तो विद्यावानों के ग्रंथ और किताबें पढ़ कर, और ओछी या उलटी समझ धारन करके, और भारी ग़लती में पड़ गये, कि वहां से उनका निकालना ज्यादा मुश्किल हो गया ॥

९-खुलासा यह कि सच्चे और कुल्ल मालिक का पता और भेद किसी को नहीं मिला, और न सच्चा और सीधा रास्ता अपने निज घर में जाने का कि जिससे आवागवन और देह धर कर दुख सुख भोगना दूर हो जावे मालूम हुआ—फिर सब जीव मन और बुद्धि

की निकाली हुई चालों में कि जिन से भूल और भरम नहीं मिट सकता, और न दुख सुख के जाल से छुटकारा मुमकिन है, अटक गये ॥

१०–असल हाल यह है, कि ईश्वर या ब्रह्म या महात्मा या देवता मिसल ब्रह्मा बिष्णु और महादेव वग़ैरह आपही सच्चे और कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल के भेद से बेख़बर थे, इस सबब से जो बानी और बचन और किताबें मज़हबी उन्हों ने बनाई, उनमें वह भेद कुल्ल मालिक का, और जुगत पहुंचने की उसके धाम में बयान नहीं की, और जो ब्रह्म पद तक का भेद और जैसी जुगत उसके प्राप्ती की प्राणायाम और और साधनों के वसीले से बर्णन करी, वह ऐसी कठिन और ख़तरनाक और संजम उसके ऐसे सख़्त कहे, कि उसकी काररवाई गृहस्त और बिरक्त दोनों से न हो सकी, और इस तरह सब के सब ख़ाली रह गये, यानी सच्ची मुक्ती के रास्ते पर कोई न चल सका–सिर्फ़ थोड़ा बहुत अभ्यास शुरू करके, और कुछ लज्ज़त और सरूर या सिद्धी शक्ती के हासिल होने पर, रास्ते में तृप्त हो गये, और आगे न बढ़े ॥

११-और जो कि ख़ुदमतलबी यानी स्वार्थी लोग जीवों को उपदेश देने के वास्ते जाबजा बहुत से प्रघट हो गये, और उनका संग करके और बचन मान कर जीवों को तकलीफ़ पहुंची, और सरीह यानी प्रत्यक्ष धोखा मालूम पड़ा, इस सबब से अब जो कोई सच्चा रास्ता और भेद बताने वाला मिलता है, तो उसके बचन की ज्यों की त्यों प्रतीत नहीं करते, और अनेक तरह के भरम और ख़ौफ़ उठा कर बचन नहीं मानते, और वही पुरानी नाक़िस चालों में, बारम्बार फंसे और अटके रहना मंजूर करते हैं, और अपने नफ़े और नुक़सान का बहुत कम ख्याल करके, सच्चे गुरू की तलाश में भी ढीले रहते हैं ॥

१२-जो जीव कि मूरख और निपट दुनियांदार और मन सैलानी हैं, वह तीरथ बरत और मूरत पूजा में अटक रहे, और जिन्होंने कि थोड़ी बहुत विद्या पढ़ कर अपनी बुद्धी किसी क़दर जगाई, वे ज्ञान के ग्रन्थ पढ़ने पढ़ाने में वाचक रह गये, यानी समझ बूझ परमार्थ की किसी क़दर हासिल की, पर उसके मुवाफ़िक़ अभ्यास नहीं किया, इस सबब से उनकी सुरत रूह का घाट यानी अस्थान नहीं बदला और निरे बातून रह गये ॥

इन में से बाज़ों ने अपने तईं ब्रह्म मान कर बिलकुल निचिन्ताई और बेख़ौफ़ी इख़्तियार करी, और अपने मन और इंद्रियों की चाल और चाह को उनका स्वभाव समझ कर बेधड़क सैर और तमाशा और भोगों में (जब वे भाग से मिल गये) बर्तने लगे, और गृहस्तियों को इस क़िस्म का ज्ञान सिखा कर उनको भक्ती मारग से हटा कर बेधरम कर दिया ॥

१३-कोई २ जीव तप जप और अनेक क्रियाओं के साधन में लग गये, जैसे नेती, धोती, बस्ती क्रिया करना, और खड़े रहना, या मौन साधना, या जल सैन करना, या पंच अग्नी तपना, या हमेशा तीरथों में भरमते रहना, या मेले तमाशों में उल्टे लटकना या कीलों पर बैठना, या नंगे रहना, और अनेक तरह के स्वांग बनाकर जगत को रिझाना वग़ैरह इन कामों में किसी तरह का परमार्थी फ़ायदा नहीं है-अलबत्ता थोड़ी सफ़ाई जिसमानी हासिल हो सकती है, या यह कि लोगों को खुश करके धन कमाना और अपनी मान बड़ाई करानी ॥

१४-बहुत से जीव ख़ास कर वे जिन्हों ने नई विद्या पढ़ी वे अनेक तरह के शक और शुभा निस्बत कुल्ल मालिक और सुरत रूह के, अपने मन में पैदा करके

परमार्थ से बिलकुल बेमुख हो गये, और खान पान और सैर तमाशे और कुटुम्ब परिवार और धन सम्पत्ति के मोह में फंस कर, और उसी को माहसल अपनी ज़िन्दगी का, यानी इस नरदेही का फल और लाभ समझ कर मगन हो गये, और परमार्थ का खोज फ़ज़ूल समझ कर उस तरफ़ की काररवाई बिल-कुल बंद कर दी, और आज़ादी को पसंद करके बेधड़क और बेक़ैद जैसी रहनी कि उनको पसंद आई, उसी मुवाफ़िक़ रहने लगे, और अपने मन की चाह के मुवाफ़िक़ खान पान और लिबास वग़ैरह में वर्तने लगे ॥

१५–ऐसी हालत जगत की देख कर यानी जीवों का परमार्थी उद्धार क़ितई बंद मुलाहेज़ा करके कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल संत सतगुरु रूप धारन करके प्रघट हुए, और अति दया करके भेद अपने धाम का, और हाल रास्ता और मंज़िलों का, और जुगत सुरत के वहां चढ़ कर पहुंचने की, आसान और निरविघ्न तरीक़े से वर्णन करी, और जीवों को निहायत मेहरबानी से समझाया कि नौ द्वारों में सुरत की धार का वर्ताव रोज़मर्रा इस लोक में हो रहा है, और हर एक द्वारे पर थोड़ा बहुत रस

या स्वाद या खुशी मन को उन इंद्रियों के विषय यानी भोगों के वसीले से हासिल होती है, और इसी क़दर रस और स्वाद और खुशी को प्राप्त होकर, कुल्ल जीव बहुत शौक़ के साथ भोगों में लिपट गये, और असली आनंद जो मन और सुरत को अंतर में दसवें द्वार की तरफ़ तवज्जह करने से मिल सकता है, और जो आनंद कि निर्मल और ठहराऊ और स्वतंत्र (यानी जीव के इख़्तियार में) है, उसको भूल कर, और किसी से उसका भेद और पता न पाकर, बिल्कुल बेख़बर रह गये, और इस तरह अपने जीव का भारी अकाज किया ॥

१६–दसवें द्वार से मुराद उस द्वारे से है, कि जिस में होकर रूह की धार ऊंचे मुक़ाम से उतर कर पिंड को तरो ताज़ा करती है, और ताक़त बख़्शती है, और वही धार नौ धारों में तक़सीम होकर, हर एक इन्द्री के द्वार पर बैठ कर, दुनिया के भोगों का रस देती है, तो जब कि उसके एक २ हिस्से में इस क़दर स्वाद है, कि जीव उसी में लिपट कर मस्त और बेहोश हो गये, तो उस धार में [जिसकी वह नौ धारें एक २ हिस्सा हैं] किस क़दर रस और आनन्द बग़ैर वसीले भोगों के हासिल होना मुमकिन है, इस

वास्ते कुल्ल जीवों को लाज़िम और मुनासिब मालूम होता है, कि उस धार का पता और भेद लेकर उस से मन और सुरत और इंद्रियों का थोड़ा बहुत समेट कर मेल करें, तब उसकी बुज़ुर्गी और महिमा की थोड़ी बहुत ख़बर होवे, कि अपने घट में ही महा आनंद हर वक्त़ तैयार और मौजूद है, और कोई दिन अभ्यास करके मन और सुरत के लगाने से मिल सकता है ॥

१७–और राधास्वामी दयाल ने फ़रमाया कि जिस धार पर सुरत उतरी है, [और वही धार जान और नूर और अमृत और शब्द धार है] उसी धार को पकड़ के, यानी शब्द की धुन को सुनते हुए सुरत को चढ़ाना चाहिये, यानी पिंड देश से जो दुख सुख और मलीनता का भंडार है, सुरत को निकाल कर पहिले ब्रह्माण्ड में, और उसके परे सत्तपुर्ष राधास्वामी धाम में, जहां से कि आदि में सुरत उतरी थी पहुंचाना चाहिये, जब तक यह काररवाई न की जावेगी, तब तक सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होवेगा, यानी देहियों के साथ दुख सुख के भोग और जनम मरन के चक्कर से छुटकारा और बचाव नहीं होगा ॥

१८–नौ द्वारों के वार यानी इस लोक की रचना

में सुरत और मन की धार इंद्रियों के वसीले से बराबर जारी है, और हर एक द्वारे पर थोड़ा बहुत रस लेती है, फिर दसवें द्वार की तरफ़ भी जो कि निज घट [यानी मस्तक में] है, सुरत की धार को संत सतगुरु से भेद रास्ते का और जुगत चलने की लेकर ज़रूर चलना चाहिये, तब उस गहरे आनंद और रस की जिसके सामने सर्व रस यहां के भोगों के, आहिस्ता २ फीके पड़ते जावेंगे, और जो घट में स्वतंत्र बग़ैर मिहनत और ख़र्च करने धन के जब चाहो जब छिन भर में हासिल हो सकता है, ख़बर पड़े, और तब मन और सुरत उमंग कर उस आनंद और रस के दिन २ ज्यादा लेने के वास्ते ऊंचे देश की तरफ़ दौड़ने लगेंगे ॥

१९—यह काम बग़ैर दया और मदद संत सतगुरु के दुरुस्ती से नहीं बन सकता है, इस वास्ते राधास्वामी दयाल ने ताकीद के साथ फ़रमाया, कि पहिले सतगुरु का खोज करके, उनके चरनों में प्रतीत सहित प्रीत करो; और उनका सतसंग और सेवा और आरती करके उनको अपने ऊपर मुतवज्जह और मेहरबान करलो, तब वे प्रसन्न होकर जो उपदेश सुरत शब्द के अभ्यास का करें, उसकी कमाई आहिस्ता २ बन पड़ेगी

यानी मन और सुरत शब्द की धुन को पकड़के घट में आंखों के मुक़ाम से चलना और चढ़ना शुरू करेंगे, और जिस क़दर दसवें द्वार की तरफ़ इनकी धारा जारी होवेगी, यानी मन और सुरत की चाल चलेगी, उसी क़दर रस और आनंद आवेगा, और दिन २ बढ़ता जावेगा, और संत सतगुरु की दया से माया और काल के विघन, रास्ते में हलके और दूर होते जावेंगे, और रास्ता आसानी से तै होता जावेगा, इस तरह एक दिन सुरत पिंड और ब्रह्माण्ड और मन और माया के घेर से न्यारी होकर अपने निज देश में पहुंच कर परम और अमर आनंद को प्राप्त होगी ॥

२०—और राधास्वामी दयाल ने फ़रमाया कि माया और काल ने, अनेक तरह के भोग और बिलास इस लोक में वास्ते लुभाने और फंसाने सुरत के रचे हैं, और सुरत यहां इस क़दर मन और इन्द्रियों के बस में पड़ गई है, कि अपने बल से भोगों को छोड़ नहीं सकती, और चाहे जिस क़दर समझौती इसको दी जावे, लेकिन भोगों के सन्मुख होते ही, मन उनकी तरफ़ झुक जाता है, और उनमें लिपट जाता है, और सुरत की धार भी लाचारी से उसके साथ भोगों की तरफ़ रवां हो जाती है, इस वास्ते जब तक कि

संत सतगुरु का संग न होगा, और वे अपनी मेहर और दया से इसको सहारा नहीं देंगे, और वक़्त २ पर इसकी सम्हाल नहीं करेंगे, तब तक इसका बचाव और छुटकारा मन और इंद्रियों के भोगों से कठिन बल्कि नामुमकिन है ॥

२१–कुल्ल जीवों को (जो अपना बचाव और छुटकारा चाहते हैं) चाहिये, कि संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की सच्चे दिल से सरन दृढ़ करके, उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाते रहें, और उनके उपदेश के मुवाफ़िक़ अंतरमुख अभ्यास सुरत शब्द मारग का करके अपना जनम सुफल करें ॥

नर देही का फल और लाभ यही है, कि अपने कुल्ल मालिक, और निज धाम का पता और भेद दरियाफ़्त करके वहां पहुंचने का जतन उमंग और प्रेम के साथ शुरू करें, नहीं तो मनुष्य और पशुओं में कुछ भेद नहीं है, यानी जो जीव कि भोगों की प्राप्ती के लिये उमर भर जतन करते रहे, और उन्हीं की आसा मन में धरी रही, तो उनकी काररवाई पशुओं की काररवाई के साथ बराबर हुई, और नर देही जिस में निज घर की तरफ़ चलने की ताक़त मिली थी, मुफ़्त बरबाद हुई–इस बात की समझ लेकर जो जीव

अपने निज फ़ायदे के वास्ते, राधास्वामी दयाल के उपदेश को मानेंगे, और उसके मुवाफ़िक़ कारवाई करेंगे, वह एक दिन परम आनंद को प्राप्त होंगे, नहीं तो ऊंचे नीचे देशों और जोनों में हमेशा भटकते रहेंगे, और दुख सुख भोगते रहेंगे ॥

अर्थ शब्द नम्बर ५—बचन नम्बर ३५ भाग ३ सफ़ा नम्बर ७०८ पोथी सारबचन राधास्वामी छंद बंद ॥

कड़ी १

आरत गाऊं स्वामी सुरत चढ़ाऊं, गगन मंडल में धूम मचाऊं

अर्थ

आरत राधास्वामी दयाल की गाऊं और सुरत को गगन मंडल में चढ़ाकर धूम मचाऊं यानी बिलास करूं

कड़ी २

श्याम सुन्दर पद निरखि निहारूं, सेत पदम पर तन मन वारूं

अर्थ

और चढ़ाई के वक़्त श्याम सुन्दर पद यानी श्याम पद जो अति सुन्दर है, और वहीं सुन्न यानी चेतन्य मंडल का द्वारा है देखती चलूं । और सेत पदम यानी सतलोक में पहुंचकर सत्तपुर्ष पर तन मन वारूं, यानी इन दोनों से न्यारी होकर पहुंचूं ॥

कड़ी ३

वृन्दाबन मथरा पद लीना। गोकुल जीत कालिन्द्री छीना

अर्थ

वृन्दावन यानी देह को जो बिन्द से बनी है, मथ कर रकार पद यानी सुन्न में पहुंची, और गोकुल यानी इन्द्रियों के देश से न्यारी हुई, और काल की शक्ती छीन हुई यानी जाती रही ॥

कड़ी ४

सुन्न महाबन गिरवर चीन्हा। महासुन्न जा अमृत पीना

अर्थ

सुन्न मंडल की जोकि महाबन है, और वही ऊंचा देश यानी पहाड़ है, पहिचान करी, और वहां से आगे महा सुन्न में पहुंच कर अमृत पान किया ॥

कड़ी ५

धीरज थाल प्रेम की जोती। धुन बिबेक घट मोती पोती

अर्थ

धीरज का थाल लेकर यानी चित्त में धीरज कर और प्रेम की जोत जगा कर यानी प्रेम तेज कर २ मोती रूप धुनों को घट में छांट कर पोती हुई यानी सुनती चली ॥

कड़ी ६

बिरह राग तज रंग लगाऊं। सुरत निरत ले शब्द समाऊं

अर्थ

संसारी भोगों की बिरह छोड़ कर प्रेम बढ़ाऊं और सुरत और निरत को जगा कर और संग लेकर शब्द में लगूं ॥

कड़ी ७

रास मंडल घट लीला ठानी। कालीनाथ निरख नभ जानी

अर्थ

यानी घट में रास मंडल की लीला करके और काल अंग को नीचे डाल कर सुरत रास्ते की सैर करती हुई आकाश में पहुंची ॥

कड़ी ८

घोर उठा अब गगन कुंज में। मगन हुई लख तेज पुंज में

अर्थ

आकाश में चढ़ कर आवाज़ गगन मंडल की सुनाई दी और वहां पहुंच कर त्रिकुटी में जो स्वरूप है उसका दर्शन करके खुश हुई ॥

कड़ी ९

मद और मोह हने और सूदे। मोहन मुरली बजे मन बोधे

अर्थ

और मद और मोह दूर हुए और निहायत रसीली बांसुरी की आवाज़ सुनकर मन को नया बोध हुआ ॥

कड़ी १०

गोपी धुन और शब्द ग्वाल मिल । सुरत गूजरी आई चल २

अर्थ

शब्द की धुनें और शब्द सुनती हुई जोकि गोपी और ग्वाल हैं सुरत गूजरी यानी इन्द्रियों को जलाने वाली ऊपर को चढ़ती चली जाती है ॥

कड़ी ११

खेलत कूदत शोर मचावत । दधि अकाश मथ २ सब लावत

अर्थ

गोपी और ग्वाल यानी मन इन्द्री वग़ैरः बिलास और शोर करते हुए और आकाश में से दधि यानी चेतन्य को समेटते और छांटते हुए मगन हो रहे हैं ॥

कड़ी १२

पीपी चहुँदिश होत पुकारा । सुन २ राधा मगन बिहारा

अर्थ

और सब चारों तरफ़ से अपने प्रीतम शब्द गुरू को पुकारते हैं और राधा यानी सुरत चलने वाली इस बिलास को देख कर मगन होती है ॥

कड़ी १३

स्वामी २ धुन अब जागी। उमंग हिये में छिन २ लागी

अर्थ

फिर स्वामी नाम की धुन सुनती हुई नवीन उमंग हिरदे में बढ़ाती जाती है ॥

कड़ी १४

जगत बासना सब हम त्यागी। मन हुआ मेरा सहज बैरागी

अर्थ

यह कैफ़ियत देखकर जगत की चाह और बासना बिलकुल छोड़ दी और मन सहज में बैरागी यानी उदासीन हो गया ॥

कड़ी १५

कृपा करो अब राधास्वामी। करत रहूं तुम चरन नमामी

अर्थ

हे राधास्वामी दयाल ऐसी ही कृपा मेरे ऊपर जारी रक्खो, और मैं तुम्हारी बंदना करती रहूं ॥

कड़ी १६

मन को फेरो दीन दयाला। छिन २ निरखूं दर्श बिशाला।

अर्थ

और मेरे मन को इस तौर से फेर दीजिये कि छिन २ आपका दर्शन करती रहूं ॥

कड़ी १७

अब तो लिये जात मोहि खींचे। मानत नाहिं डारे मोहिं भीचे

अर्थ

इस वक़्त तो मुझ को अपनी तरफ़ खींचे लिये जाता है और कहना नहीं मानता और मुझ को तंग कर रहा है

कड़ी १८

भक्ति पौद जो तुमही लगाई। मेहर दया से सींचो आई ॥

अर्थ

भक्ती की पौद जो आपने लगाई है उसको आप ही अपनी मेहर और दया से सींचो यानी बढ़ाओ और तरक़्क़ी दो ॥

कड़ी १९

मेरा बस मन से नाहिं चाले। बहुत लगाये इन जंजाले

अर्थ

क्योंकि मेरा मन मेरे क़ाबू में नहीं है, और बहुत संसारी जाल इसने फैला रक्खा है ॥

कड़ी २०

और सब पुर्ष अपारा। काटोगे हम निश्चय धारा को पुकारते हैं ।

अर्थ

इस बिलास को सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल समर्थ हो

और मुझ को यक़ीन है, कि आप दया करके इस जंजाल को काटोगे॥

कड़ी २१

अब आरत सब विधि हुई पूरी। राधास्वामी रहूं हज़ूरी॥

अर्थ

अब यह आरती सम्पूरन हुई और मेरी अर्ज़ और मांग यही है, कि राधास्वामी दयाल के सदा सन्मुख रहूं॥

अर्थ शब्द नम्बर १६ बचन ४१ सफ़ा ८६६८ पोथी सारबचन राधास्वामी छंद बंद

कड़ी १

सुत बन्नी गुरु पाया बन्ना, देख दरश छिन २ मन भिन्ना

अर्थ

प्रेमी सुरत को जब सतगुरु प्रीतम मिले, तब उनका दर्शन करके मन छिन २ मगन हुआ॥

कड़ी २

तुरिया घोड़ी सहज सिंगारी, धीरज पाखर तापर डारी

अर्थ

तुरिया यानी चेतन्य आत्मा की धार को घोड़ी बना कर उस पर धीरज की पाखर डारी, यानी धीरज के साथ उस पर सतगुरु सवार हुए॥

कड़ी ३

चांद सूरज दोऊ करी रकावें, गगन ज़ीन ता पीठ धरावें

अर्थ

चांद सूरज यानी इड़ा और पिंगला की रकावें बनाईं और गगन यानी चेतन्य आकाश रूपी ज़ीन उस पर धरा ॥

कड़ी ४

बिजली पवन चाल चली घोड़ी, फेर लगाम एड़ दे मोड़ी।

अर्थ

इस तरह सतगुरु उस तुरिया की घोड़ी यानी चेतन्य धार पर सवार होकर, बिजली और पवन की चाल के मुवाफ़िक़ चले, और लगाम यानी मुख उस धार का घर की तरफ़ मोड़कर ऊपर चढ़ने के वास्ते ज़ोर दिया, यानी एड़ लगाई ॥

कड़ी ५

हीरे लाल झालरें मोती, माणिक पन्ना वारूं जोती ॥

अर्थ

ऐसे सतगुरु के ऊपर हीरे लाल और मोती की झालरें और माणिक पन्ना और जोत स्वरूप को (जो कि मुराद शब्दों की धुन और अस्थानों के स्वरूप से है) वार दूं। असल में जैसे कि सुरत चढ़ती जाती

है, सब रास्ते के अस्थान और वहां की रचना सब सतगुरु पर अपने आपे को वारते हैं, यानी नीचे पड़ते चले जाते हैं ॥

कड़ी ६

तापर बन्ना करी असवारी, बिजली चाल पवन घधकारी

अर्थ

ऐसी चेतन्य धार की घोड़ी पर सतगुरु बन्ने सवार हुए, और वह धार बिजली और पवन की चाल और ज़ोर शोर के साथ चली और चढ़ी ॥

कड़ी ७

चल बरात पहुंची गगना पुर, बन्नी बन्ना मिले शिष्य गुर

अर्थ

चलते २ सतगुरु और प्रेमी सुरत और बरात यानी और सतसंगी और सतसंगिनों की सुरतें त्रिकुटी में पहुंचीं और वहां सतगुरु और सेवक का मेल हुआ ॥

कड़ी ८

ब्याह हुआ और फेरे डाले, बन्नी ले बन्ना घर चाले

अर्थ

और प्रेमी सुरत सतगुरु की परकर्मा करके, उनके साथ घर को चली ॥

कड़ी ९

घर में धसे मात पितु हरषे, प्रेम मगन मानो बादल बरषे

अर्थ

जब सत्तलोक में पहुंचे तब सत्तपुर्ष (जो कि कुल्ल रचना के माता पिता हैं) देख कर मगन हुए, जैसे कि बादल की बरषा होती है इसी तरह प्रेम और आनंद की बरषा होने लगी ॥

कड़ी १०

मोती हीरे लाल जवाहर, बुआबहनमिलकिये निछावर

अर्थ

मोती हीरे लाल और जवाहिर, बुआ और बहन यानी हंस और हंसों ने नौछावर किये, यानी सत्त शब्द की धुनों की जो कि हर एक हीरा मोती और लाल रूप हैं, सतगुरु और प्रेमी सुरत पर बरषा होने लगी ॥

कड़ी ११

करें आरत हंस बन्ना बन्नी, हंस पुकारें धन्ना धन्नी ॥

अर्थ

फिर सतगुरु और प्रेमी सुरत ने मगन हो कर और उमंग सहित सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की आरत उतारी, और चारों तरफ़ से हंस धन्य २ पुकारने लगे ॥

कड़ी १२

राधास्वामी रलियां मन्नी, मगन हुए भइया और बहनी

अर्थ

यह कैफ़ियत देख कर राधास्वामी दयाल मगन और प्रसन्न हुए, और हंस हंसिनी भी उस बिलास में शामिल होकर आनंद को प्राप्त हुए ॥

बचन ३४

कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की महिमा और भेद सुन कर (हर एक जीव को जो उनके बाल बच्चे हैं) शौक़ मिलने का बिछुड़े हुए बालक के मुवाफ़िक़ पैदा करके और सतगुरु से चलने की जुगत दरियाफ़्त करके दिन २ बिरह और प्रेम अंग के साथ रास्ता तै करना चाहिये

१–जब कि सतसंग में निरनय सुन कर जीव को अच्छी तरह इस बात की समझ और प्रतीत आ गई कि राधास्वामी दयाल कुल्ल मालिक और सर्व समर्थ हैं, तब उसके हिरदे में प्रीत उनके चरनों की और अभिलाषा उनके दर्शनों की ज़रूर जागनी चाहिये,

और यही प्रीत सतगुरु से उपदेश हासिल करके थोड़ी बहुत करनी यानी अभ्यास ज़रूर करावेगी ॥

२–वह निरनय कि जिससे राधास्वामी दयाल के कुल्ल मालिक और सर्व समरत्थ होने का निश्चय दिल में पैदा होवे, खुलासः तौर पर यह है कि कुल्ल रचना जो नज़र आती है, उसको ग़ौर के साथ मुलाहेज़ा करने से कुल्ल कर्ता का इरादा और मतलब और कारीगरी और क़ायदे के साथ बन्दोबस्त जारी रहने काररवाई कुल्ल रचना का साफ़ २ पाया जाता है, और यह बातें वास्ते सबूत मौजूद और हस्ती ऐसे मालिक और कर्ता की जो कि सर्व समरत्थ और आगे पीछे हाल का जाननेवाला है काफ़ी हैं ॥

सिवाय इसके रचना के हाल और कैफ़ियत को देख कर यह भी बात पाई जाती है, कि चेतन्य में बसबब मिलौनी और हायल होने परदा माया के कितने ही दरजे हो गये, यानी जहां माया मलीन और कसीफ़ है, वहां का चेतन्य ज्यादातर पर्दा यानी आवर्ण से ढका हुआ, और इस वास्ते उसकी ताक़त का ज़हूर कम है, और जिस क़दर कि ऊंचे देश में माया सूक्ष्म और लतीफ़ होती गई है, उसी क़दर वहां के चेतन्य पर परदा ख़फ़ीफ़ और इस

वास्ते उसकी ताक़त का ज़हूर ज्यादा है, यानी नीचे के दरजे के चेतन्य की काररवाई (रचना करने और उसके सम्हाल की) ऊंचे देश के चेतन्य के आसरे है, यानी जब तक कि किरनियां या धारा ऊंचे देश के चेतन्य से आकर मदद न करें, तब तक नीचे के देश का चेतन्य कुछ काररवाई नहीं कर सकता, इस वास्ते विशेष से विशेष चेतन्य के दरजे तै करके जो अख़ीर में महा विशेष चेतन्य है, उसी के आसरे कुल्ल रचना प्रघट हुई, और वहीं से कुल्ल की सम्हाल हो रही है, और वह पद आप निराधार है, यानी किसी दूसरे के आसरे नहीं है, और अनंत है, और अपार है, उसी का नाम कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल है॥

३–जब ऊपर की समझौती से चित्त में निश्चय हो गया, कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल हैं, और उन्हीं के देश में परम आनंद और अमर सुख प्राप्त हो सकता है, क्योंकि वहां माया नहीं है, और इसी सबब से आवर्ण यानी देही और उसका जनम मरन यानी प्रघट और गुप्त होना भी नहीं है, और न किसी क़िस्म का कष्ट और कलेश और माया देश का सा दुख सुख है, तब इस बात की चाह और

अभिलाषा मन में उठनी चाहिये, कि जैसे बने तैसे राधास्वामी धाम में पहुंच कर पूरन आनंद को प्राप्त होवें, और यह बात बग़ैर सतगुरु की मदद और दया के हासिल नहीं हो सकती, इस वास्ते लाज़िम आया कि पहिले सतगुरु का खोज किया जावे और जब वे मिल जावें तो उनके चरनोंमें प्रेम प्रीत करे, और उनका सतसंग होशियारी के साथ करके अपने भरम और संदेह दूर करावे, और फिर रास्ते का भेद और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर, राधास्वामी दयाल की दया के आसरे अभ्यास शुरू करे, तो जिस क़दर अभ्यास दुरुस्ती से बनेगा, और बढ़ता जावेगा, उसी क़दर रस और आनंद अंतर में मिलता जावेगा, और संसार और उसके पदार्थों की तरफ़ से दिन २ चित्त हटता जावेगा, और जिस क़दर सतगुरु राधास्वामी दयाल की दया और रक्षा के परचे अंतर और बाहर मिलते जावेंगे, उसी क़दर प्रतीत मज़बूत होती जावेगी, और प्रीत बढ़ती जावेगी ॥

४-ऐसी प्रतीत और प्रीत के पैदा होने में मन और इच्छा संसार के भोग और बिलास की तरंगें उठा कर जीव के मन में परमार्थी समझ और दर्शन

की चाह को ठहरने और बढ़ने नहीं देते, इस सबब से अभ्यास में भी अकसर गुनावन पैदा करके, स्वरूप और शब्द का रस जैसा चाहिये, नहीं लेने देते हैं, और प्रतीत और प्रीत को अनेक तरह के भरम उठा कर पकने नहीं देते, इस सबब से जीव अकसर दुखी रहता है ॥

५–जो कि राधास्वामी दयाल कुल्ल मालिक और सर्व समरत्थ हैं, और वेही कुल्ल जीवों के सच्चे माता और पिता हैं, और जब कि अभ्यासी जीव को उन की मेहर और दया और रक्षा के परचे अंतर और बाहर मिलने लगे तो सच्चे प्रेमी के मन में ऐसा शौक़ उनके मिलने का पैदा होना चाहिये, जैसे कि बिछुड़े हुए बालक को अपने मा बाप से मिलने का और इस्त्री को अपने बिछुड़े हुए पुर्ष से मिलने का– यह दोनों यानी बालक और इस्त्री अपने २ प्रीतम से बिछुड़ी हुई हालत में निहायत दुखी रहते हैं, यानी उनके मन को सच्चा चैन और पूरा आराम नहीं मिलता, ऐसे ही सच्चा प्रेमी इस संसार को विदेश समझ कर, अपने निज देश यानी सच्चे माता पिता कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में पहुंचने की अभिलाषा रखता है, और इस लोक में चाहे

जैसे भोग और माया के पदार्थ उसको प्राप्त हो जावें पर पूरी शान्ती नहीं आती, और मन में बेकली और घबराहट अपने प्यारे पिता राधास्वामी दयाल से मिलने का बना रहता है, ऐसे प्रेमी के अभ्यास में मन और इच्छा बहुत कम बिघन डालते हैं ॥

६—सच तो यह है कि हर एक परमार्थी के मन में जो राधास्वामी दयाल की सरन में आया, थोड़ी बहुत बेकली और घबराहट अपने निज घर में जाने के वास्ते ज़रूर रहना चाहिये, क्योंकि बग़ैर ऐसी बिरह के रास्ते का तै होना, और मन और माया के बिघनों को राधास्वामी दयाल की मेहर के बल से जीतना और दूर करना दुरुस्ती से मुमकिन नहीं है ॥

७—ज़ाहिर है, कि जिस क़दर जिसके मन में बिरह दर्शन की होगी, उसी क़दर उससे अभ्यास सहज और दुरुस्त बनेगा, और बिघन कम सतावेंगे, और जिनके मन में संसार के भोगों और मान बड़ाई की आसा धरी हुई है, वे अभ्यास में ढीले रहेंगे, और मन और इच्छा उनके परमार्थी इरादे और कामों में हमेशा ख़लल और बिघन डालते रहेंगे ॥

इस वास्ते हर एक परमार्थी को मुनासिब है, कि दुनिया और उसके सामान की हक़ीक़त को अच्छी

तरह समझ कर, यानी उनको तुच्छ और नाशमान और ज़हरीला यानी दुखदाई देख कर, उनमें ज़रूरत के मुवाफ़िक़ वर्ते और ज़्यादा चाह उनके प्राप्ती और भोग की न उठावे ॥

सतगुरु और प्रेमी जन के संग से यह बात जल्द और आसानी से हासिल होगी, और बानी और बचन के मनन और विचार और अपने मन और इच्छा की निगरानी और जांच करते रहने से जल्द संसारी स्वभाव और आदत बदलेगी, यानी मन में संसारी तरंगों का उठना और भोगों की तरफ़ धार का दौड़ना आहिस्ता २ कम होता जावेगा, और प्रेम प्रीत चरनों में सतगुरु राधास्वामी दयाल के दिन २ बढ़ती जावेगी, और उसी क़दर अभ्यास दुरुस्त बनता जावेगा, यानी अंतर में रस और आनंद मिलता जावेगा, और बढ़ता जावेगा ॥

शब्द

गुरु प्यारे नज़र करो मेहर भरी ॥ टेक ॥
मैं हुई दासी तुम्हरे चरन की ॥
सब तज तुम्हरे द्वारे पड़ी ॥ १ ॥
तुम्हरे चरन की ओट गही अब ॥

काल कर्म से नाहिं डरी ॥ २ ॥
जब से तुम्हरी सरना लीनी ॥
माया ममता सकल जरी ॥ ३ ॥
प्रीत परतीत बढ़त गुरु चरनन ॥
जग से छिन छिन सहज तरी ॥ ४ ॥
शब्द भेद ले सुरत लगाऊं ॥
सुन सुन धुन अब अधर चढ़ी ॥ ५ ॥
दरस दिखाय किया गुरु प्यारा ॥
तन मन तज हुई आज छड़ी ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीन दयाला ॥
अब मोपै पूरन दया करी ॥ ७ ॥

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

बचन मुतफ़र्रिक़ पिछले महात्माओं के

बचन १

बड़ी भारी अभागता क्या है, मन का मुर्दा होना और मन का मुर्दा होना क्या है, मालिक को भूलना और दुनिया को चाहना ॥

बचन २

लोग कहते हैं, कि हम मालिक को पूजते हैं, और

हक़ीक़त में वे अपने मन के पुजारी हैं, और कहते हैं, कि मालिक हमारा सहाई है, और इससे और उससे मदद चाहते हैं, और किसी का शुकर और किसी की शिकायत करते हैं ॥

बचन ३

दुनिया से होशियार और बचते रहो, कि इसने विद्यवान और बुद्धिवान और धनवानों को अपना गुलाम बना रक्खा है ॥

बचन ४

तीन मर्द भक्त एक औरत भक्त के पास गये और सच्ची भक्ती का ज़िकर करने लगे, एक भक्त ने कहा कि उसकी भक्ती पूरी और सच्ची है, जो उस तकलीफ़ में कि उसका मालिक भेजे सबर करे, इस्त्री ने कहा कि इस बचन से अहंकार की बू आती है, दूसरे भक्त ने कहा कि जो तकलीफ़ में अपने मालिक का शुकर करे, उसकी भक्ती पूरी और सच्ची है, इस्त्री ने कहा कि कुछ इससे बढ़कर कहो, तीसरा भक्त बोला कि जो अपने प्यारे की भेजी हुई तकलीफ़ में रस पावे, उसकी पूरी और सच्ची भक्ती है, फिर इस्त्री भक्त ने कहा कि इससे भी बढ़ कर कहो, तब तीनों

भक्त बोले कि अब आपही कहो, तब वह बोली कि मैं उसकी भक्ती पूरी और सच्ची जानती हूं, जो कि तकलीफ़ को अपने प्यारे के ध्यान और दर्शन में इस क़दर भूल जावे, कि उसको उस तकलीफ़ की ख़बर भी न होवे ॥

बचन ५

जिस पर मालिक मेहरबान होता है, तो उसका दिल अकसर ग़मगीन और उदास रखता है, और जिस पर उसकी नज़र मेहर की नहीं है, उसको दुनिया का सामान और ऐश और आराम ज़्यादा देता है ॥

बचन ६

दुनिया से प्रीत लगानी तो आसान है पर उस से अलहिदा होना और छूटना निहायत मुश्किल है। जिस किसी को जिस क़दर दुनिया के ऐश और आराम का सामान दिया गया है उसकी एवज़ में उससे सौ गुना परमार्थ घटा दिया गया है--अगर दुनिया सोने की होती और परमार्थ मिट्टी का, तो भी चाहिये था कि लोग परमार्थ ही को क़बूल करते मगर अफ़सोस है कि परमार्थ सोना और हीरा है और दुनिया ख़ाक है, और फिर लोग ख़ाक को ही चाहते हैं ॥

बचन ७

जिसका मन इन तीन कामों में बिलकुल संग न देवे तो जानना चाहिये कि अभी उस पर मालिक की दया नहीं आई—एक मालिक के बचनों के पाठ और सतसंग के वक़्त, दूसरे मालिक के नाम के सुमिरन और भजन के वक़्त, तीसरे मालिक के स्वरूप के ध्यान के वक़्त ॥

बचन ८

भक्ती में तीन परदे हैं, इन तीनों को मन से हटाना चाहिये तब परमार्थ और भजन का पूरा रस आवेगा, और मालिक का दर्शन पावेगा—(१) पहिला यह कि जो इस लोक और परलोक का राज और भोग उसको दिये जावें और वह उसको पाकर मगन न होवे क्योंकि जो मगन हो गया तो लालची है, और लोभी को दर्शन नहीं मिलेगा (२) दूसरा परदा यह है कि जो इस लोक और परलोक का राज और भोग उसको हासिल है और वह उस से छीन लिया जावे तो दुखी न होवे और अफ़सोस न करे, क्योंकि जो अफ़सोस किया तो झूंठा है और झूंठा परमार्थ के क़ाबिल नहीं है (३) तीसरा परदा यह कि चाहे जिस

क़दर कोई अस्तुत और आदर करे, उस पर अपने मन में ख़ुश न होवे और ग़ाफ़िल न हो जावे, क्योंकि जो ऐसा है तो ओछा पात्र है और अभी ऊंचे देश और गहरे रस के क़ाबिल नहीं है ॥

बचन ९

शाह इबराहीम ने (जो बलख़ देश की बादशाही को छोड़ कर फ़क़ीर हुआ) कहा है, कि एक वक़्त मैंने एक गुलाम ख़रीद किया, और उससे पूछा कि तेरा नाम क्या है, उसने जवाब दिया कि जिस नाम से आप पुकारें, फिर मैंने पूछा कि क्या खायगा, उस ने जवाब दिया जो आप खिलावेंगे, फिर मैंने कहा क्या पहनेगा, वह बोला जो आप पहिनावेंगे, फिर मैंने कहा क्या काम करेगा, बोला जो आप हुक्म करेंगे, फिर मैंने कहा क्या चाहता है, तो जवाब दिया कि बंदे को अपनी चाह नहीं उठानी चाहिये, जो मालिक की मरज़ी और चाह है, वही उसकी चाह होनी चाहिये, फिर मैंने अपने दिल में सोचा कि तूभी इसी तरह से मालिक का बंदा है, और इस क़दर उमर तेरी गुज़र गई, और अब तक चरन सरन और भक्ती की रीत न जानी, यह ख़्याल करके मैं बहुत रोया ॥

बचन १०

किसी ने शाह इबराहीम से पूछा कि किस तरह गुज़रान करते हो, जवाब दिया मैंने चार दस्तूर मुक़र्रर किये हैं-(१) पहला जब कोई ख़ास दया होती है, तब शुक्र करके चरनों की तरफ़ दौड़ता हूं, (२) दूसरे जब कोई क़सूर बन पड़ता है, तब पछताता हूं और अंतर में प्रार्थना करता हूं, (३) तीसरे जब कभी तकलीफ़ आती है, तब सबर और बरदाश्त के साथ उसकी अगवानी करता हूं, (४) चौथे जब भजन और सेवा दुरुस्त बन आती है, तब प्रेम के साथ क़दम आगे रखता हूं ॥

बचन ११

जो कोई अपने गुरू की आज्ञा में न बरतेगा, वह कभी सेवक नहीं बनेगा, और जो गुरू से डरता है, और गुरू ही की तरफ़ दौड़ता है, उसी का एक दिन सच्चा उद्धार होवेगा ॥

बचन १२

मालिक कहता है कि जो तू मुझ से मिलना चाहता है, तो वह चीज़ भेट लेकर आ जो मेरे पास नहीं है, और वह चीज़ सच्ची दीनता है ॥

बचन १३

दो बातें याद रखना चाहिये, एक यह कि मालिक तेरा अंतरजामी है, दूसरे यह कि जो कुछ तू करता है वह उसको देखता है ॥

बचन १४

एक सेवक ने अपने गुरू से पूछा कि सेवा और भजन में बराबर रस क्यों नहीं मिलता है, जवाब दिया कि जो बराबर रस हर रोज़ मिलता रहेगा तो बिरह और तड़प नहीं उठेगी, और इस सबब से तरक़्क़ी बंद हो जावेगी ॥

बचन १५

जो मालिक के प्यारे हैं, उनमें तीन सिफ़्तें ज़रूर होंगी—(१) उदारता (२) दया और (३) ख़ातिरदारी सच्चे परमार्थी की ॥

बचन १६

अच्छे लोगों की संगत अच्छे काम करने से बेहतर है, और बुरे लोगों कि संगत बुरे काम करने से बद-तर है ॥

बचन १७

जो कोई तुझ को कुछ देवे तो पहिले मालिक का

शुकर कर, और उसके पीछे उस शख़्स का शुकर कर, जिसके दिल को मालिक ने प्रेर कर तुझ पर मेहरबान किया, और जो कोई मुसीबत तुझ पर आवे, तो दीनता के साथ मालिक की प्रर्थना कर, क्योंकि जो तू सबर और बरदाश्त नहीं कर सकता है, तो मालिक तुझ पर दया करेगा, और प्रार्थना फ़ौरन कर, क्योंकि जो पछता कर प्रर्थना करता है वह नादान है ॥

बचन १८

असल बंदगी और भजन यह है, कि सच्चा ख़ौफ़ और सच्चा भरोसा और विश्वास और सच्ची प्रीत मालिक के चरनों में होवे, निशान ख़ौफ़ का यह है कि पाप करम छोड़ देवे, और निशानी सच्चे भरोसे और विश्वास की यह है, कि हमेशा मालिक का भजन और याद करता रहे, और निशान प्रीत का यह है, कि शौक़ दर्शन का दिन २ बढ़ता रहे ॥

बचन १९

जो कोई खूब पेट भर कर खाता है, उसमें यह पांच इल्लतें पैदा होती हैं--(१) एक यह कि भजन में उसको रस नहीं मिलता (२) दूसरे उसकी तन्दुरुस्ती में फ़र्क़ आता है, (३) तीसरे दयावंत कम होता है,

(४) चौथे मालिक की सेवा और भजन उसको भारी पड़ती है, (५) पांचवें मन उसका ज़बर हो जाता है ॥

बचन २०

तीन वक़्त अपने मन को होशियार रक्खो, एक करतूत के वक़्त याद रक्खो, कि मालिक तुझ को देखता है, और जब बात करो तो याद रक्खो कि जो कुछ कि तू कह रहा है, मालिक सुनता है, और जब चुप हो तो याद रक्खो, कि मालिक जानता है, कि तू किस वास्ते चुप हुआ है ॥

बचन २१

जो मन कि विद्या और बुद्धी और चतुराई से भरा हुआ है, वह सब के मनों से ज़्यादा सख़्त हो जाता है, और ऐसे कठोर मन की पहिचान यह है, कि हमेशा नाक़िस तदबीरों और बहानेबाज़ियों में बंधा रहता है, और अपनी समझ और तदबीर के आगे गुरू या मालिक के हुक्म को क़बूल नहीं करता ॥

बचन २२

परमार्थी को इन तीन बातों का लिहाज़ रखना चाहिये; एक यह कि जो किसी को फ़ायदा न पहुंचा सके तो नुक़सान भी न पहुंचावे, दूसरे जो किसी को

ख़ुश नहीं कर सके, तो नाख़ुश और दुखी भी न करे, तीसरे अगर किसी की तारीफ़ करना नहीं चाहे तो बुराई भी न करे ॥

बचन २३

परमार्थी को इन दस नाक़िस बातों से परहेज़ करना गोया काल के जाल से बचना है--(१) ममता--(२) अहंकार, (३) मान, (४) ईर्षा, (५) छल और कपट (६) क्रोध, (७) हिर्स और तृश्ना खान पान में, (८) बे मौक़े और बे फ़ायदे बोलना, (९) चाह और प्रीत धन और माल की, (१०) चाह और प्रीत मान बड़ाई और मर्तबा और हुकूमत की--और इन दस भली बातों को इख़्तियार करना, गोया मालिक को प्रसन्न करना है--(१) पछताना और प्रार्थना करना अपने क़सूरों पर, (२) सबर और धीरज, (३) जैसे बने तैसे मालिक की मौज पर राज़ी होना, (४) शुकराना मालिक की दात और दया का, (५) ख़ौफ़ मालिक की नाराज़गी का, (६) भरोसा मालिक की दया और बख़्शायश का, (७) बैराग चित्त में रखना, [८] सेवा और भजन मालिक का करना, [९] सब के साथ मित्र भाव से बर्तना, [१०] बढ़ाना प्रेम का सतगुरु और मालिक के चरनों में ॥

बचन २४

इन पांच बातों को याद रखना ज़रूर चाहिये--[१] एक किसी की पीठ पीछे बुराई न करना, [२] दूसरे किसी के भेद या गुप्त बात को प्रघट न करना, [३] तीसरे झूंठ बात न बोलना, [४] चौथे सतगुरु की आज्ञा में बर्तना, [५] पांचवें चोरी न करना अंतर या बाहर ॥

बचन २५

शैतान हज़रत मूसा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा कि मैं आप को तीन बातें सिखाता हूं ताकि मालिक से आप मेरे हक़ में दुआ नेक मांगें--उन्हों ने पूछा कि वह तीन बातें क्या हैं, कहा कि क्रोध और तुनकमिज़ाजी से परहेज़ कीजिये क्योंकि जो कोई तेज़ मिज़ाज और हलका होता है यानी जल्द भड़क उठता है उस से मैं ऐसे खेलता हूं जैसे लड़के गेंद से कि जिधर चाहा गेंद को फेंक दिया, दूसरे औरतों से बचे रहिये, क्योंकि संसार में मैंने जितने जाल और फंदे बिछाये हैं उन सब से ज्यादा मज़बूत और भारी फंदा औरतों का है, और मुझे इस फंदे का पूरा एतबार है, तीसरे कंजूसता सें बचिये

क्योंकि जो कंजूस होता है, उसका मैं संसार और परमार्थ दोनों मटिया मेल कर देता हूं ॥

बचन २६

जिस में यह तीन बातें यानी संतोष और मालिक का ख़ौफ़ और दर्शन की बिरह और बेकली नहीं है, उसका उद्धार मुश्किल है ॥

बचन २७

किसी अभ्यासी से पूछा कि तुम शादी क्यों नहीं करते, कहा कि दो भूतों से लड़ने की मुझ में ताक़त नहीं है--एक तो मेरा मन भूत है दूसरे उसका मन होगा, मैं अकेला दो भूतों से किस तरह लड़ सकूंगा ॥

बचन २८

तीन काम न करने चाहियें, चाहे उसमें किसी क़दर लोगों का ज़ाहिरी उपकार भी होवे--(१) राजों और अमीरों का संग, (२) दूसरा किसी इस्त्री के साथ अकेले बैठना उठना, चाहे वह परमार्थी होवे और तू उसे परमार्थ ही सिखाता होवे, [३] तीसरे कानों का कच्चा होना कि इसमें बहुत हर्ज और नुक़सान पैदा होते हैं ॥

बचन २९

थोड़ा सा हाल मनमुख और गुरुमुख की चाल का लिखा जाता है, जिससे अपनी हालत की परख होती रहे-

[१] गुरुमुख का मतलब कुल परमार्थी करतूत से यह रहता है, कि मालिक और सतगुरु प्रसन्न होवें, मनमुख सब कामों में अपने मन और इन्द्री का बिलास और प्रसन्नता देखता है ॥

[२] गुरुमुख भूख प्यास को सहता है ताकि उसका भजन बंदगी अच्छी तरह बने--मनमुख जानवरों की तरह खाने पीने में मगन होता है, और परमार्थी कर-तूत में मन नहीं लगाता है, और आलस करता है ॥

[३] गुरुमुख हमेशा विचार में रहता है और डरता है, मनमुख तृश्ना और चाह दिन २ बढ़ाता है, और बेफ़िकर और निडर रहता है ॥

[४] गुरुमुख सतगुरु के सिवाय सब से बेख़ौफ़ रहता है--मनमुख सतगुरु के सिवाय सब से डरता है ॥

[५] गुरुमुख सतगुरु के सिवाय सब से निरास रहता है, मनमुख सतगुरु के सिवाय सब से आस रखता है ॥

[६] गुरुमुख धन को परमार्थ पर नौछावर करता है–मनमुख परमार्थ को धन पर नौछावर करता है, यानी धन के लिये अपने परमार्थी नुक़सान का ख्याल नहीं करता है ॥

[७] गुरुमुख भजन और बन्दगी करता है, और रोता है–मनमुख गुनाह करता है और हंसता है ॥

[८] गुरुमुख तनहाई और एकान्त को पसंद करता है, मनमुख भीड़ भाड़ और शोर गुल से राज़ी होता है ॥

[९] गुरुमुख जोतता और बोता है पर डरता है कि शायद खेत न काटने पाऊं, मनमुख न जोतता है और न बोता है पर आसा बांधता है कि काट कर खलियान लगाऊं ॥

(१०) गुरुमुख शरमीला और हयादार होता है, मनमुख ढीठ निलज्ज और बेहया होता है ॥

(११) गुरुमुख कमगो कमरंज और सच्चा है–मनमुख बकवादी ज़ूद रंग और झूंठा है ॥

(१२) गुरुमुख सब काम सलाह और धीरज के साथ करता है, मनमुख सब काम बे सोचे समझे और घबराहट के साथ पूरा करना चाहता है ॥

(१३) गुरुमुख भजन और ध्यान में लौ लीन रहता है—मनमुख ऐंड़ने और सोने में मगन रहता है, और बेफ़ायदे वक्त़ खोता है ॥

(१४) गुरुमुख सब का हितकारी है, मनमुख ख़ुद-मतलबी है ॥

[१५] गुरुमुख की बड़ाई सब के मन में समा जाती है, मनमुख सब के मनों से गिर जाता है ॥

[१६] गुरुमुख जो मालिक ने दिया है उसमें सबर करता है, और शुक्र करता है, मनमुख बे सबर और नाशुकरा है ॥

[१७] गुरुमुख का दिल फूल से ज्यादा कोमल होता है, मनमुख का दिल पत्थर से ज्यादा सख़्त होता है ॥

[१८] गुरुमुख किसी बात की तमा नहीं रखता, क्योंकि वह कहता है कि मालिक ने मेरे लायक़ मुझे बहुत दे रक्खा है, और उसी में राज़ी रहता है—मन-मुख लालची है उसकी तृश्ना कभी नहीं बुझती चाहे जितना उसको मिल जावे, इस सबब से वह हमेशा दुखी और नाराज़ रहता है ॥

[१९] गुरुमुख कभी गाली या बुरा लफ़्ज़ मुंह से नहीं निकालता है—मनमुख अक्सर गाली के साथ

बोलता है, और बुरा लफ़्ज़ निकालते उसे शरम नहीं आती ॥

(२०) गुरुमुख सतगुरु की याद और दर्शन में मगन रहता है–मनमुख दर्शनों में रूखा सूखा और फीका रहता है ॥

(२१) गुरुमुख की बोली मीठी है, क्योंकि वह हमेशा अमृत रूपी बचन सतगुरु की महिमा और उनके गुणानुवाद में पगी रहती है–मनमुख की बोली कड़वी है क्योंकि वह हमेशा संसार की बुराई और भलाई में सनी रहती है ॥

बचन ३०

जीव को अपनी कसरों की चार तरह से ख़बर पड़ सकती है–एक तो गुरू के सतसंग से कि वे दया करके इसकी कसरों को जतावेंगे, दूसरे हितकारी सत-संगी के पास बैठने से, कि वह प्रीत की रीत से इस की कसरों को दिखाता और समझाता रहेगा, तीसरे निंदक और बिरोधी के बचन सुनने से, क्योंकि उसकी नज़र हमेशा ऐबों पर पड़ती है, और वह बग़ैर किसी लिहाज़ के उनको प्रघट कर देता है, चौथे और जीवों के हालात को ग़ौर से देखने और सुनने से और जो

कसरें उनमें दीखें उनको अपने ऊपर घटा कर उन से परहेज़ करना ॥

बचन ३१

वह बड़ा मूरख है जो अपने को उत्तम जानता है, और वह बड़ा अक़्लमंद है जो अपनी कसरें निहारता रहता है, क्योंकि जो अपने तईं रोगी नहीं जानेगा वह अपना इलाज न कर सकेगा, और यह जीव मन के रोगों में ग्रसा हुआ है, और इस बीमारी का दूर करना ज़रूर है ॥

बचन ३२

जो साधू राजे लोग और बड़े आदमियों के पास जाता है, वह अपने परमार्थ को गंवाता है, क्योंकि उनके खुश करने के वास्ते वह ऐसी बातें और काम करेगा, जिनके सबब से सच्चे मालिक की अप्रसन्नता होगी ॥

बचन ३३

किसी ने एक साधू से कहा कि मैं तुम्हारा सतसंग चाहता हूं—उसने कहा कि दीनता करनी पड़ेगी, फिर कहा कि मैं मालिक को चाहता हूं—उसने जवाब दिया कि जो मुसीबत और तकलीफ़ आन कर पड़े उसको खुशी से झेलना पड़ेगा ॥

बचन ३४

सतगुरु अपने सेवक को वक़्त मुसीबत और तकलीफ़ और नुक़सान वग़ैरह के इस तरह आज़माइश करते हैं, जैसे सुनार सोने को आग से आज़माता है, कोई सोना ख़ालिस निकलता है और कोई ख़राब यानी मिलौनी का ॥

बचन ३५

एक साधू ने एक शख़्स को बीमार देख कर मालिक के चरनों में प्रार्थना की, कि हे मालिक इस पर दया कर—मालिक ने फ़रमाया कि इस पर और क्योंकर दया करूं, मैं तो इसी बीमारी के सबब से इस पर दया कर रहा हूं क्योंकि उसके करम इसी तरह काटने के लायक़ हैं, और उसकी अंतरी तरक़्क़ी इसी बीमारी के सबब से होगी ॥

बचन ३६

जो कोई थोड़ा बहुत रोगी बना रहता है, उस पर परमेश्वर की दया है, क्योंकि इसके सबब से वह बहुत से गुनाहों से बच जाता है, ईश्वर का वचन है कि जो मेरे भक्त हैं उनको मैं तीन बातें देता हूं, निरधनता, बीमारी, और निरादर, इसी जुगत से मैं अपने भक्त की रक्षा करता हूं ॥

बचन ३७

एक ने किसी साधू से पूछा कि साधू किसका नाम है, उसने जवाब दिया कि जिसकी बातों से भजन की कैफ़ियत और प्रेम की हालत दिल में पैदा होवे और शौक़ बढ़े, और जिसका चुप्प रहना बिलकुल ध्यान और बिचार की हालत है, और देखना बिलकुल बैराग और इबरत और नसीहत लेना ॥

बचन ३८

किसी ने एक साधू से पूछा कि ऐसी बात मुझे बताइये, कि जिससे मालिक मुझ को दोस्त रक्खे, और प्यार करे, कहा कि संसार और मन के संसारी अंगों को दुश्मन यानी परमार्थ में बिघनकारक जान मालिक तुझको दोस्त रक्खेगा, यानी तुझ पर दया करेगा ॥

बचन ३९

जिसने इन छः बातों को इख़्तियार किया वह सतगुरु का प्यारा हुआ, और चौरासी के चक्कर से बच कर निज घर में पहुंचने का अधिकारी हुआ—(१) एक सतगुरु की जिस क़दर बन सके पहिचान करना, और उनकी आज्ञा में बर्तना, (२) दूसरी मन को जानना और उसके कहने में न चलना, (३) तीसरी सत्य वस्तु

को पहिचानना और उसको जकड़ कर पकड़ना, (४) चौथी झूंठी और असार बस्तु को जानना और उससे हाथ खींचना, (५) पांचवीं संसार को जांचना और उसमें होशियारी से वर्तना यानी फंसना नहीं,(६) छठी परमार्थ की क़दर जानना और उसको दृढ़ कर पकड़ना यानी उसके मुवाफ़िक़ अपनी करनी और रहनी दुरुस्त करना ॥

बचन ४०

इस संसार में जो वस्तु कि मालिक ने तुमको दी है, वह पहिले भी किसी को दे चुका होगा, और जब तुम नहीं रहोगे तब भी किसी को देगा, फिर ऐसी नापायदार चीज़ पर कि ज़रूर छोड़नी पड़ेगी, दिल नहीं लगना चाहिये, सुबह शाम के खाना खाने और तन ढकने के सिवाय और कुछ तुम्हारा हिस्सा नहीं है, इतने के वास्ते काहे को अपने तईं इस क़दर खपाते हो, सतगुरु के चरनों में पहुंच कर उस चीज़ की प्राप्ती के वास्ते क्यों नहीं कोशिश और मिहनत करते, कि जो हमेशा रहे और तुम भी उसका हमेशा आनंद ले सको ॥

बचन ४१

मालिक की प्रीत और प्रतीत सहित सेवा एक घड़ी

की, सत्तर वर्ष की बे प्रीत और प्रतीत की सेवा से बेहतर है ॥

बचन ४२

परमार्थ तीन बातों में हैं–ख़ौफ़, उम्मेद और मुहब्बत। ख़ौफ़ क्या है जो बातें परमार्थ में मने हैं उनसे परहेज़ करना, उम्मेद क्या है–सेवा और भजन पित्ता मारके करना, जिससे एक दिन अपने निज मुक़ाम को पा जावेगा, मुहब्बत क्या है–मालिक की मौज और हुक्म में राज़ी रहना ॥

बचन ४३

सवाल–अभ्यासी सेवक कब सच्चे हिरदे से बिन्ती और प्रार्थना करता है, और कब सच्चे मन से अंग २ उसका सेवा और भजन में लगता है, और कब सच्चा होकर मन के विकारों को छोड़ता है ॥

जवाब–जिस वक़्त मन उसका सच्चा डरता है और ख़ौफ़ खाता है, या जब उसके मन में गहरा प्रेम पैदा होता है ॥

बचन ४४

मालिक ने अपने तईं जीवों से मसलहत समझ कर गुप्त रक्खा है, और जो संत या फ़क़ीर उसके

भेदी हैं, वह भी संसार में इसी तरह गुप्त रहते हैं, और जो मौज होवे तो प्रघट होकर उसका भेद कहते हैं ॥

बचन ४५

सवाल—परम पद के उपदेश का सच्चा और पूरा अधिकारी कौन है ॥

जवाब—परम पद के उपदेश का सच्चा अधिकारी वह है जिसमें यह तीन बातें पाई जावें—(१) एक निरलोभी होना, यानी जिसके नज़दीक सोना चांदी और मिट्टी बराबर हों, (२) दूसरी यह कि संसारियों के वचन की क़दर उसके मन से बिलकुल जाती रही हो, यानी निंद्या और अस्तुत दोनों उसके नज़दीक समान हों, न अस्तुत में खुशी और न निंद्या में दुखी, (३) तीसरी यह कि मन की तरंगों और बिकारों में न बर्तने में ऐसा खुश होता होवे, जैसा कि संसारी उनके वर्तने में मगन होते हैं, वही परम पद के उपदेश का पूरा अधिकारी है ॥

बचन ४६

जो कोई मालिक की याद में ऐसा लगा रहता है कि और कामों की उसको सुध नहीं रहती, तो मालिक उसके ज़रूरी कामों की आप सुध लेता है, और उनको

दुरुस्त बना देता है, यानी सब तरह से रक्षा और सम्हाल अपने भक्त की वह आप करता है॥

बचन ४७

मालिक का जलवा और ज़हूर यानी प्रकाश अंतर में प्रघट है, यानी जो करतूत कि हम करते हैं, उसको वह देखता है, पिता के रूबरू लड़का बदफ़ैली नहीं करता, इस वास्ते हमको भी चाहिये कि अपने सच्चे पिता यानी मालिक के रूबरू बुरे काम सोचने और करने से डरें॥

बचन ४८

सच्चे और कपटी भगत की क्या पहिचान है, सच्चा अंतर और बाहर एकसां बर्तता है, उसके किसी काम में दिखावा और नमूद नहीं होती, और कपटी दिखावे और नमूद के काम ज्यादा करता है, पर उसके अंतर में मालिक की प्रीत कम होती है, और धन का प्यार उसके दिल में ज्यादा रहता है, इसी वजह से उसका मन दो रुख़ा है जैसे कि रुपया कि जिसकी दोनों तरफ़ें एकसां नहीं होतीं॥

बचन ४९

ख़ास दया मालिक की उस शख़्स पर जाननी

चाहिये जिसको वह अपने चरनों की सच्ची प्रतीत बख़्शे, यह प्रतीत ऐसी रोशनी है जो मालिक और जीव के बीच में जितने परदे हैं सब को दूर कर देती है ॥

बचन ५०

मालिक के सच्चे प्रेम और दर्शन के हासिल करने के वास्ते चार दरियाओं को पार करना चाहिये, तब उसके चरनों में पहुंचना मुमकिन है, [१] एक संसार और किश्ती (नाव) उसकी बैराग है, [२] दूसरा संसारियों का संग और किश्ती उसकी सतगुरु का संग और संसारियों से जिस क़दर बने दूर रहना है, [३] तीसरा मन और किश्ती उसकी प्रीत सहित सुमिरन और ध्यान और शब्द का श्रवन है, [४] चौथा गुनावन और तरंगें और किश्ती उसकी मालिक के चरनों का प्रेम और चित्त को एकाग्र करके चरनों में लगाना है ॥

बचन ५१

मालिक के प्रेमियों का हिरदा मालिक के भेद और प्रेम का एक संदूक़चा है, और वह अपना यह अनमोल जवाहिर ऐसे संदूक़चे में नहीं रखता है, जिसमें संसारी चीज़ें रक्खी हुई हैं, यानी सच्चे मालिक की प्रीत उसी

दिल में पैदा होगी जो दुनिया की ख़्वाहिशों से ख़ाली है, और वही उसके भेद को जानेगा ॥

बचन ५२

जो आंख कि अपने मालिक के नूर और जमाल के देखने में मशग़ूल न होवे अंधी बेहतर है, और जो ज़बान कि उसके गुणानुवाद के गाने में मगन न होवे गूंगी भली है, और जो कान कि सतगुरु का बचन और मालिक का अंतरी शब्द श्रवन करने में न लगा रहता हो बहरा अच्छा है, और जो तन कि उसकी सेवा में न लगे वह नाकारा है ॥

बचन ५३

जो वक़्त कि गुज़र जाता है फिर वह हाथ नहीं आता है, इस वास्ते वक़्त से ज्यादा कोई क़ीमती चीज़ नहीं है, इसकी क़दर हमेशा चित्त में रखना चाहिये, और उसको बेफ़ायदा और बुरे कामों में ख़र्च नहीं करना चाहिये, जहां तक बने सतगुरु और मालिक की सेवा और बंदगी और याद में ख़र्च करो, ताकि यहां और वहां दोनों जगह फ़ायदा और सुख हासिल हो ॥

बचन ५४

जो काम कि मालिक के निमित्त किया जाता है, उसमें बंधन नहीं होता है, पर जो करम मालिक के

निमित्त न होगा, उसमें मन का बंधन जरूर होगा, इस वास्ते फल की आसा छोड़कर सब काम मालिक के चरनों में अर्पन करके, यानी मौज के आसरे करना चाहिये, ताकि मन फंसने न पावे, क्योंकि मन के बंधन से दुख सुख पैदा होता है ॥

बचन ५५

जो लोग कहते हैं कि मालिक है, और फिर उसकी बंदगी और उसके चरनों में प्रीत नहीं करते और बानी पढ़ते हैं, और फिर उस पर अमल नहीं करते, और मालिक की दात भोगते हैं, और फिर उसका शुकर नहीं करते, और जानते हैं कि भजन करके महा सुख का अस्थान प्राप्त होगा, फिर उसकी चाह नहीं उठाते, और समझते हैं, कि बिना भजन नर्क और चौरासी में जावेंगे, और फिर उसका ख़ौफ़ नहीं करते, और जानते हैं कि काल और मन बैरी हैं, और फिर उन्हीं के कहने में चलते हैं, और जानते हैं कि मौत सिर पर खड़ी है, और फिर उसका सामान नहीं करते, और बहुतेरों को गाड़ दिया और फूंक दिया पर अपने मरने का ख़ौफ़ नहीं करते, और औरों की कसरें देखते हैं, और अपनी कसर दूर नहीं

करते, ऐसे शख़्सों की दुआ और प्रार्थना किस तरह मालिक क़बूल करे ॥

बचन ५६

जो कोई कि बहुत खाना खाता है या बहुत कम खाता है, और वह जो बहुत कम सोता है या बहुत सोता है, वह कभी परमार्थ दुरुस्ती से नहीं कमा सकता, मगर जो शख़्स खाना खाने और सोने जागने में ऐतदाल रक्खेगा, वह परमार्थ की कमाई बख़ूबी कर सकेगा ॥

फ़िहरिस्त पुस्तक राधास्वामी पंथ की जो कि नीचे लिखे हुए पते से मिल सकती हैं।

—:o:—

नाम पुस्तक—नागरी वग़ैरः

	क़ीमत
सारबचन हुज़ूर राधास्वामी दयाल छंद बंद	३)
प्रेमबानी राधास्वामी छंद बंद जिल्द १	२)
प्रेमबानी राधास्वामी छंद बंद जिल्द २	२)
प्रेमबानी राधास्वामी छंद बंद जिल्द ३	२)
सारबचन हुज़ूर राधास्वामी दयाल वार्तिक	१॥)
संत संग्रह भाग पहिला ...	॥)
संत संग्रह भाग दूसरा ...	॥)
सार उपदेश राधास्वामी ...	॥)
प्रेम उपदेश राधास्वामी ...	॥)
निज उपदेश राधास्वामी ...	॥)
प्रश्नोत्तर संत मत ...	।=)
राधास्वामी मत संदेश ...	॥)
जुगत प्रकाश राधास्वामी	॥।)
राधास्वामी मत उपदेश ...	।=)

	क़ीमत
प्रेमपत्र राधास्वामी पहिली जिल्द सन् १८९३ ई० १ मई से सन् १८९४ ई० ३० अपरैल तक ...	३)
प्रेमपत्र राधास्वामी दूसरी जिल्द सन् १८९४ ई० १ मई से सन् १८९५ ई० ३० अपरैल तक ...	३)
प्रेमपत्र राधास्वामी तीसरी जिल्द सन् १८९५ ई० १ मई से सन् १८९६ ई० ३० अपरैल तक ...	३)
प्रेमपत्र राधास्वामी चौथी जिल्द सन् १८९६ ई० १ मई से सन् १८९७ ई० ३० अपरैल तक ...	३)
राधास्वामी मत संदेस अरबी सिंधी	।-)
राधास्वामी मत संदेस बंगला	॥)
छांटे हुए बचन महात्माओं के	१)
राधास्वामी मत प्रकाश अं०	॥=)
राधास्वामी मत प्रकाश अङ्गरेज़ी जिल्ददार	१)